خطبات نبوی ﷺ
खुत्बाते
नबवी
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
हिन्दी तर्जुमा:

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٥ (سُوْرَةُ الذّٰرِيٰت)

तर्जुमाः और आप नसीहत कीजिए, बिलाशुबा व अ्ज़ नसीहत मोमिनों को फायदा देती है।

(सूरह जारियात, पारा नं.26, आयत नं. 55)

खुत्बाते नबवी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

तालीफ (लेखक):

मुहद्दिसे कबीर शारेहे सहीह बुख़ारी मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ रहमतुल्लाह अलैहि

मुक़द्दमा:
मौलाना अताउल्लाह सलफ़ी रहिमहुल्लाह

दुआईया कलिमातः
शैखुल हदीस अबू मुहम्मद अब्दुल जब्बार दारुल उलूम शकरावा

हिन्दी तर्जुमा:
एजाज़ ख़ान, सीकर

प्रकाशन :

ग्लोबल इस्लामिक पब्लिकैशन, नई दिल्ली

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सिलसिला-ए-मनशूरात मकतबतुस सुन्ना नम्बर 29

नाम किताब : खुत्बाते नबवी सल्ल०
नाम मुअल्लिफ़ : खतीबुल इस्लाम मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़, देहलवी, रह०
मुक़द्दमा : मौलाना अलाउल्लाह सलफी बिन मौलाना फकीरुल्लाह मदरासी रह०
दुआइया पैग़ाम : मुहद्दिस वक़्त मौलाना अबू मुहम्मद अब्दुल जब्बार शकरावी रह०
मौज़ूअ : हदीस/मुवाईज: अक़ाइद, अहकाम, मसाइल, फजाइल
हिन्दी तर्जुमा : एजाज़ ख़ान, सीकर
तादाद : -------
साइज : 23x36/8
कम्पोज़िंग : जे.एन.कार्डस एण्ड रेडियम हाउस
कम्पोज़र : सैयद मुश्ताक अली
ताबेअ : SIKAR
तारीख ताबेअ : July, 2015
प्रकाशन : ग्लोबल इस्लामिक पब्लिकैशन, नई दिल्ली

Published by *Abdul Naeem* for

Global Islamic Publications
3121, Sir Syed Ahmad Road, Darya Ganj,
New Delhi - 110002 (INDIA)
Phone: 011-43521414 | 011-43721414
E-mail: info@gipbookstore.com
Website: www.gipbookstore.com

OUR DISTRIBUTORS

Al-Munna Book Shop Ltd.
P.O.BOX 3449, **Sharjah** (U.A.E)
Sharjah Tel.: 06-561-5483, 06-561-4650
Dubai Tel.: 04-352-9294
Abu Dhabi Tel.: 02-444-5751

I.B. Publisher Inc.
81 Bloomingdale Rd Hicksville, NY 11801 (U.S.A)
Tel.: 516-933-1000 | **FAX:** 516-933-1200
E-mail: info@ibpublisher.com
Website: www.ibpublisher.com

Printed at:
R,M, Prints (Pvt,) Ltd,
E-mail: rmprinters83@gmail.com

मसनून खुत्बा

اِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

اَمَّا بَعْدُ: فَاِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللّٰهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ وَشَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَكُلَّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ۔

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ﴿۱﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿۷۰﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿۷۱﴾

इन्नल हम्-द लिल्लाहि नहमदुहू व नसतईनुहू व-नस्तग़फिरुहू, व-नअूज़ुबिल्लाहि मिन शुरूरि अनफुसिना व मिनसय्यिआति आमालिना मंय्यहदिहिल्लाहु फला मुज़िल्ललहू व मंय्युजलिलहु फला हादि-य लहू व अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू, व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू

अम्मा बअ्द: फइन्ना ख़ैरल हदीसि किताबुल्लाहि व ख़ैरल हद्यि हदयु मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम व शर्रल उमूरि मुहदसातुहा व कुल्-ल मुह-द-स-तिन बिदअ़तुन व कुल्-ल बिदअ़तिन ज़लालतुन व कुल-ल ज़लालतिन फिन्नार.

अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख-ल-क़-कुम मिन नफसिंव वाहिदतिन व ख-ल-क़ मिनहा ज़व-जहा व बस-स मिनहुमा रिजालन कसीरवं व-निसा-अंव वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी तसा-अलू-न बिही वल अरहाम, इन्नल्ला-ह का-न अ़लैकुम रक़ीबा।

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह हक़-क़ तुकातिही व ला तमू-तन्-न इल्ला व अनतुम मुसलिमून।

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व-क़ूलू क़ौलन सदीदा। युसलिह लकुम आमालकुम व यग़फिर लकुम ज़ुनू-ब-कुम, व मंय्यु-ति-इल्ला-ह व रसूलहू फक़द फा-ज़ फ़ौज़न अज़ीमा। (तिर्मिज़ी, अन्निकाह इब्ने माजा, अन्निकाह अबू दाउद, अन्निकाह मुसनद अहमद)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

फेहरिस्ते मज़ामीन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अरज़े नाशिर

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ-लमिन वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यदु अम्बिया वल-मुरसलि-न व आलिही व असहाबिही अजमईन! अम्माबाद

अल्लाह तआला का बड़ा फज़लो करम है कि हम खुत्बा बिलखुसूस दावत व तब्लीग़ के मैदान में हमेशा मसरूफ हज़रात व ख़्वातीन के लिए एक अनमोल तोहफा "खुत्बाते नबवी सल्ल०" पेश कर रहे हैं। मार्केट में खुत्बात के नाम से हालांकि बहुत सी किताबें हैं, मगर उनमें से कुछ की ज़ुबान कई जगह फाज़िलाना अरबी व फ़ारसी के मुश्किल अल्फाज़ पर मुशतमिल है जो आम आदमी समझ नहीं सकता और कुछ ऐसे लम्बे-लम्बे खुत्बात की किताबें हैं जिनके एक खुत्बे को एक जुमा में सुनाना मुमकिन नहीं है और बाज खुत्बात की किताबें जो आजकल मार्केट में आ रही हैं, उनमें मुकफ्फा व मुस्ज्जा इबारतों, शेअरो शाअरी, मुख्तलिफ हिकायात और क़िस्से कहानियों के सिवा कुछ नहीं है। इसलिए ज़रूरत इस काम की थी कि खुत्बात की ऐसी किताब मंज़रे आम पर आये जो कुरआन व हदीस की दलीलों से सजी हों, जिसमें इसने कहा, उसने कहा के बजाये कलामुल्लाह, फरमाने रसूल सल्ल० के ज़रीये लोगों की इस्लाह के लिए मौज़ूआती अन्दाज़ के मुरत्तब खुत्बे हों, यह खासियतें इसी 'खुत्बाते नबवी सल्ल० ' की है जो आपके हाथों में हैं यह खुत्बात कुरआने करीम की आयाते करीमा व अहादीसे नबवी मुबारका से सजी हैं।

हज़रत अल्लामा मुहद्दिसे कबीर शारेहे बुख़ारी शरीफ मौलाना मुहम्मद दाउद राज़ रह० ने जब महसूस किया कि इस ज़माने में बाज़ लोग मौलाना कहे जाते हैं जबकि कुरआन व हदीस से इनका दूर-दूर तक वास्ता नहीं होता, जिसके नतीजे में कुरआन की आयतें व अहादीसे नबवी सल्ल० के ईमान को ताज़ा करने वाले खुत्बात से दिलचस्पी दिन-ब-दिन कम होती जा रही है, इसलिए मौलाना दाउद राज़ रह० ने खुत्बाते नबवी के नाम से यह किताब लिखी है।

यह खुत्बाते नबवी सल्ल० मौलाना मुहम्मद दाउद राज़ रह० की 23 साला मेहनत का फ़ायदा है, जिसको मौसूफ ने मौलाना अताउल्लाह सलफी ख़लफुर रशीद मौलाना फक़ीरुल्लाह मदरासी रह० के इफतिताहिया और अज़ीम मुहद्दिस अल्लामा अबू मुहम्मद अब्दुल जब्बार शैख़ुल हदीस दारुल उलूम शकरावा रह० के दुआ-ए-पैग़ाम के साथ **23x36=8** के साइज़ पर लिखा गया है।

इस किताब की कुछ खासियतें:'

1. हमने मौजूदा ताबेअ की इब्तिदा में मसनून खुत्बे का इज़ाफा कर दिया है, जिसकी

मुकम्मल तहक़ीक़ व तख़रीज इस दौर के अज़ीम मुहद्दिस अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी रहमतुल्लाह की किताब "खुत्बा-हाजाह" में देखी जा सकती हैं।

2. तौहीद किताब सेन्टर ने इस किताब को कम्प्यूटराईज्ड करके सीकर में पहली बार जारी करने की सआदत हासिल की है।
3. पहली छपाई में अरबी, उर्दू इबारात में बाज़ मक़ामात पर ग़लतियां थीं, उनकी तसहीह का ख़ास ख़्याल रखा गया है।
4. पहली छपाई में कुछ हदीसें मुख्तसर नक़ल थीं, उनको पूरा नक़ल करने का इहतमाम किया है।
5. पहली छपाई में बाज़ अहादीस के हवाले नहीं दिये गये थे, उनको हवाले के साथ करते हुए नीज़ दीगर कुछ तब्दिलियों को इस तरह क़ौसैन (ब्रेकिट) में कर दिया है, अलबत्ता हवाला जात में किताब के नाम देने पर इक्तिफा किया है (कुछ खास जगहों को छोड़कर) जिसकी बुनियादी वजह कम वक़्त और ज़्यादा काम। दूसरा खुत्बे में मराजेअ व मसादिर की मारूफ मुहूला कुतुब का बआसानी दस्तयाब हो जाना है, जिनसे इल्म को तलाश करने वाले मामूली मेहनत से बराहे रास्त और ज़्यादा सैराब हो सकते हैं।
6. बाज़ पुराने अल्फाज़ जो कि मिट चुके हैं, उनकी जगह नए अल्फाज़ इस्तेमाल किये हैं ताकि पढ़ने वाले को दुश्वारी ना हो और कलाम में नरमी बाकी रहे। इस तब्दीली पर मुसन्निफ की बात पढ़ने वालों तक पहुंचाने की कोशिश की है, जबकि उन मक़ामात की तब्दीली पर निशान दही की ज़्यादा ज़रूरत नहीं है।
7. किताब में लफ्ज़ "अल्लाह" की जगह लफ्ज़ "खुदा" बहुत ज्यादा था, हमने उसकी जगह लफ्ज़ "अल्लाह" इस्तेमाल किया है, मा सिवाये चन्द नागुज़ीर तराकीब के। खतीब और हर शख्स को चाहिए कि लफ्ज "अल्लाह" इस्तेमाल करे, इसलिए कि यह अल्लाह तआला का ज़ाती नाम है, और कुरआनी लफ्ज़ है, जिसके हर हुरूफ पर नेकी मिलती है। और लफ्ज़ "खुदा" फारसी लफ्ज़ है, जो कि फारस के आग की पूजा करने वालों के झूठे नज़रियात (दो खुदा हरमिन और यजंदा) का मज़हर है, इसी तरह अंग्रेज़ी में अल्लाह के लिए **God** (गॉड) का इस्तेमाल भी दुरूस्त नहीं है।
8. हर खुत्बे को अलग पन्ने से शुरू किया है।

कलिमा-ए-तशक्कुर:

बमौजिब हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम "मललम यशकुरिन ना-स लम यशकुरिल्लाह" (तिर्मिज़ी, अबू दाउद)। अपने सभी दोस्तों और अहबाब का शुक्रिया अदा करता हूँ, जिन्होंने किसी भी तौर पर इस किताब को मंसबा-ए-शुहूद पर लाने में

साथ दिया है। बिलखुसूस अपने घरवालों और हमारे बुजुर्ग और इल्म दोस्त जनाब मुहतरम मुहम्मद बिन इस्माईल माहे साहब (हफिज़हुल्लाह तआला) कि जिनकी वसातत से खुत्बात नबवी सल्ल० का वो नुस्खा मयस्सर हुआ जो मुसन्निफ ने बज़ाते खुद आप जनाब को इनायत किया था। नीज़ उसकी तसहीह व तहज़ीब और हवालाजात के सिलसिले में बाज़ शागिरदान ने तआवुन किया, उनका भी ममनून हूँ, बिलखुसूस हमारे शागिर्द रशीद मौलवी अब्दुर्रऊफ नूरुस्तानी सलीमुल्लाह और शागिर्द और फाज़िल साथी शौअबा कम्प्यूटर के इन्चार्ज इब्राहीम अब्दुल्लाह बुलतिस्तानी सल्लमहुल्लाह तआला कि उन्होंने रात दिन मेहनत करके इस काम को अपने आखिरी अंजाम तक पहुंचाने में तआवुन किया। जज़ाहुमुल्लाह तआला खैरन फिद्दारैन! आमीन

नोटः पढ़ने वालों से दरख्वास्त है कि इन्सान ग़लतियों व भूल-चूक का पुतला है लिहाज़ा किसी किस्म की ख़ता महसूस करें तो आगाह फरमायें ताकि अगले एडिशन में सहीह कर दिया जाये।

अल्लाह तआला हम सब की इस मेहनत को मेहनते शुक्र गुज़ारी बनाये और अपने दरबार में मंजूर व मक़बूल फरमाकर सवाबे आख़िरत बनाये। और इससे आम व ख़ास दोनों को फायदा पहुंचाये और फरमाने शेख और कहानियाँ सुनाने की बजाये कुरआन मजीद की आयाते मुबारका व हदीसे नबवी सल्ल० सुनाने की तौफीक़ अता फरमाये। आमीन!

वसल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़लक़िही मुहम्मदिंव व आलिही व असहाबिही अजमईन

मुहम्मद अफजल असरी
(डायरेक्टर)
शअ़बान 1421 हिजरी
नवम्बर 2000 ईस्वी

दुआ-ए-पैग़ाम

अज़क़लम सल्फ हज़रत अल्लामा मौलाना अबू मुहम्मद अब्दुल जब्बार साहब

शैखुल हदीस दारुल उलूम शकरावा (हरियाणा) अदामल्लाहु फ़ुयूज़हुम

अल्हम्दु लिल्लाहि कफा व-सलामुन अ़ला इबादिहिल्लज़ी-नस्तफा। अम्मा बअ्-द

इन्सानों के अक़ाइद, इबादात, आमाल व अख़्लाक़ की इस्लाह व सुधार इन्तेहाई अहम काम और एक ज़बरदस्त फरीज़ा है। इस सिलसिले में उलमा-ए-इस्लाम उलमा-ए-रब्बानिय्यीन की मुख़लिसाना व मुजाहिदाना कोशिश हर दौर में जारी रही हैं। और कुफ़्र व बातिल गुमराही व जिहालत शिर्क व बिदआत और आमाल में बिगाड़ और अख़लाक़ में गिरावट इन तमाम को उम्मत की इस्लाह के लिए पाक व साफ किया। किताबों (लिखित रूप) के ज़रीये से और तक़रीर व नसीहत के ज़रिये से अज़ीमुश्शान काम यह उलमा-ए-दीन करते रहे हैं। इस मौज़ूअ पर अरबी व उर्दू में उलामा-ए-दीन ने मुतव्वल व मुख़्तसर बहुत-सी किताबें लिखी हैं मगर तब्लीग़ी हैसियत से खुत्बात का मौज़ू ऐसा है कि इस पर इस ज़माने के मुताबिक और मुख़्तसर आसान से आसान आम फहम जितनी भी किताबें लिखी जायें वो कम हैं। मौजूदा दौर में इल्मी गिरावट, दीनी दूरी, अल्लाह से दूरी, दुनिया परस्ती, दीने इल्म व इल्मे दीन वअज़ व तक़रीर से नफरत व बेज़ारी, शब व रोज़ तहसीले दुनिया में मसरूफियत का दौर है। ज़रूरत थी ऐसी किताब की जो मुख़्तसर और जामेअ मुख़्तलिफ खुत्बात पर मुशतमिल ख़ालिस कुरआन व हदीस की रोशनी में लिखी गयी हो। अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि मेरे अज़ीज़ व मुकतदिर आलिम मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ ने खुत्बात के मौज़ूअ पर निहायत ही मेहनत व कोशिश और काविशों से ऐसी बेहतरीन किताब तैयार की है जो इस ज़रूरत को पूरा कर रही है।

मैंने इस किताब के मज़ामीन को जिन-जिन भी मुक़ामात से देखा तो बहुत बेहतर पाया। मैं अपने तमाम .... दीनी व जमाअती व इस्लामी भाईयों और बहनों, बच्चों को तरग़ीब व तवज्जुह दिलाता हूं कि इस मजमूआ-ए-खुत्बा को ज़रूर पढ़ें। इसे जुमा व ईदैन और आम मौकों में इल्मी व दीनी फायदे हासिल करें और इस ख़ालिस दीनी किताब को फैलाने में हर तरह से मदद फरमा कर बहुत बड़े सवाब के हक़दार हों। वमा ज़ालिका अ़-लल्लाहि बिअ़ज़ीज़। आमीन सुम्मा आमीन!

आखिर में साफ दिल से अल्लाह की तरफ मैं दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला मौलाना मौसूफ की जिन्दगी और उनके इल्म व अमल व इख्लास में बरकत अता फरमाये। आमीन! उनको सेहत व आफियत व तवानाई बख्शे। और उनसे अपने दीन अपनी रज़ामन्दी की ज़्यादा से ज़्यादा खिदमात ले। और उनकी इस इल्मी व दीनी खिदमत को भी क़बूल फरमाये। आमीन! और सब मुसलमानों को इससे फायदा हासिल करने की तौफीक़ अता फरमाये।

अबू मुहम्मद अब्दुल जब्बार
ग़-फ-र लहुल ग़फ्फार
शकरावी।
25 जुमादल सानी 1393 हिजरी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इफ्तताहिया (शुरुआत)

अज़क़लम हजरत मौलाना अताउल्लाह सलफी ख़लफ अल-रशीद हज़रत मौलाना फकीरुल्लाह पंजाबी मद्रासी (रहिमहुल्लाह)
दारुस्सलाम उमराबाद, मद्रास

खुत्बा-ए-नबी अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، اَرْسَلَهٗ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ، مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدِ اهْتَدٰى وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ وَغَوٰى۔ اَمَّا بَعْدُ: فَاِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللّٰهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ وَشَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَكُلَّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ۔

मुहतरम बुजुर्गो, भाईयो, अज़ीज़ो!

हदीसों के पढ़ने और सहाबा की सुन्नत हज़रत सादिक़ व मसदूक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सही इत्तेबाअ में हमेश-दर-हमेश पढ़ने से यह पता चलता है कि जुमा में यही खुत्बा पढ़ना सुन्नत और अच्छा है। दूसरों के अपने बनाये हुए खुत्बों का पढ़ना बशर्ते कि किताब व सुन्नत के खिलाफ ना हों जायज़

का दर्जा रखता है, लेकिन इत्तेबा-ए-रसूल ही है। एक मुतबहिहर मुहद्दिस आलिम इत्तेबा-ए-रसूल रहमतुल्लाह अलैह ने ''बिस्मिल्लाह'' के मुताल्लिक जो वज़ू करते वक्त पढ़ी जाती है, एक नुक़ता कही या एक बात फरमाई, हज़रत सादिक़ व मसदूक़ अलैहिस्लाम ने जब ''बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम'' की जगह ''बिस्मिल्लाह'' कहा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमसे ज़्यादा हिकमत और वह्य-ए-इलाही के जानने वाले थे, तो हमें चाहिए कि ''बिस्मिल्लाह'' सिर्फ कहें। इसी तरह मेरा सोचा-समझा नज़रिया और ऐतक़ाद है कि खुत्बा के शुरू में मसनून खुत्बा पढ़ना चाहिए।

हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (मेरी जान कुरबान) के मुताल्लिक कुरआन अज़ीज़ ने ''और वो तालीम देता है उन्हें किताब (कुरआन) व हिकमत की (सूरह जुमुआ पारा 28, आयत 2)'' कह कर आपकी सारी दीनी बातों को हिकमत कहा है और उनका नाम हिकमत रख दिया है तो हम कौन हुए कि ''मुनज़्ज़ल मिनल्लाह'' हिकमत के खिलाफ अपने नफ्स के मज़ाक के मुताबिक खुत्बे बनाकर हज़रत सादिक़ व मसदूक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हकीमाना व बलीग़ाना ''मुनज़्ज़ल मिनल्लाह'' खुत्बा पर इनको तरजीह दें कि अपनी बनाई हुई मुक़फ्फा इबारत की सामईन से दाद लें। मुक़फ्फा इबारत बनाने की जगह खुत्बा-ए-मसनूना की ऐसी वज़ाहत की जाये कि सुनने वालों से शाबासी भी मिले और इफशाये सुन्नत भी मिले। खुत्बा मसनूना या मसनून वअ्ज़ व तकरीर उसी वक्त कहलायेंगे जबकि इस खुत्बे की रूह व लफ्ज़ को अपनाये हुए हों और इस खुत्बे में चन्द चीज़ों का पाया जाना, या ना पाया जाना यह भी मसनू और ख़ैरे इलाही कहलायेगा, जिनकी कुछ तफसील यह है:-

1. खुत्बा ''अलहम्दु लिल्लाहि'' से शुरू किया जाये। ''अऊज़ु बिल्लाहि'' और ''बिस्मिल्लाह'' से ना शुरू किया जाये। यही सुन्नत तरीका है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जितने खुत्बे मनक़ूल हैं, मेरी नज़र जहां तक काम करती है, कहीं भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ''बिस्मिल्लाह'' से खुत्बे की शुरूआत नहीं की। खिताब व खुत्बे में और तक़रीर में अपने कलाम की शुरूआत ''अलहम्दु लिल्लाहि'' से किया जाये। लिखते वक़्त में इब्तेदा''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' से की जाये, मेरी नज़र ने जहां तक काम किया, मैंने यही पाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जितनी लिखावट थी उनकी इब्तेदा ''बिस्मिल्लाह'' से की गयी है, यही बात थी कि हज़रत इमाम बुख़ारी रह. ने अपनी मायानाज़ किताब

"सहीह बुख़ारी" का इफ्तेताह "बिस्मिल्लाह" से किया।
और हदीस ".." दूसरी हदीस में "बिस्मिल्लाह" का लफ्ज़ आता है, ज़ाहिरन जो मुखालिफ व खिलाफ दिखाई देता है, वो इसी तरह दूर होता है। खुत्बा और खिताब को पहली हदीस और तहरीरो किताबत को दूसरी हदीस से मुताल्लिक करार दिया जाये। इसी से दोनों हदीसों का टकराव दूर हो जाता है।

2. खुत्बा छोटा हो, छोटा खुत्बा देना ही खुत्बा है और सुन्नत है, वरना वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमाया हुआ खुत्बा नहीं है, बल्कि अपना खुत्बा है, खुत्बा इत्तेबा-ए-शरीअत और इत्तेबा-ए-सुन्नते रसूल के तहत दिया जाता है, जब ऐसा ना हो तो फिर वो शरई और इस्लामी खुत्बा कहां रहा? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमल आपके क़ौल का बिलकुल मददगार है। क़ौली और फेअली दोनों हदीसें इख्तेसार पर दलालत कर रही हैं। तो फिर हमारा खुत्बों को लम्बा देना अपने और खुत्बे के सुनने वाले लोगों का ख्याल और खिलाफे उसूल किताब महज अपना इज्तेहाद है। इख्तेसार वाला कितना होता है, खुत्बा देने वाला अगर समझदार है तो वो खुद तय करे। और अपने सामने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खुत्बात रखे।

3. और एक चीज ध्यान में रखने की यह है कि खतीब "हुब्बन लिल्लाहि व-इख्लासन लहु" फजे कल्ब (सख्तदिली) से दूर होकर पन्द व नसीहत को रूबरू रखे लम्बे-लम्बे किस्सों, कहानियों से बिलकुल दूर हो, वरना यह खुत्बा भी अपना और सुनने वालों का होगा, शरई और सुन्नत न होगा। शेअरो शायरी भी जुमा के खुत्बे के खिलाफ है।

4. खुत्बा का मक़सद लोगों की सही रहनुमाई और उनको हफ्ते में हो चुके या होने वाले मसाईल को पेश करना और हल करना है, यह सिर्फ नमाज़ नहीं है कि अरबी में पढ़ कर खुत्बा खत्म किया जाये। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से क़ौली कोई ऐसा सबूत नहीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया हो कि अरबी के अलावा दूसरी और ज़ुबान में खुत्बा ना दिया जाये।

इस्लाम के जितने अमीर (गवर्नर) हैं सबने अरबी खुत्बे के अलावा दूसरे मुक़ामात में अरबी में खुत्बा दिया, यह महज उनके ज़ुबान से नावाकिफियत की बिना पर था, ना कि कोई शरई मसला, अरबी ज़ुबान के अलावा दूसरी

जुबानों में खुत्बा देना खिलाफे सुन्नत और बिदअत नहीं है। जिन उलमा ने अरबी के अलावा दूसरी जुबानों में खुत्बा देने को बिदअत बताकर जो नया तरीका निकाला है कि अरबी खुत्बे से पहले मिम्बर के नीचे दूसरी जुबानों में खुत्बे का मतलब बयान करके मिन्बर पर अरबी खुत्बा देते हैं, गौर करने का मुकाम है कि यह कौन-सा सुन्नत तरीका है? किताब व सुन्नत, सहाबा, अइम्मा-ए-अरबआ, फुक़हा और सलफ के मसलक और अमल के बिलकुल खिलाफ है। बल्कि इजमा-ए-उम्मत के खिलाफ है। इज्तेहाद सहीह भी शरई चीज़ है। इज्तेहाद जबकि नुसूस और अहादीसे सहीह के खिलाफ ना हों। वो इजतेहाद बिलकुल सही और अपनी जगह है, गहरी नजर से देखिये तो बिलकुल रोज़े रोशन की तरह मालूम होगा कि शरीअत ने हफ्ते में एक बार खुत्बा फिक्स किया है। इसका एक ही मकसद है, लोगों और अवाम तक अहकाम पहुंचाए जायें। जबकि कोई अरबी का जानने वाला हो, वहां अरबी में खुत्बा देना खुत्बे के मकसद को पूरा नहीं करता। इज्तेहादे सहीह बताता है कि दूसरी जुबान में खुत्बा बग़ैर किसी शकोशुबा के दिया जा सकता है। यह बिदअत है तो कुरआन व हदीस का तर्जुमा और बयान और दूसरी जुबानों में करना बिदअत और खुली बिदअत है, बिदअत यह है कि एक काम नया निकाल कर उसको ज़रूरी और मुस्तहिक्के सवाब समझा जाये, कोई उर्दू या और जुबान में खुत्बा देने वाला हक़ परस्त आलिम दूसरी जुबानों में खुत्बा देने को ज़रूरी और शरई नहीं कहता, बल्कि जरूरत का तक़ाज़ा कहता है ना कि शरई। इसलिए दूसरी ज़ुबानों में खुत्बा देना शरई है और ना बिदअत बल्कि वक़्त की ज़रूरत है, जो दिया जा सकता है।

5. लाउड स्पीकर में खुत्बा देना यह भी सुन्नत के खिलाफ और बिदअत नहीं है। क़ुरआने अज़ीज़ की नस 'व-यख़्लुक़ु मा ला तअ़लमुन'' के मुताबिक एक इजाज़तशुदा आला है, यह आला खुत्बा देने वालों की आवाज़ को फैलाता और दूर तक पहुंचाता है, ना इससे लफ्ज़ों में फर्क़ आता है और ना खुत्बे में और ना नमाज़ में, बल्कि जमाअत ज़्यादा हो तो उसके ज़रीये इत्मिनान से सुन कर नमाज़ अदा करनी है और खुत्बे के अहकाम पर चलने की ख्वाहिश पैदा होती है, अगर तमाम ही नई बनाई हुई चीज़ें बिदअत हैं तो फिर इस नई दुनिया में रहना मुश्किल है। बस एक ही सूरत है कि किसी जंगल में रहा जाये, दुनिया को अहले बातिल के हवाले करके हक़्क़े तआला की तशरीई और तकवीनी अहकाम का बाग़ी बना दें। मैं उन बुज़ुर्गों का एहतराम करते हुए और उनको अपना बुज़ुर्ग मान कर यह पूछता हूँ कि

हमारा यह रवैया होगा कि जो काम सराहतन बिदअत व खुराफात का दर्जा रखते हैं उनमें शरीक होकर लाउड स्पीकर के ज़रीये नशरो इशाअत करते हैं और अल्लाह के रसूल के अहकाम व सुन्नत के पहुंचाने को बिदअत बताते हैं, यह अजीब फैसला है ''यह तो सब बड़ी बे-इन्साफी की तक़सीम है (सूरह नज्म पारा 27, आयत 22)'' शायद इन्हीं के हक में कहा गया है।

कुरआन अज़ीज़ जब हमें इजाजत ''वो ऐसी बहुत चीज़ें पैदा करता है, जिनकी तुम को जानकारी भी नहीं (सूरह नहल पारा 14, आयत 8) '' कह कर दे रहा है तो फिर यह कैसे बिदअत ठहरा?फिर यह कैसे खिलाफे किताब व सुन्नत और बिदअत ठहरा? लाउड स्पीकर से खुत्बा देना बल्कि नमाज़ भी पढ़ाना..... बिदअत और खिलाफे सुन्नत.... नहीं है। बल्कि अल्लाह तआला की एक नेअमत से फायदा उठाना है।

6. खतीब के आते वक़्त मुअज़्ज़िन का खास अरबी के बनाये अल्फाज में पुकारना, यह अलबत्ता बिदअत है। मिन्बर को सजाना, यह खिलाफे शरई है, मिन्बर व मस्जिद को बिला हद व हिसाब चिराग़ों और बहुत सारी फिजूल चीज़ों से सजाना खिलाफे सुन्नत है।

7. मुहम्मद सल्ल. ने अपने इस बलीग़ खुत्बा में जो बातें हकीमाना अन्दाज में पेश फरमाई हैं, उनको नज़र अन्दाज़ करके दिखावा और बहुत सारे लोगों के सामने खड़े होकर एक बड़ा काम समझना, यह खिलाफे सुन्नत है।

खुत्बा का मतलबखेज़ तर्जुमा

सारी तारीफ अल्लाह तआला ही के लिए हैं (इसलिए हम) उसकी तारीफ करते हैं (वही हमारा मददगार और मदद का मालिक है) हम उससे मदद चाहते हैं (आखिरकार हम बन्दे हैं आजमाइश के लिए गुनाह का उनसुर हम में रखा गया है, बड़े या छोटे गुनाहों का सरजद होना इन्सान से फितरी हैं, हक़ तआला ही मुख्तारे गफूर गुफरान और इसका मालिक है) हम इसी से बखशिश चाहते हैं (हक तआला ही हमारा खालिक, राजिक, तकवीनी व तशरीई कानून का बनाने वाला और उसका हाकिम है) हम उसी पर ईमान लाये हैं (भरोसे के काबिल और ऐतमाद के काबिल और भरोसे का मालिक वही है, उसी पर हम अपने सारी दीनी और

दुनियावी कामों में) भरोसा करते हैं, बुराईयों और नफ्सों की शरारतों के लिए ठिकाना अल्लाह तआला के और कोई नहीं) हम उसकी पनाह में आते हैं (हिदायत व गुमराही का पैदा करने वाला, हिदायत व गुमराही की तरफ फेरने वाला, हमारे ऐतकाद व किरदार के मुताबिक सिर्फ वही है, इसलिए) उसकी हिदायत मिलने के बाद कोई गुमराह नहीं कर सकता, गुमराह करने के बाद कोई और राह पर नहीं ला सकता।

हमने जितनी बातें कही हैं और उनका ऐतराफ किया है, जो अल्लाह को माबूदे हकीकी और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह के बन्दे और उनके फरिस्तादा पयाम्बरों की शहादत से गवाही दे कर माना है। तमाम बनी आदम इन्सान को खबरदार रहना चाहिए कि दीन, सियासत, मुआशिरत, तहजीब और इसी किस्म के तमाम शोबों मे कोई बात और कानून बेहतर और अच्छा है तो अल्लाह तआला की बात और कानून है, जिसको हम किताबुल्लाह (के नाम) से जानते हैं, और उस कानून पर चलने का कोई बेहतरीन उसवा और तरीका हो सकता है तो वह सिर्फ हजरत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीका ही हो सकता है। जो लोग हक्के तआला के कानून और उनके रसूल के तरीके को ना अपनायें तो वह हम से बहुत ही दूर हैं। जिन्होंने अपने बाप-दादाओं या नफ्सों के गलत इत्तेबाअ में आकर उन कवानीन और तरीकों के साथ कुरआन व हदीस से बिलकुल ताल्लुक ना रखने वाले दूसरे और तरीके बनाकर शरई चीज मानकर इजाफा किया वो उनकी बदतरीन चीज है। यकीनी बात है जो बुरी चीज है उसको इख्तेयार करना गुमराही है और गुमराही का नतीजा दोजख के और क्या हो सकता है?

''अल्ला हुम्मा वफ्फिक़ लना लिमा तुहिब्बु व-तरजा'' आमीन सुम्मा आमीन!

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अरजे अहवाल (अज़ मुअल्लिफ)

(लेखक की जिन्दगी के हालात)

''अल्हम्दुलिल्लाहि व-कफ़ा सलामुन अला इबादिहिल्लज़ीनस्तफा'' अम्माबाद

हिन्दुस्तान के कोने-कोने में फिरने और मुसलमानों के दीनी व दुनियावी हालात का जायजा लेने और ब-गौर मुतालआ करने से कम से कम मेरे लिए इस हकीकत को तस्लीम किये बगैर चारा नहीं है कि मुसलमानों का मजहबी मुस्तकबिल यहां दिन-ब-दिन ख़राब होता जा रहा है। जिसमें उलूमे इस्लामी, कुरआन व हदीस से बेरगबती और उर्दू जुबान से दिन-ब-दिन दूर होने का बड़ा दखल है। आम मुसलमानों में नमाज, रोजा की सही तौर पर अदायगी से गफलत दिन-ब-दिन बढ़ रही है, मस्जिदें बहुत शानदार नजर आती हैं, मगर अच्छे सच्चे नमाजियों से खाली हैं, बहुत-सी ऐसी मस्जिदें भी हैं जिनमें कोई झाडू व बत्ती करने वाला भी नहीं। देहात बल्कि कस्बात तक में ऐसी बहुत-सी मस्जिदें हैं जिनके लिए कोई सालेह बाअख्लाक इमाम नसीब नहीं है। अगर किसी मस्जिद में नमाजे जुमा होती है तो उसके लिए कोई उम्दा खतीब मुहैया नहीं है, जिन मस्जिदों में जुमे का खुत्बा उर्दू में होता है वहां मुख्तसर जामेअ आसान उर्दू जुबान में कुरआन व अहादीस के आम फहम बयानात पर मुश्तमिल कोई खुत्बे की किताब नहीं है, किसी किसी जगह कुछ पुराने जमाने के उूर्द खुत्बात हैं जिनकी जुबान बाज जगह फाजिलाना अरबी व फारसी के कुछ दकीक अल्फाज पर मुश्तमिल है, कुछ ऐसे लम्बे-लम्बे खुत्बात की किताबे हैं जिनके किसी एक खुत्बे को पूरे तौर पर जुमे में सुनाना मुमकिन नहीं, कहीं कहीं कुछ नौजवान आलिम खुत्बे में वअज फरमाते हैं, जो कई बार जोश में महज जजबाती बातें कह जाते हैं, कुछ शेरो शाअरी के साथ मुख्तलिफ हिकायात का रंग भरने की कोशिश करते हैं, जिनके नतीजे में आयाते कुरआनी व हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ईमान अफरोज खुत्बात से दिलचस्पी दिन-ब-दिन कम होती जा रही है।

ऐसे ही और भी बहुत हालात हैं जिनके पेशे नजर मेरे कुछ मुखलिस दोस्तों ने मुझको आज से 23 साल पहले की जारी की हुई किताब ''हज्जे बैतुल्लाह'' के आखिर में मेरी जमा की हुई किताब ''खुत्बाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम'' की इशाअत का ऐलान याद दिलाया, जिसे सुनकर मैंने अपनी मौजूदा मुश्किलात पर गौर किया तो हिम्मत ना हुई कि इसको जारी करने का काम शुरू कर सकूं।

फिर दोस्तों का इसरार और वक्त के तकाजे देख कर मैं काफी दिनों तक 23 साल के पुराने मनसूबे पर गौर करता हुआ अल्लाह पाक से इस्तखारा करता रहा और दुआयें भी कि ''या अल्लाह खिदमते कुरआन शरीफ व इशाअते बुखारी शरीफ मुतरजिम उर्दू और हर माह जरीदा ''नूरूल ईमान'' की मसरूफियात और उन सबके लिए अस्बाब व जराये के साथ अगर खुत्बाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत भी तू आसान कर दे तो तेरे लिए सब कुछ मुमकिन है, क्योंकि इस खिदमत का ताल्लुक आम मुसलमान से है जो जुमा और ईदैन में ईमान अफरोज खुत्बात सुनने का शौक रखते हैं। आखिर अल्लाह का नाम लेकर महज उस पर भरोसा करते हुए इस अजीम खिदमत के लिए तैयार हो गया और बड़ी दिमागसोजी और रात दिन की मेहनत और मसारफ की जेरबारी के बाद आज महज अल्लाह के फजलो करम से यह किताब ''खुत्बाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम'' शायकीन के हाथों में है। जो खालिस मशीयते इलाही के तहत 23 साल पहले के मनसूबे पर बार बार नजरे सानी और उसे आसान से आसान जुबान में पेश करने के बाद जेरे तबअ से आरास्ता हो रही है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमा के खुत्बे में कुरआन शरीफ पढ़ते और उसी रोशनी में वअज फरमाया करते थे। इसी अच्छे तरीके पर अमल करते हुए मैंने पूरी कोशिश की है कि ईमान व इस्लाम के साथ इसमें समाजी व मआशरती व अख्लाकी ऐसे खुत्बात भी आ जायें जो मुसलमानों की दीनी व दुनियावी तरक्की और उनके आपसी इत्तेफाक के लिए भी ज्यादा से ज्यादा फायदेमन्द साबित हो सकें खुत्बाते जुमा व ईदैन के अलावा आम मुसलमान मर्दों व औरतों की दीनी मालूमात और वाइजीने किराम के लिए भी यह किताब बेहतरीन दोस्त का काम दे सकेगी (इन्शा अल्लाह)। अल्लाह पाक इसे कबूल फरमाकर कबूले आम अता करे और जिन तामीरी व तब्लीगी मकसदों के तहत इसे जारी किया गया है, उनमें कामयाबी हासिल हो। आमीन!

मुअज्ज़ज़ खुत्बा देने वाले हजरात की खिदमत में जरूरी गुजारिशात:

हजरात! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु

पूरे अदब व एहतराम के साथ इस हकीकत की बिना पर कि कसरे (महल) मिल्लत की तामीर में आपका जबरदस्त दखल है, अपनी नाचीज किताब ''खुत्बाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम'' आपकी खिदमत शरीफ में कबूलियत की उम्मीद पर पेश कर रहा हूँ, कुछ मुअद्दबाना गुजारिशात भी हैं। उम्मीद है कि नजरे करम से मुतालआ फरमाकर खादिम को अपनी नेकतरीन दुआओं में याद रखेंगे।

जुमा का खुत्बा हो या ईदैन का, खतीब हजरात को पहले मुन्दरजा जैल मसनून खुत्बा पढ़कर खुत्बा शुरू करना चाहिए। जुमा के खुत्बे में आप पहला खुत्बा अगर यहां से पढ़ रहे हैं तो इसे पूरा करके या और किसी किताब में से या आप वअज फरमा रहे हैं बहरहाल बीच में थोड़ी देर के लिए बैठना चाहिए। फिर उठकर दूसरा अरबी खुत्बा जुबानी ना पढ़ सकें तो इस किताब में देखकर पढ़ें। यह मसला भी याद रखना जरूरी है कि जुमे का खुत्बा मुख्तसर होना चाहिए। लम्बा खुत्बा सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ है। जुमा व ईदैन के दिन खुत्बात खड़े होकर पढ़ने जरूरी हैं। हाजरीने किराम खुत्बा गौर से बिलकुल खामोश होकर सुनें जो लोग जुमा के खुत्बे में आपस में बातचीत करें वो सवाब के लिहाज से सख्त तरीन नुकसान में रहेंगे।

वस्सलाम !

आपका खादिम :
मुहम्मद दाउद राज़ (उफ़िया अन्ह) रहिमहुल्लाह

खुत्बा-ए-मसनूना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. اَمَّا بَعْدُ: فَاِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللّٰهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ وَشَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَكُلَّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ.

तर्जुमाः तमाम तारीफें खास अल्लाह पाक के लिए हैं। हम सब सिर्फ उसी एक की तारीफ करते हैं, उसी से हम मदद चाहते हैं, और उसी से हम अपने गुनाहों की बखशिश मांगते हैं और हम सब उसी पर ईमान रखते हैं और उसी पर हमारा भरोसा है और हम अपने नफ्सों की शरारतों से अल्लाह पाक की पनाह चाहते हैं और अपने बुरे कामों की बुराईयों से भी। यह हकीकत है कि जिसे अल्लाह पाक हिदायते इस्लाम नसीब कर दे, उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, जिसे वो अल्लाह पाक ही इस नेमते अजीम से महरूम फरमा दे, उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो अकेला है, उसका कोई शरीक और साथी नहीं है और मैं यह भी गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे भी हैं और सच्चे रसूल भी हैं। इस हम्दो सलात के बाद (लोगों याद रखो!) बेहतरीन हदीस अल्लाह की किताब कुरआने मजीद है और बेहतरीन तहजीब और जिन्दगी वो है जिसका नमूना अपनी पाक जिन्दगी में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पैश फरमाया है और बदतरीन काम वो है जो इस्लाम के नाम पर रोजाना बनाकर उन पर इस्लाम का टाइटल लगाया जाये, ऐसे सब नये काम बिदअत हैं और बिदआत गुमराही हैं और हर गुमराही का नतीजा दोजख में दाखिल होना है। (1)

---

(1) पहला अरबी खुत्बा पढ़कर आप जो खुत्बा सुनाना चाहते हैं, उसे लफ्ज ''अम्बा बाद'' से शुरू फरमायें, अगर मुनासिब समझें तो इस अरबी खुत्बे का तर्जुमा उर्दू में भी सुना सकते हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

खुत्बा नम्बर 1

अल्लाह पाक के मौजूद होने और सच्चे मज़हब की जरूरत के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝٢١ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۖ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٢٢

(اَلْبَقَرَة ٢)

(सूरह बकरः पारा 1, आयत नं. 22)

अल्लाह तआला की हम्द और उसके प्यारे रसूल हजरत सैयदना मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बेहद और बेअदद दरूदोसलाम के बाद।

मुहतरम भाईयों!

आज का खुत्बा अल्लाह पाक के मौजूद होने और मजहबे हक्का की जरूरत पर है। गौर करने का मकाम है कि कायनात की हर हर चीज किसी ना किसी वजह से कायम है और जिस कद्र भी चीजें दुनिया में नजर आती हैं, उन सबका कोई ना कोई बनाने वाला जरूर होता है। नामुमकिन है कि यह जमीन, यह आसमान, यह सूरज, यह चांद, यह तारे, यह पहाड़, यह दरिया और समन्दर बगैर किसी बनाने वाले के खुद-ब-खुद बन गये हों। जो लोग जर्रा बराबर भी अक्ल रखते हैं उनको मानना ही पड़ेगा कि इस कायनात का कोई ना कोई बनाने वाला जरूर है और वही अल्लाह तबारक वतआला है। यूं तो अक्ल से भी जाहिर है कि इस सारे कारखाना-ए-दुनिया को जरूर कोई ना कोई चलाने वाला, पैदा करने वाला होना ही चाहिए। इसको कोई अल्लाह कहे, कोई ईश्वर कहे, कोई गॉड कहे, बहरहाल वो जरूर है। दुनिया की हर चीज़ उसके मौजूद होने पर एक रोशन

दलील है। कुरआन मजीद एक सच्ची किताब है, इसलिए अल्लाह के वजूद पर कुरआने करीम में ऐसी बहुत सी आयात हैं जिनमें दलाइले कुदरत को खोलकर बयान किया गया है। जैसा कि सूरह गाशिया में फरमाया हैः

أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ (الغاشية ٨٨)

(सूरह गाशियह पारा **30**, आयत **17** से **20**)

जिन लोगों को अल्लाह पाक के वजूद में शक है, वो हैवानात में सिर्फ ऊंट ही को देख ले कि वो कैसा पैदा किया गया है और आसमान को देख लें कि वो किस तरह से बुलन्द किया गया है और पहाड़ों को देख लें कि वो कैसे खड़े किये गये हैं और जमीन को देख लें कि वो किस तरह फैलाई गयी है।

आयात का मतलब साफ है कि हर चीज अल्लाह के वजूदे बरहक को साबित कर रही है। सूरह बकरा की आयात जो आपने खुत्बे में सुनी हैं, उनका तर्जुमा यह हैः

''ऐ लोगों! अपने उस परवरदिगार की इबादत करो, जिसने तुमको और तुमसे पहले के सब लोगों को पैदा किया। ऐसा करने से तुम परहेजगार बन जाओगे। उस अल्लाह को पहचानों जिसने तुम्हारे लिए जमीन को बिछौना और आसमान को छत बनाया और आसमान से पानी बरसाकर उससे फल पैदा कर के तुमको रोजी बख्शी, पस जान लेने के बावजूद तुम अल्लाह पाक के शरीक औरों को मत बनाओ।''

इन आयात में अल्लाह के मौजूद होने के जो दलाइल दिये गये हैं, कोई भी अकलमन्द आदमी गौर करेगा तो उसे मालूम हो जायेगा कि अल्लाह तआला की जानकारी के लिए इससे ज्यादा रोशन दलाइल और मुमकिन नहीं है। इनसे भी ज्यादा कुरआन मजीद में अल्लाह के वजूद पर बतौरे दलील खुद इन्सान को अपना मुतालआ गौर से करने की हिदायत की गयी है, जैसा कि इरशादे बारी हैः

يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ﴿٦﴾ الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾ (الانفطار ٨٢)

(सूरह इनफितार, पारा **30**, आयत नं. 6-8)

तर्जुमाः "ऐ इन्सान! तू अपने करम करने वाले परवरदिगार को क्यों भूल रहा है। वो परवरदिगार जिसने तुझको पैदा किया और बेहतरीन शक्लो सूरत में निहायत ही ऐतदाल के तेरा ढांचा तैयार किया और अपनी मर्जी के मुताबिक कितनी बेहतरीन सूरत तुझे अता की।"

दूसरी आयत में इरशाद हैः

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ (الذاريات ٥١) (सूरह जारियातः, पारा 26, आयत नं. 20)

तर्जुमाः "और जमीन में यकीन करने वालों के लिए (अल्लाह के मौजूद होने की) बहुत सी दलीलें मौजूद हैं।"

وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ (الذاريات ٥١) (सूरह जारियात पारा 26, आयत नं. 21)

तर्जुमाः "और हमारे वजूदे बरहक की दलीलें खुद तुम्हारे नफ्सों के अन्दर मौजूद हैं। क्या तुम गौरो फिक्र से देखते नहीं हो?"

किसी कहने वाले ने सच कहा हैः

हर चीज से है तेरी कारीगरी टपकती।
यह कारखाना तूने कब रायगां बनाया।।

प्यारे भाईयों!

आजकल नई नई चीजें सामने आ रही हैं, यह सब कुदरते इलाही के करिश्में हैं। कुदरत ने इन्सान को ऐसा ऊंचा दिमाग अता फरमाया है कि वो इस दिमाग से काम लेकर तरक्की में कहां से कहां पहुंच रहा है, ऐसा ही होना था जब कि अल्लाह पाक ने इन्सानों के बाबा हजरत आदम अलैहिस्सलाम को जमीन की बादशाहत अता फरमायी तो अल्लाह पाक ने अपने खलीफा को ऐसा दिमाग भी दिया है जो इस उजाड़ बियाबान जमीन को अपनी अक्ले खुदादाद से बाग बना रहा है। और रोज रोज नई चीजें ईजाद करके अपनी बादशाहत के जौहर दिखा रहा है। मगर कितने दिलों के अंधे ऐसे भी दुनिया में मौजूद हैं जो यह सब कुछ देखते हुए भी अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन के वजूद से इनकार करते हैं। अल्लाह पाक ने ऐसे ही लोगों के बारे में फरमाया हैः

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾ (الأعراف ٧)

(सूरह आराफ, पारा 9, आ.179)

तर्जुमाः "हमने कितने जिन्नों और इन्सानों को दोजख के लिए पैदा किया है, जिनके दिल व दिमाग, कान और आंखें सलामत हैं, वो बजाहिर सब कुछ समझते, देखते और सुनते हैं, मगर हकीकत के लिहाज से वो जानवरों से भी बदतर अंधे और बहरे हैं।"

एक जगह इरशादे बारी है:

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَافِلُونَ ﴿٧﴾ (الروم ٣٠)

(सूरह रूम, पारा 21, आ.7)

तर्जुमाः "कितने लोग ऐसे हैं जो दुनिया की चन्द रोज की जिन्दगी में जाहिरी हालत को खूब जानते और पहचानते हैं, मगर अपने आखिरी अंजाम से वो बेखबर हैं।"

वो नहीं सोचते एक दिन इस दुनिया को छोड़कर वो दूसरी दुनिया में चले जायेंगे और उनको इस जिन्दगी के सारे नेक व बदअमलों का नतीजा वहां देखना होगा। अल्लाह पाक के वजूद पर ईमान लाने के साथ मजहब की जरूरत पर यकीन का होना लाजिम है और महजब इसलिए जरूरी है कि इन्सान जिस्मानी तौर पर तमाम हैवानी ताकतों का मजमूआ है। इन ताकतों का इस्तेमाल करने का तरीका एक सही व सच्चा मजहब ही सिखला सकता है। मजहब का मकसद इन्सान का अपने ऊपर अम्बिया किराम की बतलाई हुई पाबन्दियों को लागू कर लेना है। इसलिए मजहब में जिस कद्र सच्चाई होगी, उसकी पाबन्दी करने वाला इन्सान उतना ही सच्चा और अच्छा होगा। और मजहब से इनकार करने वाला गैर-मजहबी की जिन्दगी गुजारने वाला इन्सान ईमान और अच्छे कामों और बेहतरीन अख्लाक से महज कोरा होगा। इसी वास्ते आज गैर-मजहब मुल्कों की

अखलाकी हालत बहुत खराब होती जा रही है, समझदार लोग सब जानते हैं कि मौजूदा गैर मजहबीयत ने इन्सानी मख्लूक को तबाही के गार में धकेलने का खतरनाक काम अंजाम दिया है और अब फिर दोबारा बहुत से समझदार लोगों को मजहब की जरूरत और अहमियत का एहसास हो रहा है।

मुहतरम भाईयों!

अल्लाह पाक ने इन्सान को इन्सान बनाने के लिए अपने नबियों, रसूलों का सिलसिला जारी फरमाया। हजार-हा नबी, रसूल, ऋषि - मुनी दुनिया में आये और अपने अपने वक्तों में उन्होंने इन्सान को अल्लाह के मौजूद होने का पैगाम सुनाया। जिन लोगों ने उनके पैगाम को सुना और कबूल किया, वो मोमिन और मुसलमान कहलाये और अल्लाह की मर्जी के हकदार हुए और जिन लोगों ने उनके पैगाम को कबूल ना किया, वो मरदूद करार पाये और अल्लाह के गजब के हकदार हुए। नबियों, रसूलों और ऋषि-मुनियों की आखिरी कड़ी हजरत मुहम्मर्दुरसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जो सरजमीने अरब के मशहूर तारीखी शहर मक्का में दुनिया की मशहूरतरीन इज्जतदार नस्ल आले इब्राहिम में शदीद जरूरत के वक्त आखिरी नबी व रसूल की हैसियत से कायनात के लिए रहमतुल लिल आलमीन बन कर आये। जिन्होंने खालिके कायनात का अकीदा "रब्बुल आलमीन" कह कर पेश फरमाया। जो एक पाकीजा "हुदल लिलआलमिन" अपने साथ लेकर आये जो दुनिया में कुरआन मजीद, फुरकाने हमीद के नाम से आज भी मौजूद है और जब तक जमीन व आसमान, चांद और सूरज मौजूद हैं, उस वक्त तक इस किताब को इस दुनिया में अपनी बिलकुल उसी हालत में असली शक्लो सूरत में दुनिया में बाकी रहना है। इस किताब के साथ मजहबे इस्लाम को बाकी रहना और मुसलमान कौम को भी बाकी रहना है।

नूरे खुदा है कुफ्र की हरकत पे खन्दाजन
फूंकों से यह चिराग बुझाया ना जायेगा।

गौर करने की जगह है कि इस्लाम से पहले अल्लाह के मानने वाले और ना मानने वाले दोनों किस्म के लोग अल्लाह की जानकारी और अच्छे अखलाक और अदलो इन्साफ से किस कद्र दूर चले गये थे। अल्लाह के मानने वालों ने मजहब के नाम पर दुनिया में लूट खसोट का बाजार गर्म कर रखा था। हर मजहब में एक खासकर्दा आसमानी बादशाहत का खास से खास ठेकेदार बना हुआ था।

बनी नोऐ इन्सानी ऐसे गलत दावा करने वाले लोगों के हाथों तंग आ रही

थी। अगर आप पहली तारीखों में इससे पहले मजहबी दुनिया के हालात का मालूम करेंगे तो आप हैरान हो जायेंगे कि किस तरह से मजहब के नाम पर अंधेरगर्दी मचा रखी थी, कितने ही लोग चांद, सूरज को पूजते, कितने ही दरियाओं को देवता मानते, कितने ही लोग जानवरों के सामने सर झुकाते, जुल्म और बे-इन्साफी का यह हाल था कि इस ज़मीन पर गरीबों, कमजोरों का कोई पुरसान हाल ना था, जिसकी लाठी, उसकी भैंस का कानून हर जगह जारी था, जिनाकारी (बलात्कार), जुआ बाजी, शराबखोरी ऐसे काम थे जिनके करने पर कितने ही बदबख्त फखर व घमण्ड किया करते थे। इन जुर्म करने वालों में मुल्क अरब बहुत आगे था। काबा जो हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने महज तौहीद की बुनियाद पर बनाया था, वो एक अजीम बुतखाना बना हुआ था। जिसमें 360 बुत रखे हुए थे। दुनिया में कोई अच्छी तहजीब और आदिलाना कानूनी हुकूमत नहीं थी, पहले मजाहिब अपनी असली तालीमात को छोड़कर खुराफात का मजमूआ बन कर रह गये थे, पहली आसमानी किताबों बिलकुल रद्दो बदल हो चुकी थी।

इन हालात में जरूरत और बहुत ज्यादा जरूरत थी कि एक ऐसा कामिल व मुकम्मल आखरी मजहब आदम की औलाद को दिया जाये जो पहले के सारे मजहबों की खूबियों का मजमूआ हो, जिसके उसूल व कानून ऐसे हों, जिनमें कयामत तक रद्दो बदल की जरूरत ना हो और एक आखरी रसूल दुनिया में आये जो पूरी इन्सानियत के लिए हर लिहाज से रहमत का बादल हो, जिसके सामने सारी इन्सानियत हो, जो नस्ल और वतन के भेदभाव से अलग होकर कायनात के हर जर्रे से मुहब्बत करता हो, और सारी अल्लाह की बनायी हुई मखलूक को एक नजर से देखता हो। इन सब खूबियों का मजमूआ बन कर और इस्लाम का सच्चा दीन लेकर हजरत सैयदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में तशरीफ लाये और आपने इन्सानियत की डूबती हुई कश्ती को किनारे पर लगा दिया।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ اَلْفَ اَلْفَ مَرَّةٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِى الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَاِيَّاكُمْ بِالْاٰيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ وَاَقُوْلُ قَوْلِىْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللهَ لِىْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

मुहतरम भाईयों!

आओ हम और आप मिलकर वादा करें कि अल्लाह तआला की जानकारी हासिल करने के लिए हर वक्त कोशिश करते रहेंगे और मजहबे हक्क इस्लाम की पाबन्दी करते हुए अपने प्यारे नबी रहमतुल लिल आलमीन की प्यारी जिन्दगी का नमूना बनकर इन्सानियत की रहनुमाई के फर्जो को अंजाम देंगे। अल्लाह पाक हर मुसलमान मर्द-औरत को इस्लाम की बरकतों से मालामाल फरमाये। आमीन सुम्मा आमीन!

हजरात!

आखिर में हम आपको अल्लाह तआला की जानकारी से दीन व दुनिया की बेहतरीन खूबियों पर एक ऐसा खुत्बा-ए-नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुनाते हैं जो इस काबिल है कि लौहे दिल पर नक्श कर लें और हर वक्त याद रखें और अमल करने के लिए उसे गले का हार बना लें। हजरत असमा बिन्ते उमेस रजि. रिवायत करती हैं कि एक दिन मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आपके अल्फाजे मुबारका यह थे-

يَقُوْلُ بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ تَخَيَّلَ وَاخْتَالَ وَنَسِيَ الْكَبِيْرَ الْمُتَعَالَ، بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ تَجَبَّرَ وَاعْتَدٰى وَنَسِيَ الْجَبَّارَ الْاَعْلٰى، بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ عَتَا وَطَغٰى وَنَسِيَ الْمُبْتَدَأَ وَالْمُنْتَهٰى، بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ يَخْتِلُ الدُّنْيَا بِالدِّيْنِ، بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ سَهَا وَلَهٰى وَنَسِيَ الْمَقَابِرَ وَالْبِلٰى، بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ يَخْتِلُ الدِّيْنَ بِالشُّبُهَاتِ، بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ طَمَعٌ يَقُوْدُهٗ، بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ هَوًى يُضِلُّهٗ، بِئْسَ الْعَبْدُ عَبْدٌ رَغَبٌ يُذِلُّهٗ۔ (ترمذی شریف)(۱)

1. तिर्मिजी मय तुहफा 3/302 हदीस नं. 2549, तिर्मिजी कहते हैं : हाजाअल हदीस ला नअयफहा इल्ला मिन हाजाअल वजअ व लय-स इसनाद बिलकुवा। इस हदीस को हम सिर्फ इसी सनद से जानते हैं और सनदें गैर कवी (मजबूत नहीं) है।

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वो बन्दा बहुत बुरा है जो अपने आपको दूसरों से बेहतर समझे और घमण्ड में हर वक्त मस्त रहे, और सबसे ज्यादा बड़ाई वाले अल्लाह पाक को भूल जाये, वो बन्दा बहुत ही बुरा बन्दा है जो जुल्म और ज्यादती करे और बुलन्दो बाला अल्लाह को जो सब को नीचा दिखला देने वाला और सबके ऊपर गालिब है, उसे वो भूल जाये, वो बन्दा बहुत ही बुरा बन्दा है जो झगड़ा व तुगयानी, सरकशी करे और अपने शुरूआती अंजाम यानी पैदाईश और मौत को भूल जाये, वो बन्दा भी हकीकत में बहुत बुरा है जो अपने दीन ईमान को शक व शुब्हात की भेंट चढ़ा दे (जैसा कि आजकल ज्यादा तालीम हासिल करे हुए लोगों का हाल है, इल्ला माशा अल्लाह), वो बन्दा भी वाकई गन्दा (बहुत ही बुरा बन्दा) है जो लालच के हाथों बिक जाये, वो बन्दा भी बहुत ही गन्दा है जिसे उसके नफ्स की ख्वाहिशात गुमराह करती फिरें और वो बन्दा भी दरअसल बदतरीन बन्दा है जो दूसरों के सामने जलील होता फिरे, महज इस ख्याल से कि शायद इन दूसरों से उसे कुछ फायदा हासिल हो जाये।

बुजुर्गो अजीजों!

अल्लाह पाक और उसके सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह बातें इस काबिल हैं कि आप बार बार पढ़ा करें, बल्कि उनको जुबानी याद कर लें और फिर उनकी रोशनी में ईमानो अमल व अखलाक पैदा करके अपनी दीन व दुनिया को सुधारें। आओ! आखिर में हम अल्लाह पाक से हर मुसलमान बल्कि हर इन्सान की खैरख्वाही व भलाई की दुआ करें

بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ـ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ـ

खुत्बा नम्बर 2

खुत्बा-ए-दोयम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ وَصَلِّ عَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَالْمَلٰٓئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَالْخُلَفَآءِ الرَّاشِدِيْنَ خُصُوْصًا عَلٰى اَفْضَلِ الصَّحَابَةِ وَاَوَّلِهِمْ بِالتَّصْدِيْقِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَبِيْ بَكْرِنِ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ وَعَلٰى مُزَيِّنِ الْمِنْبَرِ وَالْمِحْرَابِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عُمَرَ ابْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ وَعَلٰى كَامِلِ الْحَيَاءِ وَالْاِيْمَانِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ وَعَلٰى اَسَدِ اللّٰهِ الْغَالِبِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيِّ ابْنِ اَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ وَعَلَى الْاِمَامَيْنِ الْهُمَامَيْنِ

السَّعِيدَيْنِ الشَّهِيدَيْنِ اَبِي مُحَمَّدِنِ الْحَسَنِ وَاَبِي عَبْدِ اللّٰهِ الْحُسَيْنِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا وَعَلٰى اُمِّهِمَا سَيِّدَةِ النِّسَآءِ فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا وَعَلٰى عَمَّيْهِ الْمُكَرَّمَيْنِ بَيْنَ النَّاسِ سَيِّدِ الشُّهَدَآءِ اَبِي عُمَارَةَ الْحَمْزَةِ وَاَبِي الْفَضْلِ الْعَبَّاسِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا وَعَلَى السُّنَّةِ الْبَاقِيَةِ مِنَ الْعَشَرَةِ الْمُبَشَّرَةِ وَعَلٰى سَائِرِ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالتَّابِعِيْنَ الْاَبْرَارِ وَالْاَخْيَارِ اِلٰى يَوْمِ الْقَرَارِ رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ۔ اَللّٰهُمَّ اكْتُبِ السَّتْرَ وَالسَّلَامَةَ وَالْعَافِيَةَ عَلَيْنَا وَعَلٰى عَبِيْدِكَ الْحُجَّاجِ وَالْغُزَاةِ وَالْمُسَافِرِيْنَ فِيْ بَرِّكَ وَبَحْرِكَ مِنْ اُمَّةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ ﷺ وَاغْفِرِ اللّٰهُمَّ لِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ۔ اَللّٰهُمَّ انْصُرْ مَنْ نَصَرَ دِيْنَ مُحَمَّدٍ ﷺ وَاجْعَلْنَا مِنْهُمْ وَاخْذُلْ مَنْ اَعْرَضَ عَنْ دِيْنِ مُحَمَّدٍ ﷺ وَلَا تَجْعَلْنَا مِنْهُمْ آمِيْنَ۔ عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ۔ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ۔ اُذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ تَعَالٰى اَعْلٰى وَاَوْلٰى وَاَعَزُّ وَاَكْبَرُ۔

अल्हम्दु लिल्लाहि नह-मदुहू व नसतईनुहू व नस्तगफिरुहू व नुअमिनु बिहि व न-त वक्कलु अलैहि व नऊज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अनफुसिना व मिन सय्यिआ-ति आमालिना मय्यहदिहिल्लाहु फला मुदिल-ल-लहु वमय्युदलिलहू फला हादि-य लहू

व-नशहदु अल्ला इलाह इल्ललाहु वह-दहू ला शरी-क लहू व-नश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व-रसूलुहू अम्मा बअद! अऊजु बिल्लिहि मिनश्शयतानिर्रजीम. बिस्मिल्लिाहिर्रहमानिर्रहीम इन्-नल्लाहा व-मलाइ-क-त-हू य-सल्लू-न अलन-नबी या-अय्युहल लजीना आ-मनू सल्लू अलैहि व-सल-लिमू तसलीमा. अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव्-व अला आलि मुहम्ददिन कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद. व-सल्लि अला जामीइल अम्बिया वल मुरसलीन वल मलाइ -कतिहिल मुकर्रबीन वल खुलफाइर्राशिदीन खुसूसन अला अफजलिस सहाबति व अव्वलिहिम बित-तसदीकि अमीरिल मुअमिनी-न अबी-बक्र सिद्दीक रजि. व अला मुजय्यिनिल-मिम्बरि वल-मिहराबि अमीरिल मुअमिनी-न उमर इब्ने खत्ताब रजि. व-अला कामिलिल हयाई वल-ईमानि अमीरिल मुअमिनी-न उस्मान इब्ने अफ्फान रजि. व-अला अ-स-दिल्लाहि ल-गालिबि अमीरिल मुअमिनी-न अली इब्ने अबी तालिब रजि. व-अलल इमा-मनि ल-हुमामैनि स-सय्यिदैनिश शहीदैनि अबी-मुहम्मदीनिल ह-स-नि व-अबी अब्दिल्लाहिल-हुसैनि रजि. अन्हुमा व-अला उम्मिहिमा सय्यिदतिन निसाई फातिमतज जह-राई रजि. अन्हा व-अला अम्मैहिल मुकर्रबी-न बैनन्नासि सय्यिदिश शुहदाई अबी अम्मारा-तल-हम्जह व-अबिल फदलिल-अब्बास रजि. अन्हुमा व-अलस सन-नतिल बाकिया मिनल अशरतिल मुबश्शरा व-अला सायिरिल मुहाजिरि-न वल-अनसार वत्ताबिईन ल-अबरार वल-अखयार इला यवमिल करार रिदवानुल्लाहि तआला अलैहि अजमईन. अल्लाहुम्मकतु बिस्सता-रह वस्सलाम-त वल-आफिय-त अलैना व-अला अबीदि-कलहुज्जाज वल-गुजात वल-मुसाफिरी-न फी-बर्रि-क व-बहरि-क मिन उम्मति सय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वगफिर अल्लाहुम्मा लि-जमीइल मुअमिनी-न वल-मुमिनाति वल-मुस्लिमी-न वल-मुस्लिमातिल-अहयाइ मिन-हुम वल-अमवात. अल्लाहुम्मन-सुर मन न-स-रा दी-न मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वज-अलना मिनहुम वखजुल मन अ-अ-र-द अन दीनि मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वला तज-अलना मिन-हुम आमीन. इबादल्लाहि रहि-मकुमुल्लाहु इन्नल्लाह या-मुरू बिल-अदलि व-इहसानि व-ईतायि जिल-कुरबा व-यनहा अनिल फहशाइ वल-मुनकरि वल-बगयि यइजुकुम ल-अल्लकुम त-जक-करून. उज्कुरुल्ला-ह यज्कुरु-कुम वदऊहु यसतजिब लकुम व-लजिकरुल्लाहि तआला आला व-अवला व-अ अज्जु व-अकबर.

(यह खुत्बा पढ़ने के बाद नमाजे जुमा की जमाअत शुरू होनी चाहिए।)

खुत्बा नम्बर 2

तौहीद और सुन्नत के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾ (الانبياء ٢١)

وَقَالَ فِيْ آيَةٍ: قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ (آل عمران ٣)

(सूरह अम्बिया: 25, पारा 17; सूरह आले इमरान: 32, पारा 3)

तमाम तारीफें तमाम खूबियां, बड़ाईयां उस अल्लाह पाक के वास्ते जेबा और सजावार हैं जो सारी कायनात का पालनहार, बहुत ही बख्शने वाला, बहुत ही बड़ा मेहरबान है, हजार-हजार दरूदो सलाम उस अजीमे रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जिसकी पाकीजा तालीमात ने इन्सानियत ही को नहीं, बल्कि सारी कायनात को जिन्दगी का नया पैगाम दिया, जो जीनत-ए-कायनात बनकर दुनिया में तशरीफ लाये, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

मुसलमान भाईयों!

आज का खुत्बा तौहीद और सुन्नत पर है। तौहीद के शरई माना/मआनी अल्लाह पाक को सिर्फ एक ही जानना, उसी को माबूदे बरहक मानना जैसा कि सूरह इख्लास में फरमाया है: ''कुल हुवल्लाहु अहद'' यानी ऐ रसूल लोगों को सुना दो अल्लाह एक है। उसका कोई साथी या नजीर या शरीक कोई दूसरा नहीं, ''अल्लाहुस्समद'' अल्लाह बिलकुल बेनियाज है, बेपरवाह है, उसे किसी की जरूरत नहीं, सब उसी के मोहताज हैं। ''लम यलिद व-लम यूलद वलम यकुल्लहू कुफुवन अहद'' उस अल्लाह ने किसी को नहीं जना और ना वो किसी से जना गया है, उसके बराबर का कोई भी नहीं।

अकीदा-ए-तौहीद के थोड़े बयान में सूरह इख्लास बड़ी अहम सूरह है, इसमें उन सारे मुश्रिकीन की रद्द है जो अल्लाह पाक के साथ दूसरे झूठे माबूदों को शरीक ठहराते हैं। उनकी भी रद्द है जो नूर और अंधेरे के दो अलग अलग खुदाओं के कायल हैं, जैसा कि मजूसियों (आग की पूजा करने वाले) का अकीदा है, और उनकी भी रद्द है जो हर कंकर को शंकर जानते हैं और उनकी रद्द भी है जो अल्लाह के लिए बीवी और बेटे का अकीदा रखते हैं, जैसा कि ईसाईयों का ख्याल है और उनका रद्द भी है, जिन्होंने बुजुर्गो और वलियों को उलूहियत (खुदाई) का दर्जा दे रखा है और उनकी कब्रों को सज्दागाह बना लिया है। मुश्रिकीने मक्का ने आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया था कि आप उनके सामने अल्लाह पाक की खूबियां बयान करें, इस पर यह सूरह शरीफ उतरी। (मुस्नद अहमद)

कुरआन मजीद की बहुत सी और भी आयात हैं, तौहीद का बयान और शिर्क की तरदीद आयी है। एक जगह फरमाया:

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰـهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾

(النحل ١٦)

(सूरह नहलः 51, पारा 14)

यानी अल्लाह ने फरमाया कि दो खुदा ना ठहराओ, अल्लाह तो एक ही है। सिर्फ वही माबूदे बरहक है, पस तुम मुझ अल्लाह ही से डरो।
किसी अरबी शायर ने कहा है:

فِيْ كُلِّ شَيْءٍ لَهٗ اٰيَةٌ   تَدُلُّ عَلٰى اَنَّهٗ وَاحِدٌ

यानी कायनात की हर चीज इस बात की दलील है कि वो अल्लाह तआला एक ही है।

एक जगह अल्लाह ने फरमाया:

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا (الانبياء ٢١)

(अल-अन्बियाः 22, पारा 17)

जिसका मतलब यह है कि अल्लाह के सिवा अगर जमीन व आसमान में कोई और भी होता तो यह दोनों तबाह व बर्बाद हो जाते।

पस तौहीद इस्लाम का वो बुनियादी अकीदा है जिस पर इस्लाम को नाज है, मगर आज बहुत से मुसलमान भाई इस्लामी तौहीद की हकीकत से अन्जान हैं। लिहाजा हर मुसलमान को याद रखना चाहिए कि तौहीद की दो किस्में हैं। एक तौहीदे रुबूबियत है, यानी खालिक मालिक की हैसियत से अल्लाह पाक को एक मानना। यह वो तौहीद है जिसे आम तौर पर अल्लाह को मानने वाली तमाम कौमें मानती हैं, मुश्रिकीने मक्का भी इस तौहीद को मानते थे, जैसा कि कुरआन मजीद में बहुत से मकामात पर बयान किया गया है। एक आयत में इरशाद है:

قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾ (المؤمنون ٢٣)

(सूरह मोमिनूनः 88-89, पारा 18)

ऐ नबी! इन मुश्रिकों से पूछो कि वो कौन है जिसके हाथ में हर एक का इख्तेयार है और वो दूसरों के पकड़े हुवों को पनाह दे सकता है, मगर उसके पकड़े हुए को कोई पनाह नहीं दे सकता। बतलाओ, अगर तुम जानते हो। यह सुनकर वो फौरन कह उठेंगे कि ऐसे इख्तेयारात तो सिर्फ अल्लाह ही के वास्ते हैं। ऐ रसूल! तुम उनसे कहो कि जब यह हकीकत तुम भी मानते हो तो तुम्हारी अक्ल कहां मारी जाती है कि उसके साथ तुम दूसरे झूठे माबूदों की इबादत व बन्दगी करने लग जाते हो।''

मुहतरम भाईयों!

यह तौहीदे रुबूबियत है जिसके मानने से मुश्रिकों और काफिरों को भी इनकार ना था, मगर दूसरी तौहीद जिसका नाम ''तौहीदे उलूहियत'' है उसको मानने से मुश्रिकीन ने हमेशा इनकार किया है।

इस तौहीद का मतलब यह है कि इबादत, बन्दगी, जिस-जिस तौर भी होती है, उन सबका खालिस एक अल्लाह पाक ही को हकदार जानना और इलाह यानी माबूद की हैसियत से अल्लाह पाक को सिर्फ एक मानना और इबादत की जितनी भी किस्में हैं, उन सबको खालिस एक अल्लाह के लिए करना। इन्ही मायनों के लिहाज से अल्लाह को लफ्ज ''इलाह'' से याद किया गया है। जैसा कि कलिमा-ए-तैय्यबा ''ला इला-ह इल्लल्लाहु'' से जाहिर है। यही तौहीदे उलूहियत

थी, जिसे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुश्रिकीने मक्का के सामने पे । फरमाया, आपकी दावत थी

"يَاأَيُّهَا النَّاسُ قُولُوا لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاتْرُكُوا اللَّاتَ وَالْعُزّٰى تُفْلِحُونَ۔"

ऐ लोगों! कलिमा तैय्यबा "ला इला-ह इल्लल्लाहु" कहो, यानी अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अपने बनाये हुए झूठे माबूदों लात और उज्जा को छोड़ दो, तुम कामयाब हो जाओगे।

लात और उज्जा मुश्रिकीने मक्का के दो बड़े बुत थे, जिनकी आमतौर पर सब ही पूजा करते थे। आपने खुल कर उनके खिलाफ जिहाद फरमाया। मक्का वालों ने इसी दावत के जवाब में कहा कि:

أَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ إِلٰهًا وَّاحِدًا ۖ إِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ۝ (ص ٣٨)

(सूरह सादः 5, पारा 23)

"यह कैसा रसूल है जिसने सारे माबूदों को खत्म करके एक ही माबूद का अकीदा पेश कर दिया। यह तो बहुत ही अजीबो-गरीब बात है।"

बहुत कुछ समझाने के बादवजूद मुश्रिकीने मक्का को यह दावत पसन्द ना आयी और हर तरह से मुकाबला किया... मगर अल्लाह को मंजूर था कि खाना-ए-काबा को बुतों से पाक किया जाये। आखिर अल्लाह का फैसला जारी हुआ और मुश्रिकीने मक्का बुरी तरह नाकाम हुए और एक दिन आया कि खाना-ए-काबा झूठे खुदाओं से पाक व साफ हो गया।

हमारे महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले भी जिस कद्र अम्बिया और रसूल दुनिया में आये, सब ही ने दावते तौहीद को पेश किया है। बुतपरस्ती के खिलाफ सबने आवाज बुलन्द की है। चुनांचे पहले जिस कद्र भी रसूल भेजे हैं, सबको इसी दावत के लिए हुक्म फरमाया कि वो लोगों को यह पैगाम पहुंचा दें कि मेरे सिवा कोई 'इलाह" माबूद नहीं है, पस खालिस मेरी ही इबादत करो।

हजरात!

इस हकीकत को खूब जहन में बिठा लीजिए कि कुरआन व हदीस में लफ्ज तौहीद से खालिस तौहीदे उलूहियत ही मुराद है, जिसका मतलब फिर समझ लीजिए कि इबादत जुबानी हो या जिस्मानी या माली या जानी सबका हकदार

सिर्फ अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन है। इसमें जिसने किसी और जिन्दा या मुर्दा, कब्र या बुत, इन्सान या फरिश्ते, किसी भी चीज को अल्लाह का शरीक ठहराया वो मुश्रिक है और तौहीद के मुकाबले पर शिर्क ऐसा गुनाह है जिस पर मरने वाले की अल्लाह तआला के यहां हरगिज बख्शिश नहीं है। अल्लाह पाक ने मुश्रिकीन पर जन्नत को हमेशा के लिए हराम कर दिया है। जैसा कि इरशादे बारी तआला है:

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۭ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۱۱۶﴾ (النساء ۴)

(सूरह निसा: 116, पारा 5)

तर्जुमा: बेशक अल्लाह पाक हरगिज नहीं बख्शेगा, उस गुनाह को कि अल्लाह की इबादत में किसी और को भी शरीक किया जाये और शिर्क के अलावा जो भी गुनाह हो वो चाहे तो उसे बख्श देगा। और जिसने अल्लाह की इबादत में किसी गैर को शरीक किया वो सीधी राह से बहुत दूर हो गया।

बुतों के अलावा कब्रों, मजारों, झण्डों वगैरह के पूजने वाले भी इसी हुक्म में दाखिल हैं।

मुहतरम भाईयों!

जो नावाकिफ मुसलमान कब्रों, मजारों, ताजियों, झण्डों और चिल्लों वगैरह-वगैरह की नजरो-नियाज करते हैं और उन पर चढ़ावे चढ़ाते हैं, उनको सज्दा करते हैं, उनको अल्लाह से डरना चाहिए। ऐसा ना हो कि कयामत के दिन उनका भी हश्र बुतपरस्तों के साथ हो। अल्लाह पाक हर मुसलमान को शिर्क से महफूज रखे। आमीन!

इस सिलसिले में एक खुत्बा-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निहायत ही ध्यान से सुनने और याद रखने के काबिल है। मिशकात बाबुल कबाइर में हजरत जाबिर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

ثِنْتَانِ مُوْجِبَتَانِ قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مَا الْمُوْجِبَتَانِ؟ قَالَ مَنْ مَاتَ يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا دَخَلَ النَّارَ وَمَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ ... (مسلم الایمان135)

(मुस्लिम- किताबुल ईमान 135)

यानी "दो चीजें हैं जो दो चीजों को वाजिब करने वाली हैं। एक आदमी बोला कि ऐ रसूलुल्लाह! वो दो चीजें क्या हैं जो दो चीजों को जरूरी करने वाली हैं? फरमाया कि जो अल्लाह के साथ किसी और को भी शरीक करता हुआ मर गया वो दोजख में दाखिल हो गया और जो मरा इस हाल में कि उसने अल्लाह के साथ किसी और को शरीक नहीं किया, वो खालिस तौहीद की हालत में मरा, यकीनन वो जन्नत में दाखिल हुआ।"

मुअज्जज हाजरीन!

अब तक जो कुछ आपने सुना है, यह कलिमा-ए-तैयबा "ला इला-हा इल्लल्लाहु" की थोड़ी सी तफसीर है। कलिमा-तैयबा का दूसरा हिस्सा "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" है जिसके मायने यह हैं कि हजरत मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। आपकी इताअत फरमांबरदारी करना और हर हाल में आपका ताबेदार बनकर रहना ही हर इन्सान के लिए जरूरी है। यही वो प्यारा लफ्ज है जिसे "इत्तेबाअ-ए-सुन्नत" कहा जाता है।

खुत्बा के उनवान की दूसरी आयत का यही मतलब है। जिसमें अल्लाह तआला ने फरमाया कि "ऐ रसूल! आप लोगों से कह दो कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करना चाहते हो तो मेरे (दीने फितरत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के) सच्चे ताबेदार बन जाओ। ऐसा करने से अल्लाह भी तुमको अपना महबूब बना लेगा, बल्कि तुम्हारी और लगजिशों को वो माफ भी कर देगा। वो अल्लाह बड़ा बख्शने वाला, मेहरबान है। ऐ रसूल! आप कह दीजिए कि अल्लाह और उसके रसूल की फरमांबरदारी करो। फिर अगर यह (मक्का वाले) मुंह मोड़ें तो सुन लें कि अल्लाह पाक भी मुंह मोड़ने वालों को दोस्त नहीं रखता।"

मौलाना मुस्लिम रहि. ने सच फरमाया है:

"मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क
जन्नतुल फिरदौस को सीधी गई है यह सड़क"

हजरात!

जैसे तौहीद के मुकाबले पर लफ्ज "शिर्क" है, उसी तरह सुन्नत के मुकाबले पर लफ्ज "बिदअत" है। जिसका मफहूम यह है कि दीन के नाम पर कोई ऐसा गलत काम निकाला जाये, जिसका कुरआन व हदीस व दौरे सहाबा व ताबेईन से कोई सबूत ना हो, वो काम शरई बोलचाल में "बिदअत" कहलाता है।

आजकल नावाकिफ मुसलमानों में बहुत से ऐसे रिवाज पाये गये हैं जिनका खैरुल कुरून यानी जमाना-ए-रिसालत व अहदे सहाबा व ताबेईन में कोई सबूत नहीं है, जैसे कब्रों पर उर्स करना, उन पर गिलाफ डालना, फूल डालना, फूल चढ़ाना, कव्वाली करना, उन पर आलीशान इमारत बनाना, महफिले मीलाद मुरव्वज करना, तीजा, फातिहा, चिहलम के नाम से मुरासिम करना, मुहर्रम में ताजियादारी करना वो काम हैं जिनको ना हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. ने किया, ना हजरत उमर फारूक रजि. ने किया और ना सहाबा किराम ने, ना बुजुर्गों से उनका सबूत है। ना इमाम अबू हनीफा से, ना पीराने पीर शैख अब्दुल कादिर जीलानी से, अलगर्ज किसी भी बुजुर्ग से इन कामों का सबूत नहीं है। इसी लिए यह सारे खिलाफे शरीअत काम बिदअत हैं और बिदअत वो गुनाह है जिसका करना गोया रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बगावत करना है।

सुन्नी खुशनसीब को बाग व बहार है
बद-बख्त बिदअती को जहन्नम की मार है।

हजरात!

इस सिलसिले में बहुत से खुत्बाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हदीसों में मौजूद हैं, हम इख्तेसार के पेशे नजर सिर्फ चन्द पाकीजा खुत्बात आपके सामने पेश करते हैं।

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ فِيْ خُطْبَتِهٖ، يَحْمَدُ اللهَ وَيُثْنِيْ عَلَيْهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهٗ ثُمَّ يَقُوْلُ مَنْ يَّهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ اِنَّ اَصْدَقَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللهِ وَاَحْسَنَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ وَّشَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَكُلَّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ، ثُمَّ يَقُوْلُ بُعِثْتُ اَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ وَكَانَ اِذَا ذَكَرَ السَّاعَةَ اِحْمَرَّتْ وَجْنَتَاهُ وَعَلَا صَوْتُهٗ وَاشْتَدَّ غَضَبُهٗ كَاَنَّهٗ نَذِيْرُ جَيْشٍ يَقُوْلُ صَبَّحَكُمْ وَمَسَّاكُمْ مَنْ تَرَكَ دَيْنًا اَوْ ضَيَاعًا فَاِلَيَّ وَعَلَيَّ وَأَنَا اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ۔ (رواه النسائی)

तर्जुमाः सहाबी-ए-रसूल हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब भी खुत्बा पढ़ते, शुरू में अल्लाह पाक की बेहतरीन हम्दो सना बयान फरमाते, जो उसकी शान के लायक है। फिर फरमाते, जिसे अल्लाह पाक हिदायत नसीब करे, उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं और जिसे अल्लाह पाक गुमराह कर दे, उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं और सबसे ज्यादा सच्ची किताब अल्लाह की किताब कुरआन मजीद है और सबसे बेहतरीन तौर-तरीका चाल-चलन और तहजीब वो है जो हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह ने अपनी जिन्दगी में अपने अख्लाको अमल से पेश फरमायी तमाम गुनाहों में बदतरीन गुनाह वो काम है जो शरीअत में अपनी तरफ से शामिल किया जाये, ऐसे सारे काम बिदअत हैं और हर बिदअत गुमराही है, और हर गुमराही का अंजाम दोजख है। फिर आप फरमाते कि मैं और कयामत इस तरह करीब-करीब भेजे गये हैं, जैसे कलिमा की अंगुली और दरमियानी अंगुली करीब होती है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर दो अंगुलियों को मिलाकर दिखाते। फिर आप कयामत का जिक्र फरमाते हुए गुस्से में आ जाते, यहां तक कि चेहरा-मुबारक लाल हो जाता, आवाज बुलन्द हो जाती, गुस्सा बढ़ जाता, जैसे कि किसी दुश्मन की फौज के हमलों से डराने वाले हैं और कह रहे हैं कि वो फौज सुबह या शाम बहुत जल्द तुम पर हमला करने वाली है।''

फिर आखिर खुत्बे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते, जो मुसलमान मरे और कुछ माल छोड़ जाये वो सारा माल उसके वारिसों का है और अगर वो कर्ज या बाल-बच्चे छोड़ जाये तो उसका कर्ज का अदा करना मेरे जिम्मे है।''

एक खुत्बे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

تَرَكْتُ فِيْكُمْ اَمْرَيْنِ لَنْ تَضِلُّوْا مَا تَمَسَّكْتُمْ بِهِمَا كِتَابُ اللّٰهِ وَسُنَّتِيْ۔ (حاکم)

तर्जुमाः मैं तुम में दो चीजें छोड़े जा रहा हूँ, जब तक तुम इन दोनों को मजबूती से पकड़े रहोगे, हरगिज गुमराह ना होगे, एक अल्लाह की किताब कुरआन मजीद और दूसरी मेरी सुन्नत (हदीस) है।''

एक और खुत्बे में आपका इरशादे गरामी यह थाः

مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِيْ عِنْدَ فَسَادِ اُمَّتِيْ فَلَهٗ اَجْرُ مِائَةِ شَهِيْدٍ۔ (بیہقی)

तर्जुमाः मेरी उम्मत के बिगड़ जाने और मेरी सुन्नत से दूर हो जाने के वक्त जो मुसलमान मेरी सुन्नत को मजबूती से पकड़ेगा, उसे सौ शहीदों का सवाब मिलेगा।''

यह इसलिए कि शहीद एक ही दफा अल्लाह की राह में अपनी जिन्दगी खत्म कर देता है और सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अमल करने वाले सारी जिन्दगी दुश्मनों से सुन्नत के ताने सुन-सुन कर तकलीफ उठाते रहते हैं। इसलिए उनको सवाब सौ शहीदों के सवाब तक मिल सकता है। सुन्नते रसूल पर अमल करने वालों को यह खुशखबरी-ए-नबवी मुबारक हो, आप फरमाते हैं:

مَنْ اَحَبَّ سُنَّتِیْ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ وَمَنْ اَحَبَّنِیْ كَانَ مَعِیَ فِی الْجَنَّةِ۔ (ترمذی)

तर्जुमाः जिसने मेरी सुन्नत को दोस्त रखा, उसने गोया मुझे दोस्त रखा और जिसने मुझको दोस्त रखा, वो जन्नत में मेरे साथ होगा।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और जामेअ खुत्बा सुन लीजिए। आपने फरमायाः

مَنْ اَحْیَا سُنَّةً مِّنْ سُنَّتِیْ اُمِیْتَتْ بَعْدِیْ كَانَ لَهٗ مِنَ الْاَجْرِ مِثْلُ
مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ غَیْرِ اَنْ یَّنْقُصَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَیْئًا وَمَنِ ابْتَدَعَ بِدْعَةً
ضَلَالَةً لَا یَرْضَاهَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ كَانَ عَلَیْهِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ عَمِلَ بِهَا لَا
یَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ اَوْزَارِ النَّاسِ شَیْئًا۔ (ترمذی، ابن ماجه)

तर्जुमाः जिसने मेरी किसी ऐसी सुन्नत को जिन्दा किया जो मेरे बाद लोगों के छोड़ने की वजह से मुर्दा हो चुकी थी, तो इस सुन्नत पर बाद में जितने भी लोग अमल करेंगे, उन सबके सवाब के बराबर उस जिन्दा करने वाले को भी सवाब मिलता रहेगा, बगैर इसके कि उनके सवाब में कमी हो और जिसने कोई गुमराही करने वाली बिदअत निकाली तो फिर जितने भी लोग बाद में इस बिदअत पर अमल करेंगे, उन सबका गुनाह उस बिदअत के निकालने वाले की गर्दन पर रखा जायेगा, बगैर इसके कि इन बिदअत पर अमल करने वालों के गुनाहों में कमी हो।

सच है

सुन्नी खुशनसीब को बाग व बहार है
बदबख़्त बिदअती को जहन्नम की मार है

हजरात!

आज इस नाजुक दौर में इस्लाम बराये नाम बाकी रह गया है। ज्यादातर इस्लाम का दावा करने वाले सुन्नते रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गाफिल होकर बिदआत के फिदायी हो गये हैं। अल्लाह की मुहब्बत और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत बराये नाम बाकी रह गयी है। शादी ब्याह मौत व गमी की रस्में इस कद्र निकाल ली गयी हैं कि सुन्नते नबवी को बिलकुल भुला दिया गया है। शक्लो सूरत में, लिबास में, चाल-चलन में, तौर तरीकों में अमूमन मुलसमान अपने पाकीजा इस्लाम की हिदायतों से बहुत दूर जा रहे हैं। लिहाजा जरूरत है कि बिदअतों से बचकर सुन्नते रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अमल किया जाये। कुरआन व हदीस मजबूती से पकड़ा जाये, हर किस्म की बिदअत व खुराफात से बचा जाये, इसके बगैर मुसलमानों का सोया हुआ नसीब जागना मुश्किल है।

या अल्लाह! मुसलमानों को नेक समझ अता फरमा और बिदअत और सुन्नत में फर्क करने और सुन्नत को लाजिम पकड़ने और बिदअत से दूर रहने की तौफीक बख़्श दे।

या अल्लाह! कयामत के दिन सारे मुसलमानों को अपने प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झण्डे के नीचे जमा फरमा और हौजे-कौसर पर आपके हाथों से जामे-कौसर नसीब फरमा। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ وَلِسَائِرِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُسْلِمِیْنَ اَنَّهٗ تَعَالٰی جَوَّادٌ مَلِكٌ بَرٌّ رَّؤُفٌ رَّحِیْمٌ۔ وَالسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ۔

(अब थोड़ी देर बैठकर दूसरा खुत्बा पढ़ें जो सफा 35 पर मौजूद है।)

खुत्बा नम्बर 3

अरकाने ईमान का बयान

(ईमान के रुकनों का बयान)

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالْعَصْرِ ۝١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا

بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣ (العصر ١٠٣)

(सूरह असर, पारा 30)

हकीकत में सारी तारीफें उस अल्लाह के वास्ते खास हैं जो मख्लूकात को पैदा करने वाला है, फिर सबको उनका वक्त आ जाने पर मार देने वाला है, जिसने हमारी हिदायत के लिए आखिरी जमाने में फख्रे आलम हजरते मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूले बरहक बनाकर पैदा फरमाया। अल्लाह पाक अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हमारी तरफ से हजार-हजार दरूदो सलाम नाजिल फरमाये। आमीन!

बुजुर्गो अजीजों!

आज का खुत्बा अरकाने ईमान पर है। ईमान इतना प्यारा लफ्ज है कि हर मजहब व मिल्लत का आदमी इसे दिलो जान से प्यारा जानता है। खासकर मुसलमानों को यहां यह लफ्ज बहुत ही प्यारा है, मगर बहुत कम लोग इसकी हकीकत से जानकार हैं। पस याद रखना चाहिए कि आम बोल-चाल में ईमान यकीन के मायने में बोला जाता है। शरीअत में अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल. ने जो कुछ फरमाया है, उसकी सच्चाई का जुबान से इकरार करना और दिल में भी उसको सच्चा जानना और उसके मुताबिक अमल करना है। ईमाने कामिल के लिए इन तीनों का होना जरूरी है, सिर्फ जुबान से कहना और दिल में सच ना जानना इसका नाम शरीअत में निफाक है, ऐसे ही अमल में लाना भी जरूरी शर्त है।

उनवाने खुत्बा में जो सूरह शरीफा आपको सुनायी गयी है, अल्लाह पाक ने

उसमें जमाने की कसम खाकर बताया है कि इन्सान सरासर नुकसान में है। मगर वो लोग इस नुकसान से बच सकते हैं जो ईमान ले आये और नेक अमल करें और हक व सच्चाई पर कायम रहने की एक-दूसरे को वसीयत करते रहा करें और दुनियावी आफतों पर सब्र के लिए भी एक-दूसरे को वसीयत करना ना भूलें। यहां इन्सानी कामयाबी के लिए सबसे पहली चीज ईमान ही को करार दिया गया है, मगर इसके साथ अच्छे कामों की भी बहुत ज्यादा जरूरत है, वरना महज ईमान बेकार होगा।

हजरात!

ईमान के अरकान क्या-क्या हैं, इस बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत से खुत्बात मनकूल हैं। कुरआन मजीद का तो जिक्र क्या है, जिसमें बहुत सी आयात में ईमान वालों की खूबियां बतलाई गई हैं। एक जामेअ खुत्बा-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके सामने पेश किया जाता है। जिससे इस्लाम और ईमान के अरकान मालूम हो सकेंगे।

عَنْ عُمَرَ بْنِ خَطَّابٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ اِذْ طَلَعَ عَلَيْنَا رَجُلٌ شَدِيْدُ بَيَاضِ الثِّيَابِ شَدِيْدُ سَوَادِ الشَّعْرِ لَا يُرٰى عَلَيْهِ اَثَرُ السَّفَرِ وَلَا يَعْرِفُهُ مِنَّا اَحَدٌ حَتّٰى جَلَسَ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَاَسْنَدَ رُكْبَتَيْهِ اِلٰى رُكْبَتَيْهِ وَوَضَعَ كَفَّيْهِ عَلٰى فَخِذَيْهِ وَقَالَ يَا مُحَمَّدُ اَخْبِرْنِيْ عَنِ الْاِسْلَامِ ۔ قَالَ الْاِسْلَامُ اَنْ تَشْهَدَ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَتُقِيْمَ الصَّلٰوةَ وَتُؤْتِيَ الزَّكٰوةَ وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ وَتَحُجَّ الْبَيْتَ اِنِ اسْتَطَعْتَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۔ قَالَ صَدَقْتَ ۔ فَعَجِبْنَا لَهٗ يَسْاَلُهٗ وَيُصَدِّقُهٗ ۔ قَالَ فَاَخْبِرْنِيْ عَنِ الْاِيْمَانِ ۔ قَالَ اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَمَلَآئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَتُؤْمِنَ بِالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ

الحديث۔ (مسلم کتاب الایمان۔۹) ---

तर्जुमाः हजरत उमर रजि. रिवायत करते हैं कि एक दिन हम रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में बैठे हुए थे। अचानक एक सफेद कपड़े वाला इन्तेहाई काले बालों वाला आदमी आपकी खिदमत में आया, जिस पर सफर का कोई निशान नहीं था और हममें से कोई उनको पहचानता भी नहीं था। वो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बैठ गया और आपके घुटनों से अपने घुटने मिला लिये और दोनों हाथों को आपकी जांघों पर रख लिया। इस बे-तकल्लुफी की हालत में बैठकर कहने लगा, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बतलाइये इस्लाम क्या है? आपने फरमायाः इस्लाम यह है कि तू इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं और नमाज कायम करे और ज़कात अदा करे और रमजान के रोजे रखे और वहां तक जाने की ताकत होने पर बैतुल्लाह का हज करे। यह सुनकर वो बोला कि आपने बिलकुल सच फरमाया। यह सुनकर हमको तअज्जुब हुआ कि खुद ही पूछता है और फिर खुद ही तसदीक भी करता है। (मालूम होता है कि पहले से जानने वाला है) फिर वो कहने लगा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मुझको बतलाइये ईमान क्या है?आपने फरमायाः ईमान यह है कि तू अल्लाह पाक यानी उसके वजूद और उसकी वहदानियत और उसकी जात व सिफात पर यकीन लाये और उसके फरिश्तों पर यकीन लाये और उसके भेजे हुए तमाम रसूलों पर और उसकी उतारी हुई सारी किताबों पर और मरने के बाद जिन्दा होने पर और तकदीर की भलाई और बुराई पर ईमान लाये।''

यह पूछने वाले हजरत जिब्राईल अलैहिस्सलाम थे जो इन्सानी सूरत में आये थे और सहाबा किराम को इस तरह दीन की तालीम देना मकसूद था।

हजरात!

इन छः अरकान के अलावा ईमान की और बहुत सी शाखें हैं एक हदीस में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

اَلْاِيْمَانُ بِضْعٌ وَّسَبْعُوْنَ شُعْبَةً اَفْضَلُهَا قَوْلُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَدْنَاهَا

اِمَاطَةُ الْاَذٰى عَنِ الطَّرِيْقِ وَالْحَيَآءُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْاِيْمَانِ۔ (بيهقى)(١)

1. बैहक़ी-शअबुल ईमान 34/1

तर्जुमाः ईमान की कुछ सत्तर से ऊपर शाखें हैं, उनमें से सबसे बड़ी शाख कलिमा-ए-तैयबा "ला इला-ह इल्लल्लाहु" पढ़ना है और ईमान की सबसे छोटी शाख यह है कि रास्ते में कोई चीज ऐसी देखना, जिससे अल्लाह की मख्लूक को तकलीफ पहुंचे तो उसे रास्ते से दूर कर देना और हया और शर्म भी ईमान की एक शाख है।"

इस हदीस में इस बात की तरफ भी इशारा है कि एक सच्चे ईमानदार मुसलमान का जिस तरह अल्लाह की जात पर पुख्ता ईमान होता है, उसी तरह वो अल्लाह की मखलूक को फायदा पहुंचाने के लिए भी हर वक्त तैयार रहता है। यहां तक कि उसको यह भी गवारा नहीं कि उसके देखते हुए किसी भी अल्लाह की मखलूक को रास्ते में कांटे, पत्थर वगैरह से भी तकलीफ पहुंचे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसा ही ईमान नसीब करे और खिदमते खल्क के लिए यह ईमानी दौलत अता फरमाये। आमीन सुम्मा आमीन।

आखिर में शर्म व हया को भी ईमान की एक शाख बताया गया है। हया व शर्म इन्सान की शराफत का बहुत बड़ा हिस्सा है। यही जो हर इन्सान और हैवान में फर्क बताता है। बेहयाई व बेशर्मी ईमान को खत्म कर देने वाली चीज है। आजकल देखा जाता है कि मर्दो-औरतों, बड़ों-छोटों में आमतौर पर यह बीमारी फैल रही है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को हया व शर्म अता करे कि वो बारीक लिबास पहनना, सिनेमा की लाईन में खड़ा होना, मेलों-ठेलों की खूबसूरती बनना छोड़ दे। आमीन! या अल्लाह हमारी यह दुआ कबूल फरमा ले। आमीन!

मुअज्जज भाईयों!

आजकल कुछ ऐसे लोग पैदा हो गये हैं जो बजाहिर मुसलमान कहलाते हैं लेकिन उनकी बातें ईमान व इस्लाम से हजारों कोस दूर हैं। बहुत से लोग फरिश्तों ही का इन्कार करते हैं, इनका जाति वजूद तसलीम नहीं करते। बहुत से लोग तकदीर ही के इनकार करने वाले हैं। बहुत से लोग कयामत और जन्नत व दोजख को महज ख्याली चीजें मानते हैं। उनके वजूद के इनकार करने वाले हैं। याद रखना चाहिए कि ऐसे लोग अल्लाह के नजदीक ईमान वाले नहीं हैं। अल्लाह तआला के तमाम रसूलों को मानने का मतलब यह है कि कुरआन मजीद में जिस कद्र अम्बिया किराम के नाम आये हैं, उन सब पर ईमान लाना और उनके अलावा पहले जमानों में दुनिया की कौमों में जो भी बड़े बड़े नेक लोग गुजरे हैं, अल्लाह ही जानता है कि कौन-कौन अल्लाह के नबी व रसूल या ऋषि या मुनि थे।

बहरहाल जो नबी हों और जिस कौम में भी हों, उन सबका इज्जत से नाम लेना और अच्छा जिक्र करना कयामत को बरहक जानना और कब्र के अजाब व सवाब को बरहक जानना भी अकीदा-ए-कयामत में ही दाखिल है। कयामत के दिन अल्लाह तआला की अदालत जरूर कायम होगी, जिसमें हर नेक व बद को हाजिर होना होगा और सब को जर्रा-जर्रा नेकी व बदी का हिसाब देना होगा। फिर नेकों को जन्नत में दाखिला मिलेगा और बूरों को दोजख में धकेल दिया जायेगा।

इसी तरह तकदीर पर ईमान लाना कि दुनिया में नेकी व बुराई सबकुछ तकदीर ही के तहत होता है। तकदीर से इनकार करने वाले अहले ईमान से बाहर हैं। इन सारी बातों को समझने और याद रखने की हर मुसलमान को बहुत बड़ी जरूरत है।

मुहतरम भाईयों!

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने ईमान वालों की खूबियां बताने के लिए एक खास सूरह शरीफ नाजिल फरमायी है, जिसका नाम ही सूरह मोअमिनून है। इसमें बड़ी तफसील के साथ ईमान वालों के औसाफ बयान किये गये हैं। चूनांचे इरशाद होता है-

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ
عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ﴿۳﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ﴿۴﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ
حٰفِظُوْنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَیْرُ مَلُوْمِیْنَ ۚ﴿۶﴾
فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ﴿۷﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ
رٰعُوْنَ ۙ﴿۸﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ یُحَافِظُوْنَ ۘ﴿۹﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾
الَّذِیْنَ یَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱﴾ (المؤمنون ۲۳)

(सूरह मोमिनूनः 1-11, पारा 18)

तर्जुमाः ईमान में पुख्ता होने वाले बिलकुल कामयाब हो गये। वो नमाजें दिल लगाकर खुशूअ और खुजूअ के साथ अदा करते हैं। वो लगवियात में फुजूल,

बेकार कामों से बिलकुल दूर रहते हैं। वो लोग जकात अदा करने वाले पाकी सफाई वाले होते हैं। वो लोग अपनी शर्मगाहों की हरामकारी से हिफाजत करते हैं। हां, उनको उनकी बीवियों से या उनकी बान्दियों से हमबिस्तरी करने पर कोई गुनाह नहीं है। जो कोई अपनी ख्वाहिश पूरी करने के लिए उनके अलावा और कोई रास्ता (जिना या मुश्तजनी वगैरह) इख्तेयार करेगा, वही लोग ज्यादती करने वाले (बल्कि कानूने इलाही को तोड़ने वाले हैं) और वो जो अमानतों की हिफाजत करते और वादों को पूरा करते हैं। और वो जो औसाफे मजकूरा के साथ पांचों वक्त की नमाज की पूरी-पूरी हिफाजत करते हैं। यही लोग हैं जो जन्नतुल फिरदौस के वारिस होंगे, जिसमें वो हमेशा रहेंगे।''

इन आयात में ईमान के लिए नमाज ही को अव्वल व आखिरी शर्त करार दिया गया है, जिससे नमाज की अहमियत जाहिर है।

हजरात!

अमल व अख्लाक के साथ अगर सही ईमान इन्सान को नसीब हो जाता है तो उसमें एक बहुत बड़ी रूहानी ताकत पैदा हो जाती है। सच्चे और सही ईमान वालों की तारीख में ऐसी-ऐसी मिसालें मजकूर हैं जिनको सुनकर आज हम जैसे कमजोर ईमान के मुसलमान शर्म के मारे पानी-पानी हो जाते हैं। अन्बिया किराम की जाते गिरामी ईमाने कामिल का बेहतरीन नमूना होती है जो अल्लाह पर यकीन रखते हुए हर मुश्किल से मुश्किल इम्तेहान में साबित कदमी का बहादुराना सबूत देकर दुनिया वालों को हैरत अंगेज तौर पर अपनी शख्सीयत का लोहा मनवा देते हैं। इस सिलसिले में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जाते गिरामी बहुत ही मुमताज और नुमाया नजर आती है। जंगे हुनैन में ऐसा मौका आया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैदान में अकेले रह गये, जबकि कुफ्फार चारों तरफ से तीरों की बारिश कर रहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस नाजुक मौके पर फरमायाः

أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبْ أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ

तर्जुमाः ऐ काफिरो! सुन लो, मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूँ, इसमें झूठ नहीं है। (वो जरूर मुझ ही को कामयाबी बख्शेगा) खानदानी लिहाज से मैं अब्दुल मुत्तलिब जैसे कुरैशी बहादुर का बेटा हूँ।'' (मैदान छोड़ देना मेरी खानदानी रिवायात से बहुत दूर है)

आपके इस पुख्ता ईमान ने आखिर वहां एक शानदार तारीखी कामयाबी दिलाई। आपके सच्चे जानिसार सहाबा किराम, अनसार व मुहाजिरीन अल्लाह पाक और आखिरत पर इस कद्र पुख्ता यकीन रखने वाले बुजुर्ग थे कि दुनिया के आम इन्सानों में उनकी मिसालें मिलनी मुश्किल हैं।

हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि., हजरत उमर फारूक रजि., हजरत उस्मान गनी रजि., हजरत अली रजि. और दूसरे बुजुर्गाने सहाबा किराम रजि. ईमान और अच्छे कामों के करने वाले थे। अल्लाह पाक आज भी हम सबको उनके नक्शे कदम पर चलने की तौफीक अता फरमाये। आमीन!

हजरात!

यह ना भूलिये कि नेक कामों के करने से ईमान बढ़ता है और बुरे कामों के करने से ईमान घट जाता है, बल्कि बहुत से बुरे काम तो ऐसे हैं, अगर उन से तौबा ना की जाये तो आदमी ईमान से बिलकुल महरूम हो जाता है। कुरआन पाक में साफ मजकूर है कि आयाते कुरआनी सुनकर ईमान वालों का ईमान बढ़ जाता है।

बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और मुबारक खुत्बा सुन लीजिए जिससे आपको ईमान की बुनियादों पर आगाही हो सकेगी। हजरत अनस बिन मालिक रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

ثَلَاثٌ مَّنْ كُنَّ فِيْهِ وَجَدَ بِهِنَّ حَلَاوَةَ الْإِيْمَانِ مَنْ كَانَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا وَمَنْ اَحَبَّ عَبْدًا لَّا يُحِبُّهُ اِلَّا لِلّٰهِ وَمَنْ يَّكْرَهُ اَنْ يَّعُوْدَ فِي الْكُفْرِ بَعْدَ اَنْ اَنْقَذَهُ اللّٰهُ كَمَا يَكْرَهُ اَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ۔ (بخاری كتاب الايمان-15)

तर्जुमाः तीन चीजें ऐसी हैं जिस मर्द औरत में यह पैदा हो जायें, उसने ईमान की मिठास को पा लिया। वो शख्स जिसके दिल में सारी मख्लूक से बढ़कर अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत हो और वो शख्स जो किसी नेक बंदे को महज

अल्लाह के वास्ते अपना दोस्त बनाये, जिसकी दोस्ती की बुनियाद सिर्फ अल्लाह पाक की खुशी हो और वो शख्स जो मुसलमान होने के बाद काफिर होना इतना बुरा जाने जितना आग में डाला जाना बुरा जानता है।''

आखिर में एक और खुत्बा-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुन लीजिए:

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَلَّمَا خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِلَّا قَالَ لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا اَمَانَةَ لَهٗ وَلَا دِيْنَ لِمَنْ لَّا عَهْدَ لَهٗ۔ (۱)

तर्जुमा: हजरत अनस रजि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शायद ही कोई ऐसा खुत्बा दिया हो, जिसमें आपने यह ना फरमाया हो कि जिस शख्स के अन्दर अमानतदारी नहीं, उसका ईमान कुछ नहीं और जिसको अपने वादे का ख्याल नहीं, उसका दीन कुछ नहीं।''

या अल्लाह हमको ईमान में पुख्तगी और हलावत अता फरमा।

या अल्लाह हम ईमान में बहुत ही कमजोर हैं। दिन रात गुनाहों में लगे रहते हैं, जिससे ईमान कमजोर हो जाता है, हमको इन गुनाहों से बचाले और हमारे ईमान को मजबूत बना दे। आमीन!

ऐ परवरदिगार! हम जो कुछ भी तेरा और तेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पाक कलाम सुनें, उसे समझें याद कर लें, उस पर अमल करने की हमको तौफीक अता फरमा। आमीन या रब्बल आलमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ اِنَّهٗ تَعَالٰى جَوَّادٌ مَلِكٌ بَرٌّ رَّؤُفٌ رَّحِيْمٌ۔ وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔

1. मिशकात-अस-सुननुल कुबरा लिबैहकी 6/288 शअबुल ईमान, मुसनद अहमद 3/135, 154-210-251 किताबुस सुन्नत लि इमाम अहमद 97 अहादीसुल मुख्तारतुलि जियाइल मुकद्दसी (काफ 2/234) (का-ल शैखुल मुहद्दिसुल अलबानी रहमतुल्लाह: वहुव हदीस जैद अहद इसनादुहू हसन वलहू शवाहिद। नकलन मिन तहकीकुल मिशकात शैखुल अलबानी 1/12) अल असरी

खुत्बा नम्बर 4

अरकाने इस्लाम का बयान

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○
اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ
دِيْنًا ط (اَلْمَآئِدَة ٥)

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ بُنِيَ الْاِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ شَهَادَةِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكٰوةِ وَالْحَجِّ وَصَوْمِ
رَمَضَانَ. (بخاری کتاب الایمان۔7)

(सूरह माइदाः आयत 3, पारा 6) (हदीस बुखारी किताबुल ईमान-7)

अल्लाह तबारक व तआला की हम्दो सना और उसके प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद सलाम। आज का खुत्बा अरकाने इस्लाम के बयान में है।

इस्लामी भाईयों!

इस्लाम के मायने अल्लाह के रसूल की इताअत के लिए गर्दन झुकाना और हुक्मे शरीअत को चुपचाप मान लेना है। ईमान दिल के साथ तअल्लुक रखता है और इस्लाम का तअल्लुक जाहिरी अमलों के साथ है। ईमान और इस्लाम दोनों का तअल्लुक जिस्म और रूह के तअल्लुक जैसा है। इस्लाम अल्लाह का वो सच्चा आखिरी दीने बरहक है जिसके बारे में अल्लाह पाक ने फरमाया है कि आज (हज्जतुल विदा) के दिन मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए पूरा कर दिया और अपनी नेमत को पूरा कर दिया और इस्लाम को बतौरे दीन मैंने तुम्हारे लिए पसन्द कर लिया। अब यही वो दीन है जो अल्लाह पाक के यहां मकबूल और सारे इन्सानों के लिए दोनों जहां की कामयाबी का रास्ता है, जिसके बारे में साफ इरशादे बारी है:

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۸۵﴾ (اٰلِ عِمْرٰن ۳)

(सूरह आले इमरान: 85, पारा 3)
तर्जुमा: जो कोई इस्लाम के अलावा कोई और दीन अपनायेगा, उससे हरगिज कबूल नहीं किया जायेगा बल्कि वो आखिरत में सरासर नुकसान में होगा।"

खुत्बे में जिक्र की गई हदीस का तर्जुमा यह है:
"अल्लाह के सच्चे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस्लाम की इमारत पांच खम्बों पर उठायी गयी है। (1) रुक्न कलिमा तैयबा पढ़कर दिल से मानना अल्लाह ही बरहक है और उसके रसूल हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच्चे रसूल हैं (2) पांचों वक्त की नमाज अदा करना (3) रमजान के महीने के रोजे रखना (4) मालदार के लिए हुक्म है कि ज़कात अदा करे (5) ताकत वाले के लिए हज करना।"

इस्लाम के यह पांच अरकान कहलाते हैं। जिनमें कलिमा तैयबा के बाद पहला दर्जा पांचों वक्त की नमाज अदा करने का है और नमाज की अदायगी के लिए पहले सफाई-सुथराई, पाकीजगी, इस्तिंजा, गुस्ल और वजू की जरूरत है। जब तक पूरी पाकी हासिल ना हो, नमाज पढ़ना बेकार है। पाकी के लिए पाक-साफ पानी की जरूरत है। खुदा-न-खास्ता किसी जगह पानी ना हो तो मिट्टी से तयमुम कर लेना काफी है। हदीस में बतलाया गया है। "अत्तुहूरु शतरुल ईमान" यानी पाकी हासिल करना आधा ईमान है। पाकी के लिए जगह और कपड़ों का पाक होना, फिर किब्ला की तरफ मुंह होना और नमाज का वक्त होना, यह जरूरी मसाईल हैं।

दोस्तों!

अरकाने इस्लाम में नमाज एक ऐसा रुक्न है जिसकी अदायगी का हुक्म कुरआन मजीद में बार बार दिया गया है। नमाज के बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक बेहतरीन खुत्बा सुनिये और दिल में जगह दीजिए। फरमाया:

اَرَأَيْتُمْ لَوْ اَنَّ نَهْرًا بِبَابِ اَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ فِيْهِ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ هَلْ يَبْقٰى مِنْ دَرَنِهٖ شَيْءٌ؟ قَالُوْا لَا يَبْقٰى مِنْ دَرَنِهٖ شَيْءٌ۔ قَالَ كَذٰلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ يَمْحُو اللّٰهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا۔ (ترمذی)

यानी ''पांचों वक्त की नमाज अदा करने की मिसाल ध्यान से सुनो, अगर तुम में से किसी के दरवाजे पर एक नहर बहती हो और वो शख्स रोजाना उसमें पांच बार नहाये तो क्या उसके बदन पर कुछ मैल-कुचैल बाकी रह जायेगा?लोगों ने कहा, नहीं! आपने फरमाया, पस यही पांच वक्त की नमाज अदा करने की मिसाल है। अल्लाह पाक उन नमाजों की बरकत से नमाजियों को गुनाह से उसी तरह पाक-साफ कर देता है।''

जो लोग मुसलमान कहलाकर नमाज जानबूझ कर नहीं पढ़ते, वो बिल इत्तेफाक काफिर हो जायेंगे। और जो लोग सुस्ती काहिली से नमाज अदा करने में कोताही करें, उनके बारे में फरमाया:

مَنْ تَرَكَ الصَّلَاةَ مُتَعَمِّدًا فَقَدْ كَفَرَ۔ (مسند احمد 26089،21060)

यानी ''जिसने जानबूझ कर नमाज को छोड़ा, उसने कुफ्र किया।''

और फरमाया:

مَنْ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَتْ لَهٗ نُوْرًا وَّنَجَاةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ لَّمْ يُحَافِظْ عَلَيْهَا لَمْ تَكُنْ لَّهٗ نُوْرًا وَّبُرْهَانًا وَّنَجَاةً وَّكَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ قَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَاُبَيِّ بْنِ خَلَفٍ۔ (مسند احمد)

यानी ''जिस शख्स ने नमाज आदाब, शर्तों और सुन्नत के मुताबिक अदा की, उसके वास्ते वो नमाज कयामत के दिन रोशनी का जरिया होगी और दलीले नजात और बख्शिश का जरिया होगी और जिसने नमाजों की हिफाजत ना की, उसके लिए ना वो नूर बनेगी, ना दलील और ना बचाव का जरिया बनेगी, बल्कि उसका हश्र कयामत में कारून और फिरऔन और हामान और उबै बिन खलफ

जैसे मरदूद काफिरों के साथ होगा।''

मर्दों के अलावा औरतों पर भी नमाज फर्ज है, मगर हैज व निफास की हालत में शरीअत ने उनके लिए हुक्म दिया कि नमाज अदा ना करें, बल्कि बाद में पाक व साफ होने पर नमाज पढ़ें।

हजरात!

यह भी याद रखने की बात है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''सल्लू कमा र-अयतुमूनी उसल्लि'' यानी ''तुमने जिस तरह मुझको नमाज पढ़ते हुए देखा है, उसी तरह नमाज अदा करो।''

पस सही नमाज वही है जो शुरु से आखिर तक सुन्नते नबवी के मुताबिक अदा की जाये। आप सल्ल. को नमाज पढ़ते हुए देखने वाले सहाबा किराम थे अब जिस तरह उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज को नकल किया है, वो हमारे लिए देखने ही के बराबर है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज का सही नक्शा वो है जो अहादीस की किताब बुखारी व मुस्लिम वगैरह में बयान किया गया है।

हजरात!

इस्लाम का दूसरा अजीम रुक्न माहे रमजान के रोजे रखना है। रोजा एक ऐसा काम है, जिसमें मुसलमान मोमिन बन्दा अपने माबूदे बरहक अल्लाह रब्बुल आलमीन का हुक्म बजा लाने के लिए दिन में खाना-पीना और बहुत सी जायज ख्वाहिशाते नफ्सानी छोड़कर के इताअत व फरमांबरदारी का पूरा पूरा सबूत देता है। इसीलिए हदीसे कुदसी में अल्लाह पाक का इरशाद यूं नकल हुआ है:

اَلصَّوْمُ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِہٖ۔ (نسائی الصیام، احمد10586)

यानी 'रोजा एक ऐसा अमल है जिसका ताल्लुक खास मेरे साथ है, इसलिए इसका सवाब देना भी सिर्फ मेरा ही काम है।''

रोजे की पूरी तफसीलात मसाईले रमजान शरीफ में जिक्र की जायेगी।

इस्लाम का तीसरा अहम रुक्न अल्लाह पाक साहिबे निसाब बना दे तो जकात अदा करना है। ज़कात उन लोगों पर फर्ज है, जो इतना पैसा कमाने वाले हों कि साल भर में खर्च के अलावा नकद की सूरत में उनके घर साढ़े बावन तोला चांदी जमा हो, इस सूरत में उनको एक रुपया चार-आने भर चांदी ज़कात अदा

करनी होगी। सोने का निसाब साढ़े सात तोला है, जिसमें से सवा दो माशा ज़कात का निकालना फर्ज हैं। नकद के अलावा सोने चांदी गल्ला जात और जानवरों में भी ज़कात लागू हो जाती है। जिसकी बहुत सी तफसीलात हैं। कुरआने मजीद में सलात और ज़कात का एक ही साथ मुतालबा किया गया हैं जिसमें इस तरह इरशाद है कि इस्लाम में रूहानी जिन्दगी के लिए नमाज की और दुनियावी तरक्की के लिए ज़कात की बहुत बड़ी अहमियत है। हर दो के वजूद से कुव्वते इस्लाम के मीनार तामीर होते हैं। इस्लामिक स्टेट की बड़ी आमदनी ज़कात ही है। जिसने खिलाफते राशिदा के अहद में इस्लाम को बहुत बड़ी तरक्की नसीब करके अकवामे आलम के लिए बाइसे सद्दे हैरत बना दिया था। जब तक यह इज्तमाई निजाम कायम रहा, अहले इस्लाम कामयाब रहे और जब से यह निजाम खत्म हुआ, कामयाबी खत्म हो गई। जो लोग साहिबे निसाब होने के बावजूद ज़कात अदा नहीं करते, बल्कि सोने और चांदी को बतौर खजाना जमा करके रखते हैं, उनके बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है:

الَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾ (التوبة ٩)

(सूरह तौबा: 34-35, पारा 10)

यानी " जो लोग सोना और चांदी खजाने के तौर पर गाड़ कर रखते हैं और उसे अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते, उनको दर्दनाक अजाब की खुशखबरी दो जिस दिन उस खजाने को दोजख की आग में सुर्ख करके उनके चेहरों, गालों और करवटों और पीठों पर इस से दाग लगाये जायेंगे। उनसे कहा जायेगा यह खजाना है, जिसे तुम जमा किया करते थे, पस अपने खजानों का आज मजा चखो।"

बुजुर्गो और दोस्तों!

इस्लाम का पांचवा रुक्न हरुज है, जिसकी फरजीयत कुरआन मजीद से साबित है। अल्लाह तआला का इरशाद है:

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا (آل عمران ٣)

(सूरह आले इमरान: 97, पारा 4)

तर्जुमा: "अल्लाह के लिए हज अदा करना उन लोगों पर फर्ज है जो वहां तक पहुंचने की पूरी ताकत रखते हों।"

बैतुल्लाह शरीफ की हाजिरी हर मुसलमान की जिन्दगी का बेहतरीन काम है, जिनको अल्लाह तआला ऐसी तौफीक़ अता करे कि वो माल और तंदुरुस्ती के लिहाज से वहां तक आराम से आ-जा सकते हों, फिर वो हज के लिए ना जायें, उनके लिए बहुत सख्त धमकी आई हुई है।

बिरादराने मुहतरम!

आपने मालूम कर लिया होगा कि इस्लाम का मकान इन पांच खम्बों पर कायम है, इनके अलावा बहुत सी नेकियां ऐसी हैं जिनसे ईमान और इस्लाम में तरक्की होती है और बहुत से बुरे काम ऐसे हैं जिनसे ईमान और इस्लाम जाता रहता है। मसलन एक हदीस शरीफ में फरमाया है:

اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسَانِهٖ وَيَدِهٖ۔ (بخاری ومسلم)

तर्जुमा: मुसलमान वो है जिसके हाथ और उसके जुबान से मुसलमान सही सलामत रहें।"

जिसका मतलब साफ है कि जुबान से मुसलमानों को तकलीफ देने वाला, हाथ से तकलीफ पहुंचाने वाला इन्सान मुसलमान कहलाने का हकदार नहीं है। क्योंकि इस्लाम "सलम" से बना है जिसके मायने सुल्ह व सलामती और अमन के हैं। एक मुसलमान की शान ही यह होनी चाहिए कि वो दुनिया में सुलह, सलामती और अमन फैलाने वाला हो।

हजरात!

इस्लाम दुनिया-ए-इन्सानियत को मेलजोल-भाईचारे की दावत देता है। इस्लाम में ऊंच-नीच का कोई अकीदा नहीं है। ना यहां अमीर व गरीब का फर्क है। अल्लाह पाक ने कुरआन मजीद में साफ फरमा दिया है

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ ۚ (الحجرات ٤٩)

(सूरह हुजुरातः 13, पारा 26)

तर्जुमाः लोगों! याद रखो तुम सबको हमने एक ही मर्द और औरत से पैदा किया है और हमने तुमको कबीलों और खानदानों में बांट दिया है जो सिर्फ इसलिए कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचान सको। याद रखो, अल्लाह के यहां सिर्फ उसकी इज्जत है जो अल्लाह से डरने वाला और परहेजगार है।"

इस कीमती उसूल की वजह से इस्लामी तारीख में ऐसे-ऐसे वाकिआत हैं जिनको सुनकर कयामत तक इन्सान हिदायत हासिल करते रहेंगे।

हजरत बिलाल रजि. एक हब्शी गुलाम थे, मगर इस्लाम में उनका मुकाम उन बहुत से कुरैशियों से ऊंचा है जो ईमान की दौलत से महरूम रह गये। सब जानते हैं कि हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. ने उनको अपने खास रुपये से खरीद कर आजाद फरमाया, मगर बाद में खुद हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. उनको सय्यदुना-सय्यदुना यानी हमारे सरदार, हमारे सरदार कहकर खिताब फरमाते रहे।

हजरत साद असवद का वाकिआ आपने सुना होगा, जो बहुत ही काले कलूटे गुलाम थे, मगर जवानी में भरपूर और शादी की ख्वाहिश रखते थे। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आला खानदानी मुसलमान रईस के घराने की लड़की का पैगाम देकर उनको उनके पास भेजा, जिसे सुनकर वो बहुत नाराज हो गये, मगर जब लड़की को मालूम हुआ कि मेरा यह पैगाम रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद भेजा है तो उस नेक बख्त लड़की ने अपने वालिद से कहा कि आप खुशी से इस रिश्ते को मंजूर कर लें, कि इसमें अल्लाह और उसके रसूल की रजामन्दी है, चुनांचे बखुशी यह रिश्ता हो गया।

बुजुर्गो, अजीजो व दोस्तों!

इस्लाम अल्लाह की एक बहुत बड़ी नेमत है, जिस पर अमल करने से दीन और दुनिया की सारी खूबियां मिल जाती हैं। मुसलमान अगर आज फिर सच्चे पक्के मुसलमान बन कर इत्तेफाक से रहकर अच्छे खानदान वाले बन जायें तो दुनिया में आज भी उनकी बड़ी कद्र हो सकती है। अल्लाह पाक हम सबको इन

बातों के याद रखने और इन पर अमल करने की तौफीक अता फरमाये। आमीन!

ऐ परवरदिगार! हम सबको सच्चा मुसलमान बना दे। इस्लाम को इज्जत अता फरमा। मुसलमानों को दीन-दुनिया दोनों में कामयाबी अता फरमा।

इलाही! बीमारों को तन्दुरुस्त करदे। कर्जदारों का कर्ज अदा कर दे। हमारी तंगी और परेशानी को दूर फरमाकर हर मुसलमान को हलाल रिज्क आसानी से अता फरमा और हम सबको आपस में इत्तेफाक, मुहब्बत बख्श, हमारे सीनों को हर किस्म की जलन से पाक-साफ कर दे।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۲۸﴾ (اَلْبَقَرَة ۲)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ (اَلصّٰٓفّٰت ۳۷)

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 5

हुकूकुल इबाद
यानी बन्दों के हक अदा करने के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ (بنی اسرائیل ۱۷)

عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَلَّمَا خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِلَّا قَالَ لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا اَمَانَةَ لَهٗ وَلَا دِيْنَ لِمَنْ لَّا عَهْدَ لَهٗ اَوْ كَمَا قَالَ۔

(مسند احمد، شعب الایمان، المختارة للمقدسی)

(मुसनद अहमद, शुअबुल ईमान, अलमुख्तारतुल मकदसी)

सारी तारीफों का हकीकी हकदार वो परवरदिगार है, जिसकी बहुत बड़ी खूबी यह है कि वो रब्बुल आलमीन है। यानी सारी मख्लूकात को उनकी जात के मुताबिक पालने और परवरिश करने वाला, सबको नेस्ती से हस्ती में लाने वाला और अपने मानने वालों और ना मानने वालों, सबको रोजी देने वाला। बेशुमार दरूदो सलाम अल्लाह के उस पाक रसूल पर जिसने रहमतुल लिलआलमीन का लकब पाया। वो कायनात के लिए सरापा रहमत बनकर तशरीफ लाये, जिसने दुश्मनों को नेक दुआवों से नवाजा, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

बुजुर्गो दोस्तों, अज़ीजों!

अल्लाह के सच्चे आखिरी दीने इस्लाम की बड़ी भारी खूबी यह है कि इसमें अल्लाह पाक ने अपने हुकूक के साथ अपने बन्दों के हक भी तफसील के साथ बयान फरमा दिये और उनकी अदायगी को भी जरूरी करार दिया। इस बारे में पहले जनाबे रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक खुत्बा मुबारक सुन लीजिए, जिससे आपको अन्दाजा हो सकेगा कि शरीअते इस्लामी में बन्दों के हुकूक का मामला कितना जरूरी है। हजरत आइशा रजि० रिवायत करती हैं कि :

قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : اَلدَّوَاوِيْنُ ثَلَاثَةٌ۔ دِيْوَانٌ لَا يَغْفِرُ اللهُ، اَلْاِشْرَاكُ بِاللهِ يَقُوْلُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ (اِنَّ اللهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ) وَدِيْوَانٌ لَا يَتْرُكُهُ اللهُ تَعَالٰى، ظُلْمُ الْعِبَادِ فِيْمَا بَيْنَهُمْ حَتّٰى يَقْتَصَّ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ، وَدِيْوَانٌ لَا يَعْبَأُ بِهٖ، ظُلْمُ الْعِبَادِ فِيْمَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ اللهِ فَذٰلِكَ اِلَى اللهِ اِنْ شَآءَ عَذَّبَهٗ وَاِنْ شَآءَ تَجَاوَزَ عَنْهُ۔ (مشكوٰة)(احمد 24838)

तर्जुमाः ''रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कयामत के दिन बन्दों के तीन किस्म के दफातिर (जिसमें उनके आमाल नामे दर्ज रहेंगे) पेश किये जायेंगे। एक दफ्तर वो होगा, जिसमें शिर्क करने वालों के शिर्क का गुनाह दर्ज होगा। इस रजिस्टर वाले हरगिज नहीं बख्शे जायेंगे, क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद हो चुका है कि बेशक अल्लाह पाक उस गुनाह को हरगिज नहीं बख्शेगा कि उसके साथ किसी को शरीक ठहराया जाये।

दूसरा रजिस्टर (दीवान) ऐसा आयेगा, जिसको अल्लाह पाक पूरे तौर पर चुकाये बगैर नहीं छोड़ेगा, जिसमें बन्दों के आपस के जुल्म दर्ज होंगे। जिन लोगों ने दूसरों के हक मारे हैं, उन सबका बदला उनके आपस में चुकाया जायेगा।

तीसरा रजिस्टर वो होगा जिसमें अल्लाह के हुकूक और बन्दों के आमाल दर्ज होंगे, जिनसे मालूम होगा कि बन्दों ने अल्लाह के हुकूह जालिमाना तौर पर कितने गबन किये हैं। यह रजिस्टर अल्लाह और बन्दों के दरमियान होगा। अल्लाह इसकी बाबत कोई परवाह नहीं करेगा, उसे इख्तेयार है कि ऐसे गुनाहगारों को चाहे अजाब करे, चाहे उनकी कोताहियों को बख्श दे।

वो मालिक है जो चाहे कर सकता है। साथ ही रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और खुत्बा सुन लीजिए। यह भी बहुत ज्यादा ध्यान से सुनने के काबिल है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

اَتَدْرُوْنَ مَا الْمُفْلِسُ؟ قَالُوْا اَلْمُفْلِسُ فِيْنَا مَنْ لَّا دِرْهَمَ لَهٗ وَلَا مَتَاعَ. فَقَالَ اِنَّ الْمُفْلِسَ مِنْ اُمَّتِيْ مَنْ يَّأْتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِصَلَاةٍ وَصِيَامٍ وَزَكٰوةٍ وَيَأْتِيْ قَدْ شَتَمَ هٰذَا وَقَذَفَ هٰذَا وَاَكَلَ مَالَ هٰذَا وَسَفَكَ دَمَ هٰذَا وَضَرَبَ هٰذَا فَيُعْطٰى هٰذَا مِنْ حَسَنَاتِهٖ وَهٰذَا مِنْ حَسَنَاتِهٖ فَاِنْ فَنِيَتْ حَسَنَاتُهٗ قَبْلَ اَنْ يُقْضٰى مَا عَلَيْهَا اُخِذَ مِنْ خَطَايَاهُمْ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ ثُمَّ طُرِحَ فِى النَّارِ. (مسلم)

यानी ''सहाबा से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, बताओ कंगाल कौन है?कहा कि कंगाल (मुफलिस) वो है जिसके पास कुछ नकद व जिन्स ना हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरी उम्मत में दरहकीकत कंगाल वो है कि जो कयामत के दिन नमाज, रोजा, ज़कात और बहुत से नेक आमाल लेकर अल्लाह तआला के दरबार में हाजिर होगा और बजाहिर नेक आमाल के लिहाज से बड़ा मालदार नजर आयेगा, मगर थोड़ी देर बाद वो लोग हाजिर होंगे जिनको उसने दुनिया में गालियां दी होंगी, किसी को तोहमत लगायी होगी, किसी का माल खाया होगा, किसी का नाहक खून किया होगा, किसी को मारा होगा, किसी को सताया होगा, वो सब अपने हक मांगने के लिए दावेदार बनकर अल्लाह तआला की अदालत में आ जायेंगे और उन सबको बदले में उसकी नेकियां बांट दी जायेंगी। यहां तक कि सारी नेकियां खत्म हो जायेगी और वो मुफलिस कल्लाश बन जायेगा। फिर भी हकदारों का तांता लगा रहेगा, उन मजलूमों के गुनाह उसके सर पर डाल दिये जायेंगे और वो दोजख में धकेल दिया जायेगा। यह शख्स कयामत के दिन सबसे बड़ा कंगाल होगा।''

हजरात!

यह दो खुत्बाते नबवी सुनकर आपने अन्दाजा लगा लिया होगा कि बन्दों के हुकूक की अदायगी का मामला कितना अहम है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को किसी का हक मारने वाला बनाकर कयामत के दिन की रुसवाई से बचाये। आमीन!

आयते खुत्बा में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि "तेरे रब ने यह कतई फैसला कर दिया है कि खास उसी की इबादत बन्दगी की जाये और मां-बाप के साथ एहसान का सुलूक किया जाये। वो दोनों बाप-मां या उनमें से सिर्फ एक तुम्हारी जिन्दगी में बूढ़े हो जायें तो उनके सामने उफ भी ना करो और उनको हरगिज ना डांटो, बल्कि उनके सामने नरम और मीठी-मीठी बातें किया करो और उनके सामने निहायत ही रहमदिली के साथ अपने बाजुओं को बिछा दो और उनके हक में हमेशा यह दुआ किया करो कि या अल्लाह जैसा कि बचपन में उन्होंने मुझको अपने रहम के साथ पाला-पोसा, या अल्लाह तू भी उन पर ऐसा ही रहम फरमा।"

हजरत अनस सहाबी रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम बहुत ही कम ऐसे खुत्बे दिये होंगे जिनमें आपने यह हदीसे पाक सुनायी होगी कि जो शख्स अपने किये हुए वादे का पाबन्द नहीं, उसका दीन कुछ नहीं और जो शख्स अमानत की हिफाजत ना करे, बल्कि खाने वाला हो, उसके ईमान का कोई वजन नहीं।"

वादा वफाई और अमानत की अदायगी के बारे में बहुत सी आयतें और हदीसें मौजूद हैं और मां-बाप के हकों के सिलसिले में तो इस कद्र आयतें और हदीसें आई हैं, जिन सबके बयान के लिए एक दफ्तर भी कम है। खासतौर पर मां के लिए फरमाया कि जन्नत उसके कदमों के नीचे है। पस बच्चों और बच्चियों को चाहिए कि मां-बाप का हरगिज दिल ना दुखायें और उनकी खिदमत और इताअत करके उनकी दुआयें हासिल करके, उनके सामने कभी ऊंची आवाज करके ना बोलें।

बन्दों के हुकूक के सिलसिले में भाई बहनों, फिर मियां-बीवी के आपस के हक बड़ी अहमियत रखते हैं, जिनकी अदायगी बहुत जरूरी है। जो शौहर (पति) अपनी बीवी का हक अदा नहीं करते, उन पर जुल्म ढाते हैं, कयामत के दिन उनका बुरा हाल होगा।

इसी तरह जो औरतें अपने खाविन्द के सामने जुबान दराजी करती हैं, उन

पर रात भर जन्नत की हूरें लानत करती हैं। कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने फरमायाः

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۭ (النسآء ۴)

(सूरह निसाः 31, पारा-4)

यानी "मर्द औरतों पर इसलिए हाकिम है कि अल्लाह ने कुछ को कुछ पर फजीलत दी है, वो अपनी कमाई अपनी औरतों पर खर्च करते हैं।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों के लिए फरमायाः

اِذَا صَلَّتِ الْمَرْاَةُ خَمْسَهَا وَصَامَتْ شَهْرَهَا وَاَحْصَنَتْ فَرْجَهَا وَاَطَاعَتْ بَعْلَهَا دَخَلَتْ مِنْ اَيِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَتْ۔ (رواہ ابن حبان فی صحیحہ)

(रवाहु इब्ने हिब्बान फी सहीही)

यानी "औरत जब पांच वक्त की नमाज पढ़े और माहे रमजान के रोजे रखे और अपनी शर्मगाह की हिफाजत करे और अपने शौहर की फरमांबरदारी करे, मरने के बाद उसे इख्तेयार है कि जिस दरवाजे से चाहे जन्नत में दाखिल हो जाये।"

हदीसे उम्मे सलमा रजि. में मरफूअन आया है कि "जो औरत इस हालत में मर जाये कि उसका खाविन्द उससे राजी है तो वो जन्नत में दाखिल होगी।"

भाईयों!

पड़ोसियों का भी शरीअते इस्लामी में बहुत ही बड़ा हक रखा गया है। और रिश्तेदारों का और यतीमों और मिसकीनों और बेवा और अपाहिज मर्दों और औरतों का भी हक है। इसी तरह मेहमानों का भी हक है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया हैः

مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهٗ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلَا يُؤْذِ جَارَهٗ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا اَوْلِيَصْمُتْ۔ (بخاری ومسلم)

यानी "जो शख्स अल्लाह और आखिरत पर ईमान रखता हो, उसका फर्ज है कि अपने मेहमान की इज्जत करे और जो शख्स अल्लाह और पिछले दीन पर ईमान रखता हो, उसका फर्ज है कि वो अपने पड़ोसी को दुख ना दे और जो शख्स आखिरत पर यकीन रखता हो उसे चाहिए कि वो जुबान से जब भी बोले तो अच्छी बात बोले या खामोश रहे।"

मालूम हुआ कि यह काम जो हदीस में आए हुए हैं, ईमान की दलील हैं, यह ना हो तो आदमी ईमान से महरूम कहा जा सकता है। यानी आदमी के अन्दर ईमान नहीं है।

हजरात!

बन्दों के हक़ के अन्दर अच्छे बर्ताव का भी बड़ा मुकाम है। हर आदमी के साथ मां के पेट के ताल्लुक से जो रिश्तेदार बनते हैं, उन सबके साथ नेक सुलूक करने को सिलारहमी कहते हैं। कुरआन मजीद की तकरीबन बारह आयतों में अच्छे सुलूक की ताकीद बहुत ज्यादा आयी है। और हदीसों में भी बहुत ज्यादा अच्छे सुलूक की हिदायत की गयी है।

اَلرَّحِمُ مُعَلَّقَةٌ بِالْعَرْشِ تَقُوْلُ مَنْ وَصَلَنِيْ وَصَلَهُ اللّٰهُ وَمَنْ قَطَعَنِيْ قَطَعَهُ اللّٰهُ۔ (بخاری، مسلم)

"रहम अर्श के साथ चिमटा हुआ यूँ दुआयें करता रहता है कि अल्लाह उसे रहमत से मिलाये जो दुनिया में अपने रिश्तेदारों के साथ रिश्ते को मिलाये और जो उसे काटे (यानी अच्छा सुलूक ना करे) अल्लाह उसको अपनी रहमत से काट कर दोजख में डाल दे।"

बुखारी की एक और रिवायत का मतलब यह है कि रहम लफ्ज "रहमान" से निकला है, इसलिए अल्लाह रहमान व रहीम का फरमान है कि ऐ रहम जो तुझसे पैदा होने वालों के रिश्ते को मुहब्बत से मिलाये रखे, मैं उसे अपनी रहमत से मिलाऊंगा और जो रहम से मुतअल्लिक रिश्ता काटे, मैं भी उसे अपनी रहमत से काट कर दूर ही रखूंगा।

इस मां के पेट के रिश्ते का ताल्लुक हर बच्चे और हर बच्ची के ददिहाल, ननिहाल, ससुराल के दूर-दूर रिश्तों तक पहुचंता है और वो सारे ही रिश्ते अच्छे सुलूक के हक़दार बन जाते हैं। सिलारहमी करने वालों की उम्रें लम्बी हो जाती हैं,

इसलिए कि बहुत से रिश्तेदारों, मर्दो, औरतों, जईफों, कमजोरों, यतीमों अैर बेवाओं की दुआयें उनको पहुंचती रहती हैं।

बन्दों के हक़ के सिलसिले में यह हुक्म भी याद रखने के काबिल है कि हर मुसलमान के ऊपर दूसरे मुसलमान भाईयों के क्या-क्या हक हैं। एक भाई के सलाम का जवाब देना, उसकी दावत को खुशी से कुबूल करना, हर वक्त अपने भाई का फायदा चाहना, यह मुसलमानों के आपस के हक हैं, अगर इनमें बेपरवाही की जाये तो यकीनन कयामत के दिन उनका बदला देना पड़ेगा।

हजरात!

माली सिलसिले में भी बन्दों के हुकूक की अदायगी बेहद जरूरीं है। जिनमें अमानत की हिफाजत करना, वक्त पर उसे वापिस कर देना, किसी से कर्ज लेकर उसे वादे के मुताबिक अदा करना, यह बहुत जरूरी हक हैं।

अगर कोई शख्स किसी का कर्ज लेकर हजम कर जाये और उसी हालत में मर जाये तो उसका जनाजा भी नहीं पढ़ना चाहिए। जब तक उसका कोई जिम्मेदार ना हो। (1)

कुरआने मजीद में रिश्तेदारों, यतीमों और गरीबों के हुकूक की अदायगी पर बार बार जोर दिया गया है। बड़ों पर लाजिम है कि अपने से छोटे पर रहम करें और छोटों पर फर्ज है कि बड़ों की इज्ज़त करें।

दुआ कीजिए कि अल्लाह पाक हर मुसलमान को दुनिया से इस हालत में उठाये कि वो किसी का कोई हक अपने सर ना ले जाये। अल्लाह पाक हर मुसलमान को अपने और बन्दों के हुकूक पूरे तौर पर अदा करने की तौफीक बख्शे। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

(1) यह मसला महल्ले नजर है, इसलिए कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद तो ऐसे आदमी की नमाजे जनाजा नहीं पढ़ायी मगर सहाबा किराम रिजवानुल्लाह. से कहा है कि उसकी नमाजे जनाजा पढ़ायें। लिहाजा कर्जदार की नमाजे जनाजा बहरसूरत पढ़ायी जायेगी। (यूगवी)

खुत्बा नम्बर 6

इल्म हासिल करने की जरूरत के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ ۚ﴿١﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿٢﴾ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ

الْاَكْرَمُ ۙ﴿٣﴾ الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿٤﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ؕ﴿٥﴾ (العلق ٩٦)

(सूरह अलक: 1-5, पारा 20)

तर्जुमा: ऐ नबी अल्लाह का नाम लेकर पढ़ना शुरू करो। वो अल्लाह जिसने इन्सान को एक खून के लोथड़े से पैदा किया। ऐ नबी पढ़ो तुम्हारा रब बहुत बड़ा करीम है। जिसने इन्सान को क़लम के जरीये इल्म सिखाया। इन्सान को वो कुछ सिखला दिया जो वो नहीं जानता था।''

अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन की बेअदद तारीफ और उसके प्यारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बेहद दरूद व सलाम के बाद।

رَبِّ اشْرَحْ لِىْ صَدْرِىْ ۙ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِىْ اَمْرِىْ ۙ﴿٢٦﴾ (طٰهٰ ٢٠)

इस्लामी भाईयों!

आज का खुत्बा इल्म हासिल करने की जरूरत पर है। सूरह-ए-शरीफा जो खुत्बे में आपको सुनायी गई, यह वो सूरह हे जो सबसे पहले रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर गारे हिरा में उतरी। जिसका खुलासा यह है कि इल्म हासिल करने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ताकीद के साथ हुक्म दिया गया, साथ ही इल्म हासिल करने के आदाब भी बतला दिये गये। और कलम की जरूरत भी बतला दी गई, जिसके इस्तेमाल से इन्सान इल्म में कामयाबी हासिल करता है। इल्म हासिल करना इन्सान के लिए कितना जरूरी है। इसे अल्लाह पाक ने सूरह बकरा की इस आयत में बयान फरमाया है:

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَیَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّیْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَی الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝ (البقرة ٢)

(सूरह बकरा: 30, पारा 1)

हजरत आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने अपना नायब बनाते वक्त फरिश्तों से कहा कि ''मैं जमीन में अपना नायब बनाना चाहता हूँ। फरिश्तों ने कहा कि या अल्लाह क्या तू जमीन में ऐसे शख्स को अपना नायब बनाना चाहता है जो जमीन में फसाद करेगा और खून बहायेगा। अल्लाह ने फरमाया कि जो मैं जानता हूँ वो तुम नहीं जानते। फिर अल्लाह पाक ने हजरत आदम को सारी चीजों के नाम सिखा दिये। फिर फरिश्तों के ऊपर उन चीजों को पेश करके पूछा कि तुम इनके नाम बताओ, अगर तुम सच्चे हो। उन्होंने कहा कि या अल्लाह तू पाक है हमको सिर्फ इतना ही इल्म है जितना तूने सिखाया है। तू ही जानने वाला हिकमत वाला है।''

इन आयतों में अल्लाह पाक ने हजरत आदम अलैहि. की फरिश्तों पर बड़ाई की दलील इल्म ही को ठहराया है। हजरत आदम अलैहिस्सलाम में अल्लाह पाक ने ऐसा माद्दा पैदा किया था कि वो दुनिया के सारे उलूम व फुनून सीखने के काबिल हो गये, फरिश्ते इस माद्दा से महरूम थे। इसी लिए अल्लाह ने फरिश्तों से आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा कराया।

अलगर्ज इल्म इन्सान की सबसे बड़ी दौलत है। इस्लाम ने इल्म हासिल करने की बड़ी ताकीद की है। बल्कि कुरआन पाक ने हर मुसलमान को यह दुआ करने का हुक्म दिया है।

'' व कुर्रब्बी जिदनी इल्मा''

यानी यूं कहा करो कि ''ऐ रब मुझको इल्म में तरक्की नसीब फरमा।''

हजरात!

लफ्ज ''इल्म'' के मायना जानने के हैं। इल्म दीनी और दुनियावी होता है। मगर पहले दीनी इल्म हासिल करना जरूरी है और इसके बाद जरूरत के मुताबिक दुनियावी इल्म हासिल करना जरूरी है। दीनी इल्मों में सबसे पहले कुरआन मजीद पढ़ना और पढ़ाना है। एक मुसलमान के लिए बहुत बड़ी नेकी है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक खुत्बे में फरमायाः

''खैरुकुम मन त-अल-ल-मल कुरआ-न व अल-ल-महु''

(बुखारी, फजाइले कुरआन)

यानी ''तुम में बेहतरीन मुसलमान वो है जो कुरआने मजीद पढ़ता या पढ़ाता है।''

कुरआने पाक के लफ्जों को सीखना, फिर उसके तर्जुमे का मतलब मालूम करना भी जरूरी है। इसके लिए अरबी जुबान से जानकारी हासिल करना ताकि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी, आपके फरमान की तालीम और आपकी हिदायतों का इल्म हासिल हो सके।

अलगर्ज दीनी इल्म हासिल करना एक बहुत बड़ा फर्ज है, जिसका ताल्लुक हर मुसलमान मर्द और औरत से है। एक हदीस में आया हैः

طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ۔ (ابن ماجه)

तर्जुमाः इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज है।
रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने बारे में फरमाया हैः

اِنَّمَا بُعِثْتُ مُعَلِّمًا۔ (ابن ماجه)

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने मुझको मुअल्लिम (पढ़ाने वाला) बनाकर भेजा है।''

कुरआन पाक में बार-बार आपकी यह खूबी बयान हुई है, जैसा कि सूरह जुमुआ में हैः

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ط (فاطر ٣٥)

(सूरह फातिर 28, पारा 22)

जिसका मतलब यह है कि ''हकीकत में अल्लाह से डरने वाले सिर्फ वही बन्दे हो सकते हैं, जिनको ईमान व इस्लाम का पूरा इल्म हासिल है।''

यही वजह है कि इल्मे दीन हासिल करने वालों के लिए दरियाओं की

मछलियां दुआयें करती हैं, उनके रास्तों में फरिश्ते अपने पर बिछाते हैं, मगर यह बड़ाईयां खास उन लोगों के लिए हैं जो महज अल्लाह की मर्जी और इस्लाहे मखलूक के फायदे के लिए इल्म हासिल करते हैं। दुनिया तलबी का कोई जज्बा इस इल्म से बढ़कर नहीं होता। अल्लाह पाक आज भी हमारे तमाम इल्म हासिल करने वालों को यह दर्जात अता करे। आमीन!

कुरआन पाक में एक जगह ''जाहिल'' को लफ्ज ''अअ़मा'' यानी अंधे से ताबीर किया है, और ''आलिम'' को लफ्ज ''बसीर'' देखने वाले से ताबीर किया है, जैसा कि फरमाया:

وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۝١٩ (فاطر ٣٥)

(सूरह फातिर: 19, पारा 22)

यानी ''अंधे और देखने वाले दोनों बराबर नहीं हो सकते, ना अंधेरा और रोशनी बराबर हो सकती है। ना साया और ना धूप बराबर हो सकती है।''

अजीज भाईयों!

आयाते कुरआनी के बाद इल्म हासिल करने की फजीलत में चन्द इरशादाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी खूब गौर से सुनकर जहन में बैठा लो। अल्लाह पाक इल्म की तौफीक बख्शे। आमीन

عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَذَا مَاتَ الْاِنْسَانُ اِنْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهٗ اِلَّا مِنْ ثَلَاثَةٍ. صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ اَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهٖ اَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُوْلَهٗ. (مسلم شريف)

''हजरत अबू हुरैरा रजि. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब इन्सान मर जाता है तो उसके नेक कामों का सवाब खत्म हो जाता है। मगर तीन काम मरने के बाद भी सवाब के लिए कायम रहते हैं। अव्वल तो कोई सदका-ए-जारिया किया हो, जैसे मस्जिद, मदरसा, कुआँ, वक्फ वगैरह। दूसरा, इल्म छोड़ गया हो यानी किताबों की शक्ल में या शागिर्दों की शक्ल में, इसका सवाब हमेशा मिलता रहता है। तीसरा, नेक औलाद छोड़ गया हो

जो उसके लिए दुआ करती हो, उनकी नेकियों का सवाब भी मां-बाप को मिलता रहता है।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُّؤْمِنٍ كُرْبَةً مِّنْ كُرَبِ الدُّنْیَا نَفَّسَ اللّٰهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِّنْ كُرَبِ یَوْمِ الْقِیَامَةِ وَمَنْ یَّسَّرَ عَلٰی مُعْسِرٍ یَسَّرَ اللّٰهُ عَلَیْهِ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ فِیْ عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِیْ عَوْنِ اَخِیْهِ وَمَنْ سَلَكَ طَرِیْقًا یَلْتَمِسُ فِیْهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللّٰهُ لَهٗ بِهٖ طَرِیْقًا اِلَی الْجَنَّةِ ۔ وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِیْ بَیْتٍ مِّنْ بُیُوْتِ اللّٰهِ یَتْلُوْنَ كِتَابَ اللّٰهِ وَیَتَدَارَسُوْنَهٗ بَیْنَهُمْ اِلَّا نَزَلَتْ عَلَیْهِمُ السَّكِیْنَةُ وَغَشِیَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللّٰهُ فِیْمَنْ عِنْدَهٗ وَمَنْ بَطَّأَ بِهٖ عَمَلُهٗ لَمْ یُسْرِعْ بِهٖ نَسَبُهٗ ۔ (رواه مسلم)

तर्जुमाः हजरत अबू हुरैरा रजि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो मुसलमान किसी ईमानदार बन्दे की किसी दुनियावी मुसीबत में काम आये, अल्लाह पाक उसकी कयामत की मुसीबत में उसके काम आयेगा। और जो मुसलमान दुनिया में किसी तंगदस्त आदमी पर आसानी करे, अल्लाह पाक दुनिया व आखिरत में उसके लिए आसानियां करेगा। और जो दुनिया में किसी मुसलमान का कोई ऐब छुपा ले, अल्लाह पाक दुनिया व आखिरत में उसके ऐब छुपायेगा। और जब तक बन्दा अपने मुसलमान भाई की मदद करता रहे, अल्लाह पाक भी उसकी मदद करता रहता है और जो शख्स इल्मे दीन हासिल करने के लिए सफर करता है, अल्लाह पाक उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान करेगा और जब कुछ लोग किसी अल्लाह के घर में जमा होकर

कुरआन पाक की तिलावत करते हैं, या उस मज्मा में कुरआन पाक का दरस होता है तो उन पर अल्लाह की तरफ से सुकून यानी तसल्ली नाजिल होती है और उनको अल्लाह की रहमत ढांप लेती है और रहमते इलाही के फरिश्ते उनको घेर लेते हैं और अल्लाह पाक उनका जिक्रे खैर फरिश्तों के सामने करता है और इल्म के हासिल करने के बावजूद अगर कोई अमल करने में कोताही करता रहा तो उसका अच्छा नसब (खानदान) उसके कुछ काम नहीं आयेगा।

इस हदीस से मालूम हुआ कि इल्मे दीन हासिल करने की बहुत बड़ी फजीलत है। इनके अलावा आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक खुत्बा मुबारक और सुनिये। जिससे आपको इल्म हासिल करने वालों का मर्तबा मालूम हो सकेगा।

عَنْ كَثِيْرِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ اَبِي الدَّرْدَاءِ فِيْ مَسْجِدِ دِمَشْقَ فَجَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ يَا اَبَا الدَّرْدَاءِ اِنِّيْ جِئْتُكَ مِنْ مَدِيْنَةِ الرَّسُوْلِ ﷺ لِحَدِيْثٍ بَلَغَنِيْ اَنَّكَ تُحَدِّثُهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ مَا جِئْتُ لِحَاجَةٍ۔ قَالَ فَاِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ مَنْ سَلَكَ طَرِيْقًا يَطْلُبُ فِيْهِ عِلْمًا سَلَكَ اللّٰهُ بِهٖ طَرِيْقًا مِّنْ طُرُقِ الْجَنَّةِ وَاَنَّ الْمَلَآئِكَةَ لَتَضَعُ اَجْنِحَتَهَا رِضًا لِّطَالِبِ الْعِلْمِ وَاَنَّ الْعَالِمَ لَيَسْتَغْفِرُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالْحِيْتَانُ فِيْ جَوْفِ الْمَآءِ وَاَنَّ فَضْلَ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ عَلٰى سَائِرِ الْكَوَاكِبِ وَاَنَّ الْعُلَمَاءَ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ۔

(الحديث) (ترمذی کتاب العلم 2606، ابوداؤد 3157)

(अलहदीस) तिर्मिजी किताबुल इल्म 2606, अबू दाउद 3157)

तर्जुमा: एक बुजुर्ग कसीर बिन कैस नामी कहते हैं कि मैं दिमश्क की मस्जिद में हजरत अबू दरदा सहाबी-ए-रसूल के पास बैठा हुआ था कि आपके पास अचानक

एक आदमी आया और कहने लगा कि ऐ अबू दरदा! मैं मदीना मुनव्वरा से आपके पास खास एक हदीस का इल्म हासिल करने आया हूँ। मैंने सुना था कि वो हदीस सिर्फ आप ही को याद है। मेरे आने का और कोई दुनियावी मकसद नहीं है। इस पर हजरत अबू दरदा ने उनको यह हदीस सुनाई कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम का इरशाद है कि जो शख्स इल्मे दीन हासिल करने के लिए कोई रास्ता चलता है, अल्लाह पाक उसे जन्नत के रास्ते में चलायेगा। और तालिबे इल्मे दीन के लिए फरिश्ते अपने पर बिछा देते हैं। और आलिम के हक में जमीन व आसमान की सारी चीजें भलाई की दुआयें करती हैं। उसके लिए गुनाहों की माफी चाहती हैं, इसी तरह मछलियां समन्दर में उसके लिए दुआयें-खैर करती हैं।

आलिम की फजीलत एक आबिद पर ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की फजीलत सारे सितारों पर है और उलमा अम्बिया के वारिस होते हैं।''

क्योंकि अम्बिया किराम रुपया-पैसा छोड़कर नहीं जाते, वो तो अपने वारिसों के लिए इल्म की दौलत छोड़कर जाते हैं। पस जिसने इस दौलत को पा लिया, उसने बहुत ही बड़ी दौलत को अपने हिस्से में पा लिया।

इस्लामी भाईयों!

कुरआन व हदीस की इन ही हिदायात की बरकत थी कि बाद के जमानों में मुसलमानों में दीनी व दुनियावी इल्म के बड़े-बड़े माहिरीन पैदा हुए, जिनके इल्म व कारीगरी से सारी दुनिया में इल्म व कारीगरी की रोशनी फैल गयी। दुनियावी लिहाज से भी जिस कद्र इल्म इन्सानी जिन्दगी के लिए जरूरी हैं, जैसे डाक्टरी, इंजीनियरिंग, खेती-बाड़ी, कम्प्यूटर, वगैरह। अलगर्ज सारे ही इल्म मुसलमानों ने हासिल किये और उनमें ऐसी महारत पैदा की कि तरक्की के आसमानों पर पहुंच गये। आज यूरोप और एशिया भी उनके गुण गा रहा है।

हजारों बुजुर्गाने दीन इस्लामी तारीख में ऐसे मौजूद हैं जिनके इल्म व कारीगरी का लोहा दुनिया मानती है। एक जमाना था कि दिमश्क (सिरिया) और बगदाद इल्मो फजल के सेन्टर बने हुए थे। यूरोप वालों के लिए मुसलमानों की नई-नई निकाली हुई चीजें बड़ी भारी हैरत अंगेज थी, मगर सद अफसोस कि आज मुसलमान अपना माजी भूल चुके हैं। दीनी उलूम में महारत पैदा करना तो बड़ी बात है, दुनियावी इल्म में भी मुसलमान दूसरी कौमों से बहुत पीछे हैं, जबकि आज दुनिया में इल्म व फन ही की हुकूमत है।

नौजवानों!

उठो और अपने सहाबा-ए-किराम की तारीख को जिन्दा करो और दुनिया में जीने के उसूल सीखो। इल्म व फन के मैदान में आगे बढ़ो। दीनी और दुनियावी इल्म व कारीगरी में पूरी महारत हासिल करो। क्योंकि आज जिन्दगी खालिस इल्म व कारीगरी (टेक्नोलॉजी) के आस-पास ही घूम रही है।

इस्लाम इल्म व कारीगरी के खजानों को अपनी गुमशुदा दौलत करार देता है। वो मुसलमान बहुत ही काबिले मुबारकबाद हैं जो दीनी व दुनियावी इल्म में पूरे बन कर आसमानी इल्म के सूरज व चांद बन जायें और मुसलमानों की डूबती नाव के मल्लाह बनकर पूरी दुनिया में अपना मुकाम हासिल करें।

सबक फिर प्ढ़ अदालत का, सखावत का, शुजाअत का
लिया जायेगा तुझ से काम दुनिया की इमामत का।

या अल्लाह! मुसलमानों को दीनी और दुनियावी इल्म हासिल करने की तौफीक अता फरमा। हमारे नौजवानों को वक्त की जरूरतों को पूरा करने की हिम्मत बख्श दे। आमीन!

छतें पाट लें बारिश से पहले
कश्ती बना रखें, तूफान से पहले

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔

खुत्बा नम्बर 7

अम्र बिलमारूफ व-नही अनिल मुन-कर

यानी नेक कामों को फैलाओ और बुराईयों से रोको

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ (اٰل عمران ۳)

(सूरह आले इमरानः 104, पारा-4)

हम्दो सना के बादः

आज का खुत्बा नेक कामों की चाहत और बुरे कामों से रोकने के हुक्म पर है। अल्लाह पाक ने सूरह आले इमरान में फरमाया कि तुम में से एक जमाअत इस काम पर रहनी चाहिए, जो लोगों को नेकी का हुक्म करती रहे और बुरे कामों से रोकती रहे और जो लोग यह काम करते रहेंगे वही लोग दीनी और दुनियावी कामयाबी पायेंगे।

भाईयों!

ज्यादातर लोग खुत्बा देने वाले से यूं कह देते हैं कि तुमको क्या पड़ी है कि कोई अच्छा होगा तो अपने वास्ते, बुरा होगा तो अपने वास्ते, यह ख्याल ठीक नहीं है। अल्लाह पाक ने हुक्म के साथ फरमाया है कि हमेशा एक जमाअत इस काम पर मुकर्रर रहनी चाहिए जो लोगों को नेक कामों की नसीहत करते रहें और बुरे कामों से मना करते रहें। इस बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक मुबारक व जामेअ खुत्बा सहीह बुखारी शरीफ में हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से इन अल्फाजों में आया है। आपने फरमायाः

اَلَا كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَّعِيَّتِهٖ فَالْاِمَامُ الَّذِیْ عَلَى النَّاسِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَّعِيَّتِهٖ وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَّعِيَّتِهٖ وَالْمَرْاَةُ رَاعِيَةٌ عَلٰى اَهْلِ بَيْتِ زَوْجِهَا وَوَلَدِهٖ.....

الحديث (مسلم الامارة 3409)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''खबरदार रहो, हर एक तुममें से निगेहबान है और हर एक तुम में का अपने मातहतों (अपने नीचे काम करने वालों) के हाल से पूछा जायेगा। पस वो शख्स जो हाकिम है लोगों पर अपनी कौम का निगेहबान है और उससे उनका हिसाब लिया जायेगा। और हर एक शख्स अपने घरवालों का रखवाला है, इससे उनका हिसाब लिया जायेगा। और औरत अपने खाविन्द के औलाद और माल वगैरह की जिम्मेदार है, उससे उनका हिसाब लिया जायेगा। गुलाम अपने आका और मालिक के माल का निगरानी करने वाला है, उससे उनका हिसाब लिया जायेगा। पस खबरदार हर एक तुम में से रखवाला है, उससे उनका हिसाब लिया जायेगा।''

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस खुत्बे से साबित हो रहा है कि तब्लीगे हक करने और नेक कामों को फैलाने और बुराईयों के रोकने के लिए मुसलमानों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है जो घर ही से शुरू होती है। घर में अगर मर्द औरतों और बच्चों पर पूरा कंट्रोल रखे तो यकीनन सारा घर सुधर सकता है। अगर औरत अपने बच्चों और माल वगैरह की जिम्मेदारी से बेखबर न हो तो हर नुकसान से बचाव हो सकता है और बुरे कामों का बच्चों पर असर नहीं पड़ सकता। पस हर मुसलमान का फर्ज है कि अपने तमाम जान-पहचान और रिश्तेदारों को नेक कामों की तब्लीग करता रहे और बुरे कामों से रोकता रहे, अगर गफलत करेगा तो जरूर कयामत के दिन अल्लाह के यहां इसका जवाब देना होगा। आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऐसा ही एक खुत्बा तिर्मिजी शरीफ में हजरत अबू सईद रजि. से मनकूल है। आपने फरमाया:

مَنْ رَّاٰى مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهٖ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهٖ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهٖ وَذٰلِكَ اَضْعَفُ الْاِيْمَانِ۔ (مسلم كتاب الايمان۔70)

यानी "जो कोई तुम में से किसी नाजायज काम को देखे, पस चाहिये कि उसको अपने हाथ से मिटा दे और जिसको यह ताकत ना हो तो जुबान से मिटा दे यानी उसकी बुराई बयान करदे और जिसको यह भी ताकत और हिम्मत ना हो तो दिल से मिटा दे (यानी दिल से उसको बुरा समझे) और यह ईमान का कमजोर दर्जा है।"

और एक हदीस में यह लफ्ज हैं:

وَلَيْسَ وَرَآءَ ذٰلِكَ حَبَّةُ خَرْدَلٍ مِنَ الْإِيْمَانِ۔ (مسلم کتاب الایمان۔71)

यानी अगर यह बात भी ना हो कि खिलाफे शरई काम को दिल से बुरा जाने तो फिर राई के दाने बराबर भी ईमान नहीं। दिल से बुरा जानना यह है कि जो लोग दीन के दुश्मन हों उनसे मेल-जोल ना रखे और जुदा हो जाये, वरना खतरा है कि बुरों की सोहबत में रहकर वो भी बुरा हो जायेगा।

इस हदीस से साबित हुआ कि बुरा काम हर हाल में बुरा है। हर हाल में मुसलमान का फर्ज है कि ऐसे बुरे कामों को अपनी ताकत के मुताबिक मिटाने की कोशिश करे। हाथ से जुबान से उसे बन्द करे, वरना दिल में उससे सख्त नफरत हो। अगर दिल में नफरत ना हो तो फिर वो शख्स बुरे काम करने वालों में शामिल है, खतरा है कि अल्लाह के अजाब में उसे भी पकड़ा जाये, इसलिए कि चने के साथ घुन जरूर पिसता है।

सूरह हूद में अल्लाह तआला ने यही फरमाया है:

وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ (هُوْد ۱۱)

(सूरह हूद: 113, पारा-12)

यानी अल्लाह तआला ने फरमाया है कि ऐसे लोगों की तरफ मत झुको जो जुल्म यानी शिर्क व बिदअत और बुराईयां करने वाले हैं। अगर ऐसा करोगे तो तुमको दोजख की आग पकड़ लेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारे काम आने वाला और मदद करने वाला कोई नहीं होगा।"

मुहतरम भाईयों!

बनी इस्राईल (यहूदियों) की तबाही का बड़ा कारण यही था कि उन्होंने नेक

कामों का हुक्म करने और बुराईयों से रोकने में गफलत की, नतीजा यह हुआ कि सब तबाह व गारत कर दिये गये। यह बयान आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस खुत्बे में है, जिसे इमाम अबू दाउद ने हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से नकल किया है कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

إِنَّ أَوَّلَ مَا دَخَلَ النَّقْصُ عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ كَانَ الرَّجُلُ يَلْقَى الرَّجُلَ فَيَقُولُ يَا هٰذَا اتَّقِ اللّٰهَ وَدَعْ مَا تَصْنَعُ فَإِنَّهُ لَا يَحِلُّ لَكَ ثُمَّ يَلْقَاهُ مِنَ الْغَدِ فَلَا يَمْنَعُهُ ذٰلِكَ أَنْ يَكُونَ أَكِيلَهُ وَشَرِيبَهُ وَقَعِيدَهُ. فَلَمَّا فَعَلُوا ذٰلِكَ ضَرَبَ اللّٰهُ قُلُوبَ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ ثُمَّ قَالَ لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ... إِلَى قَوْلِهِ تَعَالَى ... فَاسِقُونَ. ثُمَّ قَالَ: كَلَّا وَاللّٰهِ لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ وَلَتَأْخُذُنَّ عَلَى يَدِي الظَّالِمِ وَلَتَأْطُرُنَّهُ عَلَى الْحَقِّ أَطْرًا وَلَتَقْصُرُنَّهُ عَلَى الْحَقِّ قَصْرًا وَإِلَّا لَيَضْرِبَنَّ اللّٰهُ بِقُلُوبِ بَعْضِكُمْ عَلَى بَعْضٍ ثُمَّ لَيَلْعَنَنَّكُمْ كَمَا لَعَنَهُمْ. (ابوداؤد، كتاب الملاحم، وابن ماجه كتاب الفتن)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''बनी इस्राइल में जो गुमराही फैली अव्वल वो इस तरह शुरू हुई कि नेक आदमी गुनहगार आदमी से मिलता तो कहता कि ऐ शख्स तू अल्लाह से डर और इस काम को छोड़ दे, यह ठीक नहीं है। फिर वो जब दोबारा उससे मिलता तो उस काम से मना न करता, क्योंकि उसके खाने, पीने में, उठने-बैठने, रहने-सहने में शरीक हो जाता। पस उन लोगों का ऐसा हाल हो गया तो अल्लाह पाक ने एक दिल को दूसरे दिल पर मार दिया। (यानी गुनहगारों में मेल-जोल रखने से कैसे नेक लोगों के दिल भी काले हो गये) फिर आपने यह आयत पढ़ी

"लु-अि-नल्लजी-न क-फ-रू मिम बनी-इस्राई-ल अला लिसानि दाऊ-द
व-ईसब-नि मरय-म.....ता......फासिकून"

कि "लानत की गयी उन लोगों पर जो काफिर हुए, बनी इस्राईल में दाउद और ईसा अलैहिस्सलाम की जुबानों से, यह इसलिए हुआ कि उन्होंने नाफरमानी की और वो शरई कानून पर कायम नहीं रहते थे और बुराईयों पर रोक-टोक नहीं करते थे। बहुत ही बुरा काम था जो वो लोग करते थे। देखता है तू बहुत से लोगों को उनमें से कि मुहब्बत करते हैं बदकारों से, अलबत्ता बुरा है जो आगे भेजा उन्होंने, वास्ते अपनी जानों के। यह कि नाखुश हुआ, उनसे अल्लाह और वो हमेशा अजाब में रहेंगे। अगर वो अल्लाह और नबी पर ईमान लाने वाले होते और अल्लाह की किताब पर ईमान रखने वाले होते तो उनसे यानी बदकारों से मुहब्बत ना रखते। लेकिन ज्यादातर उनमें नाफरमान हैं।"-

फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "तुम हरगिज ऐसा ना करना बल्कि कसम है अल्लाह की या तो तुम नेक कामों का हुक्म करते रहना और बुरे कामों से मना करते रहना, बल्कि तुमको लाजिम है कि नाफरमानों का हाथ पकड़ लेना और जोर के साथ उसको हक की तरफ खींच लाना और हक बात कायम रखने की पूरी कोशिश करना और मजबूती रखना, लेकिन अगर ऐसा ना करोगे तो अल्लाह तआला एक के दिल को दूसरे के दिल पर मार देगा। यानी सबके दिल बिगड़ जायेंगे। फिर तुम पर भी लानत कर देगा, जिस तरह उन पर लानत की थी।

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह पाक ने बनी इस्राईल पर इस वजह से लानत कर दी कि उनके नेक लोग गुनहगारों में मिले रहे। उनके खाने, पीने में शरीक रहे और गुनाहों की रोक-टोक ना रखी, यानी उनसे मिलाप ना छोड़ा, तो अल्लाह तआला का उन पर गजब नाजिल हुआ और उन पर ऐतराज हुआ कि अगर अल्लाह पर और रसूल पर और आसमानी किताब पर उनका ईमान पुख्ता होता तो वो बदकारों से कभी मेल-जोल ना रखते। पस वो भी नाफरमान हैं। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि खबरदार तुम ऐसा ना करना, अगर ऐसा करोगे तो तुम्हारा भी वही हाल होगा जो उनका हुआ, यह इसलिए कि:

जो बुरों के पास बैठेगा बुरा हो जायेगा

मुहतरम भाईयों!

आज उम्मते इस्लामिया का हाल बनी इस्राईल के इस गिरोह से कम नहीं है। बुरे लोगों का ऐसा कन्ट्रोल है कि नेक लोग भी उनके डर से खामोश रहते हैं, बल्कि उन बुरों के साथ मेल-मिलाप और दोस्ती रखते हैं। इसलिए ज्यादातर मुसलमानों के दिल बहुत काले हो चुके हैं। और उम्मत में शिर्क व बिदअत के साथ शराबनोशी, जुएबाजी, जिनाकारी, चोरी, डाकाजनी आम हो गयी है। इल्लामाशाअल्लाह! कब्रपरस्ती की बीमारी इस कद्र बढ़ रही है कि बन्दों में अल्लाह के कितने लोग कब्रों को सज्दा करते हैं। मजारों का तवाफ करते हैं। बहुत से नाम निहाद आलिम यह सबकुछ देखते हैं, मगर उनको जर्रा बराबर भी शर्म नहीं आती। मर्दों औरतों में बेहयाई का एक सैलाब है जो सबको बहाकर ले जा रहा है। सिनेमाओं की लाईन में मुस्लिम औरतों को बुर्का पहने हुए आमतौर पर देखा जा सकता है।

इन हालात में जरूरत है कि इस्लाम का दर्द रखने वाले कमर बांधकर खड़े हों और ऐसी हरकतों के खिलाफ मेहनत शुरू करें। अल्लाह पाक मुसलमानों को ऐसी तौफीक अता करे। और तिर्मिजी में हजरत हुजैफा रजि. से आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यह अल्फाज मुबारक मनकूल हैं-

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ اَوْ لَیُوْشِكَنَّ اللّٰهُ اَنْ یَّبْعَثَ عَلَیْكُمْ عَذَابًا مِّنْهُ فَتَدْعُوْنَهٗ فَلَا یُسْتَجَابَ لَكُمْ۔ (ترمذی۔ الفتن2095)

यानी "उस जात की कसम है जिसके हाथ में मेरी जान है, अलबत्ता तुम नेक कामों का हुक्म करते रहोगे और बुरे कामों से मना करते रहोगे, वरना करीब है कि अल्लाह पाक तुम पर अपना अजाब भेज देगा। फिर तुम्हारा यह हाल हो जायेगा कि तुम अल्लाह पाक से दुआ करोगे और वो तुम्हारी दुआ को कबूल ना करेगा।"

सही बुखारी में मअकिल बिन यसार रजि. से रिवायत है:

مَا مِنْ عَبْدٍ یَسْتَرْعِیْهِ اللّٰهُ رَعِیَّةً فَلَا یَحُطُّهَا بِنَصِیْحَةٍ اِلَّا لَمْ یَجِدْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ۔ (بخاری۔ الاحکام 6617)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जिस शख्स के वास्ते अल्लाह पाक ने कुछ तादाद बनायी हो (यानी उसको थोड़े बहुत आदमियों पर सरदारी हो) फिर वो उनको नसीहत और बुराईयों पर रोक-टोक ना करे, उसको जन्नत की खुशबू भी नसीब ना होगी।''

बुजुर्गाने इस्लाम व अजीजाने मिल्लत!

इस इरशादे नबवी को सुनकर हमको अपने हालात का जायजा लेना बहुत जरूरी है। बुखारी शरीफ में आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

مَثَلُ الْقَائِمِ عَلٰى حُدُوْدِ اللهِ وَالْوَاقِعِ فِيْهَا كَمَثَلِ قَوْمٍ اِسْتَهَمُّوْا عَلٰى سَفِيْنَةٍ فَاَصَابَ بَعْضُهُمْ اَعْلَاهَا وَبَعْضُهُمْ اَسْفَلَهَا فَكَانَ الَّذِيْنَ فِيْ اَسْفَلِهَا اِذَا اسْتَقَوْا مِنَ الْمَآءِ مَرُّوْا عَلٰى مَنْ فَوْقَهُمْ فَقَالُوْا اِنَّا خَرَقْنَا فِيْ نَصِيْبِنَا خَرْقًا وَلَمْ نُؤْذِ عَلٰى مَنْ فَوْقَنَا فَاِنْ يَّتْرُكُوْهُمْ مَا اَرَادُوْا هَلَكُوْا جَمِيْعًا وَاِنْ اَخَذُوْا عَلٰى اَيْدِيْهِمْ نَجَوْا وَنَجَوْا جَمِيْعًا۔ (بخاری شریف)

यानी ''जो शख्स अल्लाह की तय की हुई हदों पर कायम रहे और जो उनको तोड़कर बढ़े यानी गुनाह करे, उन दोनों की मिसाल उन लोगों की सी है जिन्होंने जहाज में कुरआ (पर्ची) डालकर अपनी अपनी जगह खास कर ली। किसी ने ऊपर का दर्जा पा लिया, किसी ने नीचे का, अब जो लोग नीचे के दर्जे में रहे, वो पानी के लिए ऊपर के दर्जो वालों पर से गुजरे, फिर कहने लगे कि अगर हम नीचे ही अपने दर्जे में सुराख कर लें और पानी वहां ही समुन्दर से ले लिया करें तो बार बार ऊपर आने से ऊपर वालों को तकलीफ ना देंगे। फिर अगर वो ऊपर वाले उनको छोड़ दें और वो अपने नीचे सुराख करना शुरू कर दें तो सब डूबकर तबाह हो जायेंगे और अगर सुराख करने से रोककर उनका हाथ पकड़ लें और सुराख ना करने दें तो आप भी बच जायेंगे और दूसरे भी बच जायेंगे।''

मतलब यह है कि अगर बदकारों को बदकारी से रोकें तो सब डूबने और आफतों से बच जायेंगे, वरना सब पर आफत आयेगी।

आज आजादी के दौर में यही हो रहा है कि खुले आम बुराईयां हो रही हैं, शिर्क, कुफ्र, बिदआत पर कोई जुबान खोलने वाला नहीं, इल्ला माशा अल्लाह हरामकारियों के अड्डे, शराबनोशी के धंधे खुले आम हो रहे हैं, जुल्म और बेइन्साफी से दुनिया के गरीब कमजोर लोग परेशान हैं, मगर कोई ऐसी ताकत नहीं जो उनके खिलाफ खुले लफ्जों में बोल सके। इसलिए अलग अलग तरीके के अजाबे इलाही नाजिल हो रहे हैं और किताब तरगीब व तरहीब में हजरत अनस रजि. से आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह खुत्बा आया है:

لَا تَزَالُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تَنْفَعُ مَنْ قَالَهَا وَتَرُدُّ عَنْهُمُ الْعَذَابَ وَالنَّقْمَةَ مَا لَمْ يَسْتَخِفُّوْا بِحَقِّهَا قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَا الْاِسْتِخْفَافُ بِحَقِّهَا؟ قَالَ يَظْهَرُ الْعَمَلُ بِمَعَاصِى اللّٰهِ وَلَا يُنْكَرُ وَلَا يُغَيَّرُوْا (ترغيب وترهيب)

यानी "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ला इलाहा इल्लल्लाहु कहना, हमेशा इसके कहने वाले को नफा देता है और इससे अजाब और मुसीबत को दूर करता है। जब तक वो इस की बेकद्री न करे। सहाबा ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! इसकी बेकद्री करना क्या है?फरमाया कि इसकी बेकद्री करना यह है कि खिलाफे शरई काम होने लगें और उनकी रोक-टोक न हो।"

यानी जो लोग इस्लाम के खिलाफ काम होते हुए देखें और अपनी ताकत के मुताबिक उसके मिटाने में कोशिश न करें तो गोया उन्होंने कलमा-ए-तौहीद की और इस्लाम की बेकद्री कर दी है।

मुस्लिम नौजवानों!

आज सारी दुनिया बुराईयों का घर बनी हुई है, खुद मुसलमानों में इस कद्र बुराईयां फैल चुकी हैं कि उनकी तफसील के लिए दफ्तरों की जरूरत है, कितने मुसलमान शिर्क व बिदअत का काम कर रहे हैं। बे-नमाजी मुसलमानों की जमाअत नमाजियों पर छा रही है। जुए बाजी, शराबखोरी आम हो रही है, जुल्म का एक तूफान है जो गरीबों और कमजोरों को चक्की में दाने की तरह पीस रहा है। इन हालात में आपका इस्लामी व ईमानी फरीजा है कि शहर शहर, कस्बा-कस्बा, गांव-गांव, मुहल्ला-मुहल्ला कुछ अल्लाह के महबूब नौजवान इस्लाम की तंजीम कायम करो और अपनी ताकत के मुताबिक अपने मुहल्ले में अपने खानदानों में

बुराईयों को मिटाने का वादा कर लो। हफ्तावार ऐसे जल्से करो जिनमें लोगों को बुराईयों से रोकने के तरीके पर गौर हो सके। मगर सब से बड़ी शर्त वो है जो अल्लाह पाक ने हजरत मूसा अलैहिस्सलाम को बतलायी थी, जब उनको फिरओन के दरबार में तबलीग के लिए भेजा जा रहा था। अल्लाह तआला ने फरमाया:

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ (طٰہٰ ۲۰)

(सूरह ताहाः 44, पारा-16)

यानी "ऐ मूसा फिरऔन के यहां जाकर नर्मी से बात करना, कोई सख्त कलामी ना करना शायद वो नसीहत हासिल कर सके। या उसके दिल में कुछ अल्लाह का डर पैदा हो सके।"

मेरे अजीजों!

तब्लीग के लिए नरम कलामी और मुहब्बत पहली शर्त है, हमारे ज्यादातर खुत्बा देने वाले व उलमा-ए-किराम इल्ला माशाअल्लाह इस खूबी से दूर हैं। इसलिए उनकी तब्लीग नाकाम है। कुरआन पाक में अल्लाह पाक ने खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया है:

وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ (آلِ عمران ۳)

(सूरह आले इमरानः 159, पारा-4)

यानी "ऐ रसूल! अगर तुम सख्त कलामी करने वाले, सख्त दिल वाले होते तो यह अरब वाले आपके पास से नफरत करके भाग जाते।"

कभी भी आप के करीब ना आते, लेकिन आपकी नरम दिली, खुशअखलाकी का नतीजा है कि यह लोग आपके चाहने वाले बन रहे हैं। पस खुशअखलाकी, नरम बात हर मुसलमान के लिए जरूरी है। इस तरह तब्लीग की जायेगी तो वो जरूर असर करेगी। अल्लाह पाक हर मुसलमान को अच्छे अख्लाक नसीब करे। आमीन! क्योंकि

यही मकसूदे फितरत है, यही रमजे मुसलमानी
उखुव्वत की जहांगीरी मुहब्बत की फरावानी

अजीजों, बुजुर्गो, दोस्तों!

आज आपने जो कुछ सुना है, उसे इस्लाम का छठा रुक्न कहना मुनासिब है, जिसके लिए रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: ''बल्लिगू अन्नी व-लव आयतन'' अगर एक आयत भी तुमको याद हो तो उसे भी दूसरों तक पहुंचा दो। दीन की तब्लीग हर मुसलमान मर्द औरत का फरीजा है और हर मुलसमान घर में, दुकान में, सफर में, हजर में, अकेला और जमाअत में हर जगह यह फर्ज तौफीक के मुताबिक अंजाम दे सकता है। इस्लाम की बका इसी के साथ वाबस्ता है। इन चौदह सौ बरसों में इस्लाम इसी से कायम रहा है, अगर पहले जमाने के मुसलमान इस्लाम की तब्लीग न करते, दरस खुत्बा नसीहत करना छोड़ देते ''अम्र बिल माअरूफ नहयि अनिलमुनकर'' से ग़फलत बरतते तो इस्लाम मुद्दतों पहले खत्म हो जाता, मगर ऐसा नहीं है। दर्दमंदाने इस्लाम ने हर सदी में तब्लीग का झण्डा बुलन्द किया है और तौहीद व सुन्नत की तब्लीग और शिर्क व बिदअत के रद्द में जान तोड़ कोशिश की है। बुराईयों का जान तोड़ मुकाबला किया है। हजरत इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह की कुरबानियों को कौन जानकार मुसलमान नहीं जानता कि किस तरह उन्होंने एक गलत अकीदा ''खलके कुरआन'' का रद्द किया, जिसे उस वक्त की हुकूमत की सरपरस्ती हासिल थी। मगर हजरत इमाम ने हर किस्म की कुरबानियां देकर इस गलत अकीदे की धज्जियां बिखेर दी और आज तक उनका नाम नामी सच्चे मुबल्लिगिन की लाइन में सबसे पहले लिखा जाता है।

पस लाजिम है कि मुसलमान तब्लीगे दीन के लिए कमर बांध कर बुराईयों को मिटाने और भलाईयों को फैलाने के लिए मैदाने अमल में उतर जायें। खिदमते खल्क को अपना शिआर करार दे लें, फिर देखिये कि किस्मत किस तरह उनकी यावरी करती है।

ऐ अल्लाह हर इस्लाम के बेटे को इशाअते दीन व तब्लीगे तौहीद व सुन्नत के लिए उमर फारूक जैसा हौसला और अबू बकर सिद्दीक जैसी समझ अता फरमा। और तब्लीग करने वाले हमारे सारे भाईयों और बहनों को अच्छा बदला अता फरमा। और इस अजीमुश्शान खिदमत को अंजाम देने के लिए सही समझ भी नसीब कर दे। आमीन!

ऐ रब्बुल आलमीन! यह खुत्बाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कलमी तब्लीग के पैशे नजर खालिस तेरे दीन की इशाअत के लिए शाया किये जा रहे हैं, या अल्लाह तू इनको कबूल फरमा ले और पढ़ने वालों, सुनाने वालों नीज सुनने

वालों सबके दिलों को ईमान के नूर से चमका दे। आमीन या रब्बल आलमीन

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ اَجْمَعِیْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 8

अजाबे कब्र और मुनकर व नकीर के सवालात पर कब्रिस्ताने मदीना में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अजीमुश्शान खुत्बा

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾ (ابراهيم ٢٧)

(सूरह इब्राहीम, 27, पारा 13)

''अल्लाह पाक ईमान वालों को पुख्ता बात (कलिमा-ए-तय्यबा) पर दुनिया व आखिरत में साबित कदम रखता है। और जालिमों को अल्लाह पाक हिदायत नहीं करता और अल्लाह जो चाहता है, वह करता है।

हम्दोसलात के बाद

बिरादराने इस्लाम!

आज का खुत्बा अजाबे कब्र और मुनकर व नकीर के सवालात पर है, आलमे आखिरत की पहली घाटी कब्र है जो मरने के बाद इन्सान के सामने आती है। कब्र में मुनकर व नकीर दो फरिश्ते हाजिर होते हैं और वो सवालात करते हैं, जिनका जवाब अगर ठीक-ठाक दिया गया तो आगे सारी घाटियां आसान ही हैं, और अगर कब्र में जवाब दुरुस्त नहीं दिया जा सका तो फिर आगे अजाब ही अजाब है। इन सारी मालूमात के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मय्यत के साथ तशरीफ ले गये थे और कब्र तैयार होने में देर थी। वो खुत्बा यह है

عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي جَنَازَةِ رَجُلٍ مِّنَ الْأَنْصَارِ فَانْتَهَيْنَا إِلَى الْقَبْرِ وَلَمَّا يُلْحَدْ فَجَلَسَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَجَلَسْنَا حَوْلَهُ كَأَنَّ عَلَى رُؤُوسِنَا الطَّيْرَ وَفِي يَدِهٖ عُودٌ يَنْكُتُ بِهٖ فِي الْأَرْضِ فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ إِسْتَعِيذُوا بِاللهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ مَرَّتَيْنِ اَوْ ثَلَاثًا۔ ثُمَّ قَالَ: إِنَّ الْعَبْدَ الْمُؤْمِنَ إِذَا كَانَ فِي إِنْقِطَاعٍ مِّنَ الدُّنْيَا وَإِقْبَالٍ مِّنَ الْآخِرَةِ نَزَلَ إِلَيْهِ مَلَائِكَةٌ مِّنَ السَّمَآءِ بِيْضُ الْوُجُوْهِ كَأَنَّ وُجُوْهَهُمُ الشَّمْسُ مَعَهُمْ كَفَنٌ مِّنْ اَكْفَانِ الْجَنَّةِ وَحَنُوْطٌ مِّنْ حَنُوْطِ الْجَنَّةِ۔ حَتّٰى يَجْلِسُوْا مِنْهُ مَدَّ الْبَصَرِ ثُمَّ يَجِيْءُ مَلَكُ الْمَوْتِ عَلَيْهِ السَّلَامُ حَتّٰى يَجْلِسَ عِنْدَ رَأْسِهٖ فَيَقُوْلُ اَيَّتُهَا النَّفْسُ الطَّيِّبَةُ اُخْرُجِيْ إِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنَ اللهِ وَرِضْوَانٍ۔ قَالَ فَتَخْرُجُ تَسِيْلُ كَمَا تَسِيْلُ الْقَطْرَةُ مِنَ السِّقَاءِ فَيَأْخُذُهَا فَإِذَا اَخَذَهَا لَمْ يَدَعُوْهَا فِيْ يَدِهٖ طَرْفَةَ عَيْنٍ حَتّٰى يَأْخُذُوْهَا فَيَجْعَلُوْهَا فِيْ ذٰلِكَ الْكَفَنِ وَفِيْ ذٰلِكَ الْحَنُوْطِ وَيَخْرُجُ مِنْهَا كَاَطْيَبِ نَفْحَةِ مِسْكٍ وُجِدَتْ عَلٰى وَجْهِ الْاَرْضِ۔ قَالَ فَيَصْعَدُوْنَ بِهَا فَلَا يَمُرُّوْنَ۔ يَعْنِيْ بِهَا ۔ عَلٰى مَلَإٍ مِّنَ الْمَلَآئِكَةِ إِلَّا قَالُوْا مَا هٰذَا الرُّوْحُ الطَّيِّبُ؟ فَيَقُوْلُوْنَ فُلَانُ بْنُ فُلَانٍ بِاَحْسَنِ اَسْمَآئِهِ الَّتِيْ كَانُوْا يُسَمُّوْنَهٗ بِهَا فِي الدُّنْيَا حَتّٰى يَنْتَهُوْا بِهَا إِلَى السَّمَآءِ الدُّنْيَا فَيَسْتَفْتِحُوْنَ لَهٗ فَيُفْتَحُ لَهُمْ فَيُشَيِّعُهٗ مِنْ كُلِّ سَمَآءٍ

مُقَرَّبُوْهَا إِلَى السَّمَآءِ الَّتِيْ تَلِيْهَا حَتّٰى يُنْتَهٰى بِهٖ إِلَى السَّمَآءِ السَّابِعَةِ۔
فَيَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ اُكْتُبُوْا كِتَابَ عَبْدِيْ فِيْ عِلِّيِّيْنَ وَاَعِيْدُوْهُ إِلَى
الْاَرْضِ فَإِنِّيْ مِنْهَا خَلَقْتُهُمْ وَفِيْهَا اُعِيْدُهُمْ وَمِنْهَا اُخْرِجُهُمْ تَارَةً
اُخْرٰى۔ قَالَ فَتُعَادُ رُوْحُهٗ فِيْ جَسَدِهٖ فَيَأْتِيْهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهٖ فَيَقُوْلَانِ
لَهٗ مَنْ رَّبُّكَ؟ فَيَقُوْلُ رَبِّيَ اللّٰهُ۔ فَيَقُوْلَانِ لَهٗ مَا دِيْنُكَ؟ فَيَقُوْلُ دِيْنِيَ
الْاِسْلَامُ۔ فَيَقُوْلَانِ لَهٗ مَا هٰذَا الرَّجُلُ الَّذِيْ بُعِثَ فِيْكُمْ؟ فَيَقُوْلُ هُوَ
رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ فَيَقُوْلَانِ لَهٗ وَمَا عِلْمُكَ؟ فَيَقُوْلُ قَرَأْتُ كِتَابَ اللّٰهِ
فَاٰمَنْتُ بِهٖ وَصَدَّقْتُ۔ فَيُنَادِيْ مُنَادٍ مِّنَ السَّمَآءِ اَنْ قَدْ صَدَقَ عَبْدِيْ
فَاَفْرِشُوْهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَاَلْبِسُوْهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَافْتَحُوْا لَهٗ بَابًا إِلَى الْجَنَّةِ۔ قَالَ
فَيَأْتِيْهِ مِنْ رَّوْحِهَا وَطِيْبِهَا فَيُفْسَحُ لَهٗ فِيْ قَبْرِهٖ عَلٰى مَدِّ بَصَرِهٖ۔ قَالَ وَيَأْتِيْهِ
رَجُلٌ حَسَنُ الْوَجْهِ حَسَنُ الثِّيَابِ طَيِّبُ الرِّيْحِ۔ فَيَقُوْلُ اَبْشِرْ بِالَّذِيْ
يَسُرُّكَ هٰذَا يَوْمُكَ الَّذِيْ كُنْتَ تُوْعَدُ۔ فَيَقُوْلُ لَهٗ مَنْ اَنْتَ؟ فَوَجْهُكَ
الْوَجْهُ يَجِيْءُ بِالْخَيْرِ۔ فَيَقُوْلُ اَنَا عَمَلُكَ الصَّالِحُ۔ فَيَقُوْلُ رَبِّ اَقِمِ السَّاعَةَ۔
رَبِّ اَقِمِ السَّاعَةَ۔ حَتّٰى اَرْجِعَ إِلٰى اَهْلِيْ وَمَالِيْ۔ قَالَ وَإِنَّ الْعَبْدَ الْكَافِرَ إِذَا
كَانَ فِيْ انْقِطَاعٍ مِّنَ الدُّنْيَا وَإِقْبَالٍ مِّنَ الْاٰخِرَةِ نَزَلَ إِلَيْهِ مِنَ السَّمَآءِ
مَلَآئِكَةٌ سُوْدُ الْوُجُوْهِ مَعَهُمُ الْمُسُوْحُ يَجْلِسُوْنَ مِنْهُ مَدَّ الْبَصَرِ ثُمَّ يَجِيْءُ

مَلَكُ الْمَوْتِ حَتّٰى يَجْلِسَ عِنْدَ رَأْسِهٖ فَيَقُوْلُ اَيَّتُهَا النَّفْسُ الْخَبِيْثَةُ اُخْرُجِىْ اِلٰى سُخْطٍ مِّنَ اللّٰهِ. قَالَ فَتُفَرَّقُ فِىْ جَسَدِهٖ فَيَنْتَزِعُهَا كَمَا يُنْزَعُ السَّفُّوْدُ مِنَ الصُّوْفِ الْمَبلُوْلِ فَيَأْخُذُهَا فَاِذَا اَخَذَهَا لَمْ يَدَعُوْهَا فِىْ يَدِهٖ طَرْفَةَ عَيْنٍ حَتّٰى يَجْعَلُوْهَا فِىْ تِلْكَ الْمُسُوْحِ وَتَخْرُجُ مِنْهَا كَاَنْتَنِ رِيْحِ جِيْفَةٍ وُجِدَتْ عَلٰى وَجْهِ الْاَرْضِ. فَيَصْعَدُوْنَ بِهَا فَلَا يَمُرُّوْنَ بِهَا عَلٰى مَلَاٍ مِّنَ الْمَلَآئِكَةِ اِلَّا قَالُوْا مَا هٰذَا الرُّوْحُ الْخَبِيْثُ؟ فَيَقُوْلُوْنَ فُلَانُ بْنُ فُلَانٍ بِاَقْبَحِ اَسْمَائِهِ الَّتِىْ كَانَ يُسَمّٰى بِهَا فِى الدُّنْيَا حَتّٰى يُنْتَهٰى بِهَا اِلَى السَّمَآءِ الدُّنْيَا فَيُسْتَفْتَحُ لَهٗ فَلَا يُفْتَحُ لَهٗ ثُمَّ قَرَأَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ (لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِىْ سَمِّ الْخِيَاطِ) فَيَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ اُكْتُبُوْا كِتَابَهٗ فِىْ سِجِّيْنٍ فِى الْاَرْضِ السُّفْلٰى فَتُطْرَحُ رُوْحُهٗ طَرْحًا ثُمَّ قَرَأَ (وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِىْ بِهِ الرِّيْحُ فِىْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ) فَتُعَادُ رُوْحُهٗ فِىْ جَسَدِهٖ وَيَأْتِيْهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهٖ فَيَقُوْلَانِ لَهٗ مَنْ رَّبُّكَ؟ فَيَقُوْلُ هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِىْ فَيَقُوْلَانِ لَهٗ مَا دِيْنُكَ؟ فَيَقُوْلُ هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِىْ. فَيَقُوْلَانِ لَهٗ مَا هٰذَا الرَّجُلُ الَّذِىْ بُعِثَ فِيْكُمْ؟ فَيَقُوْلُ هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِىْ. فَيُنَادِىْ مُنَادٍ مِّنَ السَّمَآءِ اَنْ كَذَبَ فَاَفْرِشُوْهُ مِنَ النَّارِ وَافْتَحُوْا لَهٗ بَابًا اِلَى النَّارِ.

فَيَأْتِيهِ مِنْ حَرِّهَا وَسَمُومِهَا وَيَضِيقُ عَلَيْهِ قَبْرُهُ حَتّٰى تَخْتَلِفَ اَضْلَاعُهُ وَيَأْتِيهِ رَجُلٌ قَبِيحُ الْوَجْهِ قَبِيحُ الثِّيَابِ مُنْتِنُ الرِّيحِ فَيَقُولُ اَبْشِرْ بِالَّذِي يَسُوْئُكَ هٰذَا يَوْمُكَ الَّذِي كُنْتَ تُوعَدُ. فَيَقُولُ مَنْ اَنْتَ فَوَجْهُكَ الْوَجْهُ يَجِيْءُ بِالشَّرِّ. فَيَقُوْلُ اَنَا عَمَلُكَ الْخَبِيْثُ. فَيَقُوْلُ رَبِّ لَا تُقِمِ السَّاعَةَ. وَفِيْ رِوَايَةٍ نَحْوَهُ وَزَادَ فِيْهِ: اِذَا خَرَجَ رُوْحُهُ صَلّٰى عَلَيْهِ كُلُّ مَلَكٍ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَكُلُّ مَلَكٍ فِي السَّمَآءِ وَفُتِحَتْ لَهُ اَبْوَابُ السَّمَآءِ لَيْسَ مِنْ اَهْلِ بَابٍ اِلَّا وَهُمْ يَدْعُوْنَ اللّٰهَ اَنْ يُعْرَجَ بِرُوْحِهِ مِنْ قِبَلِهِمْ وَتُنْزَعُ نَفْسُهُ يَعْنِي الْكَافِرَ مَعَ الْعُرُوْقِ فَيَلْعَنُهُ كُلُّ مَلَكٍ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَكُلُّ مَلَكٍ فِي السَّمَآءِ وَتُغْلَقُ اَبْوَابُ السَّمَآءِ لَيْسَ مِنْ اَهْلِ بَابٍ اِلَّا وَهُمْ يَدْعُوْنَ اللّٰهَ اَنْ لَّا يُعْرَجَ رُوْحُهُ مِنْ قِبَلِهِمْ. (رواه احمد)

(रवाहु अहमद, मुसनद अहमद 5/287, 288, 295, 296, सुनन अबू दाऊद, हदीस 4753)

हजरत बराअ बिन आजिब रजि. रिवायत करते हैं कि हम एक अनसारी मर्द के जनाजे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कब्रिस्तान में गये। अभी कब्र तैयार होने में देर थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठ गये और हम भी आपके आसपास बैठ गये, इतने खामोश जैसे हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हुए हैं। फिर आपने हमको खिताब करते हुए फरमाया, इस हाल में कि आपके हाथ में एक छड़ी थी। आप इससे फिक्रमन्दी की हालत में जमीन कुरेद रहे थे। आपने सर को ऊंचा करके खिताब फरमाया। जब किसी ईमानदार बन्दे (या बन्दी का) दुनिया से कूच होकर आखिरत का सफर होता है तो उसके पास आसमान से जन्नत के फरिश्ते सूरज की तरह रोशन चेहरे वाले उतरते हैं और उसके सामने

आकर बैठ जाते हैं। उनके साथ जन्नत का बेहतरीन कफन और जन्नत के बेहतरीन इत्र होते हैं। फिर मलकुल मौत यानी इजराईल अलैहिस्सलाम तशरीफ लाते हैं और वो उसके सर के पास बैठ जाते हैं। फिर मलकुल मौत कहते हैं कि ऐ पाक जान आज अल्लाह की मगफिरत और रजामन्दी की तरफ निकल। यह सुनकर वो रूह उसकी तरफ निकल आती है, जैसे मश्क से पानी का कतरा बह जाता है। फिर इजराईल उसे संभालते हैं और दूसरे फरिश्ते जो हाजिर होते हैं वो जल्द ही मल्कुल मौत के हाथों से लेकर जन्नत के कफन में जन्नत की बे-नजीर खुशबू में उसे लपेटते हैं। इस पाक जान में से इस कद्र तेज खुशबू निकलती है कि सारी जमीन पर ऐसी खुशबू नहीं पायी जा सकती। फिर वो फरिश्ते इस रूह को लेकर आसमाने दुनिया की तरफ चढ़ते हैं, रास्ते में फरिश्तों की मिलने वाली जमाअतें इस रूह के बारे में पूछती हैं तो फरिश्ते निहायत ही अदब से इसका बेहतरीन नाम लेते हैं जो नाम इसका दुनिया में मशहूर था। यहां तक कि वो आसमाने दुनिया पर पहुंचते हैं, फिर उसके लिए दरवाजा खुलवाते हैं जो फौरन खोल दिया जाता है। फिर उस आसमान के फरिश्ते दूसरे आसमान तक उसको रुख्सत करने जाते हैं और यही इज्जत व अहतराम सातों आसमानों तक होता है। जहां की हाजरी के बाद अल्लाह पाक फरमाता है कि मेरे इस बन्दे का नाम मेरे पाक बन्दों के रजिस्टर में लिख दो, जिसका नाम इल्लिय्यीन है। फिर उसकी रूह जमीन की तरफ लौटा दो, क्योंकि मैंने उनको इसी जमीन से पैदा किया है और इसी में लौटाया और इसी से उनको कयामत के दिन फिर जिन्दा करूंगा। पस उसकी रूह वहां से उसके जिस्म में लौटा दी जाती है और उसके पास दो फरिश्ते आते हैं जो उसे बैठा देते हैं और उससे पूछते हैं "मन रब्बु-क" तेरा रब कौन है?वो जवाब देता है "रब्बी अल्लाह" मेरा रब अल्लाह है। फिर वो पूछते हैं "मा दीनु-क"' तेरा दीन क्या है?वो बोलता है "दीनिय इस्लामु" मेरा दीन इस्लाम है। फिर वो कहते हैं यह जो आदमी तुम्हारे लिए रसूल बनाकर भेजा गया था, वो कौन है? वो जवाब देता है वो अल्लाह के सच्चे रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। फिर वो पूछते हैं कि तुम को यह किस तरह मालूम हुआ?वो कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब कुरआन मजीद को पढ़ा। मैं उस पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक की। इससे यह सारे हालात मालूम हुए। फिर आसमान से आवाज आती है, मेरे बन्दे ने सच कहा है, इसके लिए जन्नत का बिछौना बिछा दो और इसको जन्नत का लिबास पहना दो और इसके लिए जन्नत की तरफ दरवाजा खोल दो। पस जन्नत की खुशबुएं उसकी तरफ आने लगती हैं और उस पर

जन्नत की फिजा छा जाती है। और जहां तक उसकी निगाह काम करती है, उसकी कब्र वहां तक चौड़ी हो जाती है। फिर उसके पास एक बेहतरीन हसीन सूरत जिसका बहुत ही खूबसूरत चेहरा होता है, वो बेहतरीन लिबास और बेहतरीन खुशबू में मुअत्तर आती है और उसे खुशखबरी मुबारकबाद पेश करती है कि यही वो अच्छा दिन है जिसके लिए दुनिया में आपको वादा दिया जाता था, वो पूछता है कि ऐ सूरत तू कौन है?तेरा चेहरा तो बहुत ही खुशी लिए हुए है और तुझ से तो भलाई ही भलाई जाहिर हो रही है। वो सूरत बोलती है कि मैं तेरा नेक अमल हूँ, वो खुशनसीब जन्नती यह सबकुछ देखकर खुशी में कहता है, या अल्लाह मेरे लिए कयामत कायम कर दे ताकि मैं अपने घर वालों की मुलाकात और अपनी जन्नत की नेमतों की तरफ लौट जाऊँ।

मुसलमान भाईयों!

यहां तक आपने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबान मुबारक से निकले हुए इस खुत्बे का तर्जुमा सुना है जो जन्नत वालों से मुतअल्लिक है। दुआ करो कि अल्लाह पाक हमको आप सबको जन्नत अता करे और कब्र में साबित कदमी बख्श दे। आमीन!

आगे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोजखियों का हाल बयान फरमाया जिसका तर्जुमा यह है, गौर से सुनो और इबरत हासिल करो।

और जब काफिरों या मुनाफिकों का दुनिया से आखिरत की तरफ सफर शुरू होता है तो आसमान से उसके पास काले चेहरे वाले फरिश्ते दोजख का टाट लेकर आते हैं, और उसके सामने बैठ जाते हैं। फिर मलकुल मौत उसके सर के पास बैठ जाते हैं और कहते हैं कि ऐ गन्दी जान, अल्लाह पाक के गजब और गुस्से की तरफ निकल। यह सुनकर उसकी जान घबराती है और जिस्म में इधर-उधर छुपने लगती है। मलकुल मौत उसे जबरदस्ती से घसीट लेते हैं जैसे किसी की कच्ची खाल उतारी जाये। फिर उनके हाथ से दूसरे फरिश्ते उसी वक्त उसे ले लेते हैं और दोजखी टाट लपेट देते हैं। उससे इस कद्र बदबू निकलती है कि सारी जमीन पर ऐसी बदबू किसी मुरदार की तुमने ना सूंघी होगी। फरिश्ते अब उसे लेकर आसमान की तरफ चढ़ने लगते हैं। रास्ते में फरिश्तों की जो जमाअत मिलती है, वो पूछती है कि यह किस गन्दे बन्दे की गन्दी रूह है?यह फरिश्ते उसका वो बदतरीन नाम बतला देते हैं जिससे वो दुनिया में मशहूर था। इसी तरह वो आसमाने दुनिया तक पहुंचाते हैं तो उसका दरवाजा खुलवाना चाहते हैं लेकिन

वो खोला नहीं जाता। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फरमायी जो खुत्बे में मजकूर है यानी ''उनके लिए आसमान के दरवाजे नहीं खोले जाते और ना यह जन्नत में जा सकते हैं, जब तक कि सूई के नाके में ऊंट ना चला जाये।'' उसी वक्त अल्लाह पाक की तरफ से आवाज आती है कि उसका नाम जमीनों के नीचे दोजखियों के रजिस्टर ''सिज्जीन'' में लिख दो। फिर वहीं से उसकी रूह फैंक दी जाती है। कुरआने पाक में अल्लाह तआला ने इस मजमून को यूँ बयान फरमाया है यानी ''अल्लाह के साथ जिसने शिर्क किया गोया कि वो आसमान से फैंक दिया गया, अब चाहे उसे रास्ते ही में परिन्दे उचक लें या किसी दूर दराज गड्डे में हवाएं उड़ाकर उसको डाल दें।'' अब उसकी रूह उसके जिस्म में लौटा दी जाती है, उस वक्त उसके पास भी वही फरिश्ते मुनकर व नकिर आते हैं, उसे बैठाकर उससे पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? तो वो कहता है, हाय! हाय! मैं तो नहीं जानता। फरिश्ते फिर उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? तो वह कहता है कि हाय-हाय मैं तो नहीं जानता। फरिश्ते फिर उससे पूछते हैं कि उनके बारे में क्या कहता है? जो तुम में रसूल बनाकर भेजे गये थे। वो कहता है, हाय! हाय! मैं यह भी नहीं जानता। उसी वक्त आसमान से आवाज आती है कि यह झूटा है, उसके लिए दोजख का बिस्तर बिछा दो और उसे दोजखी लिबास पहना दो और उसके लिए दोजख की तरफ दरवाजा खोल दो। चुनांचे यही होता है और उसे दोजख की तपिश, भाप और आग की लपटें लगती हैं और उसकी कब्र इतनी तंग हो जाती है कि दायीं पसली बांयी तरफ और बायीं पसली दायीं तरफ हो जाती है। फिर उसकी कब्र में एक ऐसा फरिश्ता मुकर्रर किया जाता है, जो ना देखता है, ना सुनता है। उसके हाथ में लोहे का भारी गुर्ज (हथौड़ा) होता है, ऐसा कि अगर वो उसे किसी बड़े से बड़े पहाड़ पर मार दे तो वो पहाड़ भी पिस जाये, मिट्टी बन जाये। उसे वो फरिश्ता घन से मारता है, इस गर्ज कि आवाज पूर्व और पश्चिम वाले सब सुनते हैं, मगर इन्सान और जिन्न नहीं सुन सकते। इस गुर्ज कि पड़ते ही उसकी हड्डी पसली टूट जाती है, उसका चूरा हो जाता है। लेकिन फिर उसमें रूह लौटा दी जाती है और यही अजाब उसे कयामत तक होता रहेगा।

आपका यह खुत्बा खत्म हुआ और कब्र तैयार हो गयी। सहाबा किराम का यह हाल होता था कि आपका मुबारक बयान सुनकर जन्नत दोजख के नजारे उनकी आंखों के सामने होते थे और वो जोर-जोर से रोया करते थे। रजिअल्लाहु अन्हुम।

भाईयों!

अल्लाह पाक हम सबको ईमान व इस्लाम की दौलत से मालामाल रखे और मरने के वक्त आसानियां अता करे। और कब्र में साबित कदमी अता फरमाये कि हम मुनकर व नकिर के सवालों के जवाब निहायत सहीह तौर पर अदा कर सके। आमीन या रब्बल आ-लमीन!

بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ أَجْمَعِيْنَ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔

खुत्बा नम्बर 9

खुत्बा-ए-जुमा की खुसूसीयत व मसाइल के बयान में

اَمَّا بَعۡدُ: اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ۔

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا نُوۡدِیَ لِلصَّلٰوۃِ مِنۡ یَّوۡمِ الۡجُمُعَۃِ فَاسۡعَوۡا اِلٰی ذِکۡرِ اللّٰہِ وَذَرُوا الۡبَیۡعَ ؕ ذٰلِکُمۡ خَیۡرٌ لَّکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ۝ (الجمعة ٦٢)

यानी अल्लाह तआला ने फरमाया कि "ऐ ईमान वालो! नमाजे जुमा के वास्ते अजान हो तो अल्लाह की याद के वास्ते जाने में जल्दी करो और लेन-देन को छोड़ दो, अगर तुम को समझ है तो जान लो कि तुम्हारी बेहतरी इसी में है।" (सूरह जुमुआः 9, पारा-29)

हम्दो सना के बादः

इस्लामी भाईयों!

आज का खुत्बा, जुमा के दिन की अहमियत और नमाजे जुमा की फरजियत व खुसूसीयत पर है। जुमा के दिन में अल्लाह पाक ने बहुत सी खूबियों को जमा किया है। जिसका बयान आगे आ रहा है। इसी वजह से इसे जुमा कहा जाता है। यह मुसलमानों की हफ्तावारी ईद है जिसकी नमाज हर मुसलमान पर फर्ज है, सिवाये चन्द मजबूरों के, जिनका जिक्र आगे आयेगा। इसकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि अल्लाह पाक ने कुरआने मजीद में खास तौर से सूरह जुमा उतारी, इस दिन दरूद शरीफ ज्यादा से ज्यादा पढ़ना, सूरह कहफ की तिलावत करना, अव्वल वक्त में मस्जिद में जाना ऐसे नेक काम हैं जिनका अज्रो सवाब बहुत ज्यादा है। जुमा की बड़ाई से मुतअल्लिक रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अहम तरीन खुत्बा आपको सुनाया जाता है। अल्लाह पाक अमल की तौफीक

बख्शे। आमीन!

हजरत अबू लुबाबा अब्दुल मुनजिर रिवायत करते हैं कि एक रोज रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुमा की फजीलत के बारे में खुत्बा दिया:

اِنَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ سَيِّدُ الْاَيَّامِ وَاَعْظَمُهَا عِنْدَ اللهِ وَهُوَ اَعْظَمُ عِنْدَ اللهِ مِنْ يَوْمِ الْاَضْحٰى وَيَوْمِ الْفِطْرِ۔ فِيْهِ خَمْسُ خِلَالٍ خَلَقَ اللهُ فِيْهِ آدَمَ وَاَهْبَطَ اللهُ فِيْهِ آدَمَ اِلَى الْاَرْضِ وَفِيْهِ تَوَفَّى اللهُ آدَمَ وَفِيْهِ سَاعَةٌ لَا يَسْئَلُ الْعَبْدُ فِيْهَا شَيْئًا اِلَّا اَعْطَاهُ مَا لَمْ يَسْأَلْ حَرَامًا وَفِيْهِ تَقُوْمُ السَّاعَةُ مَا مِنْ مَلَكٍ مُقَرَّبٍ وَلَا سَمَآءٍ وَلَا اَرْضٍ وَلَا رِيَاحٍ وَلَا جِبَالٍ وَلَا بَحْرٍ اِلَّا هُوَ مُشْفِقٌ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ۔ (مشكوٰة) (ابن ماجه، مسند احمد (430/3

(मिशकात, इब्ने माजा, मुस्नद अहमद 3/430)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बेशक जुमे का दिन सब दिनों का सरदार है। इसका मर्तबा अल्लाह पाक के नजदीक ईदुल फित्र व ईदुल अजहा से भी ज्यादा है। इसमें पांच खूबियाँ हैं। अल्लाह पाक ने इसी दिन में हजरत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया। और इसी दिन में अल्लाह पाक ने हजरत आदम अलैहिस्सलाम को जमीन पर उतारा। और इसी दिन में अल्लाह पाक ने हजरत आदम अलैहिस्सलाम को मौत दी। और इसी दिन में एक घड़ी ऐसी आती है कि उस वक्त कोई बन्दा मुसलमान जो कुछ दुआ मांगे, वो कबूल हो जाती है। बशर्ते कि वो दुआ किसी नाजाइज बात की ना हो। और जिस दिन कयामत कायम होगी, वो भी जुमा ही का दिन होगा और कोई फरिश्ता मुकर्रब और आसमान और कोई जमीन और कोई हवा और कोई पहाड़ और कोई दरिया ऐसा नहीं है, जिस पर जुमा के दिन डर गालिब ना होता हो, यानी जुमा को यह सब डरते हैं कि शायद इसी जुमा को कयामत हो जाये।

मुहतरम बुजुर्गो!

दुआ की कबूलियत की घड़ी के बारे में कई रिवायतें हैं। सही मुस्लिम में अबू मूसा रजि. से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह हुक्म आया है कि वो घड़ी खुत्बा शुरू होने से जुमा की नमाज खत्म होने तक है। और तिर्मिजी में अनस रजि. से रिवायत है कि वो घड़ी अस्र से लेकर सूरज डूबने के बीच में होती है। और बाज रिवायतों में सिर्फ दिन का लफ्ज आया है, यानी जुमे के दिन भर में एक घड़ी ऐसी आती है किसी खास वक्त की कैद नहीं। शायद यह इख्तिलाफे रिवाया का इस कारण से होता है कि वो घड़ी एक जुमा में किसी वक्त होती और दूसरे जुमा में किसी और वक्त होती हो। जिस तरह लैलतुल कद्र (कद्र वाली रात) का हाल है कि रमजान मुबारक की आखिर की दस रातों में से किसी साल में इक्कीसवीं रात और किसी में तेईसवीं रात और किसी साल में पच्चीसवीं वगैरह में होती है। या कोई और वजह हो, मगर बहरहाल हर मुसलमान को चाहिए कि जुमा के दिन को बड़ी नेमत और बहुत गनीमत समझे और तमाम दिन जिक्रो भलाई और दुआ व इस्तिग़फार में लगा रहे, शायद दुआ की कबूलियत का वक्त नसीब हो जाये। और जुमा की नमाज के वास्ते सवेरे से तैयारी करने और बड़े जोक व शौक से अव्वल वक्त जाये। औस बिन औस सकफी से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह हुक्म आया है:

مَنْ غَسَّلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَاغْتَسَلَ وَبَكَّرَ وَابْتَكَرَ وَمَشٰى وَلَمْ يَرْكَبْ وَدَنَا مِنَ الْاِمَامِ فَاسْتَمَعَ وَلَمْ يَلْغُ كَانَ لَهٗ بِكُلِّ خُطْوَةٍ عَمَلُ سَنَةٍ اَجْرُ صِيَامِهَا وَقِيَامِهَا ۔ (ابوداؤد الطهارة، احمد، ترمذی، نسائی)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जिस शख्स ने जुमा के वास्ते कपड़े वगैरह धोये और नहाया और सवेरे चला और पहले वक्त में मस्जिद में पहुंचा, यानी खुत्बा के शुरू होने से पहले पहुंच गया और पैदल चला, सवारी पर सवार होकर नहीं गया और इमाम के करीब बैठा, पस खुत्बा सुना और कोई फुजूल काम और बात नहीं की, पस उसके लिए हर एक कदम के बदले एक एक साल की इबादत लिखी जाती है। ऐसी इबादत की जैसे दिन भर रोजा रखा हो और रात भर इबादत में जागता रहा हो।

मगर यह भी याद रखना चाहिए कि सवाब और दर्जा जब ही हासिल होता है

जबकि इस कायदे से जुमा को अदा किया जाये। जैसाकि हदीस में बयान हुवा। यह नहीं कि देर लगाकर पीछे आने वालों के सर और गर्दन पर कूद-फांद कर पहली सफ में जाये और झगड़ा करे। इस तरह सवाब नहीं मिलता, बल्कि उल्टा गुनाह है, जैसाकि इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है:

مَنْ تَخَطَّى رِقَابَ النَّاسِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ اتُّخِذَ جِسْرًا اِلٰى جَهَنَّمَ۔

(ترمذی،ابن ماجه،احمد)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जो शख्स जुमा के दिन मस्जिद में लोगों की गर्दनों पर कूद कर चला गया उसने जहन्नम के जाने के लिए पुल बनाया है।"

इस तौर से पहली सफ में जाना सवाब हासिल करने का तरीका नहीं है, बल्कि दोजख में जाने का रास्ता है।

इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अगरचे दीन ही का काम हो और अल्लाह ही के वास्ते करे, लेकिन जब तक वो कुरआन व हदीस की तालीम के मुताबिक ना होगा, तब तक सवाब नहीं मिल सकता।

मुसलमान भाईयों!

जुमा की नमाज इस्लामी कानून की शर्तों के साथ अदा करना बहुत ही बड़ा नेक काम है। अल्लाह पाक ने ईमान वालों को साफ साफ बतला दिया है कि जुमा की नमाज के लिए अपने कारोबार छोड़कर जाओ और नमाजे जुमा अदा करो। हां! जिन पर जुमे की नमाज की हाजरी फर्ज नहीं है, उनके बारे में हदीस में आया है हजरत तारिक बिन शिहाब से रिवायत है:

اَلْجُمُعَةُ حَقٌّ وَاجِبٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ فِيْ جَمَاعَةٍ اِلَّا اَرْبَعَةٍ مَمْلُوْكٍ اَوِامْرَاَةٍ اَوْ صَبِيٍّ اَوْ مَرِيْضٍ۔ (مشكوٰة)[ابوداؤد]

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जुमा हक है, फर्ज है, हर मुसलमान पर इस शर्त से कि जमाअत में हाजिर होकर पढ़े। मगर चार किस्म के आदमियों पर फर्ज नहीं है, गुलाम, औरत, नाबालिग और बीमार पर।"

यानी इन चारों किस्म के आदमियों के सिवा सब पर फर्ज है। और बाज रिवायत में मुसाफिर का भी जिक्र है, यानी मुसाफिर पर भी जुमा फर्ज नहीं है।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है

لَيَنْتَهِيَنَّ اَقْوَامٌ عَنْ وَدْعِهِمُ الْجُمُعَاتِ اَوْ لَيَخْتِمَنَّ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ ثُمَّ لَيَكُوْنُنَّ مِنَ الْغَافِلِيْنَ۔ (مشكوٰة،مسلم۔الجمعة)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''रुक जावें लोग जुमा छोड़ने से, वरना अल्लाह तआला उनके दिलों पर मुहर लगा देगा, फिर वो बेखबरों में से हो जायेंगे।''

और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है'

لَقَدْ هَمَمْتُ اَنْ آمُرَ رَجُلًا يُصَلِّيْ بِالنَّاسِ ثُمَّ اُحَرِّقَ عَلٰى رِجَالٍ يَتَخَلَّفُوْنَ عَنِ الْجُمُعَةِ بُيُوْتَهُمْ۔ [بخارى الاحكام،مسلم المساجد۔ بالفاظ مختلفة]

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''लोगो! मेरे दिल में ऐसा आता है कि जुमा की नमाज पढ़ाने को मैं अपनी जगह किसी और शख्स को इमाम बना दूँ। फिर उन लोगों के घरो पर जाकर आग लगा दूँ जो जुमा की नमाज में हाजिर नहीं होते।''

यानी जो लोग बिना शरीअत के कामों के जुमे से गैर हाजिर रहते हैं उन पर इस कद्र गुस्सा आता है कि उनके घरों में आग लगाकर उनको जला दिया जाये। इस हदीस को मुस्लिम ने रिवायत किया है।

इस्लामी भाईयों!

कुछ किताबों में कुछ शर्तें लिखी हैं कि बड़ा शहर हो और हाकिम मुसलमान हो और बड़ा बाजार हो तब जुमा फर्ज होता है। याद रखिए, इन शर्तों का सबूत कुरआन व हदीस से बिलकुल नहीं है। कुरआने मजीद में अल्लाह पाक ने जुमा का हुक्म सब ईमान वालों के लिए फरमाया और इसके वास्ते यह शर्त नहीं लगायेंगे और सहीह हदीसों में जुमे की ताकीदें आयी हैं और उन शर्तों का जिक्र नहीं आया।

हाँ इतनी शर्त तो हदीस में आई है कि जमाअत के साथ पढ़ो। सो जमाअत का मसअला यह है कि जब एक से ज्यादा हों, चाहे दो हों या ज्यादा, उनको जमाअत कहते हैं। जैसाकि हजरत अबू मूसा से रिवायत है "इसनानि फ-मा फव-क-हुमा जमाअतुन" यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "दो आदमी हों या दो से ज्यादा, पस वो जमाअत है" और अब बाज ने यह शाख निकाली है कि जुमा के बाद एहतियातन जोहर (जुहरे एहतियाती) पढ़नी चाहिए, इस ख्याल से कि शायद जुमा ना हुआ हो तो जुहर हो जाये। यह ख्याल भी बिलकुल गलत है। बेशक हर एक गांव और दिहात वगैरह जिसमें कुछ मुसलमान आबाद हों सब जगह जुमा फर्ज है, चाहे वहां का हाकिम मुसलमान हो चाहे काफिर। जुमा पढ़ने की निहायत ताकीद आयी है और इसके छोड़ने पर सख्त धमकी है।

जुमा की फजीलत के बारे में हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है।

خَيْرُ يَوْمٍ طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ يَوْمُ الْجُمُعَةِ فِيْهِ خُلِقَ آدَمُ وَفِيْهِ أُدْخِلَ الْجَنَّةَ وَفِيْهِ أُخْرِجَ مِنْهَا وَلَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ إِلَّا فِيْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ۔

(رواہ مسلم)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि " सबसे बेहतरीन दिन जिस पर सूरज चमका, जुमे का दिन है। इसी में आदम अलैहिस्सलाम पैदा हुए और इसी में जन्नत में दाखिल हुए और इसी में जन्नत से निकलकर जमीन पर आये। कयामत भी जुमे ही के दिन कायम होगी।"

और हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है:

إِنَّ فِي الْجُمُعَةِ لَسَاعَةً لَا يُوَافِقُهَا مُسْلِمٌ يَسْأَلُ اللّٰهَ فِيْهَا خَيْرًا إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ۔ (متفق علیہ)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बेशक जुमे के दिन में एक ऐसी घड़ी आती है कि कोई मुसलमान जो कुछ भी नेक दुआ मांगे वो कबूल हो जाती है।"

और अबू दाऊद से रिवायत है कि:

اَكْثِرُوا الصَّلَاةَ عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَإِنَّهُ مَشْهُودٌ يَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ وَإِنَّ اَحَدًا لَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ إِلَّا عُرِضَتْ عَلَيَّ صَلَاتُهُ حَتّٰى يَفْرُغَ مِنْهَا۔ (ابن ماجه الجنائز)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जुमा के दिन मुझ पर दुरूद ज्यादा भेजा करो, क्योंकि जुमा का दिन हाजरी का दिन है। इस में फरिश्ते बहुत हाजिर होते हैं। और कोई शख्स मुझ पर दुरूद नहीं भेजता मगर मुझ पर वो दुरूद पेश किया जाता है।"

यानी जब कोई दुरूद पढ़ता है, उसी वक्त फरिश्ता उसको लेकर मेरे पास पहुंचा देता है, और कहता है कि फलाँ शख्स ने यह दरूद का तोहफा आपकी खिदमत में भेजा है। आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस दुरूद पढ़ने वाले के लिए रहमत और बख्शिश की दुआयें फरमाते हैं। और अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है और उसके दस गुनाह मिटा देता है और दस दर्जे बुलन्द करता है। पस सब से ज्यादा खुशनसीब और मर्तबे वाला वो शख्स है जो दुरूद ज्यादा से ज्यादा पढ़े। खुसूसन जुमा के दिन में क्योंकि इसमें नेकियों का सवाब बहुत ज्यादा मिलता है। और हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है

اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً۔ (رواه الترمذی)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "कयामत के दिन सबसे ज्यादा मर्तबे वाला और मुझ से नजदीक होने वाला वो शख्स होगा जिसने मुझ पर दुरूद ज्यादा पढ़ा हो।"

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ آمين

खुत्बा नम्बर 10

खुत्बा-ए-ईदुल अजहा (बकराईद) के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْۤ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿۱۰۳﴾ وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿۱۰۴﴾ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿۱۰۶﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۰۷﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ سَلٰمٌ عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ ﴿۱۰۹﴾

(الصّٰفّٰت ۳۷)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ.

(सूरह अस्सफः 102-109, पारा 23)

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व-लिल्लाहिल हम्द

दरियाओं की मछलियां, हवाओं में उड़ने वाले परिन्दे, खुश्की और तरी की मख्लूकात अलगर्ज सारी कायनात अपने बनाने वाले परवरदिगार की हम्दो सना में हर वक्त लगी हुई हैः

وَاِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمۡدِہٖ وَلٰکِنۡ لَّا تَفۡقَہُوۡنَ تَسۡبِیۡحَہُمۡ ؕ (بنی اسرآءیل ۱۷)

(सूरह बनी इस्राईलः 44, पारा 15)

तर्जुमाः कोई भी चीज ऐसी नहीं है जो अल्लाह पाक की पाकी बयान ना कर रही हो, मगर तुम लोग उनकी तस्बीह को समझ नहीं पाते हो।

उस अल्लाह तबारक व-तआला की हम्दो सना और उसके प्यारे महबूब रसूल हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बहुत बहुत दुरूद व सलाम।

हजरात!

आज का खुत्बा ईदुल अजहा (बकराईद) पर है जो मुसलमानों का एक बहुत बड़ा तारीखी रूहानी त्योहार है। जिसका ताल्लुक आज से चार हजार साल पहले की इस अजीम कुरबानी से है जो मक्का शहर में हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने दिल के टुकड़े और आंखों के नूर हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम को मिना में ले जाकर पेश की थी। आयते खुत्बा में इसी कुरबानी का जिक्र है।

इरशाद होता है, "जब वो बच्चा (इस्माईल अलैहिस्सलाम) हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के साथ दौड़ने भागने की उम्र को पहुंच गया तो उन्होंने उससे कहा "ऐ मेरे बेटे मैंने ख्वाब में देखा है कि तुझ को ज़बह कर रहा हूँ (यानी मुझ को अल्लाह ने तेरी कुरबानी पेश करने का हुक्म फरमाया है) अब तू बता कि तेरा क्या ख्याल है?बच्चे ने जवाब दियाः ऐ अब्बाजान! जो कुछ आप को अल्लाह की तरफ से हुक्म दिया गया है, वो जरूर कर गुजरिये, अल्लाह ने चाहा तो आप मुझ को सब्र करने वाला ही पायेंगे। जब दोनों बाप-बेटे अल्लाह तआला का फरमान पूरा करने के लिए तैयार हो गये और हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटे को कुरबानी करने के लिए पछाड़ दिया तो हमने पुकारा, ऐ इब्राहीम! तुमने अपने ख्वाब को सच्चा कर दिखाया। इसी तरह हम नेक लोगों को बेहतरीन बदला दिया करते हैं और हमने इस्माईल के बदले एक बड़ा ज़बीहा (मेण्डा) पेश कर दिया और पिछली इब्राहीमी नस्लों में इस कुरबानी के सिलसिले को यादगार के लिए कायम रखा। इब्राहीम पर सलामती नाजिल हो।

हजरात!

यह अजीम त्योहार हर साल अरबी महीना जिलहिज्जा की दसवीं तारीख को मनाया जाता है। यह महीना इस लिहाज से बड़ी ही इज्जत रखता है। खास

तौर पर इसके पहले दस दिन यानी एक तारीख से 10-11-12-13 तक की तारीखें बड़ी ही खासियत रखती हैं। यही महीना और यही तारीखें हैं जिनमें इस्लाम का अहमतरीन फर्ज हज अदा किया जाता है। और इसी महीने पर इस्लामी सन हिजरी का साल खत्म होता है। इस अजीम त्योहार से मुताल्लिक तीन चीजें खास सवाब रखती हैं। जिनमें पहली चीज फरीजा-ए-हज की अदायगी है। माहे जिलहिज्जा की आठवीं तारीख को हाजी साहेबान एहराम की हालत में मक्का शरीफ से निकलकर मिना नामी जगह जाकर ठहरते हैं। यही जगह है जो इब्राहीमी कुरबानगाह है, यहां से 9 जिलहिज्जा को सुबह सवेरे निकलकर मैदाने अरफात में हाजिर होते हैं। और जुहर के बाद से सूरज डूबने तक वहां दुआएं करते हैं। रात को वापसी पर मुजदलफा में रात गुजारते हैं। और 10 जिलहिज्जा की सुबह को मैदाने मिना में वापस आकर पहले बड़े शैतान को कंकरियां मारते हैं फिर कुरबानी करते हैं, फिर एहराम खोल देते हैं। इस त्योहार से मुताल्लिक दूसरा काम बकराईद की दो रकअत नमाज है, जो दुनिया-ए-इस्लाम में इस दिन हर जगह अदा की जाती है। मगर हाजी साहेबान के लिए इस दो रकअत नमाज की जगह मिना में सिर्फ शैतान पर कंकरियां मारने का अमल है। इनके अलावा दुनिया के सारे मुसलमान हर जगह नमाजे बकराईद अदा करते हैं। ज्यादा फजीलत दसवीं तारीख की कुरबानियों को हासिल हैं।

मुअज्जज भाईयों!

अल्लाह का शुक्र अदा करो कि आज अल्लाह ने फिर आपको यह मुबारक महीना नसीब फरमाया। अगले साल अल्लाह ही बेहतर जानता है कि यह मुबारक त्योहार फिर कितनों को नसीब होगा और कितने लोग हम तुम में से पैवन्दे जमीन (जमीन के अन्दर) हो जायेंगे। दस जिलहिज्जा व कुरबानी के फजायल में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

مَا مِنْ اَيَّامٍ اَفْضَلُ عِنْدَ اللّٰهِ وَلَا الْعَمَلُ فِيْهِنَّ اَحَبَّ اِلَى اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ مِنْ هٰذِهِ الْاَيَّامِ يَعْنِىْ مِنَ الْعَشْرِ فَاَكْثِرُوْا فِيْهِنَّ مِنَ التَّهْلِيْلِ وَالتَّكْبِيْرِ وَذِكْرِ اللّٰهِ اِنَّ صِيَامَ يَوْمٍ مِنْهَا يَعْدِلُ صِيَامَ سَنَةٍ وَالْعَمَلُ فِيْهِنَّ يُضَاعَفُ بِسَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ۔ (ترغیب جلد2،ص199)(1)

यानी "अल्लाह के नजदीक माहे जिलहिज्जा के शुरू के दिनों की जो भी फजीलत है, वो फजीलत और दिनों को हासिल नहीं है। पस उन दिनों में ज्यादा तस्बीह व तहलील यानी बहुत ज्यादा

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

[دار قطنی] (1)

जैसे पाकीजा अल्फाज पढ़ा करो और अल्लाह पाक को बहुत ज्यादा याद करो। और याद रखो कि इन दिनों का एक रोजा सवाब में एक साल के रोजों के बराबर है और इन दिनों में नेक आमाल का सवाब सात सौ गुना तक ज्यादा बढ़ा दिया जाता है।"

(1) यह रिवायत जईफ है, इसमें नुहास बिन कहम रावी जईफ और मसऊद बिन वासिल "लय्यिनुल हदीस" है। (तुहफतुल अहवजी 2/58)
अरबी
तर्जुमाः हजरत इब्ने अब्बास रजि. रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्ल. ने फरमायाः इन दिनों के अमल से ज्यादा किसी दिन के अमल में फजीलत नहीं, लोगों ने पूछा और जिहाद में भी नहीं?आप सल्ल. ने फरमाया, जिहाद में भी नहीं सिवाय उस आदमी के जो अपनी जान व माल खतरे में डालकर निकला और वापस आया तो साथ कुछ भी ना लाया (यानी सब कुछ अल्लाह की राह में कुरबान कर दिया)। सही बुखारी हदीस नं. 969
(2) तकबीर के अल्फाज सनद के हिसाब से ज्यादा सहीह हैं " अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबरु, अल्लाहु अकबरु कबीरन" (मुसन्नफ अब्दुर्रज्जाक, फतहुल बारी 2/462)

और इस दस दिन में हर फर्ज नमाज के बाद बुलन्द आवाज से तकबीर कहना बहुत बड़ा सवाब है, जिसके अल्फाज यह हैं

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

जिलहिज्जा के महीने में नौ तारीख की फज्र की नमाज से 13 जिलहिज्जा की शाम तक इन तकबीरों को हर नमाज के बाद चलते फिरते, घर में, बाहर,

खासतौर पर ईदगाह के मैदान में जाते हुए और वहां बैठे रहने की सूरत और वापसी में इन तकबीरात को बुलन्द आवाज से पुकारना बहुत बड़ी नेकी है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ईदुल अजहा मुबारक फरमाये। आमीन!

कुरबानी के बारे में अल्लाह पाक ने सूरह हज्ज में फरमाया है:

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾

(الحج ٢٢)

(सूरह अलहज्जः 36, पारा 17)

"और कुरबानी के ऊंट हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की अजमत के निशान करार दिये (जिनको कुरबानगाह में देखकर अल्लाह तआला की अजमत याद आती है कि कितने बड़े जानवर उसने इन्सान के ताबेअ कर दिये हैं जो आज अल्लाह के नाम पर कुरबान किये जा रहे हैं) इनमें तुमको नफा भी है (कि इनका दूध पीते हो, सवारी करते हो और कुरबानी के लिए पेश करके अल्लाह को खुश करते हो) पस इन्हें खड़ा करके अल्लाह का नाम लेकर नहर कर दो। फिर जब उनके पहलू जमीन से लग जायें यानी वो बैठ जायें तो उनका गोश्त खुद भी खाओ और गरीबों और बिना जरूरत के सवाल न करने वालों को और फिर सवाल करने वालों को भी खिलाओ। इस तरह हमने इन जानवरों को तुम्हारे ताबेअ कर रखा है कि जिस तरह चाहो उनको इस्तेमाल करो ताकि तुम अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा करो।"

भाईयो!

कुरबानी के फजाईल में इस आयत के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फरमान भी सुन लीजिए और अपने ईमानों को ताजा कीजिए। हर मोमिन की यही शान है, रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

مَا عَمِلَ ابْنُ آدَمَ مِنْ عَمَلٍ يَوْمَ النَّحْرِ اَحَبَّ اِلَى اللّٰهِ مِنْ اِهْرَاقِ الدَّمِ

وَاِنَّهٗ لَيَاْتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِقُرُوْنِهَا وَاَشْعَارِهَا وَاَظْلَافِهَا وَاِنَّ الدَّمَ لَيَقَعُ

مِنَ اللّٰهِ بِمَكَانٍ قَبْلَ اَنْ يَّقَعَ عَلَى الْاَرْضِ فَطِيْبُوْا بِهَا نَفْسًا ۔ (ترغیب)[ابن ماجہ۔الاضاحی3117،ترمذی1313]

(तरगीब, इब्ने माजह किताबुल अजाही, हदीस नं० 3117, तिर्मिजी 1313)

यानी कयामत के दिन अल्लाह के यहाँ जिलहिज्जा की दसवीं तारीख का कोई अमल इस कद्र महबूब व प्यारा ना होगा, जिस कद्र इस दिन में कुरबानी करने का अमल मकबूल होता है। कयामत के दिन नेकियों की तराजू में कुरबानी के जानवर के सींग और बाल और खुर भी रखे जायेंगे। और कुरबानी का खून जमीन पर बहने से पहले ही अल्लाह के यहां कबूल होने का दर्जा हासिल कर लेता है। बस ऐ मुसलमानों! कुरबानियां बहुत ही खुश दिली के साथ किया करो, साथ ही यह भी याद रखो कि कुरबानी के लिए भी रिया नमूद (दिखावा) से बचकर इख्लास की बहुत ज्यादा जरूरत है। इरशादे इलाही है:

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۚ (الحج ٢٢)

(सूरह अलहज्ज: 37, पारा 17)

यानी "अल्लाह के यहां तुम्हारी कुरबानियों का गोश्त और खून हरगिज हरगिज कोई वजन नहीं रखता, उसके यहां तुम्हारे तकवा की कद्र है।"

यानी अगर इख्लास और तकवा के साथ कुरबानी करोगे तो वो अल्लाह के यहां कबूल होगी, वरना महज गोश्त और खून अल्लाह पाक के यहां कोई कद्र नहीं रखते।

भाईयों!

कुरबानी करते वक्त मुनासिब है कि सारे हिस्सेदार हाजिर रहकर जानवर को हाथ लगायें, जो शख्स जबह करे, वो दिल में सबकी नियत करके खालिस अल्लाह के अकीदे पर जबह करने से पहले यह दुआ पढ़े:

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۝

إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ وَعَنْ۔ (یہاں جن کی طرف سے قربانی کی جارہی ہے ان کا نام لے)

بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ۔ [ابوداؤد مع عون المعبود 52/3، سنن ابن ماجہ ص 225، سنن دارمی 3/2، تفسیر ابن کثیر 222/3] (1)

(यहां जिनकी तरफ से कुरबानी की जा रही है, उनका नाम ले) बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबरू." (अबू दाऊद मय अवनुल माबूद 3/52, सुनन इब्ने माजा स. 225, सुनन दारमी 3/2, तफसीर इब्ने कसीर 3/222 (1)

यह दुआ पढ़कर तेजी के साथ जानवर को जबह कर दें। कुरबानी का चमड़ा भी गरीबों को देना जरूरी है, उसे कसाई की मजदूरी में ना दें। इस दुआ का तर्जुमा यह है:

मैं उस अल्लाह की तरफ मुतवज्जह होता हूँ जो जमीन व आसमान का पैदा करने वाला है। मैं सब झूठे खुदाओं को छोड़कर सिर्फ एक सच्चे अल्लाह ही की इबादत करने वाला हूँ। और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। मेरी नमाज, मेरी कुरबानी, मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह ही के वास्ते है, जिसका कोई शरीक नहीं। और मुझे इस पर कायम रहने का हुक्म दिया गया है और मैं उसके फरमा बरदार बन्दों में से हूँ। ऐ अल्लाह मैं महज तेरी खुशी हासिल करने के लिए यह कुरबानी पेश कर रहा हूँ। पस तू इसे कबूल कर ले, जिस तरह तूने अपने दोस्त हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की कबूल की थी। मैं इस जानवर को अल्लाह ही के पाक नाम पर जबह करता हूँ, जो बहुत ही बड़ा है।"

कुर्बानी का गोश्त खुद खाना, दोस्त अहबाब को खिलाना, गरीबों में बांटना चाहिए। अल्लाह पाक हम सबकी कुर्बानी कबूल करे। आमीन!

(1) यह दुआ पढ़ना जरूरी नहीं, अगर "बिस्मिल्लाह वल्लाहु अकबर" पढ़कर जबह कर दिया तो भी ठीक है। (असरी)

हजरात!

ईदगाह के मैदान में जिस कद्र मर्द-औरत हाजिर हुए हैं, सबको सुन लेना चाहिए कि इसी तरह से एक दिन अल्लाह के दरबार में हाजिर होना पड़ेगा। वहां कोई साथ ना होगा। इस मैदाने महशर की याद ताजा करने के लिए आपको यहां मैदान में बुलाया गया है। और जो इस्लामी औरतें यहां तशरीफ लायी हैं, वो भी सुन लें, उनकी बहुत जिम्मेदारियां हैं। औरतों को खास तौर पर अपनी हालत सुधारनी चाहिए, जिससे उनका सारा घर सुधर जाये। औरतों में आजकल हद से ज्यादा आजादी आ रही है, जो सरासर बुरी है। एक मुसलमान खातून को इस्लाम की तालीम के मुताबिक शर्म व हया की पाक जिन्दगी गुजारनी चाहिए। जो औरतें सिनेमा और मेलों, तमाशों में शरीक होती हैं, उनको और मर्दों को इस मैदान में अल्लाह को हाजिर (1) व नाजिर जानकर तौबा करनी चाहिए। अल्लाह पाक हर मुसलमान मर्द व औरत को अपनी तरफ पलटने की तौफीक बख्शे। आमीन!

प्यारे भाईयो! खुत्बा के आखिर में दिल खोलकर अल्लाह को हाजिर व नाजिर जानकर उसके सामने मांगने के लिए अपने हाथ फैलाओ, क्योंकि यह दुआओं के कबूल होने का वक्त है।

ऐ परवरदिगार! हम तेरे गुनहगार बन्दे और बन्दियां इस मैदान में तुझको हाजिर और मौजूद जानकर तेरे सामने अपनी झोलियाँ फैलाते हैं। तू इन झोलियों को अपनी रहमत और मगफिरत से भरपूर कर दे। इन बन्दों की लाज रख ले। इन बन्दियों को मां हाजरा अलैहस्सलाम के नक्शे कदम पर चलने की तौफीक अता फरमा। इन जवानों को जो मैदान में हाजिर हैं, हजरत इस्माईल जैसा फरमां बरदार जवान बना दे। इन बुजुर्गों को जो यहां हाजिर होकर तेरे सामने सज्दा कर रहे हैं, हजरत इब्राहीम के नक्शे कदम पर चला।

ऐ अल्लाह! मुसलमानों को दोनों जहां की इज्जत अता फरमा। इस्लाम को बुलन्दी बख्श दे। हम को इत्तेफाक के साथ रहने और अपने नेक बन्दों के रास्ते पर चलने की तौफीक अता फरमा।

(1) अल्लाह तआला को हाजिर जानने का मतलब यह है कि वो अपने इल्म व कुदरत के ऐतबार से हाजिर है तो ठीक है, वरना जात के ऐतबार से वो अर्शे मोअल्ला पर है। जात के ऐतबार से हर जगह मौजूद होने का नजरिया गुमराह सूफियों का नजरिया है, जो वहदतुश वजूद और वहदतुल शहूद जैसे शिर्किया अकाइद रखते हैं। युगवी)

ऐ परवरदिगार! आज मुसलमान एक नाजुक दौर से गुजर रहे हैं, उनके किब्ला-ए-अव्वल (बैतुल मुकद्दस) पर तेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुश्मन यहूद का कब्जा है, दुनिया में मुसलमानों के खिलाफ मुख्तलिफ किस्म की साजिशें हो रही है। ऐ सारे जहां के मालिक तू इन हालात में मुसलमानों की मदद फरमा, इस्लाम को बुलन्दी बख्श दे। आमीन

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾ (الصّٰٓفّٰت ۳۷)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

तमाम मुसलमान भाईयों और बहनों को अल्लाह पाक बकराईद मुबारक फरमाये। आमीन!

खुत्बा नम्बर 11

खुत्बा-ए-हज्ज के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۗ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۗ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ (اٰل عمران ٣)

बिरादराने इस्लाम!

हज इस्लाम का एक ऐसा अहम रुक्न है जो नमाज, रोजा, जकात, जिहाद, खैरात और सारी नेकियों का खजाना है। जो मुसलमान ताकत के बावजूद हज ना करें, हालांकि वो हिम्मत और माल और अमन के लिहाज से बिलकुल बेफिक्र हैं, उनके लिए बहुत सख्त धमकियां आई हैं।

जैसाकि तरगीब व तरहीब में हजरत अली रजि. से रिवायत है:

مَنْ مَلَكَ زَادًا وَرَاحِلَةً تُبَلِّغُهٗ اِلٰى بَيْتِ اللّٰهِ وَلَمْ يَحُجَّ فَلَا عَلَيْهِ اَنْ يَّمُوْتَ يَهُوْدِيًّا اَوْ نَصْرَانِيًّا. (ترمذی۔ الحج 740)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जिस शख्स को सफर के खर्च और सवारी वगैरह का सामान इस कद्र नसीब हो कि वो हज के वास्ते आराम से जा सकता है, फिर वो हज को नहीं गया तो उसकी मर्जी है, यहूदी होकर मरे या नसरानी (ईसाई) होकर मरे।''

और नैलुलअवतार में है

قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ لَقَدْ هَمَمْتُ اَنْ اَبْعَثَ رِجَالًا اِلٰى هٰذِهِ الْاَمْصَارِ فَيَنْظُرُوْا كُلَّ مَنْ كَانَ لَهٗ جِدَّةٌ وَلَا يَحُجُّ فَيَضْرِبُوْا عَلَيْهِمُ الْجِزْيَةَ مَا هُمْ بِمُسْلِمِيْنَ مَا هُمْ بِمُسْلِمِيْنَ۔ (نيل الاوطار)

यानी "हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मेरा यह इरादा होता है कि कुछ आदमियों को शहरों और दिहातों में भेजूं ताकि वो ऐसे लोगों को तलाश करें जिनको हज का सामान नसीब है, फिर उन्होंने हज नही किया। पस उन पर जिजिया (टैक्स) मुकर्रर कर दें, क्योंकि वो मुसलमान नहीं हैं, वो मुसलमान नहीं हैं।"

अगर इन्साफ की नजर से देखा जाये तो इससे ज्यादा बदनसीबी और क्या होगी कि क़ाबा शरीफ जैसा बुजुर्ग घर इसी दुनिया में मौजूद हो और वहां तक जाने का सामान भी नसीब हो और आदमी इस्लाम का दावा भी रखता हो, फिर उसको देखने को ना जाये।

और तिर्मिजी में है कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब काफिरों के जुल्म से मक्का मुअज्जमा छोड़कर हिजरत की तो क़ाबा शरीफ की तरफ देखकर कहा कि "अल्लाह की कसम, ऐ मक्का तू अल्लाह के नजदीक तमाम जहान की जमीन से बेहतर और प्यारा शहर है और मेरे नजदीक भी बहुत ही प्यारा है। अगर काफिर मुझको यहां से ना निकालते तो मैं कभी तुझ से अलग न होता।

और तरगीब व तरहीब में हजरत अबू हुरैरा रजि. ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हज के बारे में यह अजीम खुत्बा नकल किया है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

مَنْ جَاءَ يَؤُمُّ الْبَيْتَ الْحَرَامَ فَرَكِبَ بَعِيْرَهٗ فَمَا يَرْفَعُ الْبَعِيْرُ خُفًّا وَلَا يَضَعُ خُفًّا اِلَّا كَتَبَ اللّٰهُ لَهٗ بِهَا حَسَنَةً وَحَطَّ بِهَا خَطِيْئَةً رَفَعَ لَهٗ بِهَا دَرَجَةً حَتّٰى اِذَا انْتَهٰى اِلَى الْبَيْتِ فَطَافَ طَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ ثُمَّ حَلَقَ اَوْ قَصَرَ اِلَّا خَرَجَ مِنْ ذُنُوْبِهٖ كَيَوْمٍ وَلَدَتْهُ اُمُّهٗ۔ (رواه البيهقى)

यानी "जो कोई हज बैतुल्लाह के इरादे से रवाना होता है, तो उस शख्स की सवारी जितने कदम चलती है, अल्लाह तआला हर एक कदम के बदले एक गुनाह मिटाता है और एक दर्जा जन्नत में बुलन्द करता है। जब वो शख्स बैतुल्लाह में पहुंच जाता है और वहां क़ाबा का तवाफ, फिर सफा मरवह की सओ करता है, फिर बाल मुण्डवाता है या कतरवाता है तो गुनाहों से ऐसा पाक-साफ हो जाता है, जैसा उस दिन था, जिस दिन वो मां के पेट से पैदा हुआ था।"

और तरगीब में इब्ने अब्बास रजि. से आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह खुत्बा मुबारक नकल है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

مَنْ حَجَّ مِنْ مَكَّةَ مَا شِيًا حَتّٰى يَرْجِعَ اِلٰى مَكَّةَ كَتَبَ اللهُ لَهٗ بِكُلِّ خُطْوَةٍ سَبْعَ مَائَةِ حَسَنَةٍ كُلُّ حَسَنَةٍ مِّثْلُ حَسَنَاتِ الْحَرَمِ قِيلَ لَهٗ مَا حَسَنَاتُ الْحَرَمِ؟ قَالَ: بِكُلِّ حَسَنَةٍ مِائَةُ اَلْفِ حَسَنَةٍ. (رواه ابن خزيمة فى صحيحه)

यानी "जो शख्स मक्का मुअज्जमा से हज के वास्ते यानी अरफात की तरफ निकला और पैदल चला और फिर मक्का मुअज्जमा को वापस भी पैदल ही आया (यानी आते जाते सवारी पर सवार नहीं हुआ) अल्लाह तआला उस शख्स के हर कदम पर सात सौ नेकियां लिखता है। हर एक नेकी उसमें हरम की नेकी की तरह होती है। पूछा गया कि हरम की नेकी से क्या मुराद है?फरमाया कि हर एक नेकी एक लाख के बराबर है।"

अब गौर करना चाहिए कि उन लोगों का कैसा ईमान और इस्लाम है जिनको हज के लिए जाने की ताकत है और इतने बड़े सवाब और दर्जे को छोड़ रखा है। बाज तो ऐसे हैं कि उनको कभी हज का ख्याल भी नहीं आता। ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि जिन्दगी का कुछ ऐतबार नहीं, मौत का कोई वक्त मालूम नहीं। हज अगर फर्ज था और हज को जाने से पहले मौत आ गयी तो अल्लाह की पनाह यहूदी या नसरानी जैसी मौत मरना होगा। पस अकलमन्दी की बात यह है कि हज फर्ज हो जाये तो इसके इरादे करने में देर न करें। वहम और ख्यालात पर लात मारकर फौरन रवाना हो जाये। और तरगीब व तरहीब में इब्ने अब्बास रजि.

से इरशादे नबवी यूं रिवायत है:

تَعَجَّلُوا اِلَى الْحَجِّ يَعْنِى الْفَرِيْضَةَ فَاِنَّ اَحَدَكُمْ لَا يَدْرِىْ مَا يَعْرِضُ لَهٗ۔ رواہ ابوالقاسم الاصبہانی۔ [مسند احمد 2721]

यानी रसूलुल्लाह सल्ल. ने फरमाया, हज फर्ज हो जाए तो उसको अदा करने में जल्दी करो। क्योंकि कोई नहीं जानता कि उसको कल कौनसी रुकावट पेश आ जाए।

और तरगीब व तरहीब में जाफर अन जद्दिही से यह खुत्बा मनकूल है:

مَا مِنْ عَبْدٍ يَضِنُّ بِنَفَقَةٍ يُّنْفِقُهَا فِيْمَا يَرْضَى اللّٰهُ اِلَّا اَنْفَقَ اَضْعَافَهَا فِيْمَا يَسْخَطُ اللّٰهُ وَمَا مِنْ عَبْدٍ يَدَعُ الْحَجَّ لِحَاجَةٍ مِّنْ حَوَائِجِ الدُّنْيَا اِلَّا رَاَى الْمُحَلِّقِيْنَ قَبْلَ اَنْ يُّقْضِىَ تِلْكَ الْحَاجَةَ يَعْنِىْ حَجَّةَ الْاِسْلَامِ۔ الخ

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''नेक काम में खर्च करने से जो कोई कंजूसी करता है, उसकी शामत से ऐसा होता है कि उसको किसी बुरे काम में उससे बहुत ज्यादा खर्च करना पेश आ जाता है। और जो कोई दुनियावी कामों की वजह से हज को जाने में देर करता है, हज वाले हज करके वापस भी आ जाते हैं और उसके कारोबार उस वक्त तक वैसे ही बीच में पड़े हुए होते हैं।''

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, इस बात की दलील है कि इस्लाम के अहकाम सच्चे हैं। पस जब जिस मुसलमान पर हज फर्ज हो जाये, उसको लाजिम है कि अल्लाह तआला पर भरोसा करके जल्दी रवाना हो जाये और उस बे-इन्तेहा सवाब और दर्जे को हासिल करे जैसा कि ऊपर हदीस में बयान किया गया है। और तरगीब व तरहीब में हजरत अबू हुरैरा रजि. ने आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह खुत्बा नकल किया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

مَنْ خَرَجَ حَاجًّا فَمَاتَ كُتِبَ لَهٗ اَجْرُ الْحَاجِّ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَنْ خَرَجَ مُعْتَمِرًا فَمَاتَ كُتِبَ لَهٗ اَجْرُ الْمُعْتَمِرِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَنْ خَرَجَ غَازِيًا فَمَاتَ كُتِبَ لَهٗ اَجْرُ الْغَازِىْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ۔ (رواه ابو يعلى)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जो शख्स हज के लिए निकला फिर रास्ते में मर गया तो उसके वास्ते हज के सवाब का हर साल कयामत तक लिखा जाता है और जो शख्स उमरह के लिए निकला और मर गया तो उसके वास्ते कयामत तक उमरे का सवाब लिखा जाता है और जो शख्स जिहाद के लिए निकला और मर गया तो उसके वास्ते कयामत तक जिहाद का सवाब लिखा जाता है।''

और तरगीब में हजरत आइशा रजि. से रिवायत है:

مَنْ خَرَجَ فِىْ هٰذَا الْوَجْهِ بِحَجٍّ اَوْ عُمْرَةٍ فَمَاتَ فِيْهِ لَمْ يُعْرَضْ وَلَمْ يُحَاسَبْ وَقِيْلَ لَهٗ اُدْخُلِ الْجَنَّةَ۔

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स हज या उमरह के वास्ते निकला और उस राह में मर गया तो कयामत में ना उसके गुनाह पेश किये जायेंगे और ना कुछ हिसाब लिया जायेगा, बल्कि बिना किसी रोक-टोक और बगैर हिसाब के हुक्म हो जायेगा कि जन्नत में दाखिल हो जाओ।

प्यारे भाईयों!

हज की नेकियाँ और जरूरी हुक्म आपने सुन लिये। अब याद रखो कि बैतुल्लाह शरीफ जो मक्का शहर में वाकेअ है, उसको देखने का इरादा हज कहलाता है। बैतुल्लाह उस चौकोर मस्जिद का नाम है जो मक्का शरीफ में आज से चार हजार बरस पहले हजरत इब्राहीम और हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम के जरिए सिर्फ अल्लाह की याद के लिए नए सिरे से बनाई गई थी। यह उस जगह वाकेअ है जहां हजारों साल पहले इसको हजरत आदम अलैहिस्सलाम ने बनाया

था, मगर मुद्दत गुजरने की वजह से उसके जाहिरी निशानात मिट गये थे। हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक इन ही पुराने निशानात को तलाश करके उसको नए सिरे से दोबारा बनाया। यह इमारत चौकोर है। यानी लम्बाई और चौड़ाई में दीवारें बराबर हैं, इसलिए इसे क़ाबा भी कहा जाता है। चार हजार साल गुजरने के बावजूद अब तक वहां सालाना हज का सिलसिला जारी है। इस्लाम से पहले इसकी मरम्मत कुरैश ने की थी, उसके बाद अलग-अलग वक्तों में जरूरत के मुताबिक इसकी मरम्मत होती रही है। आजकल सऊदी अरब की हुकूमत ने इस पर बेशुमार दौलत खर्च करके इसके चारों तरफ ऐसी शानदार तामीरात की हैं, जिनको दुनिया में लासानी कहा जाता है।

बिरादराने इस्लाम!

हर मुसलमान की यह आरजू होनी चाहिए कि अल्लाह पाक उम्र भर में उसको एक बार जरूर अपने घर की जियारत नसीब करे। हज अल्लाह के नाम पर फकीर बनकर उसकी खुशी हासिल करने के लिए, उसके घर की जियारत का नाम है, जिसमें खास लिबास पहनना जरूरी होता है, जिसे अहराम कहा जाता है। इस अरसे में बाल कटवाना, नाखुन काटना जैसे जरूरी काम भी मना हो जाते हैं। यह हज माहे जिलहिज्जा की आठवीं तारीख से शुरू होकर इसी माह की तेरह तारीख को खत्म हो जाता है। आठ तारीख को हाजी लोग मक्का शहर से अहराम का लिबास पहनकर निकलते हैं और 5-6 मील दूर एक जगह जो लफ्ज ''मिना'' के नाम से मशहूर है, वहां जाकर ठहरते हैं। वहां से नौ जिलहिज्जा को सुबह सवेरे निकलकर ''अरफात'' नामी एक खुले मैदान में हाजिर होकर उसी जगह मगरिब तक दुआयें करते रहते हैं। पस उसी का नाम हज है। दसवीं तारीख की रात में अरफात से चलकर ''मुजदलफा'' नामी मैदान में रात गुजारते हैं और दसवीं जिलहिज्जा को वापिस ''मिना'' में आकर पहले बड़े शैतान को कंकरियां मारते हैं, फिर कुरबानी करने के लिए अहराम के कपड़े उतारते हैं और वापिस मक्का शरीफ आकर बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ करते हैं। और सफा मरवह की सई करके फिर रात को ही वापिस जाकर मिना में बारह, तेरह तारीखों तक कयाम (ठहरते) करते हैं, इसी का नाम हज है।

मिना में तीन जगहों पर पत्थरों के मीनारे बने हुए हैं, उन मकामात पर हजरत इस्माईल को शैतान ने आकर बहकाया था ताकि वो अपनी कुरबानी ना होने दें, बल्कि इनकार कर जायें.... मगर हजरत इस्माईल ने हर बार शैतान को

धुतकार दिया और इसी के याद में यह तीनों मीनारे हैं, जिन पर कंकरियां मारने से इस वाकये की याद ताजा की जाती है। और हर मुसलमान इकरार करता है कि वो भी हजरत इस्माईल की तरह कभी भी शैतान के बहकावे में ना आयेगा। और अल्लाह का फरमांन बरदार बन्दा बनकर रहेगा और तोहीद और सुन्नत पर जिन्दगी गुजारेगा।

हज के अलावा एक काम उमरह के नाम से भी किया जाता है। इस का भी बहुत बड़ा सवाब है। इस काम के लिए खास तारीख या महीने की जरूरत नहीं। यह साल के बारह महीनों में सिर्फ बैतुल्लाह की जियारत का काम है। इसके भी फजाइल तकरीबन वैसे ही हैं, मगर यह हज की तरह फर्ज नहीं है। हज और उमरह की नियत करते वक्त इस तरह लब्बैक पुकारना जरूरी है।

"لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ۔

इसका मतलब यह है कि "ऐ अल्लाह मैं तेरे घर की जियारत के लिए हाजिर हो गया हूँ। तेरा कोई शरीक नहीं है। तमाम तारीफें सिर्फ तेरे ही लिए और नेमतें भी सब तेरे लिए और मुल्क भी सारा तेरा ही है।" तेरा कोई शरीक नहीं है।"

हज के पहले या बाद में मदीना मुनव्वरा जाकर मस्जिदे नबवी में दो रकअत नमाज अदा करना भी बहुत बड़ा सवाब का काम है। मस्जिदे नबवी वो अहम मस्जिद है, जिसमें एक नमाज अदा करने का सवाब एक हजार नमाजों के बराबर मिलता है। नमाज पढ़कर बड़े अदब व अहतराम से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आपकी कब्र शरीफ के सामने खड़े होकर दरूद सलाम पढ़ना एक मुसलमान की ऐन सआदतमन्दी है, मस्जिदे नबवी का एक हिस्सा ऐसा है, जिसे जन्नत की क्यारियों में से एक क्यारी करार दिया गया है, जिसमें नमाज पढ़ने का और भी बड़ा दर्जा है, हज के लिए घर से निकलने वाले प्यारे भाईयों, बहनों को चाहिए कि वो पहले अल्लाह पाक से अपने गुनाहों की माफी मांगे और उसके सारे हुकूक को अदा करने का वादा करें, फिर अल्लाह तआला के बन्दों के जो हक़ उनके जिम्मे शरीअत ने फर्ज किये हैं, उनको अदा करें, किसी का कर्ज हो, उसे चुका दें, किसी से सलाम-कलाम बन्द हो, उससे दोस्ती करके सलाम-कलाम कर लें।

अलगर्ज अपनी जानकारी के मुताबिक पूरे तौर पर पाक-साफ होकर हज के लिए सफर करें और सफर के दौरान हरगिज किसी का दिल ना दुखायें, बल्कि सबकी खिदमत करने का इरादा कर लें। हज के बाद वापसी पर हर दो मुल्कों में अपने वतन भारत (दूसरे मुल्कों वाले अपने मुल्कों) और सऊदी अरबिया के कानून के तहत अपने वतन को लौटें। कोई चीज ऐसी साथ ना लायें जिससे दोनों में किसी भी मुल्क के कानून की खिलाफवर्जी होती हो।

अल्लाह पाक हर मुसलमान को हज नसीब करे और हज करने वालों को सच्चा पक्का हाजी बनाये। आमीन!

हदीस शरीफ में आया है कि जिस हाजी की पहली जिन्दगी से हज के बाद की जिन्दगी बेहतर हो जाये, यानी तौहीद व सुन्नत व इस्लाम के फर्जो की पाबन्दी करने वाला, सच बोलने वाला, गुनाहों से दूर रहने वाला, इंसाफ करने वाला, गरीबों पर तरस खाने वाला बन जाये तो समझना चाहिए कि अल्लाह के यहां उसका हज कबूल हो गया। और अगर मामला उल्टा है तो समझना चाहिए कि उसका हज कबूल नहीं हुआ है। हर हाजी खुद फैसला कर ले कि उनकी जिन्दगी पर हज का क्या असर हुआ है।

अल्लाह पाक हर हाजी भाई को हज की बरकतों से मालामाल करे और हज करने की बरकत से उसकी जिन्दगी में नेक बदलाव पैदा करे। आमीन!

وَاَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 12

किताब व सुन्नत की रोशनी में कुछ रोजी-रोटी कमाने के मसाइल का बयान

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ۔

یٰٓاَیُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّیِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِیْمٌ ؕ﴿۵۱﴾ (اَلْمُؤْمِنُوْن ۲۳)

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ (اَلْبَقَرَة ۲)

(सूरह मौमिनूनः 51, पारा 18) (सूरह बकरः 201, पारा 2)

"ऐ रसूलों की जमात हलाल पाक रोजी खाओ और नेक काम करो। बेशक मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ।"

'ऐ परवरदिगार! हमको दुनिया में अच्छी जिन्दगी अता फरमा और आखिरत में भी और हमको दोजख के अजाब से बचाना।"

हम्दो सलात के बाद **ऐ इस्लामी भाईयों!** आज का खुत्बा रोजी-रोटी की बातों पर है। खुत्बे की पहली आयत में अल्लाह पाक ने खास अपने रसूलों को हुक्म फरमाया है कि नेक कामों की कबूलियत के लिए हलाल पाकीजा रोजी का होना शर्त है। अम्बिया किराम व रूसूल अलैहिमुस्सलाम का दर्जा जिस कद्र ऊंचा होता है, उतना ही ऊंचा यह हुक्म भी जो यहां अम्बिया को दिया गया है। यानी दुनियावी रोजी-रोटी के लिए हलाल पाकीजा रिज्क का हासिल करना।

दूसरी आयत में मुसलमानों को यह पाकीजा दुआ बताई गयी है कि वो दुनिया में भी हमेशा पाकीजा, अच्छी जिन्दगी के चाहने वाले बनकर रहें और आखिरत में भी। गोया दुनियावी जिन्दगी के संवारने पर आखिरत की जिन्दगी खुद-ब-खुद संवर जायेगी। दुनियावी जिन्दगी के सुधार के लिए सबसे पहले हलाल

रिज्क जरूरी चीज है। इसी लिए आज कुरआन व हदीस में जिस तरह नमाज, रोजा के अहकाम बयान हुए हैं, पस उसी तरह हलाल रिज्क हासिल करने के जिस कद्र भी उम्दा तौर तरीके हैं उन सबके लिए चाहत दिलायी गयी है। कुरआन मजीद में हलाल रिज्क को अल्लाह का फज्ल कहा गया है और इसे हासिल करने के लिए खास हुक्म दिया गया है, जैसाकि सूरह जुमुआ में है।

فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ (الجمعة ٦٢)

(सुरह अलजुमा: 10, पारा 28)

यानी "जुमे की नमाज पढ़कर जमीन में फैल जाओ और अल्लाह का फज्ल यानी हलाल रिज्क तलाश करो और अल्लाह को खूब खूब याद करो ताकि तुमको उसके फज्ल से हर नेक काम में कामयाबी हासिल हो।"

आयत में फैलने से मुराद तिजारत के लिए सफर करना, नौकरी के लिए काम पर जाना, खेतीबाड़ी के लिए खेतों पर जाना, कारीगरी के लिए काम पर जाना वगैरह सब ही मुराद हैं। इससे मालूम हुआ कि हलाल रिज्क पैदा करना भी इन्सान का बहुत बड़ा फरीजा है। और उसके लिए हर मुमकिन कोशिश भी सवाब में दाखिल है।

मुहतरम भाईयों!

रोजी-रोटी के मसाइल हल करने में हमेशा तिजारत (व्यापार) का बड़ा दखल रहा हैं हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी जवानी का ज्यादा जमाना तिजारत में गुजारा था। इसलिए हर मुसलमान के लिए तिजारत एक फायदा पहुंचाने का जरीया होने के साथ साथ सुन्नते नबवी भी है। तिजारत की बड़ाई में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चन्द खुत्बात आपको सुनाये जाते हैं। अल्लाह करे कि यह खुत्बात मुसलमानों के कानों से गुजर कर दिल में उतर जायें और मुसलमान फिर तिजारत के मैदान में कदम रखकर अपनी रोजी-रोटी कमाने की हालत को दुरुस्त करें।

عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَلتَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْاَمِيْنُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ۔ (رواه الترمذی)

"हजरत अबू सईद खुदरी रजि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ताजिर यानी बहुत ज्यादा सच्चाई के साथ व्यापार करने वाला, अमानतदार मुसलमान कयामत के दिन नबियों और सिद्दीकीन और शहीदों के साथ होगा।"

मालूम हुआ कि तिजारत अल्लाह के यहां वही दीनी और दुनियावी तरक्की का सबब है, जिसमें सच्चाई, अमानत को हर वक्त सामने रखकर धोके-फरेब से बचा जाये। हजरत उबेद बिन रिफाआ अपने बाप से वो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं। आप ने फरमाया:

اَلتُّجَّارُ يُحْشَرُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فُجَّارًا اِلَّا مَنِ اتَّقٰى وَبَرَّ وَصَدَقَ۔

(رواه الترمذی)

यानी "तिजारत करने वाले कयामत के दिन गुनहगारों की शक्ल में मैदाने महशर में हाजिर होंगे, मगर वो ताजिर जो हर वक्त अल्लाह से डरकर तिजारत में झूट-फरेब से बचते रहे और लोगों के साथ उन्होंने नेक मामला किया और सच्चाई का दामन हाथ से ना छोड़ा।"

एक और खुत्बा-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुनिए। अल्लाह तआला अमल की तौफीक बख्शे। आमीन!

عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ طَلَبُ كَسْبِ الْحَلَالِ فَرِيْضَةٌ بَعْدَ الْفَرِيْضَةِ۔ (البیہقی)

"हजरत अब्दुल्लाह नकल करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हलाल रिज्क हासिल करने के लिए कोई धंधा करना अल्लाह तआला के फर्जो के बाद एक बहुत बड़ा फर्ज है।"

इसीलिए मां-बाप के वास्ते जरूरी है कि जवान होने पर औलाद को अल्लाह तआला के फर्जो की तालीम के साथ साथ वक्त गुजारने के लिए जरूर कोई न कोई अच्छा धंधा सिखलायें।

राफेअ बिन खदीज कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया।

اَیُّ الْکَسْبِ اَطْیَبُ؛ قَالَ عَمَلُ الرَّجُلِ بِیَدِہٖ وَکُلُّ بَیْعٍ مَّبْرُوْرٍ۔

(رواہ احمد)

"ऐ अल्लाह के रसूल! कौनसा धंधा ज्यादा हलाल और पाकीजा है? आपने फरमायाः इन्सान का अपने हाथ से कोई काम करके हलाल रिज्क हासिल करना।"

यानी कारीगरी फिर हर वो तिजारत जिसमें सच्चाई और नेकी शामिल हो। हाथ से धंधा करने में सारे वो काम दाखिल हैं जो हाथ से किये जाते हैं। दर्जी, लुहार, बढ़ई और आजकल फैक्ट्रीयों में हाथ से मशीनें चलाना, कपड़े बुनने के लिए करघे (चरखा) पर काम करना, हल जोतना, अपने हाथ से तिजारती चीजें बनाना, यह सारे काम इस हदीस के तहत अल्लाह के नजदीक बहुत ही महबूब हैं और इनसे हलाल रिज्क हासिल होता है। इसलिए मुसलमान जो भी काम करता है, उसमें भी उसको सरासर नेकी मिलती है। खाली नमाज रोजा ही नेकी नहीं है। बल्कि हल जोतना, कारखाना चलाना, फैक्ट्रियां कायम करना और लोहा-लकड़ी के काम करना एक मर्द मोमिन के लिए नेक कामों की फेहरिस्त में दाखिल हैं।

हजरात उलमा-ए-किराम का फर्ज है कि वो दरस और खुत्बों में ऐसे भले कामों की तरफ भी मुसलमानों को पुरजोर ध्यान दिलायें और बतायें कि कुरआने मजीद में जो बार बार अल्फाज "व-अकीमुस्सला-त व-आतुज्जका-त" (नमाज पढ़ो और जकात दो) दोहराये गये हैं, उनका मकसद यही है कि हर मुसलमान को इतना मालदार जरूर बनना चाहिए कि उस पर ज़कात का फर्ज लागू हो। कुरआने मजीद आपको कंगाल, मोहताज नहीं देखना चाहता, वो आपको साहिबे ज़कात यानी मालदार देखना चाहता है। इस्लामी तारीख में हजरत उस्मान गनी रजि., हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ रजि. जैसे बुजुर्ग सहाबा के वाकिआत उम्मत के लिए फख का सबब हैं, जिनको अल्लाह पाक ने अपने जमाने के लिहाज से बहुत बड़ा दौलतमन्द बनाया और जिनकी दौलत इस्लामी खिदमत के लिए बहुत से मुश्किल वक्तों में काम आयी है। साथ ही कुरआने पाक में यह भी है:

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰىٓ ۙ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۭ (العلق ۹۶)

(सूरह अलअलक: 96, पारा 30)

इसलिए कि वो अपने आपको बेपरवाह (मालदार) समझता है।

व्यापार की जरूरत को सामने रखते हुए हमारे उलमा-ए-मुहद्दिसीन किराम रहमतुल्लाह अलैहिम अजमईन ने नमाज, ज़कात के साथ किताबुल बुयूअ को भी अहादीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रोशनी में तरतीब फरमाया है, जिनमें व्यापार से मुताल्लिक बहुत से जायज व नाजायज कामों को तफसील के साथ जिक्र किया गया है, जिनके पढ़ने से मालूम होता है कि इस्लाम ने व्यापार के लिए भी ऐसे कानून-कायदे मुकर्रर फरमाये हैं, जिनसे कारोबार में दीनी व दुनियावी बहुत से फायदे हासिल हो सकते हैं।

अमीरुल मुहद्दिसीन हजरत इमाम बुखारी रह. ने खुश्की में, समन्दर में व्यापार करने के अलग अलग उनवान (पाठ, सबक) तय किये हैं। इनके अलावा और भी बहुत से उनवान हैं, जिनके जैल में व्यापार व कारीगरी के मसाइल अपनी जबरदस्त इल्मी शान से बयान फरमाये हैं और कारीगरी से मुताल्लिक बहुत से खुत्बाते नबवी भी नकल फरमाये हैं। चुनांचे एक खुत्बा दर्ज जैल है। जिससे व्यापार व कारीगरी की बड़ाई पर बहुत काफी रोशनी पड़ती है। हजरत मिकदाम रजि. रिवायत करते हैं कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

مَا اَكَلَ اَحَدٌ طَعَامًا قَطُّ خَيْرًا مِّنْ اَنْ يَّأْكُلَ مِنْ عَمَلِ يَدِهٖ۔ وَاِنَّ نَبِيَّ اللّٰهِ دَاوٗدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدِهٖ۔ (بخاری۔ البیوع (1930

(बुखारी, अलबुयूअ 1930)

यानी ''किसी ने कभी कोई खाना अपने हाथ की कमाई से अच्छा नहीं खाया और बिलाशुबा हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम अपने हाथ से मेहनत करके रोजी कमाते और खाया करते थे''।

हजरत इमाम बुखारी रहमतुल्लाह अलैह ने हजरत हुजैफा रजि. सहाबी से आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक खुत्बा और नकल फरमाया है, जिसमें आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले जमाने के एक व्यापारी का किस्सा बयान फरमाया था:

تَلَقَّتِ الْمَلَآئِكَةُ رُوْحَ رَجُلٍ مِّمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ قَالُوْا اَعَمِلْتَ مِنَ الْخَيْرِ شَيْئًا؟ قَالَ كُنْتُ آمُرُ فِتْيَانِيْ اَنْ يُّنْظِرُوْا وَيَتَجَاوَزُوْا عَنِ الْمُوْسِرِ۔ قَالَ فَتَجَاوَزُوْا عَنْهُ۔ (بخاری)[کتاب البیوع 1935]

यानी ''फरिश्तों ने तुम से पहले जमाने में एक आदमी की रूह निकाली और उससे पूछा कि क्या दुनिया से कोई नेक काम लेकर आये हो?उसने कहा कि मैं अपने जवानों को हुक्म देता था जो कर्जदार, तंगदस्त हों उनसे कर्ज माफ कर दिया करें, पस यह नेकी लेकर आया हूँ। हजरत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह के हुक्म से उन फरिश्तों ने भी उससे दरगुजर कर दिया यानी वो बख्शा गया।''

अल्लाह पाक हम सबको भी ऐसा दरजा अता करे। आमीन!

व्यापार के अलावा हाथ का काम भी बेहतरीन काम है, जिनमें कपड़ा बुनने का काम निहायत अहम काम है। इसलिए कि इन्सान को पेट भरने के साथ तन ढांकने के लिए कपड़े की भी जरूरत होती है।

हजरत इमाम बुखारी ने इस फन के लिए बाब बांधकर एक औरत का जिक्र फरमाया है जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में अपने घर करघा (चरखा) रखती और कपड़े बुना करती थी। पूरा वाकिआ यह है:

عَنْ اَبِيْ حَازِمٍ قَالَ سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ قَالَ جَاءَتْ اِمْرَاَةٌ بِبُرْدَةٍ قَالَ اَتَدْرُوْنَ مَا الْبُرْدَةُ؟ فَقِيْلَ لَهُ نَعَمْ هِيَ الشَّمْلَةُ مَنْسُوْخٌ فِيْ حَاشِيَتِهَا قَالَتْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّيْ نَسَجْتُ هٰذِهٖ بِيَدِيْ اَكْسُوْكَهَا فَاَخَذَهَا النَّبِيُّ ﷺ مُحْتَاجًا اِلَيْهَا فَخَرَجَ اِلَيْنَا وَاِنَّهَا اِزَارُهٗ. فَقَالَ رَجُلٌ مِّنَ الْقَوْمِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَكْسِنِيْهَا. فَقَالَ نَعَمْ. فَجَلَسَ النَّبِيُّ ﷺ فِي الْمَجْلِسِ ثُمَّ رَجَعَ فَطَوَاهَا ثُمَّ اَرْسَلَ بِهٖ اِلَيْهِ. فَقَالَ لَهُ الْقَوْمُ مَا اَحْسَنْتَ سَاَلْتَهَا اِيَّاهُ لَقَدْ عَلِمْتَ اَنَّهٗ لَا يَرُدُّ سَائِلًا. فَقَالَ الرَّجُلُ وَاللّٰهِ مَا سَاَلْتُهٗ اِلَّا لِتَكُوْنَ كَفَنِيْ يَوْمَ اَمُوْتُ. قَالَ سَهْلٌ فَكَانَتْ كَفَنَهٗ. (بخاری)

यानी ''अबू हाजिम कहते हैं कि मैंने सहल बिन साद रजि. से सुना कि

उन्होंने कहा कि एक औरत नबी सल्ल. की खिदमत में बुरदा लेकर आयी। हजरत सहल रजि. ने पूछा कि लोगो बुरदा जानते हो?लोग बोले जी हां! बुरदा हाशियाँ बुरदार चादर को कहते हैं। उस औरत ने कहा, या रसूलुल्लाह मैंने यह चादर अपने हाथ से खास आपको पहनाने के लिए बुनी है। आपने कबूल फरमा लिया और उस वक्त आपको उसकी जरूरत भी थी। फिर आप उसी चादर को बतौर तहबन्द (लुंगी) बांधकर बाहर तशरीफ लाये। हाजिर लोगों में से एक साहब (हजरत अब्दुल रहमान बिन औफ मदीने के व्यापारियों के सरदार) बोले या रसूलुल्लाह! यह चादर आप मुझको पहना दीजिए। आपने फरमाया, अच्छा ले लो। इसके बाद आप रसूलुल्लाह सल्ल. थोड़ी देर मजलिस में बैठे रहे। फिर वापिस घर चले गये और उस चादर को तह करके उनके पास भिजवा दिया। लोगों ने कहा ऐ अब्दुल रहमान! आपने यह चादर मांगकर अच्छा नहीं किया। क्योंकि आपको मालूम है कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी का सवाल रद्द नहीं फरमाया करते हैं। हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ बोले, अल्लाह की कसम मैंने यह चादर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसलिए मांगी है कि जिस दिन मैं मरूं तो यह मेरा कफन बन सके। सहल ने कहा यही हुआ।''

हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ का उनके इन्तेकाल के बाद यही चादर कफन बनी थी।

हजरत इमाम बुखारी रहमतुल्लाह अलैहि ने दर्जी, लुहार और बढई इन सब धंधों का जिक्र फरमा कर साबित किया कि इन कामों में कोई भी काम जलील और रजील नहीं है, जो लोग ऐसे काम करने वालों को छोटा जानते हैं, वो खुद छोटे होते हैं। खेती-बाड़ी भी एक बेहतरीन कमाने का जरीया है।

दोस्तों और बुजुर्गो! जरूरत और बहुत ज्यादा जरूरत है कि आज मुसलमान अपनी कमाई की हालत को ज्यादा से ज्यादा सुधारें। अल्लाह हमारे इरादों में पुख्तगी बख्शे। आमीन!

इस्लाम के बेटों!

दूसरी कौमों में ऐसी जमाअतें हो रही हैं जिनका मकसद जवानों को रोजगार पर लगाना होता है। आप भी कमर बांधकर खड़े हो जाओ, कोई ऐसी मजबूत जमाअत बनाओ कि आप हर मुस्लिम बच्चे को किसी न किसी रोजगार के काबिल बनाकर उसे रोजगार करने लायक बना सको। आज के दौर में यह नेकी बहुत बड़ी नेकी है और आज कमाने के जरीये बहुत बढ़ चुके हैं। अगर मुसलमान

अपने नौजवानों को इस मैदान में ज्यादा से ज्यादा आगे बढ़ाने का फैसला कर लें तो वो बहुत से कारखानों और बहुत सी फैक्ट्रियों और बहुत से बाजारों के मालिक बन सकते हैं।

या अल्लाह मुसलमान कौम को नेक समझ अता फरमा कि वो अपने दीन व दुनिया को सुधारने का फिक्र करें। आमीन या रब्बल आलमीन!

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔

खुत्बा नम्बर 13

खुत्बा नमाज की फरजियत व नेकियों के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾ (الانعام ۶)

(सूरह अल-अनआम: 93, पारा 7)

अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन की तारीफ व बड़ाई और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पुरखुलूस दरूद व सलाम के बाद, अल्लाह तआला ने फरमाया कि "किताब जो कुरआन पाक है, जिसको हमने आसमान से उतारा है, बरकत वाली है। और सच बताने वाली है, अपने से पहली किताबों को (यानी तौरात व इंजील वगैरह की तसदीक करती है) और इस वास्ते उतारी गयी है कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस किताब के साथ मक्का वालों को और सिवाये उनके उन लोगों को जो उसके चारों तरफ आबाद हैं, आखिरत के अजाब से डरा दे और जिनको आखिरत का यकीन है, वो जरूर ही इस किताब को मानते हैं और जो अपनी नमाजों की भी हिफाजत करते हैं।"

हजरात!

आज का खुत्बा पांच वक्तों की नमाज की नेकियों पर है। यह बतलाया जा चुका है कि नमाज इस्लाम में बड़ी अहमियत रखती है। कलमा-ए-तैयबा के बाद नमाज इस्लाम में पहला सुतून है, जिस पर इस्लाम की बुनियाद कायम है। कुरआन व अहादीस में नमाज के बहुत से फायदे मौजूद हैं। सूरह बकरा में अल्लाह का फरमान है:

وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ (البقرة ٢)

(अल बकर, आ. 45-46, पारा 1)

यानी "नमाज का पढ़ना बहुत ही बड़ा मुश्किल काम है, मगर उन लोगों के लिए बिलकुल आसान है जो अल्लाह तआला से डरने वाले हैं, जिनका ईमान है कि अपने रब से एक दिन जरूर मिलना है और उसी की तरफ लौटना है।"

अल्लाह पाक हम सबको पाबन्दी के साथ पांचों वक्त नमाज जमाअत के साथ अदा करने की तौफीक बख्शे। (आमीन)

हजरत अबू हुरैरा रजि. नकल करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

اِنَّ اَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ عَمَلِهٖ صَلَاتُهٗ فَاِنْ صَلُحَتْ فَقَدْ اَفْلَحَ وَاَنْجَحَ وَاِنْ فَسَدَتْ فَقَدْ خَابَ وَخَسِرَ۔ [ترمذی الصلاۃ۔ 378 والنسائی 461]

(तिर्मिजी किताबुस्सलात 378, वननिसाई 461)

यानी "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कयामत के दिन जब नेकी व बदी पेश होगी तो पहले नमाज ही का हिसाब होगा, जिनकी नमाजों का हिसाब ठीक निकला, वो बच गया और कामयाबी को पहुंचा और जिसकी नमाजों का हिसाब खराब निकला, वो नामुराद रहा और जलील रहा।"

और सूरह इब्राहीम के पांचवें रुकूअ में है:

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۝ (ابراهيم ١٤)

(सूरह इब्राहीम, 31, पारा 13)

यानी "आप कह दीजिए ऐ मेरे रसूल! मेरे उन बन्दों से जो ईमान लाये हैं कि नमाजों को कायम रखें और अपने मालों को अल्लाह की राह में खर्च करें।

इससे पहले कि वो दिन आ जाये जिसमें ना कोई व्यापार काम आयेगा, ना कोई दोस्त ही मदद कर सकेगा।"

और सूरह-ए-रूम के चौथे रुकूअ में है:

وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ (الرّوم ٣٠)

(सूरह अल रूमः 31, पारा 21)

यानी अल्लाह तआला ने फरमाया कि "अल्लाह से डरो और नमाजों को कायम रखो और मुश्रिक मत बनो।"

यानी अल्लाह पाक से डरने और ईमान वाला होने की यह निशानी है कि इन्सान नमाज की पाबन्दी करने वाला हो। पस जो नमाज की पाबन्दी नहीं करता वो मोमिन नहीं है। इसलिए इस आयत में नफ्स के पुजारियों को मुश्रिक कहा गया है। तरगीब व तरहीब में हजरत बुरैदा की रिवायत में यह लफ्ज आये हैं:

اَلْعَهْدُ الَّذِيْ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ الصَّلَاةُ فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ۔ [ابن ماجه۔ اقامة الصلاة1069، ترمذی الایمان2545]

(इब्ने माजह किताबु इकामतिस्सलात 1069, तिर्मिजी किताबुल ईमान 2545)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जो वादे हमारे और काफिरों के बीच है, वो तो नमाज है, पस जिसने नमाज को छोड़ा, उसने कुफ्र किया।" (इस हदीस को इमाम अहमद और अबू दाऊद और निसाई और तिर्मिजी ने रिवायत किया है।)

और तरगीब व तरहीब में इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है:

عُرَى الْاِسْلَامِ ثَلَاثَةٌ عَلَيْهِنَّ اُسِّسَ الْاِسْلَامُ مَنْ تَرَكَ وَاحِدَةً مِّنْهُنَّ فَهُوَ بِهَا كَافِرٌ حَلَالُ الدَّمِ، شَهَادَةُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَالصَّلَاةُ الْمَكْتُوْبَةُ وَصَوْمُ رَمَضَانَ۔ [ترغیب وترهیب110/2، ابویعلی]

(तरगीब व तरहीब 2/110, अबू यअला)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "इस्लाम की रस्सी तीन चीजें हैं, जिन पर इस्लाम की बुनियाद रखी गयी है, जिस शख्स ने

इनमें से एक को भी छोड़ दिया, पस वो उसी की वजह से काफिर हो गया, उसका खून हलाल है। वो तीन चीजें यह हैं कि एक कलमाए-तौहीद की गवाही देना और रिसालते मुहम्मदी को मानना। दूसरे नमाज, तीसरे रमजान मुबारक के रोजे रखना।"

इस हदीस में हज व जकात का जिक्र नहीं किया है, इसलिए यह दोनों काम मालदार के वास्ते है। हर एक आदमी पर जरूरी नहीं है। इस हदीस में इन्हीं तीन चीजों का जिक्र हो रहा है, जो हर एक गरीब व अमीर पर वाजिब है।

और सही मुस्लिम में हजरत जाबिर रजि. से रिवायत है:

بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ۔ [مسلم۔الايمان

[116

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "मोअमिन और मुश्रिक व काफिर के बीच नमाज ही का फर्क है।

और यह भी याद रहे कि जो नमाज ईमान की दलील है, और जिस पर बख्शिश और बचाव का दारोमदार है, वो नमाज वो है जो पाबन्दी के साथ पढ़ी जाये, यानी पांचों वक्त की नमाज हो और ठीक वक्तों पर और जमाअतों की पाबन्दी और रुकुअ व सुजूद ठीक-ठाक हो। अगर किसी वक्त की पढ़ी और किसी वक्त की ना पढ़ी या वक्तों और जमाअतों का इंतेजाम नहीं रखा या रुकुअ और सज्दे वगैरह अच्छी तरह नहीं किये तो ऐसी नमाज कुछ फायदा ना देने वाली है, बल्कि और वबाल है, जैसाकि तरगीब व तरहीब में हजरत अनस रजि. ने इस बारे में आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक बहुत ही शानदार खुत्बा नकल फरमाया है। हुजूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया:

مَنْ صَلَّى الصَّلَاةَ لِوَقْتِهَا وَأَسْبَغَ وُضُوءَهَا وَأَتَمَّ لَهَا قِيَامَهَا وَخُشُوعَهَا وَرُكُوعَهَا وَسُجُودَهَا خَرَجَتْ وَهِيَ بَيْضَاءُ مُسْفِرَةٌ تَقُولُ حَفِظَكَ اللهُ كَمَا حَفِظْتَنِي وَمَنْ صَلَّاهَا لِغَيْرِ وَقْتِهَا وَلَمْ يُسْبِغْ لَهَا وُضُوءَهَا وَلَمْ يُتِمَّ لَهَا خُشُوعَهَا وَلَا رُكُوعَهَا وَلَا سُجُودَهَا خَرَجَتْ

سَوْدَآءُ مُظْلِمَةٌ تَقُوْلُ ضَيَّعَكَ اللّٰهُ كَمَا ضَيَّعْتَنِيْ حَتّٰى إِذَا كَانَتْ حَيْثُ شَاءَ اللّٰهُ لُفَّتْ كَمَا يُلَفُّ الثَّوْبُ الْخَالِقُ ثُمَّ ضُرِبَ بِهَا وَجْهُهٗ۔ (رواه الطبرانی فی الأوسط)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जिस शख्स ने नमाज ठीक वक्त पर पढ़ी और वजू भी ठीक किया और उस का कयाम अच्छा किया और हाजिर दिल से पढ़ा और रुकुअ-सज्दा अच्छी तसल्ली के साथ अदा किया तो वो नमाज उस नमाजी के पास से जब जाती है तो वो चमकती हुई रोशन होती है और नमाजी से कहती है कि तुझको भी अल्लाह तआला अपनी हिफाजत में रखे और जिस शख्स ने नमाज को उसका वक्त टालकर पढ़ा और वजू भी ठीक तौर से ना किया और दिल भी हाजिर ना रखा और रुकुअ सज्दों को खूब तसल्ली से अदा ना किया तो जब वो नमाज जाती है तो काली भुजंगी होती है, यानी उसमें नूर नहीं होता और उस नमाजी से कहती है कि जिस तरह तूने मुझको बर्बाद किया, उसी तरह अल्लाह तआला तुझ को भी बर्बाद कर दे। यहां तक कि जब वो थोड़ी सी ऊपर को जाती है, जिस कद्र कि अल्लाह पाक को मंजूर है तो फिर उस नमाज को पुराने कपड़े की तरह लपेट कर उस नमाजी के मुंह पर मार देते हैं।''

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस खुत्बे से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि नमाज का सही तरीका क्या है और कैसी नमाज अल्लाह के यहां कबूल होती है। और कौनसी रद्द कर दी जाती है। जो नमाजी कव्वे की तरह ठोंग मारते हैं और चन्द मिनटों में रकअतों के ढेर लगा देते हैं, उनको डरना चाहिए, वो ऐसी नमाज पढ़कर उल्टा गुनाह कर रहे हैं। नमाज दरअसल निहायत ही इत्मीनान से पढ़ने से और सही तौर तरीके पर दिल लगाकर पढनी चाहिए और नमाज बाजमाअत की शर्तों में से सफों को सीधा करना, कदम से कदम और कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होना भी है। मगर कितने लोग हैं जो इन जरूरी कामों का ख्याल रखते हैं?अल्लाह पाक हम को पक्का सच्चा नमाजी बनाये और सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताबिक नमाज अदा करने की तौफीक बख्शे। आमीन।

नमाजी भाईयों सुनों!

नमाज के बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक खुत्बे में फरमाया था, जैसाकि हजरत अबू हुरैरा रजि. ने रिवायत किया है।

اَرَأَيْتُمْ لَوْ اَنَّ نَهْرًا بِبَابِ اَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ فِيْهِ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسًا مَا تَقُوْلُوْنَ ذٰلِكَ يُبْقِىْ مِنْ دَرَنِهٖ شَيْئًا؟ قَالَ فَذٰلِكَ مِثْلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ يَمْحُو اللّٰهُ بِهَا الْخَطَايَا۔ (بخاری)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रजि. से पूछा कि ''भला बताओ तो अगर किसी शख्स के दरवाजे पर कोई नहर बह रही हो और वो शख्स हर रोज उस नहर में पांच बार नहाये तो बतलाओ हर रोज पांच बार नहाना उसके बदन पर कुछ मैल-कुचैल छोड़ेगा?सहाबा ने कहा, कुछ मैल-कुचेल नहीं छोड़ेगा। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बस पांच वक्त की नमाजों का भी यही हाल है कि अल्लाह तआला उनकी बरकत से सब गुनाहों को धो देता है।''

तरगीब व तरहीब में हजरत अनस रजि. से रिवायत है:

اِنَّ لِلّٰهِ مَلَكًا يُّنَادِىْ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ يَا بَنِىْ آدَمَ قُوْمُوْا اِلٰى نِيْرَانِكُمُ الَّتِىْ اَوْقَدْتُّمُوْهَا فَاَطْفِئُوْهَا۔ (رواه الطبرانی فی الاوسط والصغیر)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''बेशक अल्लाह तआला ने एक फरिश्ता मुकर्रर कर रखा है जो पुकारता है हर नमाज के वक्त कि ऐ आदम अलैहिस्सलाम की औलाद उस आग के बुझाने को उठो, जिसको तुमने भड़काया है।''

यानी आदमी से जब कोई गुनाह होता है तो उससे दोजख की आग भड़कती है और तेज होती है, क्योंकि वो अल्लाह पाक के गजब व गुस्से का घर है। जब किसी नमाज का वक्त आता है तो रहमत और बख्शिश के खजाने खोले जाते हैं, इसलिए वो फरिश्ता पुकारता है कि लोगों अब बख्शिश और रहमत का वक्त आया है, ऐसे वक्त में अल्लाह की इबादत और तौबा व इस्तिगफार कर लो ताकि

तुम्हारे गुनाह माफ हों और दोजख की आग ठंडी हो जाये।

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं और जानते हैं कि अल्लाह और रसूल का फरमान हक है, इसमें उनके लिए नसीहत है।

ऐसा ही एक खुत्ब-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सुनिये। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

يُبْعَثُ مُنَادٍ حَضْرَةِ كُلِّ صَلَاةٍ فَيَقُوْلُ يَا بَنِيْ آدَمَ! قُوْمُوْا فَأَطْفِئُوْا مَا اَوْقَدْتُمْ عَلٰى اَنْفُسِكُمْ فَيَقُوْمُوْنَ فَيَتَطَهَّرُوْنَ وَيُصَلُّوْنَ الظُّهْرَ فَيُغْفَرُ لَهُمْ مَا بَيْنَهُمَا فَإِذَا حَضَرَتِ الْعَصْرُ فَمِثْلُ ذَالِكَ. فَإِذَا حَضَرَتِ الْمَغْرِبُ فَمِثْلُ ذَالِكَ. فَإِذَا حَضَرَتِ الْعَتَمَةُ فَمِثْلُ ذَالِكَ فَيَنَامُوْنَ فَمُدْلِجٌ فِيْ خَيْرٍ وَمُدْلِجٌ فِيْ شَرٍّ - [الترغيب والترهيب، المعجم الكبير للطبراني]

हदीस का तर्जुमा यह है:

हर नमाज के वक्त फरिश्ता खड़ा होकर ऊंची आवाज से पुकारता है कि ऐ आदम के बेटों! खड़े हो जाओ और गुनाहों से जो आग तुमने भड़कायी है, उसे बुझा दो। चुनांचे नेक लोग खड़े हो जाते हैं, पाकी और वजू करके नमाज पढ़ते हैं तो सुबह और जुहर के दरमियान सारे गुनाह बख्श दिये जाते हैं, फिर अस्र और जोहर के बीच वाले फिर असर और मगरिब और फिर मगरिब और इशा तक के गुनाह बख्श दिये जाते हैं। फिर इशा और फज्र के दरमियान भी ऐसा ही होता है। फिर कुछ लोग सुबह सवेरा करने वाले जन्नत में दाखिल होने के हकदार बन कर सुबह करते हैं और कुछ दोजख के हकदार बनकर सुबह करते हैं।

मतलब यह है कि नमाजी और बे-नमाजी का यही फर्क है। यानी नमाजी जन्नती और झूटे नमाज या बेनमाजी दोजखी बन कर सुबह में दाखिल होते हैं। इसलिए यह नमाज वो चीज है कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वफात के वक्त जब तक आपकी जुबान मुबारक जारी रही, उस वक्त तक बराबर नमाज का हुक्म फरमाते रहे। हजरत उम्मे सलमा रजि. अनहा से रिवायत है।

اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ فِيْ مَرَضِهِ الَّذِيْ فِيْهِ الصَّلَاةُ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَمَا زَالَ يَقُوْلُهَا حَتّٰى مَا يُفِيْضُ بِهَا لِسَانُهٗ۔ (ابن ماجه الجنائز 1614)

यानी उम्मुल मौमिनीन हजरत उम्मे सलमा रजि. फरमाती हैं कि ''बेशक रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस बिमारी की हालत में जिस में आपकी वफात हुई फरमाते थे कि नमाजों की हिफाजत करना और लौण्डी गुलामों की रिआयत करना यानी उन पर जुल्म ना करना जब तक आपकी जुबान मुबारक चलती रही तब तक बराबर इसी तरह फरमाते रहे।''

एक खुत्ब-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूं आया है:

خَمْسُ صَلَوَاتٍ اِفْتَرَضَهُنَّ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ مَنْ اَحْسَنَ وُضُوْءَهُنَّ وَصَلَّاهُنَّ لِوَقْتِهِنَّ وَاَتَمَّ رُكُوْعَهُنَّ وَخُشُوْعَهُنَّ كَانَ عَلَى اللّٰهِ عَهْدٌ اَنْ يَّغْفِرَ لَهٗ وَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ فَلَيْسَ لَهٗ عَلَى اللّٰهِ عَهْدٌ اِنْ شَآءَ غَفَرَلَهٗ وَاِنْ شَآءَ ...الخ

(ابوداؤد الصلاة 361، ابن ماجه اقامة الصلاة 1391، احمد 21646)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जो पांच वक्त की नमाजें हैं, उनको अल्लाह पाक ने फर्ज कर दिया है, जिस शख्स ने उनका वजू अच्छी तरह किया और ठीक वक्तों पर पढ़ा और रुकुअ-सज्दा को अच्छी तरह अदा किया, उसके लिए अल्लाह तआला का वादा यह है कि उसको बख्शे। और जिस शख्स ने ऐसा ना किया, उसके वास्ते अल्लाह पाक का वादा नहीं है, चाहे उसको बख्श दे, चाहे अजाब दे।''

यानी जिसने पांचों वक्त की नमाजों को सब कायदों की पाबन्दी और इन्तेजाम से अदा किया, उसके वास्ते तो अल्लाह पाक ने बख्शिश का वादा फरमा लिया है और जिस ने ऐसा नहीं किया, यानी नमाज को दुरुस्त और ठीक करके नहीं पढ़ा तो ऐसे नमाजी के वास्ते कोई अहद और वादा नहीं है, जैसे और गुनहगार हैं, वैसा ही वो भी है। अल्लाह पाक चाहे बख्श दे और चाहे अजाब दे।

हजरत इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है:

اَلْكَفَّارَاتُ: اَلْمَكْثُ فِي الْمَسْجِدِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، وَالْمَشْيُ عَلَى الْاَقْدَامِ إِلَى الْجَمَاعَاتِ، وَإِسْبَاغُ الْوُضُوءِ عَلَى الْمَكَارِهِ مَنْ فَعَلَ ذٰلِكَ عَاشَ بِخَيْرٍ وَكَانَ مِنْ خَطِيئَتِهٖ كَيَوْمٍ وَلَدَتْهُ اُمُّهٗ. (ترمذی کتاب التفسیر 3157)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''गुनाहों को मिटाने वाली यह चीजें हैं: नमाज के बाद मस्जिद में ठहरना, फिर अल्लाह का जिक्र करना, जितने कदमों से यानी नमाज और जमाअत के लिए पैदल चलना और तकलीफ के वक्त वजू का पूरा करना (यानी बाज वक्त सर्दी की वजह या और किसी वजह से पानी में हाथ-पांव वगैरह भिगोने को जी नहीं चाहता, ऐसे वक्त में अच्छी तरह और पूरा वजू करना) जिसने ऐसा किया, वो भलाई के साथ जिन्दा रहा और भलाई के साथ मरा और गुनाहों से ऐसा पाक हो गया, जैसा उस वक्त था जब मां के पेट से पैदा हुआ था।

यानी ऐसे नमाजियों का वो मर्तबा है कि उनकी जिन्दगी भी अच्छी है और मौत भी अच्छी और गुनाहों से पाक जाते हैं। और तिर्मिजी में बुरैदा असलमी रजि. से रिवायत है।

بَشِّرِ الْمَشَّائِيْنَ فِي الظُّلَمِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِالنُّوْرِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

(ترمذی الصلاۃ 207، ابوداؤد 474)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जो लोग अंधेरी रातों में जमाअतों की खातिर मस्जिदों में जाते हैं, उनको खुश खबरी सुना दे कि कयामत के दिन उनको पूरा और कामिल नूर मिलेगा।''

यह खुशखबरी उन ही खुशनसीब नमाजियों के लिए है जो बिलानागा वक्त पर रोजाना रात और दिन में हर वक्ते मुकररी पर मस्जिदों में जमाअत के लिए हाजिर होते हैं। जो लोग इस तरह नमाजों की हिफाजत नहीं करते, वो नमाज ना उनके लिए कयामत के दिन बचाव का जरीया बनेगी, ना उससे नूर हासिल होगा, बल्कि ऐसे नमाजियों का हश्र कयामत के दिन कारून और फिरओन और हामान

और उबई बिन खलफ जैसे काफिरों के साथ होगा।

अल्लाह पाक हर मुसलमान को सच्चा और पक्का सुन्नत के मुताबिक वक्त पर जमाअत के साथ अदा करने वाला नमाजी बनाये। आमीन!

या अल्लाह! हमारी नमाजें अधूरी हैं, ना मालूम हम से कितनी गलतियां होती हैं, कितनी बार हम जमाअत से बिछड़ जाते हैं, कितनी बार गफलत कर बैठते हैं।

ऐ परवरदिगार! हमारी इन गलतियों को माफ कर दे और हम को सही मायनों में ऐसी नमाजें अदा करने की तौफिक अता कर जिनसे दीन व दुनिया की कामयाबीन नसीब हो। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللهَ لِیْ وَلَکُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔ اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَکَاتُهٗ۔

खुत्बा नम्बर 14

खुत्बा नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यारी जिन्दगी के कुछ हालात के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝ (الاحزاب ۳۳)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

"बेशक अल्लाह और उसके सारे फरिश्ते नबी (अलैहिस्सलाम) पर दुरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दुरूद व सलाम भजते रहा करो।"

"ऐ अल्लाह हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल औलाद पर दुरूद यानी रहमत भेज जिस कद्र कि तूने हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद पर दुरूद नाजिल की हैं। बेशक तू तारीफ किया गया बुजुर्ग है। ऐ अल्लाह हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल औलाद पर बरकतें नाजिल फरमा, जैसा कि तूने बरकतें हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद पर नाजिल की हैं। बेशक तू तारीफ किया गया बुजुर्ग है।"

हम्दो नात के बाद-

इस्लामी भाईयों!

आज का खुत्बा सीरते नबवी पर है, जिसके मायने यह हैं कि जनाबे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत आप की पाकीजा आदतें और आपकी जिन्दगी के हालात आप हजरात के सामने बयान किये जायें ताकि आप और हम उन ही आदतों को इख्तियार करें और अपने प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी जैसी अपनी जिन्दगी बनायें। अल्लाह पाक हम को ऐसी ही तौफीक अता करे। आमीन!

प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यारी जिन्दगी, आप 63 साल तक इस दुनिया में रहे, जिसके बहुत से पहलू हैं। हर एक पहलू के लिए दफातिर भी ना-काफी हैं। इसलिए खुत्बा के मुख्तसर वक्त में कुछ थोड़ी सी रोशनी डाली जा रही है, ताकि हम अपने प्यारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाकीजा अख्लाक से कुछ जानकार हो सकें। यूं आपके अच्छे अख्लाक और खूबियां जिस कद्र भी हों सकते हैं, वो जाहिर से मुताल्लिक हों या अन्दुरूनी तौर से, रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्दर वो सब मौजूद थी। इसीलिए कहा गया है:

हुसने यूसुफ दमे ईसा यदे बैजादारी
आंचा खूबां हमा दारन्द तू तन्हादारी

हजरत आइशा रजि. से आपके अख्लाक के बारे में पूछा गया था तो उन्होंने जवाब में फरमाया: ''काना खुलुकुहुल कुरआन''

आपके अख्लाक वो सब कुछ थे जो कुरआने मजीद में बयान हुए हैं, अल्लाह पाक ने फरमाया:

إِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝ (القلم ٦٨)

(सूरह नून (कलम): 4, पारा 29)

''ऐ हमारे रसूल! आपके अख्लाक बहुत ही ऊंचे हैं।''

आपको अल्लाह पाक ने सर से पावं तक रहमत बनाकर भेजा था। फरमाया:

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ (الانبياء ٢١)

(सूरह अल अम्बिया: 104, पारा 17)

ऐ नबी! हमने आपको सारी कायनात के लिए रहमत बनाकर भेजा है।

आप दुनियावी जिन्दगी के लिहाज से इतने बड़े परहेजगार थे कि आपसे बढ़कर कोई शख्स दुनिया में परहेजगार पैदा नहीं हुआ। आपकी प्यारी जिन्दगी में कदम कदम पर यह खूबी बहुत नुमायां नजर आती है, जैसा कि नीचे दिये गये वाक्यात से मालूम होता है:

आपकी बहुत ही प्यारी बीवी हजरत आइशा रजि. बयान करती हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी गुजारने का हाल यह था कि पूरी जिन्दगी भर कभी भी दो दिन तक लगातार खाली जौ की रोटी से पेट भरने का मौका नहीं मिला। (शमाइले तिर्मिजी)

आपके नौकर हजरत अनस रजि. का बयान है कि मैं एक दिन आपकी सख्त भूख मालूम करके जौ की रोटी के टुकड़े और बासी चरबी (जो घर में मौजूद थी) लेकर आपकी खिदमत में आया, तब आपको भूक दूर करने का मौका मिला। उस वक्त हालत यह थी कि आपकी जिरह (जंगी जॉकिट) चन्द सैर (आटे) के बदले में गिरवी रखी हुई थी।

हजरत उमर रजि. की रिवायत है कि एक बार मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खाली चटाई पर लेटे हुए देखा, जिससे आपके बदन मुबारक पर चटाई के निशान पड़ गये थे। मैंने आपकी यह तकलीफ देखकर दरख्वास्त की कि आप दुआ फरमायें कि अल्लाह तआला मुसलमानों को फराखी (मालो-दौलत) अता करे। कैसर व किसरा (कैसर रूम का बादशाह, किसरा फारस ईरान का बादशाह) जो काफिर हैं, उनके लिए कैसी फराखी है। आपने यह सुनकर नाराजगी के लहजे में फरमाया: ऐ उमर! तुम भी ऐसी बात कहते हो, क्या तुम इस पर खुश नहीं हो कि उन काफिरों के लिए सिर्फ दुनिया ही की चन्द रोज की ऐश है और हमारे लिए अल्लाह ने जन्नत को तैयार किया हे जो हमेशा रहने वाली है। (शमाइले तिर्मिजी)

आप हमेशा दुआ करते थे..... या अल्लाह मुझको जिन्दगी भर मिसकीन (गरीब) रख और मौत के वक्त भी मिसकीन की हालत में मौत देना और कयामत के दिन भी गरीबों के साथ उठाना।

गरीबी से आपकी यह मुराद ना थी कि मैं या मेरे घर वाले भूख में जिन्दगी गुजारे, भूख से तो आपने अल्लाह से पनाह मांगी है, बल्कि मुराद आपकी यह थी कि मेरे दिल में हमेशा मिस्कीनी, बेबसी और गरीबी रहे, कभी भी दिल में घमण्ड व गुरूर पैदा ना हो। अल्लाह हर मुसलमान मर्द व औरत को यह खूबी अता करे।

आमीन!

एक बार आप का तहसीलदार अबू उबैदा बहरैन से कुछ माल लाया जिनकी खबर सुनकर सहाबा कराम रजि. आपकी खिदमत में हाजिर हो गये। आपने फरमाया कि तुम लोग इस माल की खबर सुनकर जमा हो गये हो। याद रखो, मुझको तुम्हारे गरीबी का अन्देशा बिलकुल नहीं है। लेकिन यह फिक्र जरूर है कि तुमको दुनिया का माल बहुत मिलेगा, जिसमें लगकर तुम आखिरत को भूल जाओगे। फिर आपने सारा माल उसी जगह बांट दिया और एक पैसा भी अपने साथ नहीं लिया, बल्कि एक बार ऐसा हुआ कि अस्र की नमाज के बाद आप आदत के खिलाफ फौरन घर चले गये, सहाबा को इस पर तअज्जुब हुआ, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस आये तो सहाबा किराम के पूछने पर आपने फरमाया कि मुझ को घर में चांदी का टुकड़ा पड़ा हुआ याद आ गया था, जो तकसीम से रह गया था। मुनासिब ना था कि मेरे घर में चांदी का एक टुकड़ा भी बगैर बटे रह जाये, चुनांचे मैं जाकर उसे मोहताजों में बांटकर आया हूँ। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

बुजुर्गो-दोस्तों!

आपने अन्दाजा लगाया होगा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से किस कद्र बेपरवाही रखते थे और आपकी सखावत बल्कि दरियादिली का क्या हाल था। आप चाहते तो बेशुमार दौलत अपने लिए जमा कर लेते, मगर आपने कभी ऐसा ख्याल भी नहीं किया। आपकी प्यारी जिन्दगी और आपके अच्छे अख्लाक के बारे में हजरत अली रजि. ने एक अजीबो गरीब वाक्या बयान फरमाया है:

اَنَّ يَهُوْدِيًّا كَانَ يُقَالُ لَهٗ فُلَانٌ حَبْرٌ كَانَ لَهٗ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ
دَنَانِيْرُ فَتَقَاضَاهَا النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ لَهٗ يَا يَهُوْدِيُّ مَا عِنْدِيْ مَا اُعْطِيْكَ قَالَ
فَاِنِّيْ لَا اُفَارِقُكَ يَا مُحَمَّدُ حَتّٰى تُعْطِيَنِيْ۔ فَقَالَ ﷺ: اِذًا اَجْلِسُ مَعَكَ فَجَلَسَ
مَعَهٗ فَصَلّٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَآءَ الْاٰخِرَةَ
وَالْغَدَاةَ وَكَانَ اَصْحَابُ رَسُوْلِ اللّٰهِ يَتَهَدَّدُوْنَهٗ وَيَتَوَعَّدُوْنَهٗ فَفَطِنَ

رَسُولُ اللهِ ﷺ مَا الَّذِي يَصْنَعُونَ بِهِ. فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ يَهُودِيٌّ يَحْبِسُكَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَنَعَنِي رَبِّي اَنْ اَظْلِمَ مُعَاهِدًا وَغَيْرَهُ. فَلَمَّا تَرَجَّلَ النَّهَارُ قَالَ الْيَهُودِيُّ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُولُهٗ وَشَطْرُ مَا لِي فِي سَبِيلِ اللهِ. اَمَا وَاللهِ مَا فَعَلْتُ بِكَ اِلَّا لِاَنْظُرَ اِلٰى نَعْتِكَ فِي التَّوْرَاةِ: مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ مَوْلِدُهٗ بِمَكَّةَ وَمُهَاجَرُهٗ بِطَيْبَةَ وَمُلْكُهٗ بِالشَّامِ لَيْسَ بِفَظٍّ وَلَا غَلِيظٍ وَلَا سَخَّابٍ فِي الْاَسْوَاقِ وَلَا مُتَزَيٍّ بِالْفُحْشِ وَلَا قَوْلَ الْخَنَا. اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّكَ رَسُولُ اللهِ. وَهٰذَا مَالِي فَاحْكُمْ فِيهِ بِمَا اَرَاكَ اللهُ. وَكَانَ الْيَهُودِيُّ كَثِيرَ الْمَالِ.

(رواه البيهقي في دلائل النبوة 280-281/6)
(बैहिकी फी दलाइलिनुबुवत 6/280-281)

"एक यहूदी बड़ा मशहूर था, जिसके चन्द दीनार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उधार थे। वो मांगने के लिए आपके पास आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि भाई इस वक्त देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। वो कहने लगा कि ऐ मुहम्मद जब तक आप अदा ना करेंगे, मैं आपसे अलग नहीं होऊंगा। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब यह बात है तो मैं खुद भी तुम्हारे साथ बैठा ही रहूंगा। चुनांचे आप उसके पास जुहर, असर, इशा और सारी रात फजर तक बैठे रहे, सहाबा किराम उसकी इस गुस्ताखी को देखकर उसको डरा-धमका रहे थे। जब उनकी इस हालत का इल्म रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुआ तो आपने उसे ना-पसन्द फरमाया। सहाबा किराम कहने लगे, या रसूलुल्लाह! एक यहूदी ने इस तरह आपको रोक कर बैठा रखा है, हमारे लिए यह गुस्ताखी बर्दाश्त करने के काबिल नहीं है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझको मेरे रब ने मना फरमाया है कि मैं किसी जिम्मी वगैरह पर जुल्म करूं। जब सूरज चढ़ गया तो वो

यहूदी कलमाएशहादत पढ़कर मुसलमान हो गया, साथ ही उसने अपना आधा माल अल्लाह के रास्ते में दे दिया और कहने लगा कि अल्लाह की कसम, मैंने जो कुछ भी आपके साथ न करने वाली हरकत की है, महज इसलिए कि मैं आपकी उन खूबियों की तस्दीक करना चाहता था जो तौरात में लिखी हुई हैं। तौरात में आपके बारे में यह है कि आखरी जमाने का नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह नामी मक्का में पैदा होगा और तैयबा (मदीना मुनव्वरा) में हिजरत करके आयेगा और उसकी हुकूमत मुल्के शाम तक फैल जायेगी और वो सख्त दिल और गुस्सा वाला ना होगा, और ना वो बाजारों में फुजूल चीख-पुकार करने वाला होगा और वो लिबास और हैयत में बे-हया ना होगा और ना फहश-गो (गाली-गलौच करने वाला) होगा। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। और यह मेरा माल हाजिर है। आप जहां चाहें, इसे खर्च कर सकते हैं।''

नबी सल्ल. की प्यारी जिन्दगी पर इस बयान से आपकी अमानतदारी, वादा वफाई, नरमदिली, बर्दाश्त करने की ताकत, अदलो इन्साफ, रोजे रोशन की तरह साफ है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यारी जिन्दगी याद रखने और उसके मुताबिक अमल करने की तौफीक अता फरमाये। आमीन!

हजरत अब्दुल्लाह बिन अबी अवफ़ा एक मशहूर सहाबी का बयान है:

كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُكْثِرُ الذِّكْرَ وَيُقِلُّ اللَّغْوَ وَيُطِيْلُ الصَّلَاةَ وَيُقَصِّرُ الْخُطْبَةَ وَلَا يَأْنَفُ اَنْ يَّمْشِيَ مَعَ الْاَرْمِلَةِ وَالْمِسْكِيْنِ فَيَقْضِيْ لَهُ الْحَاجَةَ۔ (رواه نسائی)

यानी ''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की याद में बहुत ज्यादा लगे रहते थे, फालतू बातों से आप बिलकुल दूर रहते थे, आप नमाजे जुमा लम्बी पढते थे और खुत्बा बहुत थोड़ा दिया करते थे। और आपको शर्म ना थी कि आप रांड-बेवा औरतों और मिसकीनों के साथ खुद जाकर उनकी जरूरतें पूरी कर दिया करते थे।''

यह वो जबरदस्त आदतें थी जिन्होंने आपको सारी मखलूक का महबूब और प्यारा बना दिया था।

प्यारे भाईयों!

आप प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यारी जिन्दगी इस कद्र मुकम्मल और पूरी थी कि आपको जिन्दगी के हर हर शोबे में नमूना बनाया जा सकता है। फकीरी में देखो या बादशाही में, दिन में देखो या रात में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यारी जिन्दगी की एक नई झलक नजर आती है। आप गरीबी में थे, ऐसे कि कभी घर में खाने को अनाज तक नहीं है और बादशाह भी ऐसे कि दुनिया के बादशाह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिर्फ नाम सुनकर कांप रहे हैं। अपनी सीरते मुबारका के मुताबिक आप सहाबा किराम को अमल करने का हुक्म फरमाते रहते थे। अल्लाह तआला कुरआने मजीद में फरमाता है:

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (الاحزاب ٣٣)

(सूरह अलअहजाबः 21, पारा 21)

यानी ऐ मुसलमानों! तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल की जिन्दगी में एक बेहतरीन नमूना है।''

यह इसलिए कि अल्लाह ने अपने रसूल को पूरा इन्सान बनाकर भेजा है, शुक्रगुजारी के सिलसिले में एक बार आपने फरमायाः ऐ लोगों! सुन लो शुक्र गुजारी तो थोड़ी चीजों पर होनी चाहिए, जिसने कम चीज पर अल्लाह का शुक्र अदा नहीं किया वो ज्यादा पर भी शुक्र नहीं करेगा। और जिसने अहसानात के बदले लोगों का शुक्र अदा नहीं किया वो अल्लाह का भी हरगिज शुक्र अदा नहीं करेगा और उसकी नेमतों का बयान करना भी शुक्र में दाखिल है। कुरआने मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है:

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾ (الضحیٰ ٩٣)

(सूरह अज्जुहाः पारा 30)

यानी ''अपने रब की नेमतों का जिक्र करते रहा करो।''

यह भी अल्लाह के शुक्र में दाखिल है और इनका जिक्र छोड़ना नाशुक्री में दाखिल है और जमाअत के साथ रहना रहमते इलाही का हासिल कर लेना है और जमाअत से कट कर रहना अजाब यानी तकलीफ और परेशानी का सबब है।

नौजवानाने इस्लाम!

खुत्बा खत्म करने से पहले आपसे गुजारिश करूंगा कि अपने प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यारी जिन्दगी आपकी सिखलायी हुई तहजीब व शराफत बहुत ऊंचा मुकाम रखती है। आपका फर्ज है कि इस प्यारे नबी मुहम्मद सल्ल. की जिन्दगी को पढ़ें जो सारी इन्सानियत के लिए आखिरी रसूल बनकर दुनिया में तशरीफ लायें, जिन्होंने अपने अच्छे अख़लाक से अरब जैसी जाहिल कौम को दुनिया का सूरज बनाकर चमका दिया।

आज फिर जमाना पुकार पुकार कर आपको दावत दे रहा है कि आप को फिर खोई हुई इज्जत मिल सकती है। आप फिर दुनिया में मिसाली कौम बन सकते हैं, बशर्ते कि आप अपने दीन व मजहब को मानकर अख्लाके मुहम्मदी के रंग में रंग जायें। इस्लाम की तरक्की का सबसे बड़ा सबब यही रहा है कि उसने बेहतरीन अख्लाक की तालीम दी है, बल्कि सख्ती के साथ मुसलमानों को अच्छे अखलाक अपनाने की हिदायत की है, आज हमारे बड़े लोग खास तौर पर उलमा वाइजीन, हाजी, नमाजी अगर अच्छे अखलाक से काम लें, अपने अन्दर सब्र का माद्दा पैदा करें, जलन, बुग्ज, गीबत, गाली-गुलौच से दूर रहें तो उनको देखकर आज के नौजवान भी अच्छे रास्ते पर चलने लगेंगे और अगर मामला इसके उल्टा है तो नौजवानों पर इसका बुरा असर पड़ेगा और यही हो रहा है। लिहाजा नौजवानों से खासतौर पर गुजारिश है कि वो बड़े लोगों का अमले अख्लाक अगर बुरा है तो उस पर ध्यान ना दें, बल्कि इस्लाम की पाकीजा तालीम को पढ़ा करें। अल्लाह तआला हर मुसलमान को ऐसी ही तौफीक अता फरमाये। आमीन!

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔

وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾ (الصّٰفّٰت ٣٧)

खुत्बा नम्बर 15

मुहर्रम के महीने की नेकियाँ व रस्मो रिवाज की बुराईयों के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۶﴾ (التوبة ۹)

(सूरह तौबा: 36, पारा 10)

मुसलमान भाईयों!

अल्लाह पाक की नेमतों का शुक्र अदा करो, उसका इरशाद है:

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ﴿۷﴾

(ابراهيم ۱۴)

(सूरह इब्राहीम: आयत 7 पारा 13)

ऐ बन्दो! अगर मेरी नेमतों का शुक्र करो तो मैं और ज्यादा तुम को नेमतें दूंगा और अगर मेरी नेमतों की नाकद्री करोगे तो मेरा अजाब भी बड़ा सख्त है।''

अल्लाह की नेमतों की कद्र करना यह है कि उनकी हिफाजत की जाये और ज्यादा से जयादा तरक्की के रास्ते सोचे जायें, किसी को अल्लाह ने हलाल रिज्क का जरीया अच्छा लगा दिया है तो उसको बाकी रखा जाये। किसी को अल्लाह ने इल्म दिया है तो उस इल्म से फायदा उठाया जाये, किसी को अल्लाह पाक ने

नौकरी पर लगा दिया है तो उस नौकरी को सहीह तौर पर किया जाये। इन सबसे बढ़कर .....जिन्दगी बड़ी नेमत है, जिसके सहारे हमने इस मुहर्रम के महीने को पाया है। मुहर्रम के मायने हैं हुरमत, इज्जत वाला महीना, अल्लाह पाक ने कुरआने मजीद की एक आयत में चार महीने हुरमत वाले महीने करार दिये हैं, जिसका मतलब यह है कि इन महीनों की इज्जत व हुरमत का तकाजा है कि इनमें लड़ाई-झगड़े बन्द कर दिये जायें। इनको निहायत अदब से गुजारा जाये। चुनांचे आयते खुत्बा का तर्जुमा यह है।

"बेशक अल्लाह के नजदीक गिनती के लिहाज से बारह महीने हैं, अल्लाह ने अपना यह निजाम उस दिन कायम कर दिया था, जिस दिन उसने जमीन व आसमान को पैदा किया, उनमें से चार महीने हुरमत वाले हैं। अल्लाह का यह बहुत ही मजबूत कानून है। पस तुम उन चार महीनों में खास तौर पर जुल्म व ज्यादती ना करो। हां! अगर कुफ्फार मुश्रिकीन तुम से लड़ाई करें तो तुम भी उनसे जबानी लड़ाई कर सकते हो और जान रखो अल्लाह पाक की मदद परहेजगारों के साथ है।"

हुरमत वाले चार महीने जिनका आयत में जिक्र है वो रजब और जिल कअदा और जिलहिज्जा और मुहर्रम हैं। इन महीनों में अरब में अमन से रास्ते खुल जाते, व्यापार की मण्डियां चालू हो जाया करती थीं। लड़ाई झगड़े, डाकाजनी, चोरी वगैरह कामों से अरब अपने को रोक दिया करते थे। इस्लाम ने भी इन महीनों की इज्जत को कायम रखा। मुहर्रम भी इन महीनों में एक इज्जत वाला महीना है। (मुतन्का सफ्हा 142) में हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है।

قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ فَرَأَى الْيَهُوْدَ تَصُوْمُ عَاشُوْرَآءَ فَقَالَ مَا هٰذَا قَالُوْا يَوْمٌ صَالِحٌ نَجَّى اللّٰهُ فِيْهِ مُوْسٰى وَبَنِيْٓ اِسْرَائِيْلَ مِنْ عَدُوِّهِمْ فَصَامَهٗ مُوْسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ فَقَالَ اَنَا اَحَقُّ بِمُوْسٰى مِنْكُمْ فَصَامَهٗ وَاَمَرَ بِصِيَامِهٖ۔

(بخاری کتاب الصوم 1865، مسلم الصیام 1911)

(बुखारी किताबुल सौम 1865, मुस्लिम किताबुल सियाम 1911)

यानी "जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाये तो यहूदियों को देखा कि वो आशूरा के दिन का रोजा रखते हैं तो

आपने उनसे पूछा कि यह रोजा कैसा है? उन्होंने जवाब दिया कि यह वो मुबारक दिन है, जिसमें अल्लाह तआला ने हजरत मूसा और बनी इस्राईल को उनके दुश्मन से बचाया था। इसके शुक्रिया में हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने यह रोजा रखा था। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरा ताल्लुक हजरत मूसा अलैहिस्सलाम से तुम से ज्यादा है। पस आपने भी उस दिन का रोजा रखा और सहाबा को भी हुक्म दिया कि इस दिन जरूर रोजा रखा करें।''

बाद में यह भी फरमाया कि यहूदियों की बराबरी से बचने के लिए एक रोज नवीं तारीख या ग्यारहवीं तारीख का और रख लिया करो।

बुखारी व मुस्लिम में हजरत इब्ने अब्बास रजि. से यूं मरवी है:

قَالَ مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ يَتَحَرّٰى صِيَامَ يَوْمٍ فَضَّلَهٗ عَلٰى غَيْرِهٖ اِلَّا هٰذَا الْيَوْمَ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ وَهٰذَا الشَّهْرَ يَعْنِىْ شَهْرَ رَمَضَانَ۔ (متفق عليه)

(मुत्तफक अलैहि बुखारी व मुस्लिम)

''वो कहते हैं कि मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आशूरा के दिन से बढ़कर किसी और दिन के रोजे को फजीलत देते हों और माहे रमजान से बढ़कर किसी और महीने को फजीलत देते हों।''

बिरादराने इस्लाम!

मुहर्रम के महीने की एक बड़ी भारी खासियत यह है कि इस्लामी सन हिजरी इस महीने से शुरू होता है। सद अफसोस कि इस मुबारक महीने को मुबारक तारीख यानी दसवीं को नवासा-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत हुसैन रजि. की शहादत का दर्दनाक वाकिआ पेश आ गया। ''इन्ना लिल्लाहि व-इन्ना इलैहि राजिऊन''

इस वाक्ये की तफसीलात का यह मौका नहीं है, मगर जो भी कुछ हुवा बुरा हुवा। हजरत हुसैन रजि. की बड़ाई व दरजात दुश्मनों ने सब नजर अन्दाज कर दिये और उनका ना हक क़त्ल किया और कयामत तक के लिए बदनाम हुए। अल्लाह हजरत हुसैन रजि. पर हमारी तरफ से बहुत बहुत सलामती और रहमत नाजिल करे, बिलाशक हजरत हुसैन रजि. को शहादत का दर्जा हासिल हुआ और शहादतों के लिए अल्लाह पाक का फरमान है:

وَلَا تَقُوۡلُوۡا لِمَنۡ يُّقۡتَلُ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَمۡوَاتٌ ؕ بَلۡ اَحۡيَآءٌ وَّلٰـكِنۡ لَّا تَشۡعُرُوۡنَ ۝

(اَلۡبَقَرَة ٢)

(अलबकरा, आयत 154, पारा 2)

यानी अल्लाह के रास्ते में शहीद होने वालों को मुर्दा ना कहो, बल्कि वो जिन्दा हैं, मगर उनकी जिन्दगी ऐसी है जो तुम समझ नहीं सकते।''

हजरत इमाम हुसैन रजि. भी मजलूमाना शहीद किये गये, अल्लाह के यहां उनका भी यही मुकाम है, जो आयते कुरआनी में बयान हुआ है। आखिर वक्त में यजीदी फौज से उन्होंने साफ कहा था कि मैं लड़ना नहीं चाहता हूँ। मुझको यहां से अमन के साथ या तो यजीद के पास भेज दिया जाये और वो खुद मामले को समझ लेंगे या फिर इस्लामी बोर्डर पर जहां कुफ्फार से जंग हो रही हो, उस इस्लामी फौज में मुझको जाने की इजाजत दी जाये, मगर बागियों ने आपकी एक बात ना सुनी और लड़ाई पर उतर आये, जिसका नतीजा यह हुआ कि जो कयामत तक नहीं भुलाया जा सकेगा।

मुहतरम भाईयों!

मुहर्रम के महीने में जो कुछ बिदआत होती हैं, उसमें ताजियादारी का वाकिआ खास ध्यान देने के लायक है, ताजिया दरअसल लफ्ज तआजियत है, जो मरने वालों के घर वालों को सब्र व शुक्र की नसीहत करने का नाम है, शरीअत में ताजीयत तीन दिन के लिए जाइज है, जिसमें रोना, पीटना, मातम करना और सीना कूटना हरकतें बिलकुल नाजाइज हैं। इस लफ्ज ''तअजीयत'' को ताजिया बना लिया गया है, जो बनाने वालों के झूठे ख्यालों के तहत इमाम हुसैन रजि. की कब्र की नकल है। गोया यह कागज व बांस की नकली कब्र बनायी जाती है, फिर उसकी असली कब्र की तरह ना सिर्फ जियारत की जाती है, बल्कि उस पर चढ़ावे चढ़ाते और फूल डाले जाते हैं और वहां नजरो नियाज पेश होते हैं। ताजिया के नीचे से बरकत के ख्याल से बच्चों को निकाला जाता है। दसवें मुहर्रम को इस ताजिया का जुलूस बैण्ड बाजों के साथ निकलता है, जिसमें मर्दों औरतों का बहुत ही बुरी तरह मेल-मिलाप होता है। अगवा की कितनी वारदातें इन जुलूसों में हो जाती हैं।

हिन्दुस्तान में यह ताजियादारी इस तरह निकली कि तैमूरी जमाने में बादशाह वजीर शिया होते थे, जिनके ख्याल में कर्बला की जियारत बहुत बड़ा नेक

काम समझते थे और वो यहां से उस जमाने में कर्बला तक जाना मुश्किल जानते थे, इसलिए कुछ नाम के मौलवी से मशवरे के बाद कर्बला से रोजा -ए-इमाम हुसैन की नकल हासिल की गयी और इस नकल की जियारत को असल की जियारत की जगह सवाब का काम समझ लिया गया। बाद में यह नकलें घर घर रखी जाने लगीं तो खास मुहर्रमुल हराम के महीने के रोज आशूरा को इस जियारत और जुलूस का दिन ठहरा दिया गया। और बड़े दुनियादार लोगों की देखा-देखी सुन्नी मुसलमानों की जनता ने भी हुसैन रजि. के नाम की मुहब्बत पर इस रस्मो रिवाज को अपना लिया। आज तक शिया हजरात के अलावा सुन्नी भी ज्यादा से ज्यादा इसमें हिस्सा लेते हैं। और ताजिया बनाते हैं, कई जगह दुलदुल नामी कागज का घोड़ा बनाया जाता है, इसका जुलूस निकलता है, बाज जगह झण्डे बनाकर उनके जुलूस निकाले जाते हैं। शरीअते इस्लामिया में ऐसे खुराफात के लिए कोई जगह नहीं है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साफ इरशाद है:

مَنْ اَحْدَثَ فِيْ اَمْرِنَا هٰذَا مَا لَيْسَ مِنْهُ فَهُوَ رَدٌّ۔

(مشکوٰۃ شریف) [بخاری الصلح 2499، مسلم الاقضیة 3242]

(मुस्लिम अल अकजिया 3242)

यानी ''जो कोई हमारे दीन में नई चीज निकाले, जिसका सबूत शरीअत से ना हो, वो मरदूद है।''

हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाना-ए-मुबारक में बहुत से बड़े-बड़े सहाबा किराम शहीद हुए। हजरत अमीर हम्जा रजि. को जंगे उहद में बुरी तरह से शहीद किया गया और कितने ही इस्लाम के मशहूर बड़े मर्तबे वाले सहाबा शहीद हुए, मगर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ना उनका सालाना यादगारी जुलूस निकाला, ना उन पर मातम किया, ना कोई ताजिया बनाया। जमाना-ए-सहाबा रजि. में बड़े बड़े जलीलुल कद्र बुजुर्गाने इस्लाम जालिमों के हाथों शहीद हो गये, मगर उनकी यादगार में भी कोई ताजिया नहीं बनाया। गोया ना कोई मातमी जुलूस कायम की गयी। हजरत शैखुल इस्लाम अल्लामा इब्ने तयमिया जो मशहूर बहुत बड़े आलिम हैं, फरमाते हैं:

وَاَقْبَحُ مِنْ ذَالِكَ وَاَعْظَمُ مِنْهُ مَا يَفْعَلُ الرَّافِضَةُ مِنْ اِتِّخَاذِهٖ مَا تَمًا

يَقْرَأُ فِيْهِ الْمَصْرَعُ وِيَنْشُدُ قَصَائِدَ النِّيَاحَةِ وَيَعْطِشُوْنَ فِيْهِ اَنْفُسَهُمْ

وَيَلْطِمُوْنَ الْخُدُوْدَ وَيَشُقُّوْنَ الْجُيُوْبَ وَيَدْعُوْنَ فِيْهِ دَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ

---اِلٰى آخره (منهاج السنّة)

यानी इससे भी ज्यादा जो ऊपर बयान हुआ है, बदतरीन गुनाह यह है कि राफजी (शिया) आशूरा के रोज मातम करते हैं और मातमी शायरियाँ पढ़ते हैं। और प्यासे रहते हैं। अपने गालों पर खुद ही तमाचे लगाते हैं, गिरेबान फाड़ते हैं। गर्ज कि जमाना-ए-जाहिलियत की सब ही हरकतें करते हैं। यह तमाम काम बिदआत हैं। आशूरा के दिन मेला करना, मजलिस करना या जुलूस निकालना, यह सब बिदआत (मुहदसात) हैं, मातम करना भी बिदअत है, इनसे बचना हर सुन्नी मुसलमान के लिए लाजिम है।

इस्लाम के बेटों!

गौर करने का मुकाम है कि सालाना इन खुराफात पर उम्मत का कितना माल बर्बाद हो रहा है, अगर हिसाब करके देखोगे तो करोड़ों तक यह सरमाया पहुंचेगा। हर साल गुनाह और बे-लज्जत पर खर्च कर दिया जाता है। आज मुस्लिम कौम के कितने गरीब और यतीम बच्चे ठोकरें खाते फिरते हैं, जिनका कोई परेशानियों को दूर करने वाला नहीं है। मुसलमानों की कितनी कुंवारी बेटियां हैं जो बुढ़ापे को पहुंच रही हैं, लेकिन शादी के खर्च का कोई इन्तेजाम नहीं, कितने मुस्लिम नौजवान बेरोजगार फिर रहे हैं। जिनके लिए कारखाने और किसी फैक्ट्री में जगह नहीं, कितने मुस्लिम गरीब और अपाहिज मोहताज हैं जो रोटी-रोटी के लिए मोहताज हैं, उनकी तरफ किसी का ध्यान नहीं, मगर मुहर्रम का महीना जहां आया और मुसलमानों की तिजोरियां खुल गयी। ऐसे कामों के लिए जिनके करने से अल्लाह नाराज और अल्लाह का रसूल नाराज और खुद जनाब हुसैन रजि. नाराज, मगर बहुत ही ज्यादा अफसोस मुसलमान इन हरकतों से बाज नहीं आते, शायद अब हजरत इमाम महदी का ही इन्तेजार है। वो आयें और डण्डे के जोर से मुसलमानो को सीधे रास्ते पर चलायें। मगर मुसलमान इन खुराफात से हटकर कौम की तामीर व तरक्की इनके लिए इल्म व कारीगरी की स्कूलें हैं। नीज इस्लाम की तबलीग पर यह माल खर्च करें तो कितने बेहतर नतीजे निकलते हैं और मिल्लते इस्लामिया का यह कमजोर ढांचा ठीक हो सकता है। काश मुसलमान वक्त की आवाज सुनें और बिदआत को यकसर छोड़ दें और होश में आयें।

या अल्लाह अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत पर रहम फरमा। उनको सीधा रास्ता नसीब कर दे और इन खुराफात से निकाल कर उनको तामीरी कामों को अंजाम देने की तौफिक अता फरमा। कि यह झूठी ताकतों को पास-पास करके हक व सच्चाई से सारी दुनिया को जन्नत का नमूना बना सकें। आमीन

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰى جَمِیْعِ الشُّهَدَآءِ وَالصَّالِحِیْنَ۔

وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 16

कुछ इस्लामी शहीदों का बयान

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ۝

(اَلْبَقَرَةُ ٢)

(सूरह बकरहः 154, पारा 2)

"जो लोग अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जायें, उनको मुर्दा ना कहो, बल्कि वो जिन्दा है, लेकिन तुम समझ नहीं सकते।"

हम्दो नात के बाद

हजरात!

कुरआने करीम की इस आयत में अल्लाह पाक ने उन खुशनसीब मर्दाने हक का जिक्र फरमाया है जो अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जाते हैं। अल्लाह के यहां शहीदों का बहुत बड़ा दर्जा है। उनको एक ऐसी जिन्दगी मिलती है जिसकी तारीफ हमारे समझ से बाहर है। कुरआने मजीद की बहुत सी आयात में शहीदों की बड़ाई आई है।

आज आपके सामने चन्द ऐसे बुजुर्ग शहीदों का जिक्र किया जाता है जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में बहुत ही धोके से शहीद किये गये थे। जिनके दिमागों में जंग और दुश्मनों की गद्दारी का ख्याल भी ना था जो सिर्फ खुत्बा व तबलीग के लिए भेजे गये थे। मगर दगाबाजों ने बड़ी बे-रहमी के साथ उनको कत्ल कर डाला। बुजदिल काफिरों का मकसद यही रहा है कि मरदाने हक के मुकाबले पर आने से घबराते हैं। फरेब और धोका देकर दाव चलाने की कोशिश किया करते हैं। आज भी दुश्मनों का यही हाल है।

बिरादराने मिल्लत!

जो वाकिआ आपके सामने रखा जा रहा है, उसका ताल्लुक 4 हिजरी जंगे

उहद के बाद से है। बुखारी शरीफ पारा बारह, सफा 92 पर यह वाकिआ जिक्र हुआ है। मशहूर बुजुर्ग सहाबी अबू हुरैरा रजि. बयान करते हैं:

بَعَثَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَشَرَةَ رَهْطٍ سَرِيَّةً وَاَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ بْنَ ثَابِتٍ الْاَنْصَارِيَّ جَدَّ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فَانْطَلَقُوْا حَتّٰى اِذَا كَانُوْا بِالْهَدَاةِ وَهُوَ بَيْنَ عَسْفَانَ وَمَكَّةَ ذُكِرُوْا بِحَيٍّ مِنْ هُذَيْلٍ يُقَالُ لَهُمْ بَنُوْ لَحْيَانَ فَنَفَرُوْا لَهُمْ قَرِيْبًا مِنْ مِائَتَيْ رَجُلٍ كُلُّهُمْ رَامٍ فَاقْتَصُّوْا آثَارَهُمْ حَتّٰى وَجَدُوْا مَأْكَلَهُمْ تَمْرًا تَزَوَّدُوْهُ مِنَ الْمَدِيْنَةِ فَقَالُوْا هٰذَا تَمْرُ يَثْرِبَ فَاقْتَصُّوْا آثَارَهُمْ فَلَمَّا رَاٰهُمْ عَاصِمٌ وَاَصْحَابُهٗ لَجَأُوْا اِلٰى فَدْفَدٍ وَاَحَاطَ بِهِمُ الْقَوْمُ فَقَالُوْا لَهُمْ اِنْزِلُوْا وَاَعْطُوْا بِاَيْدِيْكُمْ وَلَكُمُ الْعَهْدُ وَالْمِيْثَاقُ لَا نَقْتُلُ مِنْكُمْ اَحَدًا قَالَ عَاصِمُ بْنُ ثَابِتٍ اَمِيْرُ السَّرِيَّةِ اَمَّا اَنَا فَوَاللهِ لَا اَنْزِلُ الْيَوْمَ فِيْ ذِمَّةِ كَافِرٍ اَللّٰهُمَّ اَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ ...اِلٰى آخر الحديث۔

(بخاری۔ الجهادوالسير 2818)

हजरात!

जंगे उहद के बाद दुश्मनों ने मुलसमानों को नुकसान पहुंचाने और बेइज्जत करने की अलग-अलग कोशिशों पर अमल किया, वो देखकर हैरान थे कि उहद के नुकसानात ने मुसलमानों को कमजोर नहीं किया है, बल्कि मुसलमान इस कद्र नुकसान के बावजूद फिर बड़े हौसले और दिलेरी से अपनी ताकत जमा कर रहे हैं, इसलिए क्यों ना उनको कमजोर करने के लिए चालबाजी से काम लिया जाये। इसलिए मक्का के काफिरों ने अजल व-कारा के सात आदमियों का ग्रूप बनाकर मदीना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में भेजा कि हमारे कबीले इस्लाम लाने को तैयार हैं, हमारे साथ आप कुछ इस्लाम की तालीम देने

वाले लोगों को भेज दीजिए।

चुनांचे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस बड़े बुजुर्ग सहाबा को उनके साथ कर दिया और हजरत आसिम बिन साबित को जो हजरत असिम बिन उमर फारूक रजि. के नाना थे, उनका सरदार बना दिया। यह लोग रवाना हो गये। जब मुकाम हदाह पर पहुंचे जो मक्का और अस्फान के बीच में है, तो कबीला हुजैल की एक शाख बनूलहयान को दुश्मनों ने खबर कर दी और उनके दो सौ तीर अंदाज बुजुर्ग आलिम सहाबा की तलाश में निकले। यह सब सहाबा के निशानात कदम से अन्दाजा लगाते हुए चलते चलते एक ऐसी जगह पहुंच गये, जहां उन इस्लाम की तबलीग करने वालों ने बैठकर खजूर खायी थी, जिनको वो मदीना मुनव्वरा से अपने साथ लाये थे। पीछा करने वाले काफिरों ने कहा कि खुजूर की यह गुठलियाँ जरूर मदीना की हैं, फिर वो उन सहाबा किराम के कंदमों के निशानात पर आगे बढ़े। आखिर हजरत आसिम और आपके साथियों ने जब उन दुश्मनों को देखा तो सबने एक पहाड़ की चोटी पर पनाह ली। मुश्रिकीन ने उनसे फरेब और धोका देने की नियत से कहा कि हथियार डालकर पहाड़ से नीचे उतर आओ। तुम से हमारा अहद व पैमान है कि हम तुममें से किसी शख्स को भी कत्ल नहीं करेंगे।

दोस्तों!

याद रखो, इस्लाम के दुश्मनों ने हमेशा ऐसी ही चालबाजी से काम लिया है। अगर इस्लाम की चौदह सौ साला तारीख पढ़ेंगे तो मालूम होगा कि दुश्मनाने इस्लाम ने ऐसे बहुत से धोकों से मुसलमानों को बहुत नुकसान पहुंचाया है। आजकल इस्राईल के यहूदी भी ऐसी ही चालें चल रहे हैं।

बहरहाल जमाअत के सरदार हजरत आसिम बिन साबित ने फरमाया कि मैं तो किसी सूरत में भी काफिरों की पनाह कबूल नहीं करूंगा। ना मुझको उन पर भरोसा है कि यह वादा पूरा करेंगे। फिर हजरत आसिम ने यह दुआ फरमायी कि या अल्लाह हमारे इन हालात से अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आगाह फरमा दे। इसके बाद काफिरों ने तीर बरसाने शुरू कर दिये और हजरत आसिम और दूसरे सात मरदाने हक शहीद हो गए और बाकी तीन बुजुर्ग उनके अहद व पैमान पर पहाड़ से नीचे उतर आये। यह खुबेब अनसारी और इब्ने दसना और अब्दुल्लाह बिन तारिक रजि. थे।

जब यह इस्लामी शेर उनके के काबू में आ गये तो उन काफिरों ने अपनी

कमानों के तांत उतार कर उनसे उनको बांध दिया। हजरत अब्दुल्लाह बिन तारिक ने कहा कि अल्लाह की कसम यह तुम्हारी पहली गद्दारी है। मैं तुम्हारे साथ हरगिज नहीं जाऊंगा। मुझको शहादत मंजूर है, मगर तुम पर भरोसा गलत है। चुनांचे काफिरों ने उनको भी उसी जगह पर शहीद कर दिया। अब यह हजरत खुबेब रजि. और इब्ने दसना को लेकर चले और मक्का में ले जाकर उनको बेच डाला।

हजरत खुबेब रजि. ने जंगे बदर में मक्का के एक रईस काफिर हारिस बिन आमिर को कत्ल किया था। हारिस के बेटों को मुफ्त में दुश्मन हाथ आ गया और उन्होंने हजरत खुबेब रजि. को कत्ल करने के लिए खरीद लिया ताकि बाप का बदला लिया जाये।

हारिस की एक बेटी जैनब नामी हैं, जो बाद में मुसलमान हो गयी थी, उनका बयान है कि जिन दिनों हजरत खुबेब रजि. कैदी बनकर उनके पास रहे, उनकी बहुत सी खूबियां उन्होंने देखी। हजरत खुबेब रजि. ने जैनब से नाफ के नीचे के बाल साफ करने और शहादत के लिए पाक व साफ होने के लिए उस्तरा मांगा, जो उनको दे दिया गया। जैनब कहती हैं कि फिर मैंने अपने बच्चे को उनकी रान पर बैठा देखा और उस्तरा उनके हाथ में था तो मैं इस पर बुरी तरह घबरा गयी कि खुबेब मेरे चेहरे से समझ गये। उन्होंने जैनब से कहा, तुम्हें इस बात का डर होगा कि मैं इस बच्चे को कत्ल कर डालूं, यकीन करो जैनब ऐसा हरगिज नहीं कर सकता।

इस्लामी भाईयों!

जरा खुद देखिये कि हालात क्या हैं और हजरत खुबेब रजि. हिम्मत के साथ इस्लामी तालीम फैला रहे हैं। इस्लाम में जंग की हालत में भी बच्चों और औरतों को कत्ल करना जाइज नहीं है। हजरत खुबेब रजि. ने यही फरमाया। हजरत जैनब कहती हैं, अल्लाह की कसम मैंने हजरत खुबेब रजि. से बेहतर कोई कैदी नहीं देखा। अल्लाह की कसम मैंने उस दिन देखा कि अंगूरों का गुच्छा उनके हाथ में है और वो उसमें से खा रहे हैं। हालांकि वो लोहे की जंजिरों में जकड़े हुए थे और अंगूरों का मौसम भी नहीं था, बल्कि वो अल्लाह का दिया हुआ रिज्क था जो गैब से अल्लाह ने उनको अंगूर खिलाया था, जब मुश्रिकीन उनको कत्ल करने के लिए हरम से बाहर लाये तो हजरत खुबेब रजि. ने उनसे कहा कि मुझको मरने से पहले दो रकअत नमाज पढ़ लेने दो। काफिरों ने उनको इजाजत दे दी। फिर हजरत खुबेब रजि. ने दो रकअत नमाज अदा की और दुश्मनों से कहा कि अगर तुम यह ख्याल ना करते कि मैं कत्ल होने से घबरा रहा हूं तो मैं इन दो रकअतों को

और लम्बा करके अदा करता।

इस्लामी भाईयों!

अल्लाह के शेरों का हाल यही होता है। सामने फांसी का तख्ता है ओर ऐसे वक्त में आसूंओं की नमाज अदा की जा रही है। हजरत खुबेब रजि. की यह दो रकअतें हम जैसे नाकारा लोगों की हजारों रकअतों से अच्छी थी। अल्लाह पाक हम मुसलमानों को अपना ऐसा ही प्यारा बन्दा बना ले। आमीन!

इसके बाद हजरत खुबेब रजि. ने उन काफिरों के लिए बद-दुआ की कि परवरदिगार काफिरों को गिन ले। यानी उन लोगों को गिन गिन कर मार डालो। (चुनांचे बाद में ऐसा ही हुआ कि वो एक एक करके मर गये।) फिर शहीद होने से पहले हजरत खुबेब रजि. ने यह शेअर पढ़े। पहले एक संगदिल जालिम ने हजरत खुबेब रजि. के जिगर को चीरा और वो कहने लगा, अब तो तुम पसन्द करते होगे कि तुम्हारी जगह पर तुम्हारे आका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आ जायें और तुम्हारी जान बच जाये। हजरत खुबेब रजि. ने निहायत जोश में जवाब दिया कि अल्लाह जानता है, मैं तो यह भी पसन्द नहीं करता कि मेरी जान बचाने के लिए हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पावों में कांटा लगे (सीरते इब्ने हिशाम) फिर हजरत खुबेब रजि. ने एक लम्बी कसीदा पढ़ा जिसके आखिरी अशआर यह थे।

وَلَسْتُ اُبَالِیْ حِیْنَ اُقْتَلُ مُسْلِمًا　　عَلٰی اَیِّ شِقٍّ کَانَ لِلّٰہِ مَصْرَعِیْ

وَذٰلِكَ فِیْ ذَاتِ الْاِلٰهِ وَاِنْ یَّشَأْ　　یُبَارِكْ عَلٰی اَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعِ

जब मैं इस्लाम पर जान कुरबान कर रहा हूँ तो मैं परवाह नहीं करता कि राहे इलाही में किस पहलू पर गिरता और जान देता हूँ। अल्लाह की जात से अगर वो चाहे, यह बिलकुल उम्मीद है कि वो मेरे जिस्म के गोश्त के हर हर टुकड़े को बरकत अता करे।

हजरत खुबेब रजि. की सबसे आखिरी दुआ यह थी कि या अल्लाह, हमने तेरे रसूल के हुक्म उन लोगों को पहुंचा दिये, अब तू अपने रसूल को हमारे हाल की और उन काफिरों के जुल्मों की खबर पहुंचा दे। अल्लाह ने अपने प्यारे की यह दुआ कबूल की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह्य के जरीये

सारे हालात मालूम करके सहाबा किराम को तमाम वाक्यात से खबरदार कर दिया। मक्का के काफिरों ने जब हजरत आसिम रजि. की शहादत का हाल सुना तो उन्होंने उनकी लाश के लिए अपने आदमी भेज दिये ताकि उनके जिस्म का कोई ऐसा हिस्सा काट कर लायें, जिससे उनकी पहचान हो सके। क्योंकि आसिम ने जंगे बदर में कुफ्फारे कुरैश के नामी गिरामी सरदार उकबा बिन अबी मुईत को कत्ल किया था। लेकिन अल्लाह तआला ने हजरत आसिम रजि. की लाश की हिफाजत के लिए भेड़ों का एक जत्था मुकर्रर कर दिया, जिसने कुरैश के आदमियों से हजरत आसिम की लाश को बचा लिया और उनके बदन का कोई टुकड़ा ना काट सके।

हजरत उमर रजि. के लगाए हुए एक गवर्नर सईद बिन आमिर रजि. का यह हाल था कि बाज दफा वो अचानक बेहोश हो जाया करते थे। लोगों ने उनसे इसकी वजह पूछी तो उन्होंने बतलाया कि हजरत खुबेब रजि. की शहादत के वक्त मैं भी मौके पर हाजिर था, उस वक्त का दर्दनाक मंजर याद करता हूँ और हजरत खुबेब रजि. की बातें दिमाग में याद आती हैं तो मैं कांप कर बेहोश हो जाता हूँ।

बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

सहाबा किराम रजि. ने शजरे इस्लाम को सींचने के लिए जो खून बहाने में और जिस जिस तरह से इस्लाम को तरक्की दी है, वो दुनिया की तारीख में हैरत अंगेज वाकिआ हैं। इन ही कुरबानियों की बरकत थी कि इस्लाम अरब के रेगिस्तानों से निकलकर दुनिया के चारों कोनों में पहुंच गया और हर जगह नारा-ए-तकबीर की आवाज बुलन्द हो गयी। जब तक मुसलमानों में कुरबानी के यह जज्बात रहे, हर जगह उनका बोलबाला रहा और जब से मुसलमान कुरबानी देना भूल गये, और दुनिया की मुहब्बत में डूब गये, सो जो हाल है, देखा जा रहा है।

हकीकत यह है कि कौमों की तरक्की व पस्ती में माली व जानी हर दो कुरबानियों की शदीद जरूरत है। आज मुसलमान फिर तरक्की चाहते हैं तो महज जुबानी बातों से, लम्बी-लम्बी तकरीरों से, रस्मी-रिवाजी बेजान इबादतों से कुछ न बन सकेगा।

ऐ कौम के नौजवानों!

तुम्हारे लिए खास ध्यान देने की बात है और वक्त की बड़ी जरूरत कि आप हजरत खुबेब रजि. के वाक्यात को बार बार गौर से समझो ओर उसको अपने लिए

नमूना बनायें और हजरत इकबाल के इस पैगाम को याद रखें। इकबाल ने खूब ही कहा है:

मैं तुझको बताता हूँ, तकदीरे उमम क्या है?
शमशीर व सिना अव्वल तावूस व रिबाब आखिर।

بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 17

कयामत के दिन महशर में अल्लाह की रहमत का एक नजारा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्फाज मुबारका में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ۔

قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓی اَنْفُسِہِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَۃِ اللّٰہِ ؕ اِنَّ اللّٰہَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ؕ اِنَّہٗ ہُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝ وَاَنِیْبُوْٓا اِلٰی رَبِّکُمْ وَاَسْلِمُوْا لَہٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَکُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ (الزمر ۳۹)

(सूरह अज्जुमरः 53-54, पारा 23)

"ऐ रसूल आप मेरे उन बन्दों से कह दीजिए जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादती की है। यानी गुनाह किये हैं, अल्लाह की रहमत से मायूस न हों। बेशक अल्लाह पाक सारे ही गुनाहों को बख्श देगा, बेशक वो बहुत ही बख्शने वाला मेहरबान है और यह भी उनसे फरमा दीजिए कि अपने रब की तरफ झुक जाओ ओर उसके फरमां बरदार बन्दे बन जाओ। उस वक्त से पहले कि तुम्हारे पास अल्लाह का अजाब आये, उस वक्त तुम्हारा कोई मददगार ना होगा।"

इस्लामी भाईयों!

खुत्बे की जिस आयत का तर्जुमा आपने सुना है, यह उस वक्त उतरी, जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुछ बूढ़े लोग आये और उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! हम इस्लाम कबूल करने को तैयार हैं, मगर हम बहुत ही बड़े गुनाहगार हैं। दुनिया के सारे ही पाप हमने किये हैं। अब इस्लाम कबूल करके क्या करेंगे। गुनाहों से हमारा रजिस्टर बिलकुल काला हो गया है। उस वक्त यह

आयत नाजिल हुई, जिसमें अल्लाह पाक ने अपने बन्दों को बहुत बड़ी उम्मीद दिलाई है और यह हकीकत है कि इस्लाम इन्सान के सारे ही गुनाहों को मिटा देता है।

कुरआने मजीद में अल्लाह पाक ने यह उम्मीद दिलाने वाली बातें बहुत सी आयतों में बयान फरमाई है। बल्कि उन बन्दों पर अल्लाह का बड़ा ही करम होता है जो गुनाह करने के बाद अल्लाह के सामने रोयें, गिड़गिड़ायें और सच्चे दिल के साथ अल्लाह से माफी मांगे। जैसाकि इरशाद बारी है:

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَن يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ (آل عمران ٣)

(सूरह आले इमरान: 135, पारा 4)

यानी ''वो लोग भी अल्लाह के बहुत ही प्यारे हैं जो जब वो कोई बे-हयाई का काम कर बैठें या और किसी किस्म का गुनाह करके अपनी जान पर जुल्म कर बैठें, फिर वो अल्लाह को याद करें और अपने गुनाहों की माफी चाहें और है भी कोई जो उसके गुनाहों को बख्श सके और ऐसे नेक बन्दे गुनाहों पर इसरार यानी जिद नहीं करते, बल्कि हमेशा के लिए सच्ची तौबा करके गुनाहों को बिलकुल छोड़ देते हैं। यही वो लोग हैं जिनको अल्लाह के यहां बेहतरीन बदला मिलेगा।

हजरात!

आज का खुत्बा गुनाहों की बख्शिश और अल्लाह की रहमत पर है, जिसका अन्दाजा आप को कुरआन मजीद की इस आयत से हो गया होगा। इसके बाद आपको आज एक ऐसा मुबारक खुत्बा सुनाया जा रहा है जो खुद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी जुबान मुबारक से इरशाद फरमाया था, जिसमें कयामत का एक नजारा आपके सामने आ जायेगा। और आप समझ सकेंगे कि अल्लाह पाक कयामत के दिन किस किस तरह से अपने गुनाहगार बन्दों को बख्श कर जन्नत में दालिख करेगा। यह बा-बरकत खुत्बा सुनने से पहले हम को दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह पाक अपने फजलो करम से कयामत के दिन हम गुनहगारों का भी बेड़ा पार करे। हम सब को अपने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफारिश नसीब करे। दोजख से बचाकर हम सबको जन्नत में दाखिल फरमाये। आमीन!

अब खुत्बा मुबारक को गौर से सुनिये

عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِنِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ نَاسًا قَالُوْا یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! هَلْ نَرٰی رَبَّنَا یَوْمَ الْقِیَامَةِ؟ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: نَعَمْ هَلْ تُضَآرُّوْنَ فِیْ رُؤْیَةِ الشَّمْسِ بِالظَّهِیْرَةِ صَحْوًا لَیْسَ مَعَهَا سَحَابٌ؟ وَهَلْ تُضَآرُّوْنَ فِیْ رُؤْیَةِ الْقَمَرِ لَیْلَةَ الْبَدْرِ صَحْوًا لَیْسَ فِیْهِمَا سَحَابٌ؟ قَالُوْا: لَا یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! قَالَ: مَا تُضَارُّوْنَ فِیْ رُؤْیَةِ اللّٰهِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ اِلَّا کَمَا تُضَارُّوْنَ فِیْ رُؤْیَةِ اَحَدِهِمَا ـ اِذَا کَانَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ لِیَتَّبِعْ کُلُّ اُمَّةٍ مَا کَانَتْ تَعْبُدُ فَلَا یُبْقٰی أَحَدٌ کَانَ یَعْبُدُ اللّٰهَ مِنْ بَرٍّ وَّفَاجِرٍ اَتَاهُمْ رَبُّ الْعَالَمِیْنَ قَالَ فَمَا ذَا تَنْظُرُوْنَ یَتَّبِعُ کُلُّ اُمَّةٍ مَا کَانَتْ تَعْبُدُ؟ قَالُوْا یَا رَبَّنَا فَارَقْنَا النَّاسَ فِی الدُّنْیَا مَا اَفْقَرَ مَا کُنَّ اِلَیْهِمْ وَلَمْ نُصَاحِبْهُمْ وَفِیْ رِوَایَةِ اَبِیْ هُرَیْرَةَ فَیَقُوْلُوْنَ: هٰذَا مَکَانُنَا حَتّٰی یَاْتِیَنَا رَبُّنَا، فَاِذَا جَآءَ نَا رَبُّنَا عَرَفْنَاهُ، وَفِیْ رِوَایَةِ اَبِیْ سَعِیْدٍ فَیَقُوْلُ هَلْ بَیْنَکُمْ وَبَیْنَهٗ اٰیَةٌ اَتَعْرِفُوْنَهٗ؟ فَیَقُوْلُوْنَ نَعَمْ ـ فَیَکْشِفُ اللّٰهُ عَنْ سَاقٍ فَلَا یُبْقٰی مَنْ کَانَ یَسْجُدُ اللّٰهَ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِهٖ اِلَّا اٰیَةٌ اَتَعْرِفُوْنَهٗ؟ فَیَقُوْلُوْنَ نَعَمْ فَیَکْشِفُ اللّٰهُ عَنْ سَاقٍ فَلَا یَبْقٰی مَنْ کَانَ یَسْجُدُ اللّٰهَ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِهٖ اِلَّا اَذِنَ اللّٰهُ لَهٗ بِالسُّجُوْدِ وَلَا یُبْقٰی مَنْ کَانَ یَسْجُدُ اِتِّقَاءً وَرِیَاءً اِلَّا جَعَلَ اللّٰهُ ظَهْرَهٗ طَبَقَةً وَّاحِدَةً کُلَّمَا اَرَادَ اَنْ یَّسْجُدَ خَرَّ عَلٰی قَفَاهُ ثُمَّ یُضْرَبُ الْجِسْرُ عَلٰی جَهَنَّمَ وَتَحِلُّ الشَّفَاعَةُ

وَيَقُولُونَ: اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ ـ وَيَمُرُّ الْمُؤْمِنُونَ كَطَرْفِ الْعَيْنِ وَكَالْبَرْقِ وَكَالرِّيحِ وَكَالطَّيْرِ وَكَاَجَاوِيدِ الْخَيْلِ وَالرِّكَابِ فَنَاجٍ مُسْلَّمٌ وَمَخْدُوشٌ مُرْسَلٌ وَمَكْدُوشٌ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ حَتّٰى اِذَا خَلَصَ الْمُؤْمِنُونَ مِنَ النَّارِ فَوَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ مَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْكُمْ مُنَاشَدَةً لِّلّٰهِ فِيْ اِسْتِيْفَاءِ الْحَقِّ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لِلّٰهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ يَقُولُونَ رَبَّنَا كَانُوْا يَصُوْمُوْنَ مَعَنَا وَيُصَلُّوْنَ مَعَنَا وَيَحُجُّوْنَ فَيُقَالُ لَهُمْ اَخْرِجُوْا مَنْ عَرَفْتُمْ فَتُحَرَّمُ صُوَرُهُمْ عَلَى النَّارِ، فَيُخْرِجُوْنَ خَلْقًا كَثِيْرًا ثُمَّ يَقُولُونَ رَبَّنَا مَا بَقِيَ فِيْهَا اَحَدٌ مِّمَّنْ اَمَرْتَنَا بِهٖ فَيَقُوْلُ ارْجِعُوْا فَمَنْ وَجَدْتُّمْ فِيْ قَلْبِهٖ مِثْقَالَ دِيْنَارٍ مِّنْ خَيْرٍ فَاَخْرِجُوْهُ فَيُخْرِجُوْنَ خَلْقًا كَثِيْرًا ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا مَا بَقِيَ فِيْهَا اَحَدٌ مِّمَّنْ اَمَرْتَنَا بِهٖ فَيَقُوْلُ ارْجِعُوْا فَمَنْ وَجَدْتُّمْ فِيْ قَلْبِهٖ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ مِّنْ خَيْرٍ فَاَخْرِجُوْهُ فَيُخْرِجُوْنَ خَلْقًا كَثِيْرًا ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا لَمْ نَذَرْ فِيْهَا خَيْرًا ـ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ شَفَعَتِ الْمَلَائِكَةُ وَشَفَعَ النَّبِيُّوْنَ وَشَفَعَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَلَمْ يَبْقَ اِلَّا اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ فَيَقْبِضُ قَبْضَةً مِّنَ النَّارِ فَيُخْرِجُ مِنْهَا قَوْمًا لَمْ يَعْمَلُوْا خَيْرًا قَطُّ قَدْ عَادُوْا حُمَمًا فَيُلْقِيْهِمْ فِيْ نَهْرٍ فِيْ اَفْوَاهِ الْجَنَّةِ يُقَالُ لَهٗ نَهْرُ الْحَيَاةِ فَيَخْرُجُوْنَ كَمَا تَخْرُجُ الْحِبَّةُ

فِیْ حَمِیْلِ السَّیْلِ فَیَخْرُجُوْنَ کَاللُّؤْلُؤِ فِیْ رِقَابِھِمُ الْخَوَاتِمُ فَیَقُوْلُ اَھْلُ الْجَنَّۃِ

ھٰٓؤُلَآءِ عُتَقَآءُ الرَّحْمٰنِ اَدْخَلَھُمُ الْجَنَّۃَ بِغَیْرِ عَمَلٍ عَمِلُوْہُ وَلَا خَیْرٍ قَدَّمُوْہُ

فَیُقَالُ لَھُمْ لَکُمْ مَا رَاَیْتُمْ وَمِثْلَہٗ مَعَہٗ۔ (بخاری ومسلم) (बुखारी व मुस्लिम)

इस्लामी भाईयों!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस मुबारक खुत्बे में हमारे सामने बहुत सी खुशखबरियाँ पेश की हैं। जिनका ताअल्लुक आखिरत से है। जरूरत है कि हम गौर से सुनें और दिल में जगह दें और अल्लाह से दुआ करें कि वो अपने फजलो करम से हम गुनहगारों को अपनी रहमत से कयामत के दिन बचा ले और सबको जन्नत में दाखिल फरमाये। आमीन! अब फरमाने नबवी का तर्जुमा सुनिये।

हजरत अबू सईद खुदरी रजि. एक मशहूर सहाबी कहते हैं कि कुछ लोगों ने एक दिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम कयामत के दिन अपने रब्बुल आलमीन को नहीं देखेंगे? आपने फरमायाः हां जरूर देखोगे और इस तरह देखोगे जिस तरह खुली फिजां में दोपहर के वक्त जब कोई बादल वगैरह भी न हो, तुम सूरज को देखते हो, जिस तरह तुम चौदहवीं रात के चांद को चमकता हुआ देखते हो। बिलकुल इसी तरह तुम कयामत के दिन अल्लाह तआला को देखोगे। और सुन लो कयामत के दिन एक पुकारने वाला पुकारेगा कि दुनिया में जो लोग जिन जिन चीजों की पूजा करते थे, आज वो सब अपने अपने झूटे माबूदों के पीछे लग जायें। चूनांचे मुश्रिकीन दुनिया में जिन बुतों की पूजा करते थे, वो सब उनके पीछे लग जायेंगे। फिर उनको और उनके झूटे माबूदों को दोजख में धकेल दिया जायेगा। यहां तक कि मैदाने महशर में सिर्फ वो नेक व बद लोग रह जायेंगे जिन्होंने दुनिया में अल्लाह पाक के सिवा और किसी भी चीज को नहीं पूजा। उनके पास रब्बुल आलमीन खुद आयेगा और उनसे कहेगा कि सब लोग अपने झूटे माबूदों के साथ चले गये, तुम यहां क्या इन्तजार कर रहे हो?वो तौहीद वाले कहेंगे कि या अल्लाह हमने दुनिया में उन मुश्रिकीन को उनके गन्दे अमल यानी शिर्क की वजह से उस वक्त छोड़ दिया था जबकि हम दुनियावी जरूरतों के लिए उनके बहुत जरूरतमन्द भी थे, फिर भी हमने उनके मुश्रिक होने की वजह से उनकी सोहबत को छोड़ दिया। अब तू ही हमारी जगह है। जब तक हमारा माबूद खुद यहां ना आये, हम किसी और के

पीछे लगने वाले नहीं। हमारा रब जब यहां आयेगा, हम खुद उसको पहचान लेंगें। अबू सईद की रिवायत में यूं है कि अल्लाह पाक पूछेगा कि तुम्हारे रब की कोई निशानी तुम को मालूम है, जिससे तुम उसे पहचान लोगे। वो कहेंगे, हां बेशक! हमारे रब ने कुरआन में फरमाया थाः

"यव-म युकशफु अन साकिंव व-युदअव-न इलस-सुजूदि"

यानी "उस दिन पिण्डली खोली जायेगी और सज्दे के लिए लोग बुलाये जायेंगे।" (आखिर आयत तक) पस फौरन अल्लाह पाक अपनी पिण्डली खोल देगा और सारे मुसलमान अल्लाह के सामने सज्दे में गिड़गिड़ायेंगे। जो दुनिया में खुलूस के साथ अल्लाह को सज्दे किया करते थे और जो लोग महज दिखावे के लिए सज्दे किया करते थे, वो सज्दा करना चाहेगे, मगर वो करवट के बल ऊंधे मुंह गिर जायेंगे और सज्दा ना कर सकेंगे।

मेरे नमाजी भाईयों!

बड़े खतरे का मुकाम है, क्योंकि इस दिन झूटे और सच्चे नमाजियों की पकड़ हो जायेगी। सच्चे नमाजी सज्दा कर सकेंगे और झूटे नमाजियों की कमरें तख्ता बन जायेगी, अल्लाह पाक हम सबको सच्चा नमाजी बना दे। आमीन!

इसके बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि फिर दोजख पर पुल सिरात रखा जायेगा और सिफारिश का दरवाजा खोल दिया जायेगा, इन खतरनाक हालात को देखकर अम्बिया किराम भी पुकार उठेंगे, ऐ अल्लाह मेरे नफ्स को सलामत रखो। ऐ अल्लाह मेरे नफ्स को सलामत रखियो। पुल सिरात के ऊपर नेक बन्दे बिजली की तरह से या आंख झपकने की तरह से या हवा की तरह या परिन्दों की तरह से अपनी अपनी नेकियों के मुताबिक गुजर कर पार हो जायेंगे। कुछ तो बिलकुल सही सालिम हाल में गुजर जायेंगे, कुछ कट कर यानी जख्मी होकर पार लग जायेंगे और कुछ धक्के खाकर दोजख में गिर जायेंगे।

मेरे प्यारे भाईयों!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी सुन रहे हो, यह वो पुल सिरात है जिसका जिक्र अल्लाह पाक ने कुरआन पाक में बड़े जोरदार लफ्जों में किया है, फरमायाः

اِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۚ (مریم ۱۹)

(मरयम, आयत 71, पारा 16)

यानी "तुम में से कोई ऐसा ना होगा जिसका पुल सिरात पर गुजर ना हो, यह अल्लाह का कतई फैसला हो चुका है।"

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا (مریم ۱۹)

(मरयम, आयत 72, पारा 16)

फिर हम मुत्तकियों को बचाकर जन्नत में दाखिल करेंगे और शिर्क व कुफ्र करने वालों कों टुकड़े टुकड़े करके उसी दोजख में धकेल देंगे।"

दुआ करो अल्लाह पाक उस दिन हम सबको पुल सिरात से आराम के साथ गुजारे और जन्नत का दाखिला नसीब करे। आमीन! आगे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि जो ईमान वाले दोजख से बच जायेंगे, कसम उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है, वो अल्लाह पाक से अपने गुनहगार दोजखी भाईयों के लिए बड़ी ही सख्ती के साथ मुतालबा करेंगे और कहेंगे कि या अल्लाह हमारे कितने नमाजी भाई रोजा रखने वाले, हज करने वाले दोजख में पड़े हुए चिल्ला रहे हैं। ऐ अल्लाह! उनको दोजख से निकाल दे। अल्लाह पाक उनसे कहेगा कि जाओ, उनकी सूरतें पहचान पहचान कर तुम उनको दोजख से निकाल लाओ। उनकी शकलें अब दोजख की आग पर हराम हो गयी। इसलिए उनके चेहरे सही सालिम होंगे और वो जन्नती उनको देख-देखकर सबको दोजख से निकाल कर जन्नत में ले आयेंगे और बहुत ज्यादा लोगों को निकालकर ले आयेंगे।

या अल्लाह! हम गुनहगारों को भी उस दिन हमारे ईमान वाले भाईयों की यह सिफ़ारिश नसीब करना और दोजख से बचाकर जन्नत में दाखिल करना। आमीन! या अल्लाह यह दुआ जरूर कबूल फरमा लीजिए। आमीन!

फिर कहेंगे, या अल्लाह जिनके लिए तेरा हुक्म हुआ हम उन सबको दोजख से निकाल लाये हैं। अल्लाह पाक फरमायेगा, फिर जाओ और उन गुनहगारों को भी निकाल लाओ, जिनके दिलों में एक दीनार के वजन बराबर भी ईमान है, वो और बहुत से लोगों को दोजख से निकालकर जन्नत में ले आयेंगे। फिर अल्लाह पाक फरमायेगा, फिर जाओ और उनको भी निकाल लाओ, जिनके दिलों में आधे दीनार के वजन बराबर भी भलाई थी, चुनांचे वो जन्नती फिर जायेंगे और बहुत से लोगों को दोजख से निकाल लायेंगे। अल्लाह पाक फरमायेगा, फिर जाओ और

उनको भी निकाल लाओ जिनके दिलों में एक जर्रा बराबर भी ईमान था, फिर वो बहुत से लोगों को निकाल लायेंगे। फिर वो कहेंगे, या अल्लाह अब तो हमने दोखज में जर्रा बराबर भी ईमान वालों को नहीं छोड़ा है, सब को निकालकर ले आये हैं अब अल्लाह पाक फरमायेगा कि फरिश्ते शिफाअत कर चुके हैं और नबी व रसूल भी सिफारिश कर चुके हैं। अब सिर्फ अल्लाह रब्बुल इज्जत जो सबसे ज्यादा रहम करने वाला है, उसकी सिफारिश बाकी रह गयी है। इतना कहकर अल्लाह पाक खुद दोजख में से एक मुट्ठी भरेगा, जिसकी बरकत से वो लोग दोजख से बच जायेंगे, जिन्होंने कभी कोई नेक अमल नहीं किया होगा, जो दोजख में जल-भून कर कोयला बन चुके होंगे। उनको एक ऐसी नहर मे डाला जायेगा जिसे जन्नतियों की बोल-चाल में "नहरे हयात" जिन्दगी की नहर कहा जाता है, वो उस नहर से उसी तरह जिन्दगी पायेंगे जिस तरह गीली जगह पर दाने उगते हैं, फिर वो मोतियों की तरह चमकने लग जायेंगे। उनकी गर्दनों में निशानियां होंगी, उनके लिए जन्नती कहा करेंगे कि यह खुशनसीब खुद अल्लाह पाक रहमानुर्रहीम के आजाद किये हुए बन्दे हैं। अल्लाह तआला ने उनको किसी नेक अमल के बगैर जन्नत में दाखिल किया होगा, उनसे कहा जायेगा कि तुम्हारे लिए यह जन्नत है जो तुम देख रहे हो और इसके साथ इसकी तरह की और बहुत सी नेमतें हैं।

बिरादराने इस्लाम!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह खुत्बा मुबारक इस काबिल है कि आप इसे बार बार पढ़ें, सुनें और अल्लाह पाक से उसकी रहमत की उम्मीद रखें, उसका इरशाद है, जैसाकि हदीसे कुदसी में आया है:

"इन-न रह-मती स-ब-कत ग-ज-बी"

मेरी रहमत मेरे गजब और गुस्से पर भारी है। इसी रहमत का नतीजा है जो आपने सुना है कि दोजख में से किस किस तरह से अल्लाह पाक की रहमत गुनहगारों को निकाल लेगी और आखिरकार जन्नत में दालिख होंगे। अल्लाह पाक सारे मुसलमानों को कयामत के दिन जन्नत नसीब करे और दोजख से आजादी अता करे और अपनी रहमत और मगफिरत से मालामाल फरमाये। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 18

खुत्बा गुनाहों से बचने और तौबा व इस्तिगफार की ख़्वाहिश दिलाने के लिए रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाकीजा खुत्बात

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ (النور ٢١)

(अलनूर, आयत 21, पारा 18)

यानी अल्लाह तआला ने फरमायाः ऐ ईमान वालों! शैतान के कदमों पर मत चलो, जो कोई शैतान के कदमों पर चलता है, तो वो उसको बेहयाई और नाफरमानी ही का हुक्म करता है।''

मुसलमान भाईयों!

आज का खुत्बा गुनाहों से बचने और तौबा व इस्तिगफार का शोक दिलाने पर है, अगर आप गौर करेंगे तो मालूम होगा कि शरीअते इस्लामिया का शुरू से आखिर तक यही मकसद है, बल्कि एक लाख चौबिस हजार नबी व रसूल यही पैगाम लेकर दुनिया में आये कि इन्सान अपने पैदा करने वाले की नाफरमानी से बचे और जिन कामों का हुक्म दिया है, उनको जोक व शौक से अदा करे। गुनाह नाम ही उस काम का है जिससे इस्लाम ने मना किया है, और नेक काम वो हैं जिनके अदा करने का इस्लाम ने हुक्म दिया है। इन्सान से गुनाह जरूर हो जाते हैं, क्योंकि गुनाह इन्सान की फितरत में दाखिल हैं। हजरत आदम अलैहिस्सलाम से गुनाह हुआ और उनकी औलाद भी गुनाह करेगी, मगर गुनाह करने के बाद अपने बाबा आदम अलैहिस्सलाम के रास्तों पर चलना जरूरी है। उन्होंने बाद में इस्तगफार किया और मुद्दतों ''रब्बना जलम-ना अनफु-स-ना.....'' वाली दुआ

पढ़ते रहे, जिसकी बरकत से अल्लाह ने उनका गुनाह माफ कर दिया। इसलिए आदम की औलाद को तालीम दी गयी है कि गुनाह के बाद तौबा करें और इस्तिगफार पढ़ें, इसकी बरकत से उनके गुनाह माफ हो जायेंगे। इसलिए गुनाह से बचने का फिक्र रखना ईमान की निशानी है। चुनांचे जैसाकि सही बुखारी किताबुद दअवात में है:

قَالَ اِبْنُ مَسْعُوْدٍ اِنَّ الْمُؤْمِنَ يَرٰى ذُنُوْبَهٗ كَاَنَّهٗ قَاعِدٌ تَحْتَ جَبَلٍ يَّخَافُ اَنْ يَّقَعَ عَلَيْهِ وَاِنَّ الْفَاجِرَ يَرٰى ذُنُوْبَهٗ كَذُبَابٍ مَرَّ عَلٰى اَنْفِهٖ فَقَالَ بِهٖ هٰكَذَا يَعْنِىْ اَشَارَ بِيَدِهٖ فَوْقَ اَنْفِهٖ۔ (بخاری)

यानी ''हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. ने कहा कि ईमान वाले से जब गुनाह हो जाता है तो वो यूं समझता है कि जैसे वो पहाड़ के नीचे बैठा है और डर रहा है कि वो पहाड़ अब गिर रहा है और मुनाफिक जब गुनाह करता है तो ऐसा समझता है कि जैसे कोई मक्खी उसकी नाक पर बैठी है, और उसने हाथ हिलाकर उसको उड़ा दिया।''

यानी गुनाह करते वक्त थोड़ा बहुत ख्याल करता है। फिर थोड़ी देर बाद ऐसे भूल जाता है जैसे कुछ किया ही ना था। हालांकि पैगम्बर अलैहिस्सलाम ने छोटे छोटे गुनाहों से भी डरने और बचने पर बड़ा जोर दिया है। तफसीर मआलिम में आयत :

مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰهَا ۚ
(اَلْكَهْف ١٨)

(सूरह अल कहफ: 49, पारा 15) के तहत सहल बिन साद रजि. से यह इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मनकूल है:

اِيَّاكُمْ وَمُحَقَّرَاتِ الذُّنُوْبِ فَاِنَّمَا مُحَقَّرَاتُ الذُّنُوْبِ مَثَلُ قَوْمٍ نَزَلُوْا بَطْنَ وَادٍ فَجَاءَ هٰذَا بِعُوْدٍ وَجَاءَ هٰذَا بِعُوْدٍ وَجَاءَ هٰذَا بِعُوْدٍ فَاَطْبَخُوْا خُبْزَتَهُمْ وَاِنَّ مُحَقَّرَاتِ الذُّنُوْبِ لَمُوْبِقَاتٌ۔

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''छोटे-छोटे गुनाहों को कभी हल्का मत समझो, क्योंकि छोटे गुनाहों की ऐसी मिसाल है जैसे एक कौम किसी जंग में उतरी पस एक लकड़ी वो लाया, एक लकड़ी वो लाया, एक लकड़ी वो लाया फिर उनकी आग इतनी हो गयी कि सबने अपनी रोटी पका ली। और छोटे गुनाह जरूर बर्बाद करने वाले हैं।''

यानी जिस तरह एक एक लकड़ी जमा होते होते बड़ी आग का सामान हो जाता है, उसी तरह छोटे गुनाह होते होते गुनाहों का एक पहाड़ बन जाता हैं।

और इब्ने माजह में हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है:

إِنَّ الْمُؤْمِنَ إِذَا أَذْنَبَ كَانَتْ نُكْتَةً سَوْدَاءَ فِي قَلْبِهِ فَإِنْ تَابَ وَنَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ صُقِلَ قَلْبُهُ فَإِنْ زَادَتْ فَذٰلِكَ الرَّانُ الَّذِي ذَكَرَهُ اللهُ فِي كِتَابِهِ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

(इब्ने माजह जुहद, तिर्मिजी किताबुत तफसीर, मुस्नद अहमद)

यानी ''बन्दा मोमिन जब कोई गुनाह करता है तो एक काला नुक्ता उसके दिल पर लग जाता है, पस अगर उसने जल्दी तौबा करली और उस गुनाह को छोड़ दिया और अल्लाह तआला से बख्शिश मांगी तो उसके दिल की सफाई हो जाती है। यानी कालापन दूर हो जाता है। और अगर तौबा ना की तो वो कालापन कायम रहता है। फिर और गुनाह हुवा और एक नुक्ता स्याही का और लग गया। इसी तरह बढ़ते बढ़ते तमाम दिल काला होकर बिलकुल काला हो जाता है। जैसाकि जंग खाया हुआ लोहा। इसीलिए अल्लाह पाक ने जो कुरआन शरीफ में फरमाया है कि कयामत का यकीन उन्हीं लोगों को नहीं आया जिनके दिलों पर गुनाहों का जंग बैठ गया है। इससे यही जंग मुराद है।''

पस मुसलमान पर जरूरी है कि हर किस्म के छोटे-बड़े गुनाह से बचने का ख्याल रखे और अगर कभी गुनाह हो जाये तो जल्दी ही तौबा कर ले और अपने दिल में शरमाये।

हजरात!

ऐसे गुनहगारों के लिए बहुत सी खुशखबरियाँ कुरआन व हदीस में आयी हैं, जैसाकि चन्द आयतें आपने सुनी हैं। हदीस शरीफ में आया है:

التَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ۔ (الحديث)[ابن ماجه الزهد]

"गुनाहों से रुक जाने वाला ऐसा है, गोया उसने गुनाह किया ही नहीं।"

एक रिवायत में यूं है कि गुनाहगार बन्दा जब तौबा कर लेता है तो अल्लाह पाक इस कद्र खुश होता है कि जैसा कि तुम्हारी कोई चीज गुम हो जाये और उसके पा लेने पर तुमको खुशी होती है। एक रिवायत में यूं है कि जब गुनहगार बन्दा अल्लाह के सामने माफी के लिए हाथ फैलाकर दुआ करता है तो अल्लाह पाक फरिश्तों के सामने उस बन्दे पर फख्र करता है और फरमाता है कि मुझको शर्म आती है कि मैं अपने बन्दे के हाथों को खाली फेर दूं।

ऐ फरिश्तो! तुम गवाह रहो, मैंने अपने बन्दे के गुनाहों को माफ कर दिया।

इस्तिगफार (माफी) के लिए बेहतरीन दुआ वो है जो हजरत आदम अलैहिस्सलाम और हव्वा ने की थी।

رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا ۔ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ۝ (الاعراف ۷)

(सूरह अल आराफः 23, पारा 8)

यानी "या अल्लाह हमने यह गुनाह करके अपने ऊपर बहुत ही बड़ा जुल्म किया है, अगर तू हमारे इस गुनाह को ना बख्शेगा तो हम तो नुकसान पाने वालों में से हो जायेंगे।"

इस्तिगफार का सुन्नत से साबित कलिमा यह हैः

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ۔ [ابوداؤد، ترمذی]

यानी "मैं अल्लाह पाक से अपने गुनाहों की बख्शिश चाहता हूँ, वो अल्लाह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो जिन्दा है, सबको संभालने वाला हैं मैं उसी के सामने तौबा करता हू।"

तौबा व इस्तिगफार हर रोज सुबह व शाम करना चाहिए, हर नमाज के बाद इस्तिगफार पढ़ना जरूरी है, हर मुसलमान मर्द व औरत को चाहिए कि कोई कभी भी यह ख्याल ना करे कि मैं जब बूढ़ा हो जाऊंगा तब तौबा व इस्तिगफार करूंगा। या मरते वक्त तौबा कर लूंगा। क्योंकि ऐसे ख्याल करने वाले की तौबा

कबूल नहीं है। सूरह निसा में इरशादे बारी तआला है:

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰٓئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ حَتَّىٰٓ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْـَٰٔنَ (النساء ۴)

(निसाअ, आयत 17-18, पारा 4)

यानी "अल्लाह तआला ने फरमाया कि तौबा कबूल करने का अल्लाह तआला का वादा सिर्फ उन्हीं लौगों के लिए है जो बेसमझी से गुनाह करके फिर जल्दी तौबा कर लेते हैं। यह वो लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला तरस खाकर उनको अपनी रहमत से नवाजता है और उनकी तौबा कबूल करता है। अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है और तौबा की कबूलियत का वादा ऐसे लोगों से नहीं है जो हमेशा गुनाह करते रहते हैं फिर जब मरने लगे, उस वक्त कहते हैं कि अब मैं तौबा करता हूँ।"

और तरगीब व तरहीब में हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है:

اَلْمُسْتَغْفِرُ مِنَ الذَّنْبِ وَهُوَ مُقِيْمٌ عَلَيْهِ كَالْمُسْتَهْزِئِ بِرَبِّهٖ۔

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जो शख्स गुनाह से तौबा करता रहता है, मगर उसको छोड़ता नहीं वो शख्स ऐसा है कि गोया अपने रब के साथ ठटठा (हंसी) करता है।"

पस असली और सच्ची और कबूल होने के लायक वही तौबा है जो गुनाह से शरमाकर और अल्लाह के अजाब के डर से हो। और तरगीब व तरहीब में हजरत आईशा रजि. से रिवायत है:

مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يَّسْبَقَ الْمُجْتَهِدَ فَلْيَكُفَّ عَنِ الذُّنُوْبِ۔

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि " जिस शख्स की यह ख्वाहिश हो कि बहुत बड़ी इबादत करने वाले से भी वो ज्यादा दर्जा

हासिल कर ले, उसको चाहिए कि गुनाहों से बहुत डरता और बचता रहे।''

यानी गुनाहों से बचना अल्लाह पाक के नजदीक बड़ी इबादत से भी अफजल है। इसलिए अल्लाह के नेक बन्दों का यही पैशा और दस्तूर रहा है कि वो गुनाहों से बचने के बावजूद अल्लाह से डरते रहते हैं। हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि., हजरत उमर फारूक रजि. जैसे हजरात की बहुत सी मिसालें मौजूद हैं कि वो किसी कद्र हर वक्त अल्लाह के डर से कांपते रहते थे। एक हम हैं कि गुनाह करके और बेहयाईयां करते रहते हैं।।

तरगीब में अनस रजि. की रिवायत में आया है:

كُلُّ بَنِيْ آدَمَ خَطَّاءٌ وَّخَيْرُ الْخَطَّائِيْنَ التَّوَّابُوْنَ. ترمذی، صفة القيامة، ابن ماجه، الزهد]

(तिर्मिजी, सिफतुल कियामति, इब्ने माजह, किताबुज जुहद)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''सब आदम की औलाद खताकार हैं और खताकारों में अच्छे वो हैं जो तौबा करने वाले हैं।''

मतलब यह है कि कैसा ही नेक हो, फिर भी थोड़ी बहुत गलती हर इन्सान से हो ही जाती है। सो अच्छा आदमी वो है, जिसकी यह खासियत हो कि गुनाह से शरमाये और जल्दी तौबा कर ले।

हाजिरीन किराम!

आखिर में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वो पाकिजा खुत्बा आपको सुनाया जाता है, जो तमाम खुत्बों का खुलासा और सारी नसीहतों का निचोड़ है। जिसका एक एक हुरूफ हमारी खैर-ख्वाही में डूबा हुआ है। अल्लाह पाक ऐसे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हजारों-हजारों दरूद व सलाम नाजिल फरमाये, जिन्होंने हमारे समझाने बुझाने में कोई कसर नहीं रखी। यह खुत्बा किताब तरगीब में हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. कहते है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

اَلنَّادِمُ يَنْتَظِرُ مِنَ اللهِ الرَّحْمَةَ، وَالْمُعْجِبُ يَنْتَظِرُ الْمَقْتَ. وَاعْلَمُوْا عِبَادَ اللهِ اِنَّ كُلَّ عَامِلٍ سَيَقْدِمُ عَلٰى عَمَلِهٖ وَلَا يَخْرُجُ مِنَ الدُّنْيَا حَتّٰى يَرٰى حُسْنَ عَمَلِهٖ وَسُوْءَ عَمَلِهٖ، وَاِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِخَوَاتِيْمِهَا وَاللَّيْلُ وَالنَّهَارُ

مَطِيَّتَانِ فَاَحْسِنُوْا السَّيْرَ عَلَيْهِمَا اِلَى الْاٰخِرَةِ وَاحْذَرُوْا التَّسْوِيْفَ فَاِنَّ الْمَوْتَ يَأْتِيْ بَغْتَةً وَلَا يَغْتَرَّنَّ اَحَدُكُمْ بِحِلْمِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ فَاِنَّ الْجَنَّةَ وَالنَّارَ اَقْرَبُ اِلٰى اَحَدِكُمْ مِنْ شَرَاكِ نَعْلِهٖ ثُمَّ قَرَأَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ (فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ)۔

(الزلزال ٩٩)

यानी ''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दिन अपने खुत्बे में फरमाया कि गुनाहों से शर्मिन्दा होने वाला अल्लाह की तरफ से रहमत का उम्मीदवार है और बेपरवाही करने वाला उस अल्लाह तआला की तरफ से नाराजगी और गुस्से का इन्तेजार कर रहा है। अल्लाह के बन्दों! जान रखो कि हर एक अमल करने वाला करीब है कि अपने अमल के नतीजे को पहुंच जाये और कोई भी आदमी इस दुनिया से नहीं मरता जब तक कि अपने अमल की बुराई-भलाई वो इस दुनिया में देख ना ले। और दारोमदार सब कामों के खात्में पर है। यानी खात्मा अच्छा हो गया तो अच्छा रहा और अगर खात्मा बिगड़ गया तो सबकुछ बिगड़ गया। सबकुछ बर्बाद हो गया। रात और दिन दो सवारियां हैं सो तुम उन सवारियों पर आखिरत की तरफ को अच्छे तौर से चलो, यानी नेक अमल करते चले जाओ ताकि जन्नत तक पहुंच जाओ और आज कल आजकल करने से बचो, इसलिए कि मौत अचानक आ जायेगी और कोई तुम में इस धोके में ना रहे कि अल्लाह तआला बहुत ही सब्र करने वाला और बुर्दबार है। क्योंकि जन्नत और दोजख तुम्हारे बिलकुल नजदीक है, जिस तरह जूती का तस्मा तुम्हारे पावों की अंगूलियों के बीच में तुम से करीब है। ऐसे ही जन्नत और दोजख, गोया तुम्हारे पावों से लगे हुए हैं। क्या खबर हे कि किस वक्त और किस बात में जन्नत में जाना मिल जाये और किस बात पर दोजख में गिरना हो जाये। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी कि जो कोई जर्रा बराबर नेकी करेगा, वो उसको भी देख लेगा और जो कोई जर्रा बराबर बुराई करेगा, वो उसको

भी देख लेगा।''

प्यारे भाईयों!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह अजीमुश्शान खुत्बा है जिसका एक एक हुरूफ हर वक्त याद रखने के काबिल है। प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस खुत्बे में जिन बातों का जिक्र फरमाया है, उसकी हर एक की तफसील के लिए एक दफ्तर चाहिए। आपने शुरू में गुनहगारों की दो किस्में की हैं। एक वो किस्म जो गुनाहगार होने के बावजूद रहमते इलाही की हकदार है, यह वो लोग हैं जो गुनाह करने के बाद शर्म, गम और अफसोस करते हैं और आइन्दा के लिए उस गुनाह से इस तरह दूर होने का वादा करते हैं कि फिर सारी उम्र उसकी तरफ कभी ध्यान भी नहीं करते, बल्कि उन लोगों से भी दूर हो जाते हैं जिनकी बुरी सोहबत से वो गुनाह किया है और ऐसी जगह कदम भी नहीं रखते, जहां उस गुनाह के अड्डे होते हैं। यही खुशनसीब गुनहगार हैं जिनको अल्लाह की रहमत ढांप लेती है और वो गुनाह उनके हक में सवाब की वजह बन जाता है।

उनकी मिसाल उस सोने की है जो आग की भट्टी में से निकलकर कंगन बन जाता है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसा ही कुंदन बनने की तौफिक बख्शे। दूसरी किस्म उन गुनहगारों की है जो गुनाह की वजह से अल्लाह के गजब व गुस्से का शिकार होते हैं, यह वो गुनहगार हैं जो गुनाह करने के बाद उल्टे दिलेर हो जाते हैं और शर्म व हया को ताक पर रख देते हैं। गोया इबलीस का नमूना पैश करते हैं। जिसने अल्लाह की नाफरमानी की और उल्टा अपनी गलती को सही बतलाने लगा, पस ऐसे गुनहगार यकीनन शैतान इबलिस के मानने वाले हैं जो शैतान ही की तरह अल्लाह के गजब व गुस्से में गिरफ्तार होकर दोनों जहां की जिल्लत हासिल करेंगे और यकीनन दोजख में जलते रहेंगे। अल्लाह पाक हर मुसलमान मर्द व औरत को शैतानी रास्ते पर चलने से बचाये। आमीन!

मुसलमान भाईयों!

अल्लाह से दुआ करो कि वो हम को शर्म व हया करने वाला गुनहगार बनाये और बेशर्म, बेहया गुनहगारों से हमेशा दूर रखे। आजआप इस जमाने में देखेंगे कि ज्यादातर मर्द व औरत दूसरी जमाअत में ज्यादा से ज्यादा शरीक होती हैं। आज का दौर वो दौर है कि गुनाहों का ख्याल ही खत्म होता जा रहा है, लोगों अब किसी भी बुरे से बुरे गुनाह को गुनाह कहने के लिए तैयार नहीं हैं। झूठ बोलना, चुगली

खाना, गिबत करना, ऐब निकालना वगैरह तो आजकल आम आदत बन गई है। इसके बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लफ्ज "वआलमु इबादल्लाहि" फरमाकर अल्लाह के ईमानदार बन्दों को खबरदार किया है कि याद रखो जो कुछ दुनिया में कर रहे हो, उसका फल आखिरत में तो मिलेगा ही, मगर दुनिया में भी उसके बुरे नतीजे सामने आकर रहेंगे। अच्छे कामों के अच्छे नतीजे और बुरे कामों के बुरे नतीजे जरूर सामने आयेंगे। आखिरत का मामला बाद का है, इसलिए फरमाया कि कामों का ऐतबार खात्में पर है। खात्मा अगर अच्छा है तो वो इन्सान आखिरत में भी अच्छा है और अगर खात्मा खराब है तो फिर पस खराब ही है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया की कमजोरी पर ध्यान दिलाया है कि रात दिन दो सवारियां करार दी हैं, जिन पर सवार होकर हर मुसलमान आखिरत की मंजिल की तरफ सफर कर रहा है।

सुबह होती है शाम होती है
उम्र यूं ही तमाम होती है

साथ ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आज का काम आज ही कर लेना जरूरी है, उसे कल पर छोड़ना खतरे से खाली नहीं है। नमाज, रोजा, हज्ज, जकात सबको वक्त पर अदा करना और उसके लिए आजकल, आजकल ना करना अकलमन्दी का तकाजा है कि ना मालूम घड़ी भर बाद क्या बात पैश आ जाये। इसमें वक्त की कद्र करने की भी तालीम है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को इसे समझने की तौफीक दे।

बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

इस मुबारक खुत्बे के आखिर में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक और बड़ी भारी नसीहत फरमायी है कि लोगों! यह ख्याल हरगिज ना करो कि अल्लाह बख्शने वाला, मेहरबान है। वो जरूर बख्श ही देगा, ऐसा ख्याल करना भी शैतानी वसवसा है। सोचना चाहिए कि वो जिस तरह बख्शने वाला मेहरबान है, उसी तरह वो पकड़ने वाला भी है। वो एक जर्रा बराबर नेकी करने से बख्श भी सकता है और एक जर्रा बराबर बुराई करने से सारी नेकियों को बर्बाद करके दोजख में धकेल भी सकता है। इसलिए कभी ऐसा ख्याल ना करना चाहिए और अल्लाह से हर वक्त डरना चाहिए। बिला शक व शुबा जन्नत और दोजख हर इन्सान की पैरों की जूतियों से भी ज्यादा उसके करीब हैं। कितने लोग जन्नत के करीब होते होते कोई गुनाह ऐसा कर बैठते हैं कि वो दोजख में चले जाते हैं और

कितने लोग दोजख के बिलकुल किनारे पहुंचकर ऐसी नेकी कर बैठते हैं कि सारे गुनाह माफ करा के जन्नत में दाखिल हो जाते हैं।

फिर आखिर में प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आयते कुरआनी "फ-मई-य-मल मिसकाला जर्रतिन......" आखिर तक पढ़कर दोबारा डराया कि एक जर्रा बराबर नेकी और एक जर्रा बराबर बुराई दो अपनी जगह पर बड़ा वजन रखती हैं। अकलमन्द इन्सान का फर्ज है कि किसी भी नेकी को कम न जाने और किसी भी गुनाह को छोटा ना समझे।

बिरादराने इस्लाम!

आखिर में आपको सय्यदुल इस्तगफार सुनाया जाता है। हर सुबह व शाम इसका पढ़ना बहुत ही भलाई व बरकत का सबब होगा। सय्यदुल इस्तगफार की जितनी दुआयें आई हैं सबमें इसका दर्जा बड़ा है, वो यह है:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ۔ (بخاری، الدعوات)

(बुखारी अद्दअवात)

ऐ अल्लाह तू मेरा रब है। तेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। तूने ही मुझको पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूँ। मैं तेरे वादों का पाबन्द हूँ और जहां तक मेरी ताकत है, मैं अपने गुनाहों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ और जिस कद्र तेरी नेमतें मेरे शामिले हाल हैं, मैं उन सबका इकरार करता हूँ, पस मुझको बख्श दे, बेशक गुनाहों का बख्शने वाला सिर्फ तू ही है, तेरे सिवा कोई नहीं।" (बुखारी)

भाईयों!

आओ अल्लाह के सामने तौबा करें और आइन्दा के लिए अल्लाह से वादा करें कि हरगिज बुरे कामों के पास नहीं जायेंगे और वादा करें कि शिर्क व बिदअत और सारे गुनाहों से दूर रहेंगे।

या अल्लाह हम गुनहगार बन्दे तेरे सामने हाथ फैलाते हैं कि हम तेरे ही बन्दे

हैं और तेरे मानने वाले हैं। हमारे गुनाहों को माफ फरमाकर हम को अपने दोस्तों में दाखिल फरमा और दीन व दुनिया में हम को इज्जत व आबरू अता फरमा। इस्लाम को सर बुलन्दी बख्श दे, बुजुर्गों को सच्चा बुजुर्गाने इस्लाम बना दे, नौजवानों को कुव्वते हैदरी बख्श दे, आपस में इत्तिफाक व इत्तेहाद अता फरमा। आमीन सुम्मा आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 19

क़यामत की निशानियों के बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अजीमुश्शान खुत्बा

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○
يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِيْمٌ ○ يَوْمَ تَرَوْنَهَا
تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ○

(الحج ٢٢)

(सूरह हज्ज: 2, पारा 17)

"ऐ लोगों! अपने पैदा करने वाले परवरदिगार से डरो, बेशक कयामत का जलजला बड़ा ही सख्त होगा। जिस दिन तुम देखोगे, हर दूध पिलाने वाली औरत अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी, बल्कि हर हमल वाली औरत अपना हमल गिरा देगी और तुम लोगों को देखोगे कि वो नशाबाजों की तरह मदहोश हो रहे होंगे। हालांकि वो मदहोश नहीं होंगे। लेकिन अल्लाह का अजाब जो कयामत की शक्ल में जाहिर होगा वो बहुत ही सख्त होगा।"

बिरादराने इस्लाम!

कयामत उस दिन का नाम है, जिस दिन यह सारी दुनिया फना होकर एक दूसरा आलम बपा होगा, जिसमें सारे इन्सान जो आदम अलैहिस्सलाम से लेकर कयामत तक पैदा होकर मर चुके हैं, वो जिन्दा करके अल्लाह तआला के सामने हाजिर किये जायेंगे और उससे जिन्दगी भर के कामों का हिसाब लिया जायेगा। जिसकी नेकियां ज्यादा होंगी वो जन्नत में दाखिल होगा और जिसकी बुराईयां

ज्यादा होगी, वो दोजख में दाखिल होगा। कयामत कायम होने का अकीदा बरहक है। जिसके मुताल्लिक कुरआने मजीद की बहुत सी आयात में अल्लाह पाक ने बड़े ही जोरदार लफ्जों में खबर दी है। बल्कि कई आयतों में कसम खाकर अल्लाह ने फरमाया है कि कयामत का कायम होना बिलकुल हक और सच है। मगर उसका वक्त, तारीख, साल किसी को नहीं मालूम है। इतना जरूर है कि कयामत जुमा के दिन कायम होगी और उसके कायम होने से पहले बहुत सी निशानियां हैं जो आंखों के सामने आयेगी। उन ही निशानियों के बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अजीमुश्शान खुत्बा आज आपको सुनाया जा रहा है।

मेरे भाईयों!

इस खुत्बा-ए-मुबारक को गौर से सुनो और देखो कि जो निशानियां अल्लाह के रसूल ने बयान फरमायी हैं, वो किस किस तरह से आज जाहिर हो रही हैं। जिनसे अन्दाजा हो सकेगा कि अब कयामत का कायम होना करीब है। फिर अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि वो कब कायम होगी। अल्लाह पाक के यहां एक दिन की मुद्दत दुनिया के एक हजार सालों की मुद्दत के बराबर है। अल्लाह तआला कयामत के दिन हम सबको इज्जत अता करे। उस दिन की रुसवाई से बचाये क्योंकि वो बहुत ही खतरनाक दिन है। अब खुत्बा सुनिए:

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ حَجَّ النَّبِيُّ ﷺ حَجَّةَ الْوَدَاعِ ثُمَّ اَخَذَ بِحَلْقَةِ بَابِ الْكَعْبَةِ فَقَالَ: يَآ اَيُّهَا النَّاسُ اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِاَشْرَاطِ السَّاعَةِ؟ فَقَامَ اِلَيْهِ سَلْمَانُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ فَقَالَ اَخْبِرْنَا. فِدَاكَ اَبِيْ وَاُمِّيْ. يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! قَالَ: مِنْ اَشْرَاطِ السَّاعَةِ اِضَاعَةُ الصَّلَاةِ وَالْمَيْلُ مَعَ الْهَوٰى وَتَعْظِيْمُ رَبِّ الْمَالِ. فَقَالَ سَلْمَانُ وَيَكُوْنُ هٰذَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ. فَعِنْدَ ذٰلِكَ يَا سَلْمَانُ تَكُوْنُ الزَّكٰوةُ مَغْرَمًا وَالْفَيْءُ مَغْنَمًا وَيُصَدَّقُ الْكَاذِبُ وَيُكَذَّبُ الصَّادِقُ

وَيُؤْمِنُ الْخَائِنُ وَيُخَوَّنُ وَيَتَكَلَّمُ الرُّوَيْبِضَةُ۔ قَالَ وَمَا الرُّوَيْبِضَةُ؟ قَالَ
يَتَكَلَّمُ فِي النَّاسِ مَا لَمْ يَتَكَلَّمْ وَيُنْكِرُ الْحَقَّ تِسْعَةَ اَعْشَارِهِمْ وَيَذْهَبُ
الْاِسْلَامُ۔ فَلَا يُبْقٰى اِلَّا اِسْمُهٗ وَيَذْهَبُ الْقُرْآنُ فَلَا يَبْقٰى اِلَّا رَسْمُهٗ وَتُحَلَّى
الْمَصَاحِفُ بِالذَّهَبِ وَتُسْمَنُ ذُكُوْرُ اُمَّتِيْ وَتَكُوْنُ الْمَشُوْرَةُ لِلْاِمَاءِ
وَيَخْطُبُ عَلَى الْمَنَابِرِ الصِّبْيَانُ وَتَكُوْنُ الْمُخَاطَبَةُ لِلنِّسَاءِ۔ فَعِنْدَ ذٰلِكَ
تُزَخْرَفُ الْمَسَاجِدُ كَمَا تُزَخْرَفُ الْكَنَائِسُ وَالْبِيَعُ۔ وَتُطَوَّلُ الْمَنَائِرُ
وَتُكْثَرُ الصُّفُوْفُ مَعَ قُلُوْبٍ مُتَبَاغِضَةٍ وَاَلْسِنٍ مُخْتَلِفَةٍ وَاَهْوَاءٍ جَمَّةٍ۔
قَالَ سَلْمَانُ وَيَكُوْنُ ذٰلِكَ؟ قَالَ نَعَمْ! وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ۔ عِنْدَ
ذٰلِكَ يَا سَلْمَانُ يَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ فِيْهِمْ اَذَلَّ مِنَ الْاَمَةِ يَذُوْبُ قَلْبُهٗ فِيْ
جَوْفِهٖ كَمَا يَذُوْبُ الْمِلْحُ فِي الْمَاءِ مِمَّا يَرٰى مِنَ الْمُنْكَرِ فَلَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ
يُّغَيِّرَهٗ وَيَكْتَفِي الرِّجَالُ بِالرِّجَالِ وَالنِّسَاءُ بِالنِّسَاءِ وَيُغَارُ عَلَى الْغِلْمَانِ
كَمَا يُغَارُ عَلَى الْجَارِيَةِ الْبِكْرِ۔ فَعِنْدَ ذٰلِكَ يَا سَلْمَانُ يَكُوْنُ اُمَرَاءُ فَسَقَةً
وَوُزَرَآءُ فَجَرَةً وَاُمَنَاءُ خَوَنَةً يُضِيْعُوْنَ الصَّلَوَاتِ وَيَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوَاتِ
فَاِنْ اَدْرَكْتُمُوْهُمْ فَصَلُّوْا صَلَاتَكُمْ لِوَقْتِهَا عِنْدَ ذٰلِكَ يَا سَلْمَانُ يَجِيْءُ
سَبْيٌ مِنَ الْمَشْرِقِ وَسَبْيٌ مِنَ الْمَغْرِبِ جُثَاءُهُمْ جُثَاءُ النَّاسِ وَقُلُوْبُهُمْ
قُلُوْبُ الشَّيَاطِيْنِ لَا يَرْحَمُوْنَ صَغِيْرًا وَلَا يُوَقِّرُوْنَ كَبِيْرًا عِنْدَ ذٰلِكَ يَا

سَلْمَانُ يَحُجُّ النَّاسُ إِلٰى هٰذَا الْبَيْتِ الْحَرَامِ تَحُجُّ مُلُوْكُهُمْ لَهْوًا وَّتَنَزُّهًا وَّاَغْنِيَاءُهُمْ لِلتِّجَارَةِ وَمَسَاكِيْنُهُمْ لِلْمَسْأَلَةِ وَقُرَّاءُهُمْ رِيَاءً وَّسُمْعَةً. قَالَ وَيَكُوْنُ ذٰلِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ. فَعِنْدَ ذٰلِكَ يَا سَلْمَانُ يَفْشُوا الْكِذْبُ وَيَظْهَرُ الْكَوْكَبُ لَهُ الذَّنْبُ وَتُشَارِكُ الْمَرْأَةُ زَوْجَهَا فِي التِّجَارَةِ وَتَتَقَارَبُ الْاَسْوَاقُ. قَالَ وَمَا تَقَارُبُهَا؟ قَالَ: كَسَادُهَا وَقِلَّةُ اَرْبَاحِهَا. عِنْدَ ذٰلِكَ يَا سَلْمَانُ يَبْعَثُ اللّٰهُ رِيْحًا فِيْهَا حَيَّاتٌ صُفْرٌ فَتَلْتَقِطُ رُؤُسَاءَ الْعُلَمَاءِ لَمَّا رَأَوُا الْمُنْكَرَ فَلَمْ يُغَيِّرُوْهُ. قَالَ يَكُوْنُ ذٰلِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: نَعَمْ وَالَّذِيْ بَعَثَ مُحَمَّدًا بِالْحَقِّ. (رواه ابن مردويه والامام السيوطي رحمه الله في الدر المنثور)

(रवाहु इब्ने मरदुवयह वलइमाम अससुयूती रहिमहुल्लाह फिददुर्रिल मनसूर)

यानी आखरी हज में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कअबा शरीफ के दरवाजे का कुण्डा पकड़कर खड़े हो गये और यह खुत्बा फरमाया:

''लोगों! क्या मैं तुम्हें कयामत की अलामत, उसकी निशानियां और शर्ते ना बतलाऊं? इस पर हजरत सलमान फारसी रजि. ने अर्ज किया कि हमारे मां-बाप आप पर कुरबान हों, जरूर बतलाइये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सुनो! नमाजों को बर्बाद करना, ख्वाहिश की तरफ झुकना, मालदारों की इज्जत उनके माल की वजह से करना। यह सुनकर हजरत सलमान ने ताज्जुब से पूछा कि या रसूलुल्लाह। क्या ऐसा होगा?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: हाँ, बखुदा ऐसा ही होकर रहेगा। और सुनो! उस वक्त जकात को डन्ड के बराबर समझा जायेगा और माले गनीमत को अपनी दौलत गिन लिया जायेगा और झूठे आदमियों को सच्चा समझा जायेगा और सच्चों को झूठा कहा जायेगा और खयानत करने वाले अमानतदार मशहूर होंगे और अमानतदार खाइन समझे

जायेंगे और वो लोग जिन्हें बोलने का ढंग भी ना होगा, मौलवी और आलिम और खुत्बा और खतीब हो जायेंगे। हक के दस हिस्सों में से नौ का इनकार होने लगेगा। इस्लाम का सिर्फ नाम रह जायेगा, कुरआन के सिर्फ हुरूफ रह जायेंगे। कुरआन को सोने से मंढ़ा जायेगा, मोटापा मर्दों में बढ़ जायेगा, लौण्डियों से मशवरे होने लगेंगे, मिम्बरों पर कम उम्र के लोग खुत्बे कहेंगे, काम की बात औरतों के हाथ होगी, मस्जिदें खूब बनाव श्रृंगार से खूबसूरत की जायेगी। जैसे गिरजे और खानकाहें, मिनारे बहुत बुलन्द किये जायेंगे, नमाजियों की सफें तो ज्यादा होगी लेकिन दिल व जुबान और ख्यालात बिलकुल अलग अलग होंगे। हजरत सलमान ने फिर ताज्जुब से पूछा कि या रसूलुल्लाह! क्या ऐसा हो जायेगा?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हां, हां! उस अल्लाह की कसम जिसके हाथ मे मुहम्मद सल्ल. की जान है, यही होगा मोमिन तो उनकी निगाहों में लौण्डी से भी ज्यादा जलील होगा और यह कुढ़ता रहेगा, क्योंकि अल्लाह की नाफरमानियां देखता है और उन्हें सही रास्ते पर लाने की कोई ताकत ना होगी। इसलिए दिल में पेच व ताप खा-खाकर ऐसे घुलता जायेगा, जैसे नमक पानी में। मर्द मर्दों से बेहयाई बदकारी करने लगेंगे, औरतें भी आपस ही में लग जायेगी, लड़कों पर ठीक इसी तरह रश्क होने लगेगा, जैसे कुंवारी नौजवान औरतों पर होता है। इस वक्त गुनहगार लोग इमाम बन बैठेंगे, उनके वजीर बदकिरदार बदकार होंगे, अमानतदार ख्यानत करने लगेंगे, नमाजें जाया कर दी जायेंगी, नफ्सानी ख्वाहिशों की पैरवी की जाने लगेगी। मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ, ऐसे वक्त तुम नमाज को उसके वक्त पर पढ़ लिया करो। उस वक्त पूर्व व पश्चिम से लोग आयेंगे, जिनके जिस्म तो इन्सानी होंगे, लेकिन उनके दिल शैतानी होंगे, ना छोटों पर रहम करेंगे, ना बड़ों की इज्जत करेंगे। उस वक्त हज तो होगा, लेकिन बादशाहों का हज घूमने के लिए होगा और मालदारों का हज तिजारती फायदे की खातिर और मिसकिनों का हज सवाल करने और मांगने खाने की खातिर और कारियों का हज रियाकारी और दिखावे के तौर पर। हजरत सलमान से फिर सब्र ना हो सका और कहने लगे या रसूलल्लाह! क्या इसी तरह हो जायेगा?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हाँ इसी तरह होगा, उस अल्लाह की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है। उस वक्त झूठ फैल जायेगा, दमदार सितारा बाहर निकलेगा, औरतें मर्दों के साथ व्यापार में शरीक होंगी। बाजार करीब करीब हो जायेंगे यानी बाजार मन्दा होगा, नफा की कमी होगी, उस वक्त ऐसी आंधियां चलेगी जो जर्द सांप बरसायेगी और वो सांप उस वक्त के सरदारे उलमा को चिमट जायेंगे, क्योंकि उन्होंने बुराईयां

देखी और इनकार ना किया। हजरत सलमान ने कहा, या रसूलल्लाह! क्या यही होगा?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हां यह सब कयामत के करीब वाकेअ होगा, उस अल्लाह की कसम जिसने मुझे हक के साथ नबी बनाकर भेजा है।''

इस्लामी भाईयों!

कयामत कायम होने से पहले दुनिया के जो हालात होने वाले हैं, इस खुत्बा मुबारक में उनका पूरा पूरा नक्शा मौजूद है, जिस कद्र निशानियां आपने बताई हैं, उनमें से कोई ऐसी है जो आजकल जाहिर ना हो रही हो। एक एक लफ्ज जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, आज बिलकुल सही साबित हो रहा है। मस्जिदों ही को देख लो, अकसर जगह उनको किस कद्र सजाया जाता है, उतना कि ईसाईयों के गिरजा और यहूदियों के कलीसा भी इतने सजे हुए नजर नहीं आते। उन मस्जिदों में अगर जाकर देखो तो कई तरह की बिदआत से खुल्लम-खुल्ला बाजार गरम नजर आयेगा। कितनी मस्जिदें तो ऐसी हैं जिनमें कब्रिस्तान भी बना लिया गया है। हालांकि कब्रिस्तान और मस्जिद का कोई मेल नहीं है। बुरे और जालिम बदकार नशाबाज लोगों की ज्यादती है जिनके जुल्म के डर से लोग उनकी खूब खूब खुशामद करते हैं और पीठ पीछे उनकी बदमाशियों का जिक्र करके उनको गालियां देते हैं।

अलगर्ज कयामत से पहले की जिस कद्र निशानियां बयान की गयी हैं वो सब मौजूद हैं। सिर्फ बड़ी बड़ी निशानियां जैसे इमाम महदी का आना, दज्जाल का आना, हजरत ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना, ऐसी निशानियां बाकी रह गयी हैं, जो अपने वक्त पर आ जाएंगी।

बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

अल्लाह पाक से दुआ करो कि वो दुनिया से हर मुसलमान को तौहीद व सुन्नत और नेक कामों पर खात्मा नसीब फरमाये। हदीस शरीफ में भी आया है ''मन मा-ता फ-कद कामत कियामतुहू'' यानी जो मरा उसकी कयामत उसी दिन कायम हो गयी। जिसका मतलब यह है कि वो कयामत की मंजिल में दाखिल हो गया। अब आगे उसके लिए कयामत ही कयामत है। इसलिए हम को चाहिए कि कयामत को दूर ना जाने, जबकि मौत का फरिश्ता हर वक्त सर पर खड़ा है। अल्लाह के हुक्म का इन्तेजार कर रहा है कि जिस दिन भी अल्लाह का हुक्म हो

गया, वो फरिश्ता कुछ भी ना देखेगा कि हमारे बच्चे यतीम हो रहे हैं या हमारे मां-बाप हम से जुदा हो रहे हैं या हमारे दोस्त अहबाब बिछड़ रहे हैं। फरिश्ता उस दिन सारी चीजों का ख्याल किये बगैर हमारी रूह कब्ज करके जिन्दगी का चिराग गुल कर देगा।

पस ऐ दोस्तों!

मौत को याद रखो, अल्लाह से हमेशा डरो, अल्लाह तआला के फर्जो की अदायगी करो और बन्दों के हकों को अदा करो, बुरे कामों से हमेशा बचो, खास तौर पर शिर्क व बिदअत के कामों से हर वक्त बचते रहो। अल्लाह पाक हर मुसलमान को नेक जिन्दगी और नेक खात्मा और मरने के बाद जन्नत का दाखिला नसीब फरमाये। आमीन! सुम्मा आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِىْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِىْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 20

कुरआन मजीद की खूबियों के बारे में कुरआनी आयात और नबी करीम सल्ल. के खुत्बात

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۭ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾ (الانعام ٦)

(सूरह अल अनआम: 156-157, पारा 7)

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِنَّ خَيْرَ الْاُمُوْرِ كِتَابُ اللّٰهِ وَخَيْرَ الْهُدٰى هَدْىُ مُحَمَّدٍ ﷺ وَشَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ۔ [مسلم۔ الجمعة، نسائی۔ العيدين]

(सही मुस्लिम अल-जुमुआ, निसाई अलईदैन)

तमाम हम्दो सना उस पाक परवरदिगार के लिए लायक है जिसने दुनिया-ए-इन्सानियत के लिए हजारों नबी व रसूल दुनिया में पैदा किये और उनमें से कुछ को कुछ पर खूबियां दी। वो पाक परवरदिगार जिसने हजरत मूसा अलैहिस्सलाम पर आसमानी किताब तौरात उतारी और हजरत ईसा अलैहिस्सलाम पर इन्जील उतारी और हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम को जबूर अता फरमायी। वो अल्लाह पाक तबारक व तआला जिसने अपने आखिरी महबूब रसूल हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखिरी रसूल बनाकर रहमतुल लिल आलमीन का लकब अता फरमाया और आपके ऊपर ऐसा कलाम पाक नाजिल किया, जिसे इस्लाम की एक जिन्दा निशानी कहा जा सकता है, जिसका नाम ''कुरआन मजीद'' फुरकान हमीद है। जो सरासर शिफा है, जो खुश कलाम व मौके के मुताबिक बेमिसाल किताब है, जिसने दुश्मनों से भी अपनी बुलन्दी का लोहा मनवाया है और जो सरापा नूर है, हिदायत है।

बिरादराने इस्लाम!

आज का खुत्बा कुरआन मजीद की खूबियों के बारे में है। जिसके बारे में इस कद्र आयात व अहादीस आई हैं जिनको जमा करने और उनका तर्जुमा व तफसीर करने के लिए बड़े भारी दफ्तर की जरूरत है, खुत्बे में जो आयते करीमा आपने सुनी है, उसका आसान मतलब पेश कर रहा हूँ। इरशादे बारी है कि यह कुरआने मजीद नामी किताब जो हमने आसमान से उतारी है, यह बड़ी बरकत वाली किताब है, पस तुम इस पर चलो, ताकि तुम पर अल्लाह की तरफ से हर किस्म के रहमोकरम की बारिश हो। और ऐ मक्का वालों! यह किताब तुम पर इसलिए भी उतारी गयी है कि तुम यह ना कह सको , हमसे पहले सिर्फ दो जमाअतों यहूद व ईसाई पर किताबें उतारी गयी थी। जिनके पढ़ने से हम बेखबर थे या तुम यूं कहने लगोगे कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उन दोनों जमाअतों से ज्यादा हिदायत वाले हो जाते। अब अल्लाह ने तुम्हारे इस ख्याल की इस्लाह के लिए तुम पर कुरआन शरीफ उतार दिया है ताकि तुम उसके पढ़ने समझने से बेखबरी का बहाना ना कर सको, क्योंकि यह पाक कलाम तुम्हारी खास मादरी ज़ुबान अरबी में उतारा है। पस अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से खुली हुई रोशन दलील आ गयी है जो सरासर हिदायत और रहमत से भरपूर किताब हैं अब भी इससे बड़ा जालिम बेवकूफ कौन होगा जो अल्लाह की निशानियों को झुटलाये और उससे मुंह मोड़े। वो वक्त करीब है कि हम अपनी

आयतों से मुंह मोड़ने वालों को उसकी गुस्ताखी की सजा में बहुत बड़े अजाब में डाल दें।

इन आयतों में गौर करने वालों के लिए मालूम होगा कि अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद की खूबियों के बारे में यह किस कद्र जबरदस्त बयान दिया है। कुरआने मजीद को सरासर हिदायत और रहमत करार दिया और लफ्ज ''बय्यि-नतुन'' में खुली हुई दलील से इसे ताबीर करना बहुत ही जामेअ बयान है। कुरआने मजीद ''बय्यि-नतुन'' इसलिए है कि इसके मतलब ऐसे दलाइल के साथ हैं जिनमें किसी भी अकलमन्द इन्सान को इनकार की गुंजाइश नहीं है। क्योंकि वो दलाइल ऐसे हैं जो कुदरती नजारों से ताल्लुक रखते हैं या फिर अलग-अलग सच्चे गुजरे हुए किस्से हैं जिनकी सच्चाई पहली आसमानी किताबों से साबित है। इस लिहाज से कुरआने मजीद ''बय्यि-नतुन'' जैसी खुली दलील है। और हिदायत इसलिए है कि कुरआने मजीद ने इन्सानी तरक्की व उरूज के बेहतर से बेहतर रास्ते इसके सामने रखे हैं जिन पर चलकर वो दीन और दुनिया, दोनों में कामयाबी की आखरी मंजिल तक पहुंच सकता है। और कुरआने मजीद सरासर रहमत है, क्योंकि इसे अल्लाह रहमान व रहीम ने उतारा है। यह कलाम उस नबी पर उतरा है जिसका लकब ही रहमतुल लिल आलमीन है। लिहाजा कुरआनी तालीमात में रहम व करम को खास मुकाम दिया गया है। पस कुरआने मजीद खुद सरापा रहमत है, जैसाकि अल्लाह तआला ने फरमाया है:

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (بنی اسرآءیل ١٧)

(सूरह बनी इस्राईल: 82, पारा 15)

हमने कुरआने मजीद को ईमान वालों के लिए शिफा और रहमत बनाकर उतारा है।

यह कुरआन मजीद वो कलाम है जिसके बारे में और फरमाया:

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

(الحشر ٥٩)

(सूरह अलहश्र: 21, पारा 28)

''अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता कि वो पहाड़ भी अल्लाह के डर से पस्त होकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता। हम इन मिसालों

को लोगों के सामने इसलिए बयान करते हैं ताकि वो गौरो फ़िक्र कर सकें।''

और यह कुरआने मजीद वो जबरदस्त किताब है जिसकी हिफाजत का वादा खुद उसके उतारने वाले अल्लाह पाक ने फरमाया है। जैसाकि इरशाद है:

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُونَ ۝ (الحجر ١٥)

(सूरह अलहिज्र: आयत 9, पारा 14)

''बेशक इस कलाम को हमने उतारा है और हम ही इसकी हिफाजत करने वाले हैं।''

इस वादे का नतीजा यह है कि आज चौदह सौ साल गुजरने को हैं, मगर कुरआने मजीद का एक हुरूफ भी रद्दो बदल नहीं हो सका है। खुत्बे में आयत के बाद जो फरमाने नबवी सुनाया गया है, उसका तर्जुमा यह है कि आपने फरमाया, बेशक तमाम चीजों में बेहतरीन चीज अल्लाह की किताब कुरआने मजीद है, जिससे बेहतर कोई कलाम नहीं और बेहतरीन चाल चलन वो है जो अल्लाह के सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पाकीजा जिन्दगी में पेश फरमाया है और सबसे बुरा काम वो है जो दीन के नाम पर अपनी तबीयत से निकाला जाये फिर उसको इस्लामी काम कहा जाये। ऐसी हर बिदअत गुमराही है। (और गुमराही का नतीजा जहन्नम की आग है।)

मआनी व मतलब के लिहाज से कुरआने मजीद वो बेशकीमती कलाम है जिसका आज तक कोई सख्त से सख्त दुश्मन भी मुकाबला नहीं कर सका, ना उसमें कोई गलती निकाल सका है, ना कोई उस जैसा कलाम पेश कर सका है, खुद मक्का वाले जिनको अपनी ज़बान पर बहुत घमण्ड था, वो भी इसका मुकाबला नहीं कर सके तो और किसी की हस्ती व हकीकत क्या हो सकती है। अल्लाह पाक ने इस सिलसिले में बड़े दावे के साथ दुश्मनी करने वालों को ललकारा है, जैसाकि इरशाद है:

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝ فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِينَ ۝

(सूरह बकराह: 23, पारा 1) (البقرة ٢)

"हमने जो कलाम अपने बन्दे (हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उतारा है, अगर तुमको इसकी सच्चाई में शक है तो तुम भी इस जैसी एक सूरह बना लो और मुकाबले पर पेश करो। आखिर तुम भी इन्सान हो। इजाजत के दावेदार हो, फिर क्यों इस चैलेंज को कबूल नहीं करते हो और तुम को इख्तेयार है कि इस काम के लिए अल्लाह पाक के सिवा अपने और दूसरे मददगारों को भी बुला लो। पस अगर तुमने ऐसा ना किया और हम दावे से कह सकते हैं कि तुम हरगिज ऐसा कामयाब मुकाबला ना कर सकोगे, इसकी सच्चाई मानकर दोजख की भड़कती हुई आग से बचो, जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं, जो काफिरों के लिए तैयार की गयी है।

हजरात!

इस्लाम की तारीख पर चौदह सौ बरस गुजर चुके हैं, जिसके अन्दर बड़े बड़े इस्लाम के दुश्मन हर कौम और मुल्क और हर मजहब में पैदा होते रहे हैं और आज भी मौजूद हैं। जिन्होंने उल्टे सीधे इस्लाम पर बहुत ऐतराजात किये हैं। मगर कुरआने मजीद के इसी चैलेन्ज का जवाब किसी से ना बन पड़ा और ना ही कयामत तक बन सकता है। यह वो मुबारक किताब है कि इसकी हिफाजत के लिए ना छापेखानों की जरूरत है, ना कागज की, ना लिखने वालों की। अल्लाह पाक ने इसकी हिफाजत के लिए मोमिन बन्दों के दिल की तख्तियों को खास फरमाया है। जिन पर यह सारा कलाम नक्श हो जाता है, जो इसके तीस पारों में बगैर देखे हुए अव्वल से आखिर तक पढ़ सकते हैं। यह वो चमत्कार है जो खास कुरआने मजीद को दिया गया है। दुनिया के मजहबों में जिसकी कोई बदल पेश नहीं कर सकता। इसलिए हदीस शरीफ में आया है कि जो लोग अपने बच्चों को कुरआने मजीद हिफ्ज या देखकर पढ़ाते हैं, कयामत के दिन उनको हीरे जवाहरात का ताज उनके सिरों पर रखा जायेगा। वो महशर में एक ऐसी खास हालत में होंगे कि बड़े बड़े लोग रश्क करेंगे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को यह खुशनसीबी अता करे।

प्यारे दोस्तों!

आज के नाजुक दौर में कुरआने मजीद की तालीम ज्यादा से ज्यादा आम करने की जरूरत है। जगह जगह जहां भी दो-चार मुसलमान आबाद हैं, उनके लिए कुरआन मजीद की तालीम का इंतेजाम निहायत जरूरी है। ताकि उनके बच्चे

शुरू ही से इस बा-बरकत किताब को पढ़ सकें, गांवों खेड़ों में मस्जिदों के इमाम हजरात से यह खिदमत ली जा सकती है जो सिर्फ अल्लाह की खुशी के लिए चन्द ही रूपयों पर गुजारा कर के अपना पूरा वक्त इस खिदमत के लिए दे सकते हैं और दे रहे हैं। कुरआने मजीद का हिफ्ज कर लेना और भी ज्यादा बरकतों का जरीया है। इसलिए हिफ्ज वाले बच्चों का ज्यादा ध्यान रखना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा हाफिजे कुरआन पैदा होते रहें। अल्लाह पाक मुसलमानों की यह खिदमत कबूल करे। अब हम आपको रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबान मुबारक से निकले हुए खुत्बात आलिया के मुताल्लिक फजाइले कुरआन मजीद सुनाते हैं। गौर से सुनिये और अमल करने की कोशिश कीजिए।

عَنِ الْحَارِثِ الْاَعْوَرِ قَالَ مَرَرْتُ فِي الْمَسْجِدِ فَاِذَا النَّاسُ يَخُوْضُوْنَ فِي الْاَحَادِيْثِ فَدَخَلْتُ عَلٰى عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ فَاَخْبَرْتُهٗ فَقَالَ اَوَ قَدْ فَعَلُوْهَا؟ قُلْتُ: نَعَمْ۔ قَالَ: اَمَا اِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ اَلَا اِنَّهَا سَتَكُوْنُ فِتْنَةٌ۔ قُلْتُ مَا الْمَخْرَجُ مِنْهَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: كِتَابُ اللّٰهِ فِيْهِ نَبَأُ مَا قَبْلَكُمْ وَخَبَرُ مَا بَعْدَكُمْ وَحُكْمُ مَا بَيْنَكُمْ؛ هُوَ الْفَصْلُ لَيْسَ بِالْهَزْلِ مَنْ تَرَكَهٗ مِنْ جَبَّارٍ قَصَمَهُ اللّٰهُ وَمَنِ ابْتَغَى الْهُدٰى فِيْ غَيْرِهٖ اَضَلَّهُ اللّٰهُ وَهُوَ حَبْلُ اللّٰهِ الْمَتِيْنُ وَهُوَ الذِّكْرُ الْحَكِيْمُ وَهُوَ الصِّرَاطُ الْمُسْتَقِيْمُ وَهُوَ الَّذِيْ لَا يَزِيْغُ بِهِ الْاَهْوَاءُ وَلَا تَلْتَبِسُ بِهِ الْاَلْسِنَةُ وَلَا يَشْبَعُ مِنْهُ الْعُلَمَاءُ وَلَا يُخْلَقُ عَنْ كَثْرَةِ الرَّدِّ وَلَا يَنْقَضِيْ عَجَائِبُهٗ هُوَ الَّذِيْ لَمْ تَنْتَهِ الْجِنُّ اِذَا سَمِعَتْهُ حَتّٰى قَالُوْا (اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا يَّهْدِيْ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ) مَنْ قَالَ بِهٖ صَدَقَ وَمَنْ عَمِلَ بِهٖ اُجِرَ وَمَنْ حَكَمَ بِهٖ عَدَلَ وَمَنْ دَعَا اِلَيْهِ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ۔ (رواه الترمذی)

(रवाहु तिर्मिजी)

"हारिस अअ़वर नामी एक बुजुर्ग कहते हैं कि मैं एक रोज अचानक मस्जिद में दाखिल हुआ। मैंने देखा कि कुछ लोग फिजूल बेकार बातों में बहस कर रहे हैं। मैंने हजरत अली रजि. के पास जाकर यह माजरा बयान किया। उन्होंने ताज्जुब से पूछा कि क्या वाकई लोग ऐसी हरकत कर रहे हैं?मैंने कहा, हां! बात बिलकुल सही है। उन्होंने कहा कि खबरदार मैंने एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना था, आप फरमा रहे थे कि लोगों! खबरदार हो जाओ, जल्दी ही फितने (झगड़े) शुरू हो जायेंगे। मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल उन फितनों से बचने की सूरत क्या है? आपने फरमाया, उनसे बचने की सूरत किताबुल्लाह कुरआने मजीद पर अमल करना है। (कुरआने मजीद की तालीम है कि जहां तक हो सके सब्र से काम लो और दुश्मनों के साथ भी नेकी करो, जैसाकि आयते करीमा "(इद-फअ़ बिल्लीत हिया अह-सनु फ-इजल्लजी बय-न-क व-बयनहू अदावतुन क-अन्नहू वलिय्युन हमीमुन) सूरह फुस्सिलत: 34, पारा 24) में साफ मजकूर है। यानी "दुश्मन से बचाव अहसान और सुलूक के साथ करो। उससे तुम्हारा सख्त दुश्मन भी तुम्हारा गहरा दोस्त बन जायेगा।) अल्लाह की किताब वो है, जिसमें तुम से पहले की खबरें और तुम्हारे बाद की खबरें सब मौजूद हैं और यह तुम्हारे आपस के झगड़ों के फैसले करने वाली किताब है। कोई झूठा मजाक नहीं है। जिसने इस किताब को फख्र व घमण्ड से मामूली जानकर छोड़ दिया, अल्लाह पाक उसे खुद तोड़ कर रख देगा। और जो कोई हिदायत की राह इसके सिवा और किसी किताब में ढूंढेगा, अल्लाह पाक उसे गुमराह कर देगा। यही अल्लाह की मजबूत रस्सी है। यही अकल व हिकमत से भरपूर अल्लाह का जिक्र है। यही किताब सिराते मुस्तकिम पर चलाती है। यह वो किताब हे कि अपने नफ्सों के पुजारी इसे अपनी मनमानी बातों की तरफ नहीं मोड़ सकते और जुबानें कितनी भी अलग हों, मगर इसके पढ़ने में उनसे कोई भी मकाम खलत-मलत नहीं हो सकता और उलमाये इस्लाम इसके पढ़ने और तिलावत से सैराब नहीं हो सकते यानी कभी भी नहीं उकताएंगे। और यह वो किताब है जो ज्यादातर पढ़ी जाने के बावजूद पुरानी नहीं होती, बल्कि जब भी पढ़ो एक नया जौक पैदा होता है। और इसके अन्दर बयान किये हुए अजायबात (अनोखी चीजों) की कोई हद नहीं है। यह वो किताब है जिसे सुनने के बाद जिन्नों ने फौरन ही पुकारा कि आज हमने एक किताब सुनी है, जिसने उसके साथ कलाम किया, उसने सच बोला और जिसने उस पर अमल किया वो सवाब का हकदार हुआ और जिसने उसके साथ फैसला किया, उसने

बिलकुल इंसाफ किया और जिसने उस पर ईमान लाने की दावत कबूल की, उसने सीधे सच्चे रास्ते को पा लिया।

कुरआने मजीद के फिदाइयों!

आज खुत्बे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरआने मजीद से मुताल्लिक बहुत सी बातें बता दी हैं और सही मायनों में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरआन पाक का तआरुफ कराया है।

खुत्बा पाक बिलकुल सही और हकीकत पर मब्नी है। जिसके हर हर लफ्ज की शरह के लिए काफी वक्त की जरूरत है। मगर अफसोस यह है कि कुरआने मजीद को समझने की हद तक आम तौर पर मुसलमानों ने इस पाक कलाम को मामूली समझ कर इसमें गौर व खोज करना छोड़ दिया। मुसलमान अगर कुरआन समझ लेते तो कभी आज की बिदआत व गलत रस्मों में गिरफ्तार ना होते, कभी कब्रों पर जाकर सर ना झुकाते, और ना कभी शिर्क करते। मगर यह किस कद्र ताज्जुब की बात है कि जो मुसलमान नमाजों में पांच वक्त ''इय्या-क नाबुदु व-इय्या-क नसतईनु'' की रट लगाता है, वही आम तौर पर कब्रों पर जाकर वहां भी उन दफनशुदा बुजुर्गो की इबादत करता है। उनको हाजिर व नाजिर जानकर उनसे दुआ करता है और अपनी जरूरतें उनके सामने रखता है। यह इसी वजह से है कि मुसलमान ने कुरआने मजीद को समझना उसमें गौर करना, उसकी रोशनी में हिदायत की राह ढूंढना बिलकुल छोड़ दिया हैं ''इल्ला मन रहिमहुल्लाह'' मगर जिस पर अल्लाह रहम करे। एक और पाकीजा इरशाद सुनिये और गौर फरमाइये। कि किस कद्र खूबियां अल्लाह पाक ने कुरआने मजीद को अता फरमायी हैं और क्यों ना हो जबकि यह उसका पाकीजा कलाम है। बादशाहों की बात भी बातों की बादशाह हुआ करती है।

عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى مَنْ شَغَلَهُ الْقُرْآنُ عَنْ ذِكْرِیْ وَمَسْئَلَتِیْ اَعْطَيْتُهٗ اَفْضَلَ مَا اُعْطِیَ السَّائِلِيْنَ وَفَضْلُ كَلَامِ اللّٰهِ عَلٰى سَائِرِ الْكَلَامِ كَفَضْلِ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ۔

(रवाहु तिर्मिजी) (رواہ الترمذی)

यानी "अबू सईद खुदरी रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह पाक का फरमान है, जिस को मेरी याद करने से मेरे से दुआ मांगने से, कुरआन मजीद की तिलावत और उसके अन्दर गौरो खोज में लगाए रखा, मैं उसे दुआ करने वालों से भी ज्यादा देता हूँ और सारे कलामों पर अल्लाह के कलाम की बड़ाई ऐसी ही है, जैसी खुद अल्लाह पाक को अपनी सारी मख्लूक पर बड़ाई और बरतरी हासिल है।"

आखिर में ध्यान से एक इरशादे नबवी और सुन लीजिए-

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِنَّ اللهَ يَرْفَعُ بِهٰذَا الْكِتَابِ أَقْوَامًا وَيَضَعُ بِهٖ آخَرِيْنَ۔ (مسلم)

(मुस्लिम)

"हजरत उमर बिन खत्ताब रजि. रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बेशक अल्लाह पाक बहुत सी कौमों को इस कुरआने मजीद पर अमल करने की बरकत से इज्जत के आसमान पर चढ़ा देगा और बहुत सी कौमों को इस कुरआन पाक पर अमल करना छोड़ देने से जिल्लत के गढ्ढे में डाल देगा।"

मुसलमानों!

आज हमारी जिल्लत की वजह यही है कि हकीकी मायनों में हमने कुरआने मजीद पर अमल करना छोड़ दिया है।

आओ अल्लाह से वादा करें कि या अल्लाह तेरा कलाम और तेरे रसूल का कलाम सच्चा है। हम जरूर-जरूर उन पर अमल करेंगे। परवरदिगार तू हमको नेक कामों की तौफीक अता फरमा और बुराईयों से बचा। आमीन!

أَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ لِيْ وَلَكُمْ أَجْمَعِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

नोटः खुत्बा शुरू करते वक्त पहले अरबी खुत्बा मसनूना जरूर पढ़ा जाये फिर बीच में जरा बैठकर फिर खड़े होकर दूसरा अरबी खुत्बा पढ़ा जाये। दोनों खुत्बे शुरू में मौजूद हैं। (लेखक)

खुत्बा नम्बर 21

हदीस पाक की खूबियों के बारे में क़ुरआन व हदीस के पाकीज़ा खुत्बात

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ (الجمعة ٦٢)

وَعَنْ اَبِيْ هَارُوْنَ الْعَبْدِيِّ قَالَ كُنَّا اِذَا اَتَيْنَا اَبَا سَعِيْدٍ قَالَ مَرْحَبًا بِوَصِيَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قُلْنَا وَمَا وَصِيَّةُ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِنَّهُ سَيَاْتِيْ مِنْ بَعْدِيْ قَوْمٌ يَسْئَلُوْنَكُمُ الْحَدِيْثَ عَنِّيْ فَاِذَا جَاؤُكُمْ فَالْطِفُوْا بِهِمْ وَحَدِّثُوْهُمْ وَفِيْ رِوَايَةٍ سَيَاْتِيْكُمْ شُبَّانٌ مِّنْ اَقْطَارِ الْاَرْضِ يَطْلُبُوْنَ الْحَدِيْثَ فَاِذَا جَاؤُكُمْ فَاسْتَوْصُوْا بِهِمْ خَيْرًا وَفِيْ رِوَايَةٍ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ كَانَ اِذَا رَأَى الشَّابَّ قَالَ مَرْحَبًا بِوَصِيَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَنْ نُوَسِّعَ لَكُمْ وَنُفَهِّمَكُمُ الْحَدِيْثَ فَاِنَّكُمْ خُلُوْفُنَا وَاَهْلُ الْحَدِيْثِ بَعْدَنَا۔ (شرف اصحاب الحديث)

बिरादराने इस्लाम!

आज का खुत्बा हदीस की खूबियों के उनवान पर है। हदीस रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म आपके प्यारे खुत्बात आपकी बेहतरीन हिदायत का नाम है जो आपकी ज़ुबान मुबारक से अदा हुए या वो अमली काम जो आपसे साबित हैं या आपके सामने का कोई अच्छा काम जो किसी सहाबी ने किया और उस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐतराज नहीं फरमाया। वो भी हदीस ही में दाखिल है। हकीकत में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अमली जिन्दगी का नाम आम बोलचाल में सुन्नत करार पाया है, जिसे इस्लाम के आलिमों ने हदीस से याद किया है। और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अमली जिन्दगी कुरआन का खुलासा है। इस तरह से हदीस व कुरआन का इतना गहरा ताल्लुक है, जितना ताल्लुक सर और धड़ का है या जितना ताल्लुक जिस्म और रूह का है। आजकल कुछ नये किस्म के लोग हदीस का इनकार करते हैं जो बड़ी ही सख्त गलती है। कुरआन से हदीस को अलग कर दिया जाये तो कुरआन पाक की कोई हैसियत बाकी नहीं रहती है। इसलिए हदीस से इनकार करना कुरआन मजीद ही के इनकार करने के बराबर है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने इमामों, पीरों के ऐसे चाहने वाले हैं कि वो उनकी बातों और उनके फतावों के सामने हदीसे नबवी का साफ इनकार कर देते हैं। यह लोग भी खतरनाक गलती में फंसे हुए हैं। इमामों, बुजुर्गों ने हरगिज ऐसी तालीम नहीं दी, बल्कि उन बुजुर्गों के दिलों में कुरआन व हदीस का बड़ा एहतराम था। हजरत इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह का साफ फरमान है, जिसे हजरत शाह वली अलैहि उल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने नकल फरमाया है कि इमाम साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने फरमाया कि मेरे किसी फतवे को हदीस के खिलाफ देखो तो हदीस पर अमल करना और मेरे फतवे को छोड़ देना, वो सही हदीस ही मेरा मजहब है। दूसरे इमामों और बुजुर्गों ने भी खुसूसियत से यही हिदायतें फरमायी हैं। अल्लाह पाक उन सारे इमामों और बुजुर्गों को जन्नतुल फिरदौस अता फरमाये। आमीन!

मुहतरम बुजुर्गो और दोस्तों!

खुत्बे के शुरू में जो आयते कुरआनी आपने सुनी है, वो सूरह जुमआ की आयत है। अल्लाह पाक ने इससे पहली आयत में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीजा तालीम व तरबियत का जिक्र फरमाया है। साथ ही खबर दी है जो इस आयत में मजकूर है। जिसका तर्जुमा यह है कि ''अभी तालीमे मुहम्मदी

की हिफाजत के लिए दूसरे लोग और पैदा होने वाले हैं जो अभी (कुरआन उतारने के वक्त में) मौजूद नहीं हैं। अल्लाह बड़ा ही गालिब और हिकमत वाला है। यह (नेअमतुल इस्लाम) अल्लाह का फजल है। वो जिसे चाहता है, यह तोफीक देता है, अल्लाह बड़ा ही फजलो करम वाला है।

कुरआन मजीद की इस खबर का ताल्लुक उन उलमाये हदीस और बड़े-बड़े आलिमों से है, जिन्होंने बाद के जमानों में अहादीसे नबवी की जमा व हिफाजत का जिम्मा उठाया था और इस सिलसिले में वो अमली कारनामे अंजाम दिये, जिन पर आज बहुत से गैर मुस्लिम जानकार भी उनको सलाम करते हैं। हदीसों के आलिमों के सरदार हजरत इमाम बुखारी रहमतुल्लाह अलैहि हैं, जिनको अमीरुल मुहद्दिसीन का लकब दिया गया है। अल्लाह पाक ने इस आयत मजकूरा का मिसदाक बनाकर उन बुजुर्गों को पैदा फरमाया था। हजरत सलमान फारसी रजि. के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहले से खबर थी कि उनके मुल्क फारस से ऐसे-ऐसे बड़े आलिम पैदा होंगे कि अगर इस्लामी इल्म सात सितारों की दूरी पर होंगे तो वो लोग उनको वहां से भी ढूंढ निकालेंगे।

لَوْ كَانَ الدِّيْنُ بِالثُّرَيَّا رِجَالٌ مِّنْ آلِ فَارِسٍ۔ اَوْ كَمَا قَالَ ﷺ۔

(بخاری، مسلم بالفاظ مختلفة)

(बुखारी, मुस्लिम, बिअलफाज मुख्तलिफह)

हदीस के ज्यादातर आलिम फारसी (ईरान) नस्ल ही हुए हैं और सही मायनों में यही लोग इस खबर के हकदार हैं। हजरत मौलाना हाली मरहूम ने इन ही लोगों के बारे में कहा है:

गिरोह एक जूया था इल्मे नबी का, लगाया पता जिसने हर मुफतरी का
ना छोड़ा कोई रखना किज्बे खफी का, किया काफिया तंग हर मुद्दई का

तिलिस्म वरअ हर मुकद्दस का तोड़ा
ना मुल्ला को छोड़ा, ना सूफी को छोड़ा,

हजरात!

खुत्बे में जो फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपने सुना है, उसका मुख्तसर तर्जुमा अर्ज करता हूँ ताकि आप समझ सकें कि हदीस पढ़ने पढ़ाने वालों का रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नजरों में क्या मुकाम

है। जनाब अबू हारून अबरी जो एक मशहूर ताबई हैं, कहते हैं कि जब हम हजरत अबू सईद खुदरी रजि. के पास आते तो आप खुश होकर मरहबा फरमाते और यह खुशखबरी सुनाते कि तुम्हारे लिए रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वसीयत फरमायी है, ''हमने कहा कि वो वसीयत क्या है?बतलाया कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मेरे बाद मेरी हदीसों के शौकीन उम्मती तुम्हारे पास मेरी हदीसें हासिल करने के लिए आयेंगे, जब इस किस्म के लोग आयें तो तुम उनके साथ निहायत मेहरबानी से पेश आना और उनको शौक से मेरी हदीसें बतलाना, सुनाना, हर मुमकिन तौर से उनकी दिलजोई करना। बाज रिवायात की बिना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरे नौजवान उम्मती जमीन के दूर-दूर के किनारों से तुम्हारे पास हदीस हासिल करने के लिए आयेंगे। जब वो आयेंगे तो उनकी हर तरह मदद करना। चूनांचे जब भी हजरत अबू सईद खुदरी रजि. हदीस के नौजवान तलबा को देखते तो बे-साख्ता फरमाते कि ''ऐ हदीस के चाहने वाले नौजवानों! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीयत के मुताबिक मैं तुमको मरहबा कहता हूँ। आप सल्ल. ने हमसे जोर देकर फरमाया कि हम तुमको खुले दिल के साथ अपनी मजलिसों में जगह दें। तुमको इल्मे हदीस सिखलायें, तुम लोग हमारे जांनशीन बनने वाले हो और हदीस हमारे बाद तुम ही लोग हो।''

बिरादराने इस्लाम!

आप इस खुत्बाते नबवी से हदीस पढ़ने वालों का दर्जा मालूम कर सकते हैं कि खिदमत के लिए खुद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा किराम को वसीयत फरमायी और सहाबा किराम ने हदीस पढ़ने-पढ़ाने वालों को अपना खलीफा करार दिया है। एक मुसलमान के लिए जो इल्मे हदीस से बेहद मुहब्बत रखता हो, यह बहुत बड़ी इज्जत है।

दूसरी रिवायत में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

مَنْ حَفِظَ عَلٰى اُمَّتِىْ اَرْبَعِيْنَ حَدِيْثًا فِى السُّنَّةِ كُنْتُ لَهٗ شَفِيْعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔ (شرف اصحاب الحديث)

(शरफु असहाबिल हदीस)

''जो शख्स मेरी उम्मत को सुनाने, पढ़ाने के लिए कम से कम चालीस हदीसें मेरी सुन्नत से याद कर ले तो मैं कयामत के दिन उसकी शिफारिश

करूंगा।"

दूसरी रिवायत में यह अल्फाज हैं:

مَنْ حَفِظَ عَلٰی اُمَّتِیْ اَرْبَعِیْنَ حَدِیْثًا مِنْ اَمْرِ دِیْنِہِمْ بَعَثَہُ اللّٰہُ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ۔ (شرف اصحاب الحدیث)

"जिसने मेरी उम्मत में से ऐसी चालीस हदीसें याद कर ली जो उनके दीन इस्लाम के बारे में हों तो कयामत के दिन उनको अल्लाह पाक मुफ्ती और आलिम बनाकर उठायेगा।"

और फरमाया:

نَضَّرَ اللّٰہُ عَبْدًا سَمِعَ مَقَالَتِیْ فَحَفِظَھَا وَوَعَاھَا وَاَدَّاھَا۔ (ابن ماجہ)

अल्लाह पाक उस बन्दे के चेहरे को हरा-भरा रखे जिसने मेरी हदीस को सुनकर हिफ्ज कर लिया, फिर उसे दूसरों तक पहुंचाया और उस पर खुद भी अमल किया।"

प्यारे भाईयों।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह वो मुबारक दुआ है जिसका तजुर्बा उम्मते इस्लाम ने पूरे चौदह सौ बरसों से किया है। जिसने भी हदीस की कद्र की और खिदमत पर अपने जान व माल और वक्त को खर्च किया है, अल्लाह पाक ने उसे दीन व दुनिया में बहुत कुछ दिया है। बुजुर्गाने उम्मत का तजुर्बा है कि हदीस पढ़ने-पढ़ाने, लिखने-लिखाने वालों की उम्रें लम्बी होती हैं। वो आखिर वक्त तक तन्दुरुस्त और होश में रहते हैं। यह महज रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीजा दुआओं का फायदा है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को हदीस से मुहब्बत अता करे। हदीस वालों से मुहब्बत बख्शे और कुरआन व हदीस को हमारा दस्तूरे अमल बनाये और इस पर अमल करने की तौफीक अता फरमाये।

और सुनिये मशहूर सहाबी खादिमे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत अनस बिन मालिक रजि. रिवायत करते हैं।

إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ يَجِيءُ أَصْحَابُ الْحَدِيْثِ وَمَعَهُمُ الْمَحَابِرُ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ لَهُمْ أَنْتُمْ أَصْحَابُ الْحَدِيْثِ قَالَ مَا كُنْتُمْ تَكْتُبُوْنَ الصَّلَاةَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ اِنْطَلِقُوْا اِلَى الْجَنَّةِ۔ (القول البديع للسخاوى)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''कयामत के दिन हदीस लिखने वाले इस हालत में आयेंगे कि उनके साथ दवातें भी होंगी। अल्लाह पाक उनसे फरमायेगा कि तुम लोग हमेशा हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूदें लिखते रहे, इसलिए आज उस दरूद की बरकत से तुम जन्नत में दाखिल हो जाओ।''

अल्लाह पाक हर मुसलमान हर हदीस वाले को यह दर्जा अता करे और हदीस की मुहब्बत को हमारे लिए दोनों जहानों में नेक बख्ती का जरीया बनाये। आमीन!

आयते शरीफा ''व-अम्मा बिनिअमति रब्बि-क फ-हद-दिस'' के तहत मैं हकीरदाना खादिमे बुखारी शरीफ आपके सामने मौजूद हूँ (यानी खुद लेखक)। मैंने जिस दिन से उस मुबारक किताब की खिदमत को अपना रात व दिन का काम बनाया है। अल्हम्दुलिल्लाह अल्लाह पाक ने अपने फजलो करम से ईमान में तरक्की बख्शी है और अपने महबूब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीजा दुआ के बहुत से नेक फायदे मुझको दिखलाये हैं और बड़ी-बड़ी मुसीबतों को अल्लाह पाक ने हल फरमाया है जो महज दुआये रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत है। यह बात बिलकुल यकीनी है कि हदीसे नबवी की खिदमत करने वाले, उसे पढ़ने-पढ़ाने, लिखने-लिखाने वाले रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे जांनशीन और खलीफा हैं।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुसूसियत के साथ अपने ऐसे खलीफा को दुआओं के साथ नवाजा है। हजरत अली रजि. कहते हैं कि एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पास आये और फरमाने लगे:

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ خُلَفَائِيْ۔ قَالَ: قُلْنَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَنْ خُلَفَائُكَ: قَالَ ﷺ: اَلَّذِيْنَ يَأْتُوْنَ بَعْدِيْ يَرْوُوْنَ اَحَادِيْثِيْ وَسُنَّتِيْ وَيُعَلِّمُوْنَهَا النَّاسَ۔

(شرف اصحاب الحديث)

यानी ''ऐ अल्लाह! तू मेरे खलीफा पर रहम फरमा। हम लोगों ने कहा, या रसूलुल्लाह! आपके खलीफा कौन हैं? फरमाया कि मेरे खलीफा वो लोग होंगे। जो मेरे बाद कयामत तक पैदा होते रहेंगे और मेरी हदीसों और सुन्नतों को आइन्दा नस्लों के लिए रिवायत करेंगे और उसे लोगों को सिखलायेंगे।''

सुब्हानल्लाह! मुबारक हो यह खुशखबरी नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन हजरात उलमा-ए-किराम के लिए जो हदीस शरीफ का सबक कायम करते हैं। नौजवानाने उम्मत को का-ल का-ल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाकीजा कलिमात पढ़ाते हैं। वो उम्मत के पैसे वाले मालदार भी मुबारकबाद के काबिल हैं जो अपनी कमाई से ऐसे उलमा की खिदमत करते हैं और दारुल हदीस खोलते हैं, वो हदीस की खिदमत करने वाले भी मुबारकबाद के काबिल हैं जो हदीस की किताबों की इशाअत करते हैं और इस अजीम सदका जारिया में हिस्सा लेते हैं। और कुरआन व हदीस की मुस्तन्द किताबें छपवाकर बांटते हैं। ऐसे सारे मुसलमान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उन पाकीजा दुआओं के हकदार हैं। इसी जमाअत के लिए रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गरामी है:

لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِّنْ اُمَّتِیْ مَنْصُوْرِیْنَ لَا یَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ حَتّٰی تَقُوْمَ السَّاعَةُ۔ (ترمذی شریف)

यानी ''मेरी उम्मत में से एक जमाअत हमेशा कामयाब रहेगी, यानी अल्लाह उनकी हमेशा मदद करता रहेगा, उनके दुश्मन बहुत होंगे, मगर वो उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे। यहां तक कि कयामत हो।''

इमाम यजीद बिन हारून कहते हैं कि इस खबर से हदीस वाले ही मुराद हैं। हजरत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फरमाया कि इस हदीस के हकदार हदीस वाले ही हैं। हजरत इमाम अहमद बिन हम्बल रह. फरमाते हैं कि अगर इससे हदीस वाले मुराद ना हों तो कोई और हो ही नहीं सकता। हजरत इमाम अहमद बिन हम्बल से पूछा गया कि एक शख्स नफ्ली नमाजों और नफ्ली रोजों में लगा हुआ है और दूसरा सिर्फ हदीस के पढ़ने और लिखने में लगा हुआ है। उनमें से कौन-सा अच्छा है?आपने फरमाया कि हदीस शरीफ लिखने वाला उस नफ्ली इबादत करने वाले से अच्छा है। हजरत अबू बकर अहमद बिन अली फरमाते हैं कि हदीस शरीफ का पढ़ना, लिखना हर किस्म की नफ्ली इबादत से बेहतर है।

प्यारे भाईयों!

यह खुत्बा सुनकर आप ने अन्दाजा लगाया होगा कि हदीस और हदीस वालों का अल्लाह और उसके रसूल की निगाहों में कितना बड़ा दर्जा है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को पक्का सच्चा हदीस को दोस्त रखने वाला, हदीस वालों से मुहब्बत करने वाला बनाये। दरहकीकत यह हदीस की मुहब्बत खुद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखने के बराबर है। मशहूर शेअर इसी मायने में है:

اهل الحدیث هم اهل النبی

وان لم یصحبوا نفسه انفاسه صحبوا

हदीस वाले रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहल (खानदान) में दाखिल हैं, अगरचे उन्होंने आपकी जाहिरी सोहबत नहीं पायी, मगर वो हर वक्त आपके पाकीजा हुक्म पढ़ते-पढ़ाते रहते हैं। इस तरह गोया वो आपके सांस मुबारका की सोहबत हासिल कर रहे हैं।

आखिर में हम आपको मशहूर मुहद्दिस हजरत यजीद बिन हारून वास्ती का वाक्या सुनाते हैं, जिनको उनके इन्तकाल के चार दिन बाद एक बुजुर्ग ने ख्वाब में देखा और पूछा कि अल्लाह पाक ने आपके साथ क्या सलूक किया? उन्होंने ख्वाब में ही जवाब दिया कि अल्लाह पाक ने मेरे सारे गुनाह माफ कर दिये और नेकियों को कबूल फरमा लिया और मुझको जन्नत में दाखिल कर दिया। बुजुर्ग ने पूछा कि आपका इतना इकराम किस नेकी पर हुआ? कहा कि जिकरुल्लाह की मजलिसों में शरीक होने से। जिससे मुराद कुरआन व हदीस के दरस की मजालिस थी। और हकगोयी और सच्ची बातों की वजह से लम्बी नमाजों व भूख की मुसीबतों को बखूबी बर्दाश्त कर लेने की वजह से यह सारा इकराम हुआ। फिर ख्वाब देखने वाले बुजुर्ग ने पूछा, क्या मुनकर व नकीर हक हैं?जवाब दिया कि उस अल्लाह की कसम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, मुनकर व नकीर बिलकुल हक और सच्चे हैं। उन्होंने मुझे बैठाकर मुझसे सवाल किया कि तेरा रब कौन है?तेरा दीन क्या है? तेरे नबी कौन हैं। मैं अपनी सफेद दाढ़ी से मिट्टी झाड़ने लगा और कहने लगा कि मुझ जैसे शख्स से भी यह सवालात किये जायेंगे। मैं यजीद बिन हारून वास्ती हूँ। साठ साल तक लोगों को हदीस पढ़ाता रहा हूँ। फरिश्तों ने मेरी

बात सुनकर एक दूसरे की तरफ देखकर कहा, हां यह सच है कि यजीद बिन हारून है। फिर वो बोले आप बे-फिक्री से दुल्हन की तरह सो जायें। आज के बाद आप पर फिर कोई खौफ-डर नहीं है। अल्लाह पाक हमको भी ऐसे बुजुर्गो के साथ जन्नत में जमा करे और कब्रों में साबित कदमी अता फरमाये। आमीन!

बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

आपने हदीस और हदीस वालों के बारे में आज बहुत सी हदीसे नबवी को सुना है। अल्लाह पाक हम सबको सच्चा हदीस से मुहब्बत करने वाला बनाये और कयामत के दिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ मुबारक से जामे कौसर पिलवाए। आपके मुबारक झण्डे के नीचे हमारा भी हश्र फरमाये। साथ ही यह भी याद रखो कि महज नाम रखने से काम नहीं चलेगा, अल्लाह के यहां अमल की जरूरत है। अगर कुरआन व हदीस पर हमारा ईमान और अमल होगा तो यह सारे इनामात हमको हासिल होंगे और अगर अमल व आदत व अकीदे कुरआन व हदीस के मुताबिक ना होंगे तो महज अहले हदीस नाम रख लेने से कुछ ना बन सकेगा।

अल्लाह पाक हम सबको सच्चा मुसलमान, मुवह् और मुत्तबिऐ सुन्नते हदीस का फिदाई बनाये। आमीन या रब्बल आ-लमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 22

नसीहतों से भरपूर एक मुबारक ख्वाब के बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक पाकीजा खुत्बा

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى○ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى○ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى○

اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى○ (النجم ٥٣)

(सूरह नजमः 3-4, पारा 27)

"सितारे की कसम है जब वो झुके, तुम्हारा यह साथी (हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ना गुमराह हुआ है और ना यह बहका है, यह जो भी कुछ बोलता है, अल्लाह की तरफ से होने वाली वह्य के साथ बोलता है।"

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने अपने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान बयान फरमायी है कि दीन से मुताल्लिक आपकी जुबान मुबारक से निकलने वाला हर हर लफ्ज अल्लाह की तरफ से होता है। आप खुद बनाकर एक लफ्ज भी अपनी जुबान मुबारक से नहीं निकालते हैं।

बिरादराने इस्लाम!

आज रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक बेहतरीन नसीहतों से भरपूर ख्वाब आपको सुनाया जा रहा है। गौर से सुनिये और एक-एक लफ्ज को याद रखिये और सोचिये कि मौत के बाद हालात किस कद्र खतरनाक हैं। अल्लाह पाक हमको इस खुत्बे को याद रखने और अमल करने की तौफीक अता करे। आमीन!

हजरत समुरा बिन जुनदुब सहाबी रजि. फरमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत शरीफा थी कि आप नमाजे फजर के बाद नमाजियों की तरफ रुख करके बैठ जाते, आप नमाजे फजर अंधेरे ही में पढ़ लिया करते थे। फिर आप हम से पूछते थे कि तुम में से किसी ने आज रात कोई ख्वाब देखा हो तो बयान करो। अब अगर किसी ने देखा होता तो वो बयान कर देता और आप उसकी ताबीर बयान फरमाते। एक दिन इसी तरह हम से पूछा, मैंने देखा कि उस वक्त आपका चेहरा मुबारक कुरआने करीम के वरक की तरह चमक रहा था। हमने जवाब दिया कि हुजूर आज रात हम में से किसी ने कोई ख्वाब नहीं देखा है। आपने फरमाया कि आज रात मैंने एक ख्वाब देखा है। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना ख्वाब मुबारक बयान करना शुरू कर दिया

رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ اَتَيَانِيْ فَاَخَذَا بِيَدِيْ فَاَخْرَجَانِيْ اِلٰى اَرْضٍ مُقَدَّسَةٍ فَاِذَا رَجُلٌ جَالِسٌ وَرَجُلٌ قَائِمٌ بِيَدِهٖ كَلُّوْبٌ مِنْ حَدِيْدٍ يُدْخِلُهٗ فِيْ شِدْقِهٖ فَيَشُقُّهٗ حَتّٰى يَبْلُغَ قَفَاهُ ثُمَّ يَفْعَلُ بِشِدْقِهِ الْاٰخَرِ وَيَلْتَئِمُ شِدْقُهٗ هٰذَا فَيَعُوْدُ فَيَفْعَلُ مِثْلَهٗ قُلْتُ مَا هٰذَا؟ قَالَ اِنْطَلِقْ. فَانْطَلَقْنَا حَتّٰى اَتَيْنَا عَلٰى رَجُلٍ مُضْطَجِعٍ عَلٰى قَفَاهُ وَرَجُلٌ قَائِمٌ عَلٰى رَأْسِهٖ بِفِهْرٍ اَوْ صَخْرَةٍ يَشْدَخُ بِهٖ رَأْسَهٗ وَعَادَ رَأْسَهٗ كَمَا كَانَ فَعَادَ اِلَيْهِ فَضَرَبَهٗ فَقُلْتُ مَا هٰذَا؟ قَالَ اِنْطَلِقْ. فَانْطَلَقْنَا حَتّٰى اَتَيْنَا اِلٰى ثَقْبٍ. مِثْلَ التَّنُّوْرِ اَعْلَاهُ ضَيِّقٌ وَاَسْفَلُهٗ وَاسِعٌ تُتَوَقَّدُ تَحْتَهٗ نَارٌ فَاِذَا ارْتَفَعَتْ اِرْتَفَعُوْا حَتّٰى كَادَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا. وَاِذَا خَمِدَتْ رَجَعُوْا فِيْهَا وَفِيْهَا رِجَالٌ وَنِسَاءٌ عُرَاةٌ. فَقُلْتُ مَا هٰذَا؟ قَالَ اِنْطَلِقْ. فَانْطَلَقْنَا حَتّٰى اَتَيْنَا عَلٰى نَهْرٍ مِّنْ نَهْرٍ مِّنْ دَمٍ فِيْهِ رَجُلٌ قَائِمٌ عَلٰى وَسْطِ النَّهْرِ وَعَلٰى شَطِّ النَّهْرِ رَجُلٌ بَيْنَ يَدَيْهِ

حِجَارَةٌ فَاَقْبَلَ الرَّجُلُ الَّذِیْ فِی النَّهْرِ فَاِذَا اَرَادَ اَنْ يَّخْرُجَ رَمَی الرَّجُلُ بِحَجَرٍ فِیْ فِيْهِ فَرَدَّهٗ حَيْثُ كَانَ فَجَعَلَ كُلَّمَا جَاءَ لِيَخْرُجَ رَمٰی فِیْ بِحَجَرٍ فَيَرْجِعُ كَمَا كَانَ۔ فَقُلْتُ مَا هٰذَا؟ قَالَ اِنْطَلِقْ۔ فَانْطَلَقْنَا حَتّٰی اِنْتَهَيْنَا اِلٰی رَوْضَةٍ خَضْرَآءَ فِيْهَا شَجَرَةٌ عَظِيْمَةٌ وَفِیْ اَصْلِهَا شَيْخٌ وَصِبْيَانٌ وَاِذَا رَجُلٌ قَرِيْبٌ مِنَ الشَّجَرَةِ بَيْنَ يَدَيْهِ نَارٌ يُوْقِدُهَا فَصَعِدَا بِیَ الشَّجَرَةَ فَاَدْخَلَانِیْ دَارٌ وَسْطَ الشَّجَرَةِ لَمْ اَرَقَطُّ اَحْسَنَ مِنْهَا۔ فِيْهَا رِجَالٌ شُيُوْخٌ وَشَابٌّ وَّنِسَاءُ وَّصِبْيَانٌ۔ ثُمَّ اَخْرَجَانِیْ مِنْهَا فَصَعِدَا بِیْ فَاَدْخَلَانِیْ دَارًا هِیَ اَحْسَنُ وَاَفْضَلُ مِنْهَا فِيْهَا شُيُوْخٌ وَشَابٌّ۔ فَقُلْتُ لَهُمَا اِنَّكُمَا قَدْ طَوَّفْتُمَانِیْ اللَّيْلَةَ فَاَخْبِرَانِیْ عَمَّا رَأَيْتُ قَالَ نَعَمْ۔ اَمَّا الرَّجُلُ الَّذِیْ يُشَقُّ شِدْقُهٗ فَكَذَّابٌ يُحَدِّثُ بِالْكِذْبَةِ فَتُحْمَلُ عَنْهُ حَتّٰی تَبْلُغَ الْاٰفَاقَ فَيُصْنَعُ بِهٖ مَا تَرٰی اِلٰی يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَالَّذِیْ رَأَيْتَهٗ يُشْدَخُ رَأْسُهٗ فَرَجُلٌ عَلَّمَهُ اللّٰهُ الْقُرْاٰنَ فَنَامَ عَنْهُ بِاللَّيْلِ وَلَمْ يَعْمَلْ بِمَا فِيْهِ بِالنَّهَارِ يُفْعَلُ بِهٖ مَا رَأَيْتَ اِلٰی يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَالَّذِیْ رَأَيْتَهٗ فِی النَّقْبِ فَهُمُ الزُّنَاةُ وَالَّذِیْ رَأَيْتَهٗ فِی النَّهْرِ اٰكِلُ الرِّبٰوا وَالشَّيْخُ الَّذِیْ رَأَيْتَهٗ فِیْ اَصْلِ الشَّجَرَةِ اِبْرَاهِيْمُ وَالصِّبْيَانُ حَوْلَهٗ فَاَوْلَادُ النَّاسِ وَالَّذِیْ يُوْقِدُ النَّارَ مَالِكٌ خَازِنُ النَّارِ وَالدَّارُ الْاُوْلٰی الَّتِیْ دَخَلْتَ دَارُ عَامَّةِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَمَّا هٰذِهِ الدَّارُ

فَدَارُ الشُّهَدَآءِ وَاَنَا جِبْرِيْلُ وَهٰذَا مِيْكَائِيْلُ۔ فَارْفَعْ رَأْسَكَ فَرَفَعْتُ رَأْسِيْ فَاِذَا فَوْقِيْ مِثْلُ السَّحَابِ وَفِيْ رِوَايَةٍ مِثْلُ الرَّبَابَةِ الْبَيْضَاءِ قَالَ ذَاكَ مَنْزِلُكَ۔ قُلْتُ دَعَانِيْ اَدْخُلْ مَنْزِلِيْ۔ قَالَ اِنَّهٗ بَقِيَ لَكَ عُمُرٌ لَمْ تَسْتَكْمِلْهُ فَلَوِ اسْتَكْمَلْتَهٗ اَتَيْتَ مَنْزِلَكَ۔ (رواه البخاری رحمه الله۔ والسیوطی فی تفسیره)

(रवाहुल बुखारी रहिमहुल्लाह वस्सुयूती फी तफसीरिही)

यानी आज रात मैंने देखा कि दो शख्स मेरे पास आये मेरा हाथ पकड़ कर वो मुझे पाक जमीन (शाम) की तरफ ले चले। मैं देखता हूँ कि एक शख्स बैठा हुआ उसके पास एक फरिश्ता खड़ा है, उसके हाथ में लोहे का एक कांटा है। जिससे वो उस शख्स की एक तरफ की बांछ चीरता है फिर दूसरी तरफ से चीरना शुरू करता है तो पहली बाछ सही हो जाती है। फिर पहले को चीरता है तो दूसरी तरफ की बाछ सही हो जाती है। यही अजाब उसे हो रहा है। मैंने पूछा उसे यह सजा क्यों हो रही है?मेरे साथियों ने मुझ से कहा, अभी आगे चलिए। आगे चलकर देखा कि एक शख्स चित लेटा हुआ है। उसके सिरहाने एक फरिश्ता अपने हाथ में बहुत बड़ा पत्थर लिए हुए है, जो उसके सर पर फेंकता है। जिससे उसके सर का कीमा-कीमा हो जाता है। वो फरिश्ता पत्थर को उठाने जाता है तब तक उसका सर फिर जुड़ जाता है। फिर वो उसे पत्थर मारता है, यही अजाब उसे बराबर हो रहा है। मैंने पूछा उसके अजाब की वजह क्या है? उन दोनों ने कहा कि अभी आगे चलिए। अब आगे जाकर देखता हूँ कि एक तंदूर जैसे गढ्डा है जो ऊपर से तंग है, नीचे से चौड़ा है। उसमें आग सुलग रही है। उसमें कुछ मर्द और कुछ औरतें हैं जो नंगे हैं और जल रहे हैं। आग की तेजी का यह हाल है कि उसके शोलों के साथ यह लोग ऊपर को आ जाते हैं, यहां तक कि अब गोया बाहर निकल जायेंगे। फिर उसके शोलों के धीमें होने पर वो नीचे गिर जाते हैं। मैंने पूछा यह क्या है?मेरे दोनों साथियों ने कहा, और आगे चलिए। अब मैं देखता हूँ कि खून की एक नहर है, जिसके बीच एक शख्स खड़ा है, उस नहर के किनारे एक फरिश्ता अपने हाथ में पत्थर लिए खड़ा है। जब वो वहां से आता है और बाहर निकलने का इरादा करता है तो फरिश्ता उसके मुंह में पत्थर ठूंस देता है। और उसे धक्के देकर फिर वहीं वापिस कर देता है। यही अजाब होता रहता है। मैंने उसकी हकीकत पूछी तो फिर

भी दोनों ने यही कहा कि और आगे चलिए। अब हम एक बाग में पहुंचे जो बहुत ही हरा भरा है, लहलहा रहा है। उसमें एक बहुत ही बड़ा दरख्त है जिसके पास एक बड़ी उम्र के बुजुर्ग हैं और उनके पास बहुत से बच्चे हैं, वहीं करीब ही एक और साहब हैं जो आग जला रहे हैं। दोनों साथियों ने मुझे दरख्त के बीच एक बुलन्द महल में पहुंचाया। मेरी निगाह में तो उससे पहले उससे ज्यादा भला और उससे ज्यादा बेहतरीन कोई और घर गुजरा ही ना था। मैंने देखा कि वहां बुड्ढे भी हैं और जवान भी हैं और बच्चे भी हैं। फिर वहां से बाहर आये और आगे गये। एक और दरख्त पर चढ़ाया और एक और महल में ले गये, जो पहले से भी ज्यादा अच्छा व अफजल था। उसमें सिर्फ बुड्ढे और जवान मर्द ही थे। अब मैंने उन दोनों से कहा कि इस रात तो तुमने मुझे खूब घुमाया। अब जो मैंने देखा है, उसकी तफसीली हालत तो बयान करो। उन्होंने कहा, हां, अब सुनिये।

जिसे बाछ चिरने का अजाब हो रहा था, वो झूठा इन्सान था जो एक झूट बात उड़ा देता था और वो दुनिया में फैल जाती थी। कयामत तक उसे यही अजाब होता रहेगा। जिसका सर कुचला जा रहा था, वो शख्स है जिसे अल्लाह तआला ने कुरआन करीम सिखाया था, लेकिन वो रात को सो जाया करता था और दिन को अमल नहीं करता था। उसे कयामत तक यही अजाब होता रहेगा। जिन नंगे मर्द और औरतों को आपने तंदूर जैसे गड्ढे में जलते झुलसते देखा है, यह बदकार मर्द और औरत हैं। जिसे खून की नहर में गोता खाते देखा है, वो सूदखोर लोग हैं। जिस शख्स को आपने दरख्त के पास देखा है जिनके आसपास बच्चे थे, वो बुजुर्ग हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम हैं और वो बच्चे लोगों की वो औलाद हैं जो बचपन ही में मर जाती हैं। आग सुलगाते हुए जिन्हें आपने देखा है, वो दोजख के दरोगा मालिक हैं। पहले जिस जन्नती महल में आप तशरीफ ले गये, वो आम मोमिन का दर्जा है और यह दूसरा महल शहीदों का दर्जा है। मैं जिब्राईल हूँ और यह मेरे साथी हजरत मीकाईल हैं। अब आप जरा अपना सर उठाकर नजर डालिये। मैंने जो देखा तो सफेद बादल के बराबर बल्कि तह-ब-तह नूरानी बादल की तरह दिखायी दिया। फरमाया यह आपका जन्नती महल है। मैंने कहा, फिर मुझे छोड़ दीजिए। मैं यहां चला जाऊँ। उन दोनों ने फरमाया कि अभी नहीं। अभी आपकी कुछ दुनियावी उम्र बाकी है। जब आप उसे पूरी कर लेंगे, आप अपने इस महल में पहुंच जायेंगे।''

प्यारे भाईयों!

आपने महबूब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख्वाब मुबारक सुन लिया। इसे उलमा ने रूहानी मैराज कहा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिस्मानी मैराज भी हुई और रूहानी भी, जो लोग जिस्मानी मैराज का इनकार करते हैं, वो गलती पर हैं। बहरहाल इस ख्वाब में जो जो मंजर आपने देखे, उनकी तफसील के लिए खुत्बे का थोड़ा-सा वक्त काफी नहीं है। खुत्बा छोटा देना रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। मगर इतना समझ लीजिए कि रात को जो हाफिज, कारी, मौलाना लोग नमाज से बेखबर होकर सो जाते हैं और दिन में भी वो यह फर्ज अदा नहीं करते, उनको अल्लाह तआला से डरना चाहिए,ऐसे बे-अमल हाफिज व कारियों का यह हाल होगा जो आपने सुना है।

इस तरह झूठी बात को फैलाने वाले, झूठी हदीसों को आम करने वाले भी बहुत लोग हैं और सूद-ब्याज खाने वाले और जिना करने वाले सब लोगों का हाल आपने खूब सुना है। जरूरत है कि ऐसे लोगों को मुहब्बत से गुनाहों के छोड़ने की हिदायत की जाये।

हाजिरीने किराम!

अल्लाह की रहमत से तौबा कबूल होने का दरवाजा खुला हुआ है। अब तुम में से जो भी इन बुरी आदतों में गिरफ्तार हो, उसे फौरन अल्लाह से डर कर अपनी मौत को याद करके तौबा कर लेनी चाहिए और तौबा करने में देर हरगिज नहीं करनी चाहिए। ना मालूम कब मौत का पैगाम आ जाये और हम देखते ही देखते रह जायें। हर-हर नसीहत जो आपने सुनी है, आपके अमल के काबिल है। खास तौर पर नौजवानाने इस्लाम को बहुत ज्यादा सोचने और समझने की जरूरत है जो दिन को नौ बजे तक सोते रहते हैं और रात को ज्यादा वक्त होटलों में गुजार कर अपनी तंदुरुस्ती भी खराब करते हैं और नमाज पढ़ना उनको पहाड़ मालूम होता है। ऐसे नौजवानों को गौर करना चाहिए। यह जवानी हमेशा नहीं रहेगी और यही उम्र दुनिया और आखिरत बनाने की है। पस जरूरी है मिल्लत के नौजवान संभलें और दूसरों को संभालने की कोशिश करें।

नौजवानों को इकबाल मरहूम का यह पैगाम याद होगा:

कभी ऐ नौजवां मुस्लिम तदब्बुर भी किया तूने
कि है तू कौन-से गरदूं का एक टूटा हुआ तारा

मर्दों के अलावा औरतों को भी बहुत ज्यादा संभलने की जरूरत है, जिनमें यह बीमारी और बुराईयां बहुत ज्यादा फैल रही हैं। हमारे लिए जरूरी है कि औरतों को दीन की बातें सुनायें, समझायें, उनकी निगरानी करें, उनको झूठी बातों के फैलाने से रोकें। अक्सर बे-बुनियाद बातें औरतों से चलती हैं और वो सारे मोहल्ले में फैल जाती हैं। ऐसी औरतों को समझाना बहुत जरूरी है। अल्लाह पाक हमको नेक समझ अता करे और हर वक्त वो अपने सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह तफसीली ख्वाब हमको याद रखने की तौफीक दे और अमल करने की हिम्मत बख्शे। आमीन! या रब्बल आलमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 23

हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चन्द पाकीजा बरकत वाली दुआओं का बयान

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝ (المؤمن ۴۰)

(सूरह गाफिर, (मोमिन): 60, पारा 24)

"और तुम्हारे रब का हुक्म है कि ऐ मेरे बन्दों अपनी हर जरूरत के लिए मुझ से दुआ करो, मैं जरूर तुम्हारी दुआयें कबूल करूंगा। बिलाशक जो लोग मेरी इबादत व बन्दगी से घमण्ड की वजह से मुंह मोड़ते हैं।, वो दोजख में हैं। औंधे मुंह दाखिल होंगे।"

अल्लाह पाक की हम्दो सना और उसके प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम के बाद।

हजरात!

खुत्बे में आज जो आयते करीमा आपको सुनायी गयी है, अल्लाह पाक ने उसमें अपने बन्दों को दुआ करने का हुक्म फरमाया है। साथ ही खुशखबरी दी है कि जो बन्दे दिल से दुआयें करते हैं, उनकी दुआयें जरूर कबूल होती हैं। आज इस साइन्स के मौजूदा दौर में बड़े-बड़े अल्लाह तआला को न मानने वाले दहरिये लोगों ने भी यह तस्लीम कर लिया है कि अच्छे, सच्चे, नेक इन्सान की दुआओं में जरूर तासीर होती है। और बहुत बार ऐसा हुआ है कि दुआओं से किस्मतें बदल गयी हैं। हदीस शरीफ में दुआ को मोमिन का हथियार करार दिया गया है। हमारा फर्ज है कि अपने रब से दुआओं के लिए हर वक्त दिल व दिमाग को हाजिर रखें

और उसके सामने रो-रोकर हाथ फैलायें, वो जरूर हमारी सुनेगा और वो हमारी हर जरूरत को पूरा करेगा।

भाईयों!

इस पाक मकसद के तहत आज जनाबे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चन्द पाकीजा दुआयें आपको सुनायी जाती हैं जिनसे आप अन्दाजा लगा सकेंगे कि दुनिया में आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बढ़कर कोई अल्लाह का जानकार पैदा नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआओं ही की तासीर थी कि बहुत ही मुश्किल हालात के बावजूद आपको अल्लाह पाक ने अरब में कामयाबी आता फरमायी और आप सिर्फ चन्द सालों की मेहनत से लाखों नेकबख्त इन्सानों को सीधी राह पर लगाकर दुनिया में एक शानदार और बड़ी कौम के सरदार की हैसियत से इस दुनिया से चले गये, हमेशा की जिन्दगी की तरफ। अल्लाह पाक आप पर बेशुमार दरूद व सलाम नाजिल फरमाये। आमीन! यूं आप हर वक्त हर लम्हा, हर आन इलाही की याद में रहा करते थे, आपकी दुआओं को पढ़ने से मालूम होगा कि आपको अल्लाह पाक पर किस कद्र ईमान व यकीन हासिल था और आपके दिल मुबारक में यकीन का नूर किस तरह जगमगा रहा था और अल्लाह पाक को आप अपने से किस कद्र करीब जानकर उससे दुआयें किया करते थे। चुनांचे दुनिया व आखिरत में हर किस्म की कामयाबी के लिए आप ज्यादा से ज्यादा यह दुआ पढ़ा करते थे:

اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِيْ دِيْنِيَ الَّذِيْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِيْ وَاَصْلِحْ دُنْيَايَ الَّتِيْ
فِيْهَا مَعَاشِيْ وَاَصْلِحْ لِيْ آخِرَتِيَ الَّتِيْ فِيْهَا مَعَادِيْ وَاجْعَلِ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِّيْ
فِيْ كُلِّ خَيْرٍ وَّاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّيْ مِنْ كُلِّ شَرٍّ۔ (مسلم)

"ऐ अल्लाह! तू मेरे दीन की इस्लाह फरमा जो मेरे हर काम के सुधार का जरीया और बेहतरीन काम की हिफाजत करने वाली चीज है। और मेरे घर बार की हालत भी सुधार दे, जिससे मेरा गुजर बसर करने से है। और मेरी आखिरत को दुरुस्त कर दे, जहां मुझको मरकर जाना है और मेरी जिन्दगी को मेरी हर एक भलाई की ज्यादती का सबब बना दे। और मौत को हर एक बुराई से राहत का सबब बना दे, ताकि मौत के बाद हर बुराई से राहत नसीब हो।"

बखीली और बुजदिली जैसी बुराईयों से बचने के लिए आप ज्यादा से ज्यादा यह दुआ करते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعِجْزِ وَالْكَسْلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَالْهَرِمِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ۔ اَللّٰهُمَّ آتِ نَفْسِیْ تَقْوَاهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَكَّاهَا اَنْتَ وَلِیُّهَا وَمَوْلَاهَا۔ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ قَلْبٍ لَا یَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ وَمِنْ عِلْمٍ لَا یَنْفَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لَا یُسْتَجَابُ لَهَا۔ (مسلم، نسائی)

"ऐ अल्लाह! मैं कमजोरी से, काहिली से और बखीली और बुजदिली और जिल्लत वाले बुढ़ापे से और कब्र के अजाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ अल्लाह तू मेरे नफ्स को परहेजगारी अता फरमा और उसे तमाम ऐबों और बुराईयों से पाक कर दे, तू सबसे अच्छा पाकसाफ करने वाला है। तू ही इस नफ्स का मौला, मालिक और आका है। ऐ अल्लाह! मैं ऐसे दिल से जो ना डरे और ऐसे नफ्स से जो आसूदा ही ना हो। और ऐसे इल्म से जो नफा ना दे और ऐसी दुआ से जो कबूल ना हो, इन सबसे तेरी पनाह चाहता हूँ। मुझको इन तमाम बुराईयों से बचा।"

बुजुर्गो और दोस्तों!

आपने गौर किया होगा कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस किस तरह से अल्लाह रब्बुल आलमीन को याद फरमाते थे और किस कद्र ईमानी व रूहानी शान के साथ अल्लाह पाक से दुआओं में लगे रहा करते थे। हमारा भी फर्ज है कि हम भी इस तरह अल्लाह से ताल्लुक मजबूत करें। और इन दुआओं को हम भी याद करें और हर वक्त पढ़ा करें ताकि हमको भी उन बुरे कामों से पाकी हासिल हो। सिर्फ यही नहीं कि जो आप सुन रहे हैं, बल्कि हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाना खाने के बाद, बिस्तर पर सोने को जाने पर, सुबह को बिस्तर से उठने पर, यहां तक कि बाथरूम को जाने और बाहर आने के मौके पर बड़ी प्यारी दुआयें करते थे। अल्लाह तआला हमको भी शौक अता करे कि हम भी आपकी सिखलायी हुई सब दुआओं को याद करके रोजाना उनको पढ़ा करें ताकि दोनों जहां की बरकतों से हम भी मालामाल हों। आमीन या रब्बल

आलमीन।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बिस्तर पर तशरीफ ले जाते तो यह दुआ पढ़ते थे:

بِاسْمِكَ رَبِّيْ وَضَعْتُ جَنْبِيْ وَبِكَ اَرْفَعُهٗ اِنْ اَمْسَكْتَ نَفْسِيْ فَارْحَمْهَا وَاِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ۔ (بخاری، مسلم)

"ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही नाम की बरकत से अपनी करवट को बिस्तर पर रखता हूँ और तेरे ही नाम की बरकत से करवट को बिस्तर से उठाता हूँ। या अल्लाह! अगर तू मेरी जान सोते में ही रोक ले तो इस पर रहम करना और अगर तू इसको वापिस दुनिया में भेज दे, कि मैं सोने से सलामती के साथ जाग कर उठूं तो मेरी जान की हिफाजत कीजिए, जैसे तू अपने नेक बन्दों की हिफाजत करता है।"

आप सुबह जब बिस्तर से उठते तो यह दुआ पढ़ते:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ۔ (بخاری)

यानी "सब तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमको मारने के बाद जिन्दा कर डाला और आखिर में सबको उसकी तरफ लौट जाना है।"

मुसलमान भाईयों!

कुरबान जाऊँ ऐसे महबूबे इलाही सरदारे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जिनकी हर अदा से अल्लाह पाक की मुहब्बत टपकती है जो सोते जागते घर में बाहर एक-एक लम्हे के लिए भी अल्लाह की याद से गाफिल नहीं होते। आज मुसलमान अपने मुकद्दस रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाकीजा कदम पर चलने लग जायें तो उनकी सोयी हुई किस्मत फिर जाग सकती है। वो दोनों जहां में कामयाब हो सकते हैं। कामरानी फिर उनके कदमों को चूम सकती है। या अल्लाह, तू मुसलमानों को यह शान अता फरमा।

बुजुर्गो, अजीजों, सुनो और गौर से सुनो!

ताइफ में कुफ्फार रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पथराव करते हैं, हमारे मां-बाप और जानें आप पर कुरबान हों। आप लहुलहान होकर वापिस आते हैं, रास्ते में अंगूर की बेल के नीचे बैठकर अल्लाह पाक से ऐसी पाक

दुआ करते हैं जो बहुत ही ध्यान से पढ़ने और याद करने के काबिल है।

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضُعْفَ قُوَّتِىْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِىْ وَهَوَانِىْ عَلَى النَّاسِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔ اِلٰى مَنْ تَكِلُنِىْ اِلٰى عَدُوٍّ يَتَجَهَّمُنِىْ اَمْ اِلٰى قَرِيْبٍ مَلَّكْتَهُ اَمْرِىْ اِنْ لَّمْ تَكُنْ سَاخِطًا عَلَىَّ فَلَا اُبَالِىْ غَيْرَ اَنَّ عَافِيَتَكَ اَوْسَعُ لِىْ اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ الَّذِىْ اَضَاءَتْ لَهُ السَّمٰوٰتُ وَاَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلَحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اَنْ تَحِلَّ عَلَىَّ غَضَبُكَ وَتُنْزِلَ عَلَىَّ سَخَطَكَ وَلَكَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ۔ [زاد المعاد 31/3، ابن هشام 1/260-262، المجمع للهيثمي 35/6]

(जादुल मआद 3/31, इब्ने हिशाम 1/260-262, अल-मजमअलिल हैसमी 6/35)

"या अल्लाह अपने कमजोर ताकत वाले, कम सब्र और लोगों में अपनी कमतरी की तेरी बारगाहे अजमत में फरियाद लेकर आया हूँ कि तू सब रहम करने वालों से बड़ा रहम करने वाला है। मुझे तू ऐसे दुश्मन से पनाह दे जो मेरी सूरत देखते ही नाराज हो जाये और दोस्त से भी जो मेरे कामों पर गलबा पाये। (मौला) अगर तू मुझ पर (आजमाईश में) गुस्सा नहीं है तो फिर मुझे कुछ परवाह नहीं, क्योंकि मेरे लिए तेरी रहमत बड़ी खुली है और मैंने तेरे बुजुर्ग चेहरे के नूर में पनाह ली है, जिसकी वजह से आसमान रोशन हो गये और अंधेरे नूर बन गए और दीन व दुनिया के काम संवर गये। (इलाही) पनाह चाहता हूँ कि तू अपना गुस्सा और नाराजगी मुझ पर नाजिल करे (प्यारे मौला) मुझ से राजी हो जा, क्योंकि मुझको (महज) तेरी मदद से हर तरह की कुव्वत और ताकत हासिल है।"

यह दुआ ऐसे वक्त में जुबान मुबारक से निकल रही थी कि ताइफ वाले आप पर पत्थर बरसा रहे थे और पहाड़ों का फरिश्ता इजाजत मांग रहा था कि वो पल भर में ताइफ वालों को दोनों पहाड़ों के बीच पीसकर आटा बना दे। मगर रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबान मुबारक से यह दुआ निकल रही थी।

اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ۔

"ऐ मेरे अल्लाह! मेरी कौम को हिदायत दे, ये मेरी हकीकत से अनजान हैं, इसलिए यह नादानी कर रहे हैं।"

इस मौके पर आपने यह दुआ फरमायी जिसके अल्फाज आपने पन्नों में पढ़ा है।

हुजूरे अकरम सल्ल० सबकी आपसी मुहब्बत कायम होने और हिदायत पाने के लिए यूं दुआ फरमाते हैं

اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَیْنَ قُلُوْبِنَا وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَیْنِنَا وَاهْدِنَا سُبُلَ السَّلَامِ وَنَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَی النُّوْرِ وَجَنِّبْنَا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَبَارِكْ لَنَا فِیْ اَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُلُوْبِنَا وَاَزْوَاجِنَا وَذُرِّیَّاتِنَا وَتُبْ عَلَیْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ وَاجْعَلْنَا شَاكِرِیْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِیْنَ بِهَا قَابِلِیْهَا وَاَتِمَّهَا عَلَیْنَا۔ (ابوداؤد)

"ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में एक दूसरे की मुहब्बत डाल दे और हमारे हाल की इस्लाह फरमा, हमें सलामती के रास्ते दिखा और बद-अखलाकी के अन्धेरों से निकालकर अच्छे अख्लाक की रोशनी में ले जा। हमें हर किस्म की खुली और छुपी हुई बेहयाईयों से दूर फरमा। हमारे कानों, आंखों और दिलों को अपनी रहमत अता कर और हमारी बीवीयों और बच्चों को बरकतों और भलाईयों में रख, हमको एक बार अपनी रहमतों की कद्रदानी, शुक्रगुजारी और उनके पाने की काबिलियत व तौफीक अता फरमा। और अज-राह बख्शिश हम पर अपनी नेमतों की पूरी बारिश बरसा।" (दरहकीकत सब तारीफों का तू ही मालिक है।)

नफ्स की शरारतों से अल्लाह की पनाह मांगने के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूं दुआ करते थे, जो हर काम में कामयाबी के लिए कबूलियत का हुक्म रखती है। मेरे उस्ताद मुतहरम बयहकी मौलाना अबू सईद शरफुद्दीन मुहद्दिस देहलवी मरहूम की खास ताकीद थी कि मैं इसे हर वक्त पढ़ा करूं।

اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْا فَلَا تَكِلْنِىْ اِلٰى نَفْسِىْ طَرْفَةَ عَيْنٍ وَاَصْلِحْ لِىْ شَاْنِىْ كُلَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ۔ (ابوداؤد)

"या अल्लाह! मैं तेरी रहमत का उम्मीदवार हूँ, पस ना सौंप मुझको मेरे नफ्स की तरफ एक घड़ी भी और मेरे सब कामों को ठीक कर दे। तेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं है।"

भाईयों!

इन पाकिजा दुआओं को याद करके इनको हमेशा पढ़कर दुनिया व दीन की खूबियां हासिल कर लो। अल्लाह तआला की रहमत के दरवाजे हर वक्त खुले हुए हैं जो सच्चे दिल के साथ इस दर का भिखारी बनता है, वो कभी नामूराद नहीं रहता।

या अल्लाह! हम सबको अपने हबीब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक्शे कदम पर चलने की तौफीक अता फरमा। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِىْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِىْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 24

हिजरत के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहले जुमे का यादगार खुत्बा मुबारक

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾ (حٰمٓ السَّجْدَة ٣١)

(सूरह फुस्सिलतः 30-32, पारा 24)

तर्जुमाः बेशक जिन लोगों ने दिल से कहा कि हमारा रब सिर्फ एक अल्लाह तबारक व तआला है। फिर उसी कौल पर कायम रहे। उन पर फरिश्ते यह खुशखबरी देने के लिए नाजिल होते हैं कि खौफ ना खाओ, गम ना करो, उस जन्नत की खुशखबरी सुनकर खुश हो जाओ, जिसका तुमको वादा दिया जाता था, हम दुनिया में भी और आखिरत में भी तुम्हारे मददगार हैं और आखिरत में जो तुम्हारे दिल चाहेंगे वो तुमको मिलेगा और जिस चीज की तुमको ख्वाहिश होगी, वो चीज तुमको दी जायेगी। यह अल्लाह पाक की तरफ से तुम्हारी मेहमानी है, वो अल्लाह जो बख्शने वाला मेहरबान है।"

बिरादराने इस्लाम!

आयते करीमा जो आपने सुनी है, इसके सबसे पहले हकदार रसूले करीम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी जिन्दगी में जिस मजबूती, साबित कदमी, सब्र समझदारी और भरोसे से काम लिया, दूसरे नबियों, रसूलों में इसकी मिसाल मिलनी बहुत मुश्किल है। कुछ रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे हालात आपको सुनाये जाते हैं। याद रखिए और जहन में बैठा लीजिए और अपने प्यारे रसूल की पैरवी को कभी ना छोड़िए।

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अप्रेल के महीने में पीर के दिन 9 रबीउल अव्वल 1 हाथी वाला साल मुताबिक 22 अप्रैल 571 ई. को मक्का शरीफ में सुबह सादिक के बाद सूरज निकलने से पहले दुनिया में तशरीफ लाये थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब पहले ही इंतकाल कर चुके थे, बुजुर्गवार दादा ने सातवें दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अकीका किया, आपका नाम मुबारक "मुहम्मद" (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ऐलान किया। और वालिदा आमना ने फरिश्तों से खुशखबरी सुनकर आपका नाम "अहमद" (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रखा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र छः साल की थी कि हजरत आमना का भी इंतकाल हो गया। और जब उम्र शरीफ आठ बरस दस दिन को पहुंची तो आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब भी इन्तेकाल कर गये। बाद में आपकी परवरिश अबू तालिब ने अपने जिम्मे ली जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सगे चचा और वालिद अब्दुल्लाह के सगे भाई थे।

शुरू जवानी में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने व्यापार के लिए सफर किये और पच्चीस साल की उम्र थी कि मक्का की एक निहायत शरीफ खानदानी मालदार बेवा हजरत बीबी खदीजा रजि. से आपकी शादी हुई, जिनकी उम्र चालीस साल की थी। यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में पच्चीस साल जिन्दा रहीं और इस कद्र वफादाराना जिन्दगी गुजार दी कि आप सारी उम्र उस मुहतरमा खातून को याद फरमाते रहे। हजरत फातिमा रजि. हजरत खदीजा ही के पेट से पैदा हुई थीं, कुरैशे मक्का में यह जमाना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बहुत ही अच्छा व महबूब जमाना था। कुरैश का हर आदमी मर्द, औरत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सादिक और अमीन (सच्चा ईमानदार) कह कर पुकारा करता था। अब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र चालीस साल के करीब पहुंच रही थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब वक्त का ज्यादा हिस्सा अल्लाह तआला की याद में बसर करना

और शहर वालों से दूर एक "हिरा" नामी गार में गुजारना आपकी आदत बन गयी थी।

बिरादराने इस्लाम!

आपकी उम्र चालीस साल कमरी (चांद) पर एक दिन ज्यादा हुई तो रबीउल अव्वल 41 पैदाईश मुताबिक बारह फरवरी 610 ई. बरोज पीर आप गारे हिरा में थे कि आपके पास हजरत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हाजिर हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह का रसूल होने की खुशखबरी दी और कुरआनी आयात "इकरा बिस्मि रब्बि-कल्लजी ख-ल-क......." आखिर तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नुजूल हुआ और बाद में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के हुक्म से इस्लाम की तबलीग के लिए कमर (हिम्मत) बांधी और मुश्रिकीने मक्का के आमाल व अख्लाक की सुधार का बीड़ा उठाया। मगर मक्का वाले जो बहुत लम्बे समय से बुत परस्ती और बद अख्लाक के शिकार हो चुके थे, वो ज्यादातर आपकी दुश्मनी में खड़े हो गये। और उन्होंने आपकी दावत को नाकाम बनाने की भरपूर कोशिश की। मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरे तेरह बरस तक मक्का वालों की हर दुश्मनी के बावजूद कलिमा-ए-इस्लाम "ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" की पूरी-पूरी तबलीग करते रहे। इसी दौरान 10 नबवी (नबूवत के दस साल) में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे चचा अबू तालिब का इंतकाल हो गया और उनके तीन दिन बाद आपकी बीवी मुहतरमा खातून हजरत खदीजा रजि. भी इस दुनिया से जन्नत की तरफ सफर कर गयीं। "इन्ना लिल्लाहि व इना इलैहि राजिऊन"

इन तकलीफों का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल व दिमाग पर बहुत काफी असर हुआ। मगर तबलीगे इस्लाम में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई फर्क नहीं आने दिया। अब मुश्रिकीने मक्का ने दुश्मनी में और भी सख्ती शुरू कर दी और हर-हर तरफ से इस्लाम की आवाज को दबाना चाहा। मगर अल्लाह का इरशाद था कि "यह चिराग सारी दुनिया को रोशन करेगा और दुश्मनों के इरादे सब फेल हो जायेंगे। ऐसा ही हुआ जैसा कि जमाना गवाह है। आखिर अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के महबूब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 27 सफर 13 नबूवत और जुमेरात मुताबिक 12 सितम्बर 622 ई. को मक्का छोड़कर मदीना का सफर शुरू फरमाया। तीन रात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का के करीब "गारे सौर" में रहे। आखिर आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम यह लम्बा सफर तय करते हुए 8 रबीउल अव्वल 13 नबवी बरोज दो शम्बा (पीर) मुताबिक 23 सितम्बर 622 ई. को मदीना के करीब एक कुबा नामी बस्ती में पहुंच गये। यहाँ ठहर कर 12 रबीउल अव्वल 1 हिजरी को जब कि जुमे का दिन था, रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुमा अदा फरमाया। यह इस्लाम में पहला जुमा था।

हाजिरीने किराम!

इस जुमा मुबारक में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो खुत्बा दिया वो तारीखी हैसियत से बड़ा मुकाम रखता है। और शुरूआत खुत्बा के तहत आज हम आपको यही मुबारक खुत्बा सुनाना चाहते हैं। गौर करके सुनिये, समझिये और याद रखने की कोशिश कीजिए। अल्लाह पाक आपको यह खुत्बा सुनना मुबारक फरमाए। (आमीन)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَحْمَدُهٗ وَاَسْتَعِيْنُهٗ وَاَسْتَغْفِرُهٗ وَاَسْتَهْدِيْهِ وَاُؤْمِنُ بِهٖ، وَلَا اَكْفُرُهٗ وَاُعَادِيْ مَنْ يَّكْفُرُهٗ، وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَنَّا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، اَرْسَلَهٗ بِالْهُدٰى وَالنُّوْرِ وَالْمَوْعِظَةِ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ۔ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ رَشَدَ وَمَنْ يَّعْصِهِمَا فَقَدْ غَوٰى وَفَرَّطَ وَضَلَّ ضَلَالًا بَعِيْدًا۔ اُوْصِيْكُمْ بِتَقْوَى اللّٰهِ فَاِنَّهٗ خَيْرًا مَّا اَوْصٰى بِهِ الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمَ اَنْ يَّحُضَّهٗ عَلَى الْآخِرَةِ وَاَنْ يَّأْمُرَهٗ بِتَقْوَى اللّٰهِ، فَاحْذَرُوْا مَا حَذَّرَكُمُ اللّٰهُ مِنْ نَفْسِهٖ، وَلَا اَفْضَلَ مِنْ ذٰلِكَ نَصِيْحَةً وَّلَا اَفْضَلَ مِنْ ذٰلِكَ ذِكْرًا وَّاِنَّ تَقْوَى اللّٰهِ لِمَنْ عَمِلَ بِهٖ عَلٰى وَجَلٍ وَمَخَافَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ عَوْنَ صِدْقٍ عَلٰى مَا يَبْغُوْنَ مِنَ الْاَمْرِ الْآخِرَةِ، وَمَنْ يُّصْلِحِ الَّذِيْ بَيْنَهٗ وَبَيْنَ اللّٰهِ مِنْ اَمْرِهٖ فِي السِّرِّ وَالْعَلَانِيَّةِ لَا يَنْوِيْ بِذٰلِكَ اِلَّا وَجْهَ اللّٰهِ،

يَكُنْ ذِكْرًا فِيْ عَاجِلِ اَمْرِهٖ وَذُخْرًا فِيْ مَا بَعْدَ الْمَوْتِ حِيْنَ يَفْتَقِرُ الْمَرْءُ اِلٰى مَا قَدَّمَ۔ وَمَا كَانَ سِوٰى ذٰلِكَ يَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهٗ وَبَيْنَهَا اَمَدًا بَعِيْدًا وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ۔ وَالَّذِيْ صَدَّقَ قَوْلَهٗ وَاَنْجَزَ وَعْدَهٗ لَا خُلْفَ لِذٰلِكَ فَاِنَّهٗ يَقُوْلُ عَزَّوَجَلَّ (مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ) فَاتَّقُوا اللّٰهَ فِيْ عَاجِلِ اَمْرِكُمْ وَآجِلِهٖ، فِي السِّرِّ وَالْعَلَانِيَةِ، فَاِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّآتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗ اَجْرًا۔ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا۔ وَاِنَّ تَقْوَى اللّٰهِ يُوْقِيْ مَقْتَهٗ وَيُوْقِيْ عُقُوْبَتَهٗ وَيُوْقِيْ سَخَطَهٗ وَاِنَّ تَقْوَى اللّٰهِ تُبَيِّضُ الْوُجُوْهَ وَيُرْضِي الرَّبَّ وَيَرْفَعُ الدَّرَجَةَ۔ خُذُوْا حَظَّكُمْ وَلَا تُفَرِّطُوْا فِيْ جَنْبِ اللّٰهِ قَدْ عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ كِتَابَهٗ وَنَهَجَ لَكُمْ سَبِيْلَهٗ لِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَيَعْلَمَ الْكَاذِبِيْنَ۔ فَاَحْسِنُوْا كَمَا اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ وَعَادُوْا اَعْدَاءَ اللّٰهِ وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَسَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ فَاَكْثِرُوْا ذِكْرَ اللّٰهِ وَاعْمَلُوْا لِمَا بَعْدَ الْيَوْمِ، فَاِنَّهٗ مَنْ يُّصْلِحْ مَا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ اللّٰهِ يَكْفِهِ اللّٰهُ مَا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ النَّاسِ۔ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يَقْضِيْ عَلَى النَّاسِ وَلَا يَقْضُوْنَ عَلَيْهِ وَيَمْلِكُ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ۔ (رحمۃ للعالمین 1/92-93 بحوالہ تاریخ طبری 2/255)

इस्लामी भाईयों!

कितना मुबारक जुमा था और किस कद्र नजदीकी थी कि कयामत तक के लिए यह नेक हफ्तवारी ईद का सिलसिला जारी किया गया। किस कद्र खुश नसीब वो एक सौ नेक मुसलमान जिनको इस तारीखी जुमा में आने की खुशखबरी हासिल हुई। आज भी मोहल्ला बनू सालिम मौजूद है जो कुबा जाने आने के रास्ते में पड़ता है। जहां हुजूरे करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह खुत्बा दिया था और नमाजे जुमा पढ़ी थी। वहां एक अजीमुश्शान मस्जिद बनी हुई है। जो अपनी पुरानी तारीख की याद दिला रही है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को कअबा मस्जिद-ए-नबवी देखने की तौफीक दे। अब आइये इस पाकीजा खुत्बा का तर्जुमा भी आपको सुना दिया जाये। अल्लाह हमको याद रखने की तौफीक बख्शे। आमीन!

तर्जुमाः हम्दो तारीफ अल्लाह के लिए हैं। मैं उसकी तारीफ करता हूँ और मदद और बख्शिश और हिदायत उसी से मांगता हूँ, मेरा ईमान उसी पर है, मैं उसकी नाफरमानी नहीं करता, बल्कि उसकी नाफरमानी करने वालों से दुश्मनी रखता हूँ, मेरी गवाही यह है कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं है, वो एक है, उसका कोई शरीक नहीं है। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं। उसी ने मुहम्मद को हिदायते नूर और नसीहत के साथ ऐसे जमाने में भेजा है, जबकि मुद्दतों से कोई रसूल दुनिया में नहीं आया था और इल्म घट गया और गुमराही बढ़ चुकी थी। उसे आखरी जमाने में कयामत के नजदीक और मौत की नजदीकी के वक्त भेजा गया। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की फरमां बरदारी करता है, वही राह पाने वाला है। और जो नाफरमानी करता है और हुक्म नहीं मानता है, वो भटक गया, मर्तबे से गिर गया और सख्त गुमराही में फंस गया।

मुसलमानों!

मैं तुमको अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूँ, बेहतरीन वसीयत जो एक मुसलमान अपने दूसरे मुसलमान भाई को कर सकता है। वो यही वसीयत है कि उसे आखिरत के लिए तैयार करे और अल्लाह से डरने के लिए कहे।

लोगों! जिन बातों से अल्लाह ने तुमको बचने के लिए कहा है, उनसे दूर रहो। इससे बढ़कर ना कोई नसीहत है और ना कोई इससे बढ़कर जिक्र है। याद रखो कि हालात आखिरत में उस शख्स के लिए जो अल्लाह से डरकर काम कर

रहा है, तकवा बहुत ही बेहतर मददगार साबित होगा और जब कोई शख्स अपने और अल्लाह के दरमियान का मामला खुफिया व जाहिर में ठीक-ठाक रखेगा और ऐसा करने में उसकी नीयत भी सच्ची होगी तो ऐसा करना उसके लिए दुनिया में जिक्र और मौत के बाद उसके लिए जखीरा बन जायेगा। लेकिन अगर कोई ऐसा नहीं करता, उसके बारे में अल्लाह का यह इरशाद है, जिसका तर्जुमा यह है "इन्सान पसन्द करेगा कि उसके बुरे काम उससे दूर ही रखे जायें (ताकि वो उनको देखकर शर्मिन्दा ना हो) अल्लाह तुमको अपनी जात से डराता है और अल्लाह तो अपने बन्दों पर बहुत ही मेहरबान है।"

और जिस ने अल्लाह के हुक्म को सच जाना और उसके वादे को पूरा किया तो उसकी बाबत यह फरमाने इलाही मौजूद है कि "हमारे यहां बात नहीं बदला करती और मैं अपने बन्दों पर नाहक जुल्म करने वाला भी नहीं हूँ।"

मुसलमानों!

अपने मौजूदा और आईन्दा जाहिर और बातिन कामों में अल्लाह का डर सामने रखो, क्योंकि तकवा वालों की बुराईयां माफ कर दी जाती हैं और उनका सवाब बढ़ा दिया जाता है। तकवा वाले लोग वो हैं जो अपनी बहुत बड़ी मुराद को पहुंच जायेंगे। यह तकवा ही तो है जो अल्लाह की नाराजगी, खफगी और उसके अजाब को दूर कर देता है, यह तकवा ही तो है जो चेहरे को दरख्शां चमकीला परवरदिगार को खुश और दरजात को बुलन्द कर देता है।

मुसलमानों!

दुनिया में हलाल तौर पर खूब खूब मजे हासिल करो, मगर अल्लाह के हकों की अदायगी में कमी ना करो। अल्लाह ने इसी लिए तुमको अपनी किताब सिखलायी और अपना रास्ता दिखलाया है कि सच्चे लोगों और झूठे लोगों को अलग अलग कर दिया जाये।

लोगों! अल्लाह ने तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव किया है। तुम भी लोगों के साथ एहसान का सलूक करो और जो अल्लाह के दुश्मन हैं, उनको अपना दुश्मन जानो और अल्लाह के रास्ते (इस्लाम) में पूरी हिम्मत और ध्यान से कोशिश करो। उसने तुमको अपना प्यारा बन्दा बनाया है और तुम्हारा नाम "मुसलमान" रखा है ताकि जो इस्लाम कबूल ना करे वो रोशन दलीलें देखता हुआ हलाक हो जाये और इस्लाम कबूल करके जो जिन्दगी पाने वाला हो वो रोशन दलीलों पर जिन्दगी पाये और सब नेकियाँ अल्लाह की मदद से होती हैं।

लोगों! अल्लाह का जिक्र कर लिया करो और आखिरत के लिए नेक काम

करो, क्योंकि जो शख्स अपने और अल्लाह के बीच मामला ठीक करता है, अल्लाह पाक उसके और लोगों के मामलात के दरमियान दुरुस्तगी पैदा करता है। बेशक अल्लाह पाक का हुक्म बन्दों पर चलता है, हर वक्त जारी है और उस पर किसी की हुकूमत नहीं है। और अल्लाह बन्दों का मालिक है और बन्दों को अल्लाह के सामने कुछ भी ताकत हासिल नहीं है।

लोगों आखिर में याद रखो! अल्लाह पाक सबसे बहुत ही बड़ा है और हम को नेक कामों की ताकीद सिर्फ उसकी अजमत वाले फजल से मिलती है।

मुबारक हैं वो बन्दे-बन्दियां जो अल्लाह के सच्चे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस पाकीजा खुत्बे को सुनकर खूब याद रखें और इस पर अमल करें। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 25

हज्जतुल विदा के अजीमुश्शान मकसद पर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अजीम तारीखी खिताब

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ط (المائدة ٥)

(सूरह अल-मायदहः 3, पारा 6)

"आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए दीन को पूरा कर दिया और अपनी नेमत (इस्लाम) पूरे तौर पर तुमको दे चुका और इस्लाम को मैं तुम्हारे लिए दीन मुकर्रर करने पर राजी हो चुका।"

हम्दो सलात के बाद

बिरादराने इस्लाम!

यह आयते करीमा उस वक्त उतरी जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज्जतुल विदा में एक लाख और चालीस हजार मुसलमानों की जमाअत देखकर बहुत ही खुशी का इजहार फरमाते हुए खिताबे आम से अलविदा हो रहे थे, हज्जतुल विदा से वो हज मुराद है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र के आखिरी हिस्से से ताल्लुक रखता है। यानी उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ खत्म हो गयी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह को प्यारे हो गये। इस तरह इसी हज के मौके पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के वफादारों को अपने से अलविदा किया था। यह 10 हिजरी

का वाक्या है, मदीना शरीफ के आसपास एलान करा दिया गया था। इसलिए मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद मदीना में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मक्का शरीफ चलने के लिए जमा हो गयी। जिस में हर दर्जे और हर तबके के लोग सफर में शरीक थे। फिर रास्ते में लोग उस काफिले में बढ़ते ही चले गये। नारा-ए-तकबीर की गूंज में मुसलमान मक्का के करीब पहुंचे। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन सारे लोगों के साथ मक्का के ऊंचाई वाले हिस्से से शहर में दाखिल हुए और खाना-ए-कअबा का तवाफ किया और सफा व मरवह की पहाड़ियों पर तशरीफ ले गये, उनकी चोटियों पर चढ़कर कअबा की तरफ रुख करके कलमाते तौहीद व तकबीर के नारे बुलन्द फरमाये, जो यह थे:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ اَنْجَزَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ۔ (مسلم)

"अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वो अकेला है। कोई उसका शरीक नहीं है, मुल्क उसी का है और तारीफ भी उसी के लिए लायक है और वो हर चीज पर कादिर है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वो अकेला है। उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की मदद फरमायी और उसने खुद (इस्लाम के दुश्मनों की) सारी फौजों को नीचा दिखलाया।"

मुसलमान भाईयों!

तारीख का यह बहुत ही बड़ा अजीब किआ है कि एक दिन तो वो था कि आप को मक्का में जिन्दगी गुजारना मुश्किल नजर आ रहा था और एक दिन आज है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वफादार सहाबा डेढ़ लाख के करीब मौजूद हैं और नारा-ए-तकबीर से सारा मक्का शहर गूंज रहा है। इतनी थोड़ी मुद्दत में इतना बड़ा रूहानी इंकलाब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई की ऐसी रोशन दलील है जिससे बढ़कर कोई दलील नहीं हो सकती।

अब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 9वें जिलहिज्जा को अरफात तशरीफ ले गये। दिन ढलने के बाद ना सिर्फ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बल्कि

आपके साथी एक लाख चालीस हजार की तादाद में सब दुआओं में लगे हुए थे और अल्लाह पाक की हम्दो सना के गीत गा रहे थे। इस अजीम मौके पर जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अजीम खुत्बा पेश फरमाया वो आपको सुनाया जा रहा है। यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाक जिन्दगी का आखरी अजीम खुत्बा है जिसके लफ्ज-लफ्ज हमेशा के लिए सीनों के लिए हिदायत है। अल्लाह तआला हम को इसे याद रखने और इसके मुताबिक अमल करने की तौफीक अता फरमाये। आमीन या रब्बुल आलमीन!

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहाड़ी पर चढ़कर और अपनी ऊंटनी कसवा पर सवार होकर अल्लाह की हम्दो सना के बाद फरमाया:

1. يَا اَيُّهَا النَّاسُ! لَا اَرَانِيْ وَاِيَّاكُمْ نَجْتَمِعُ فِيْ هٰذَا الْمَجْلِسِ اَبَدًا۔

2. اِنَّ دِمَائَكُمْ وَاَمْوَالَكُمْ وَاَعْرَاضَكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا، فِيْ بَلَدِكُمْ هٰذَا، فِيْ شَهْرِكُمْ هٰذَا، وَسَتَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ وَفَيَسْئَلُكُمْ عَنْ اَعْمَالِكُمْ، اَلَا فَلَا تَرْجِعُوْا بَعْدِيْ ضُلَّالًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ۔

3. اَلَا كُلُّ شَيْءٍ مِنْ اَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ تَحْتَ قَدَمَيَّ مَوْضُوْعٌ وَدِمَاءُ الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوْعَةٌ وَاِنَّ اَوَّلَ دَمٍ اَضَعُ مِنْ دِمَاءٍ نَادَمَ ابْنِ رَبِيْعَةَ بْنِ الْحَارِثِ كَانَ مُسْتَرْضِعًا فِيْ بَنِيْ سَعْدٍ فَقَتَلَهٗ هُذَيْلٌ وَّرِبَا الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوْعَةٌ وَاَوَّلُ رِبًا اَضَعُ رِبَانَا رِبَا عَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ۔

4. فَاتَّقُوا اللّٰهَ فِي النِّسَآءِ فَاِنَّكُمْ اَخَذْتُمُوْهُنَّ بِاَمَانِ اللّٰهِ وَاسْتَحْلَلْتُمْ فُرُوْجَهُنَّ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ وَلَكُمْ عَلَيْهِنَّ اَنْ لَّا يُوْطِئَنَّ فُرُوْشَكُمْ اَحَدًا

تَكْرَهُوْنَهُ فَإِنْ فَعَلْنَ ذٰلِكَ فَاضْرِبُوْهُنَّ ضَرْبًا غَيْرَ مُبَرِّحٍ وَلَهُنَّ عَلَيْكُمْ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ۔

5. وَقَدْ تَرَكْتُ فِيْكُمْ لَنْ تَضِلُّوْا بَعْدَهُ اِنِ اعْتَصَمْتُمْ بِهٖ كِتَابُ اللّٰهِ (وفی روایة قال) تَرَكْتُ فِيْكُمْ اَمْرَيْنِ لَنْ تَضِلُّوْا مَا تَمَسَّكْتُمْ بِهِمَا كِتَابُ اللّٰهِ وَسُنَّتِيْ۔

6. يَا اَيُّهَا النَّاسُ اِنَّهُ لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ وَلَا اُمَّةَ بَعْدَكُمْ اَلَا فَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَصَلُّوْا خَمْسَكُمْ وَصُوْمُوْا شَهْرَكُمْ وَاَدُّوْا زَكٰوةَ اَمْوَالِكُمْ طَيِّبَةً بِهَا اَنْفُسُكُمْ وَتَحُجُّوْنَ بَيْتَ رَبِّكُمْ وَاَطِيْعُوْا وُلَاةَ اَمْرِكُمْ تَدْخُلُوْا جَنَّةَ رَبِّكُمْ۔

7. وَاَنْتُمْ تُسْأَلُوْنَ عَنِّيْ فَمَا اَنْتُمْ قَائِلُوْنَ؟ قَالُوْا نَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ وَاَدَّيْتَ وَنَصَحْتَ۔ فَقَالَ بِاِصْبَعِهِ السَّبَابَةِ يَرْفَعُهَا اِلَى السَّمَآءِ وَيَنْكُتُهَا اِلَى النَّاسِ "اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ" ثَلَاثَ مَرَّاتٍ اَلَا لِيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ فَلَعَلَّ بَعْضَ مَنْ يُّبَلَّغُهُ اَنْ يَّكُوْنَ اَوْعٰى مِنْ بَعْضِ مَنْ سَمِعَهُ۔ (منقول از رحمة للعالمين)

मुसलमान भाईयों!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस अजीमुश्शान तारीखी मौके पर जो कुछ कहा, उन सबको अलग-अलग किताबों में नकल किया गया है। इस खुत्बे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरामीने आलिया पर नम्बर डाल दिये गये हैं ताकि आप हजरात के समझने में आसानी हो। हर हर नम्बर एक पूरे पाठ की हैसियत रखता है। जिसके पूरे खुलासे के लिए दफातिर भी नाकाफी हैं। अब गौर से इन फरामिने आलीशान का मतलब सुनिये और याद रखिये अल्लाह पाक अमल करने की तौफीक अता करे। आमीन! वजाहत भी नम्बरवार पेश की जा रही है।

1. ऐ लोगों! मैं देख रहा हूँ कि अब इस जगह हम और आप कभी भी जमा ना हो सकेंगे।

आप ने यह फरमाकर अपनी जुदाई का एलान इसलिए फरमा दिया कि सूरह ''इजा-जा-अ नसरुल्लाहि वल-फतहु'' उतर चुकी थी। जिसमें अल्लाह पाक ने खबर दी थी कि ऐ नबी, अब दीने इस्लाम के मुताल्लिक हमारा वादा पूरा हो गया, इस्लाम अब अरब में चारों तरफ फैल चुका है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मिशन पूरा हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरत के सफर की तैयारी करें। इसी खबर की बिना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बात फरमायी जो पूरी हुई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ ही दिनों बाद दुनिया से चले गये।

''अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव व-अला
आलि मुहम्मदिव व-बारिक वसल्लिम''

2. बेशक तुम्हारे खून और तुम्हारे माल और तुम्हारी इज्जतें उतनी ही हुरमत और इज्जत रखती हैं जितनी आज तुम्हारे इस दिन को तुम्हारे इस महीने को, तुम्हारे इस शहर मक्का को हासिल है। खबरदार! आपस में खून रेजी ना करना, आपस के माल न लूटना, कभी भाई की बे-इज्जती ना करना, करीब है कि अल्लाह पाक से तुम भी मिलोगे, वो तुम्हारे कामों के बारे में तुम से पूछेगा, खबरदार, मेरे बाद भटक ना जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद इस काबिल था

कि हर मुसलमान उसे अपने जहन व दिमाग में जगह देता और इसका एहतराम करता, मगर अफ़सोस कि थोड़े दिनों बाद मुसलमान इस इरशादे गिरामी को भूल गया, तारीख में जितनी भी मुसलमानों की खाना जंगियां मौजूद हैं, उनको पढते हुए अफसोस होता है कि मुसलमान इस कद्र जल्द अपने प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुकमों को छोड़ बैठे और सद-अफसोस कि अभी तक हमारी यह आपस की लड़ाईयां जारी हैं। अल्लाह पाक मुसलमानों को समझ अता करे। आज दुश्मनाने इस्लाम दिन-ब-दिन इनके सीनों पर सवार हो रहे हैं, बैतुल मुकद्दस यहूदियों के कब्जे में है और मुसलमान आपस के इख्तिलाफात में डूबकर अंजाम से गाफिल हो रहे हैं। अल्लाह पाक नेक समझ अता करे। आमीन या रब्बुल आलमीन!

3. लोगों! सुन लो और खबरदार हो जाओ! मैंने जाहिलियत की हर बुरी बात को अपने पैरों के नीचे कुचल दिया है और जाहिलियत में जो हमारे आपस में खून हुए, सबको भूला दिया है, जिनमें सबसे पहला खून इब्ने रबिया बिन हारिस का खून है जो बनू साद कबीला में एक दाया के यहां दूध पीता हुआ हुजैल के हाथों कत्ल हुआ। अब मैं इस खून का बदला माफ करता हूँ और साथ ही जाहिलियत का सूद-ब्याज लोगों पर चढ़ा हुआ है वो भी सब माफ करता हूं। जिसमें पहला ब्याज हजरत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का है, मगर मैं इसे भी अपने पैरों के नीचे कुचल देता हूँ।

हर दो बातों में अमन आम की तरफ इरशाद था। अरब की लड़ाईयों में ऐसी ही चीजों का दखल हुआ करता था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लड़ाईयों का दरवाजा बन्द करने के लिए जाहिलियत की हर दो यादों को पैरों के नीचे कुचल कर सारी दुनिया के अमन का एलान फरमा दिया।

बिरादराने मिल्लत!

गौर कीजिए आखिरी खुत्बाते आम में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस जिम्मेदारी के साथ ना सिर्फ अरब को बल्कि सारी इन्सानियत को अमन व अमान का पैगाम पेश फरमा रहे हैं। कत्लो गारत का किस तरह दरवाजा बन्द कर रहे हैं और सरमायादारी, सूदखोरी का किस तरह दुनिया से नामो निशान मिटा रहे हैं। बेशक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना फर्ज़े रिसालत पूरा कर दिया। अब आगे मामला अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह पाक

आप पर हमारी तरफ से बेशुमार दरूद सलाम नाजिल फरमाये। आमीन!

4. ऐ लोगों! औरतों के बारे में अल्लाह से डरो। तुमने अल्लाह के अमान के साथ उनको बीवी बनाया है। अल्लाह का नाम लेकर उनको अपने घरों में अल्लाह के वादे के साथ दाखिल किया है। उस वादे को पूरा करो। और अल्लाह पाक का कलाम पढ़कर, सुनकर तुमने उनकी शरमगाहों को अपने लिए हलाल किया है। और उन पर तुम्हारा हक यह है कि तुम्हारे पीठ पीछे किसी भी गैर आदमी को वो तुम्हारे घर के अन्दर कदम ना रखने दें। क्योंकि वो तुम्हारे घरों की और अपनी इज्जत व आबरू की हिफाजत करने वाली हैं। इस बारे में अगर वो तुम्हारी मर्जी के खिलाफ करें तो तुम को उनके धमकाने और मारने का इख्तियार है। मगर इस मारपीट का चर्चा घर से बाहर ना जाना चाहिए और याद रखो, उनका तुम पर हक है कि कपड़े और खुराक में उनका पूरा ख्याल रखो, वो भूखी ना रहे और ना नंगी। यह उनका तुम पर हक है। औरत से मुताल्लिक पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस कद्र नेक वसीयतें फरमायी हैं, वाक्या है कि इस बुनियाद पर दुनिया में औरतों को वो मुकाम हासिल हुआ है जो इस्लाम से पहले ना किसी महजब ने उनको दिया और ना दुनिया के कानून ने। इस्लाम की बरकत है कि आज औरत अपनी जात की मालिक है, मुख्तार है, आजाद है। इस्लाम ने औरत को घर की मालिक करार दिया है। तरक्की में उनका हक रखा है।

5. लोगों! याद रखो, मैं तुम्हारे अन्दर अल्लाह की किताब ''कुरआन मजीद'' छोड़कर जा रहा हूँ। एक रिवायत के मुताबिक यह कि मैं तुमको दो चीजें देकर जा रहा हूँ, जब तक इन पर अमल करोगे, हरगिज गुमराह ना होंगे। एक अल्लाह की किताब ''कुरआन मजीद'' है और दूसरी चीज मेरी ''सुन्नत'' है। इन दोनों पर मजबूती से अमल करना, उनको अपना मजहब व मकसद बनाना इस तरह तुम ठीक रहेगो, उनको छोड़ दोगे, गुमराह हो जाओगे। वाक्य यह है कि जब तक मुसलमान सिर्फ मुसलमान रहे, कुरआन व सुन्नत उनके सामने रहा, वो पूरी दुनिया में सैलाब बनकर फैलते रहे और जब उनसे हट कर वो मुख्तलिफ फिरकों में बंट गये, अपने अपने इमाम अलग अलग बनाकर अलग अलग टुकड़ों में बट गये, उनकी हवा उखड़ गयी और नतीजा वो हुआ जो आज चौहदवीं सदी के खात्मे पर उम्मत अपनी जिल्लत पर पस्ती की सूरत में दिख रही है। तकलीद की बीमारी उनके रगो रेशा में ऐसी लगी हुई है कि निकलने का नाम ही नहीं लेती।

6. ऐ लोगों! खूब गौर से सुन लो! अब कयामत तक मेरे बाद कोई और नबी आने वाला नहीं है और ना तुम्हारे बाद और कोई नई उम्मत दुनिया में कयामत तक पैदा होने वाली है। खबरदार! खालिस अपने रब की इबादत करते रहो और पांचों वक्त की नमाज पाबन्दी के साथ अदा करते रहो और माहे रमजान के रोजे रखते रहो और अपने मालों की जब वो निसाब को पहुंच जाये, ज़कात अदा करते रहो। यह जकात तुम को निहायत खुश दिली के साथ अदा करनी चाहिए। दिल में किसी तंगी का दखल ना हो और अपने रब के घर का हज करते रहो और अपने खलीफये इस्लाम के साथ वफादारी का मामला रखो। कभी भी उम्मत में बगावत को राह ना दो।

इन नसीहतों पर अमल करोगे तो मरने के बाद तुम जरूर अपने रब की जन्नत में दाखिल हो जाओगे।

7. लोगों! कयामत के दिन तुम से मेरे बारे में सवाल होगा, बतलाओ तुम क्या कहोगे उस सवाल के जवाब में, एक लाख चालीस हजार जुबानों ने बुलन्द आवाज में नारा लगाया कि बेशक व शुबा अल्लाह के महबूब रसूल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरे तौर पर हम को इस्लाम पहुंचा दिया, अपना हक अदा कर दिया। हमारी खैर-ख्वाही में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई कमी नहीं रखी। हम कयामत के दिन भी बुलन्द आवाज में यही कहेंगे। यह सुनकर अल्लाह के महबूब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आसमान की तरफ अपनी अंगूली बुलन्द की और भीड़ की तरफ भी इशारा फरमाया और बुलन्द आवाज में कहा कि ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना, ऐ अल्लाह तू गवाह रहना, ऐ अल्लाह तू गवाह रहना, ऐ अल्लाह तू गवाह रहना।

8. आखिर में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म फरमाया कि लोगों जो हाजिर हो तुम्हारा फर्ज है कि जो मुसलमान यहां हाजिर नहीं है, उन तक यह मेरे पैगामात पहुंचा दो। इसलिए कि कई बार हाजिर होने वाले इस कद्र याद नहीं रख पाते जिस कद्र गैर हाजिर वाले बाद में सुनकर याद रख पाते हैं।

इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद था कि मेरा यह खुत्बा या मेरी तालिमात कयामत तक आने वाली नस्लों को मालूम होनी जरूरी हैं, वो इस तरह कि हर मौजूद शख्स आइन्दा आने वालों को यह तालिमात पेश करता रहे। उनको सिखाता-पढ़ाता रहे ताकि यह सिलसिला जारी रहे।

इस्लामी भाईयों!

जी तो चाहता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस आखरी अजीम खुत्बे पर दिल खोलकर कुछ कहूं। मगर वक्त की तंगी इजाजत नहीं दे रही है। बहरहाल जो भी कहा गया है, समझने के लिए बहुत काफी है। हमारा फर्ज है कि हम इस पर गौर करें, इसे याद रखें और इस पर अमल करने का अल्लाह से वादा करे।। इसी से हम दुनिया व आखिरत में इज्जत हासिल कर सकेंगे।

या अल्लाह! तू हमारी यह दुआयें कबूल करना। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ ھٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ لِیْ وَلَکُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा-ए-हज्जतुल विदा के मौके पर साबिक रईस शऊन अल-हरमैन, चीफ जस्टिस अदालत आलिया रियाज, सदर फिकही राब्ता कमेटी शैख अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन हमीद. रहमतुल्लाह. अलमुतवफ्फी 1402 हि. की अहम तरीन इल्मी व तेहकीकी किताब, अलबदाअ शरह खुत्बा-ए-हज्जतुल विदा'' का उर्दू तर्जुमा अज हजरत उस्ताज मौलाना रफीक अल-असरी, हिफजहुल्लाह मकतब अलसुन्ना की तरफ से 96 सफहात पर 4 कलर टाईटल के साथ छपकर मार्केट में आ चुकी है। इसको पढ़कर अपने ईमान में ज्यादती करें। (अल असरी)

खुत्बा नम्बर 26

खुत्बा सफर के महीने की बिदअतें और रस्मों के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ (الشورى ٤٢)

(सूरह अल शूरा: 25, आयत 21)

"क्या इन मुश्रिकों के लिए कुछ ऐसे (अल्लाह के साथ) बनावटी शरीक हैं जिन्होंने दीन के अन्दर उनके लिए ऐसी ऐसी बातें दाखिल कर दी हैं जिनकी अल्लाह पाक ने कोई इजाज़त नहीं दी और अगर अल्लाह की तरफ से एक फैसले का वक्त ना तय होता (यानी कयामत) तो उन (दीन के नाम पर नित नई बिदआत जारी करने वालों) का दुनिया ही में जल्द फैसला कर दिया जाता (मगर कुदरत का कानून यह है कि ऐसे सारे फैसले कयामत के दिन तय किये जायेंगे, लिहाजा सुन लो! बेशक जालिमों के लिए बहुत ही दर्दनाक अजाब तैयार किया गया है।"

अल्लाह पाक की शान के मुताबिक हम्द और उसके महबूब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बेशुमार दुरूद व सलाम के बाद।

बुजुर्गाने इस्लाम और नौजवानाने मिल्लत!

कुरआन शरीफ की आयते शरीफा जो आपने तर्जुमे के साथ खुत्बे में सुनी है, यह सूरह शूरा की आयत है जो मक्का में उतरी। मक्की सूरतें वो कहलाती हैं जो हिजरत से पहले उतरी हैं और हिजरत के बाद उतरने वाली सूरतों को मदनी कहा गया है। मक्का वालों ने शरीअत इब्राहीमी के नाम पर बहुत सी बिदआत बल्कि शिर्क व कुफ्र की बातों को दीने इब्राहीम में दाखिल कर दिया था, अल्लाह

पाक ने उनकी इस हरकत पर सख्त डांट पिलायी और बतलाया कि हरकत इतनी बुरी है कि अगर कयामत का दिन फैसले के लिए तय ना होता तो हम फौरन ही उनकी ऐसी हरकतों की सजा उनको दुनिया ही में दे देते। उनकी बुरी हरकतों में से एक यह हरकत भी थी कि अपने मतलब के लिए महीनों का उलट फैर कर लिया करते थे, मुहर्रम में लड़ना झगड़ना मना था, लेकिन अगर उनको लड़ाई करनी होती तो मुहर्रम को सफर बना देते और सफर को मुहर्रम मान लेते और ऐसे हीले बहानों से दीने इब्राहीम को उलट-पलट कर दिया करते थे।

हजरात!

सफर का महीना मुहर्रम के बाद सन हिजरी का दूसरा महीना है। सफर के मायने खाली के हैं, इसी से उर्दू में लफ्ज ''सफर' नुक्ता के लिए निकला हुआ है। मुश्रिकीन का ख्याल था कि यह महीना खैरो बरकत से खाली है, बल्कि इसे वो मनहूस जाना करते थे। इसमें शादी ब्याह ना करते और ना ही कोई और बड़ा काम करते, ताकि इसमें नहूसत ना आ जाये। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साफ लफ्जों में ऐलान फरमाया:

لَا عَدْوَیٰ وَلَا هَامَّةَ وَلَا صَفَرَ ۔ (بخاری)

यानी ''बगैर अल्लाह के हुक्म के किसी की बीमारी किसी दूसरे को नहीं लगती, ना बुरे शगून लेना दुरुस्त है और ना सफर का महीना मनहूस है।''

मक्का वाले आमतौर पर इस माहे सफर में लूट-मार, लड़ाई-झगड़े, डाकाजनी वगैरह के लिए सफर में निकल जाते, घर खाली छोड़ देते और कहते ''स-फ-रल मकानु'' यानी 'माहे सफर आया और मकान खाली हो गये।''

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन सारे ख्यालात का रदद किया और इरशाद हुआ कि सफर को मनहूस जानना गलत है।

अफसोस! कि माहे सफर के बारे में नाम निहाद मुसलमानों ने भी ऐसे गलत ख्यालात को दिल में जमा लिया है। सफर के लिए ''तेरा-तेजी'' की इस्तलाह लोगों में मशहूर है। यानी यह ख्याल कि शुरू के तेरह दिन बहुत तेज हैं, मनहूस हैं, उनमें शादी ब्याह वगैरह ना होना चाहिए बल्कि उन दिनों को नहूसत दूर करने के लिए चने उबालकर बांटते हैं और इस तरह इन तेरह दिनों की नहूसत दूर करते हैं। ''नऊजु बिल्लाहि मिन जालि-क''

दोस्तों!

यह उन लोगों का हाल है जो मुसलमान कहलाते हैं, सुन्नी बनते हैं, इसी महीने की आखरी बुध को कुण्डे भरने का त्यौहार बना रखा है, समझते हैं कि इस आखरी बुध को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सेहत पाकर बाहर घुमने के लिए निकले थे। उनके इस तरह खुश होने पर यह खुशी मनायी जाती है। हालांकि तारीख की रू से यह ख्याल बिलकुल गलत है। वाकिआ यह है कि माहे सफर के आखरी हफ्ते से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मौत की बीमारी शुरू हुई थी। पस कुण्डे करने वालों का तारीख की रू से भी ख्याल गलत बल्कि मनघड़त है, ऐसी ही हरकतों के लिए लफ्ज बिदअत बोला गया है। जो लोग सफर को मनहूस जानते हैं और शुरू तेरह तेजी मनाते हैं और आखिर में कुण्डे का त्यौहार मनाते हैं। शरीअत की रू से ऐसे लोग यकीनन बिदअती हैं, और बिदअती के लिए जो जो धमकियाँ हदीसों में आयी हैं, उन सबके हकदार ऐसे ही लोग हैं। अल्लाह पाक हर मुसलमान को बिदअत से बचाकर सुन्नत पर चलने की तौफीक बख्शे और बिदअत वालों की बजाये हमको सच्चे सुन्नत वाले बनाये। आमीन!

प्यारे भाईयों!

जैसाकि आपने सुना है, मुसलमानों में हर माह बहुत सी बिदआत जारी हो गयी हैं, जिनका छोड़ना बहुत जरूरी है। मरने वालों पर तीजा, फातेहा, चहल्लम करना, पैदा होने पर अकीके के बजाये छटी करना, मुहर्रम में ताजियादारी, शअबान में शबे-बरात मनाना और कितने ही मेले, कब्रों पर उर्स निकाल लिये गये हैं जो सरासर बिदअत है, बिदअत की बुराई के लिए यही काफी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हर खुत्बे में फरमाया करते थे:

أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللّٰهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ وَشَرَّ الْأُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَكُلَّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ۔

हम्दो सना के बादः

"लोगों याद रखो! बेहतरीन किताब तुम्हारे लिए अल्लाह की किताब कुरआने मजीद है और बेहतरीन तरीका तुम्हारे लिए वो है जो हजरत मुम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीका है और बदतरीन काम वो है जो दीन में नये निकाले जायेंगे, ऐसे सब नये काम बिदअत हैं और हर बिदअत गुमराही है और हर एक गुमराही दोखज में ले जाने वाली है।"

मालूम हुआ कि बिदअत वो काम है जो दोजख में जलने का सबब बनेगा। लिहाजा जरूरी है कि हर मुसलमान बन्दा बिदअत से हर वक्त बचता रहे। एक और इरशादे नबवी सुनिए जो बिदअत के रदद में बहुत बड़ी अहमियत रखता है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَبْغَضُ النَّاسِ اِلَى اللّٰهِ ثَلَاثَةٌ: مُلْحِدٌ فِي الْحَرَمِ، وَمُبْتَغٌ فِي الْاِسْلَامِ سُنَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ، وَمُطَّلِبُ دَمَ امْرِئٍ مُسْلِمٍ بِغَيْرِ حَقٍّ لِيُهْرِيْقَ دَمَهُ۔ (رواه البخاری)

"हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह के नजदीक तीन किस्म के लोग बहुत ही बड़े लानती (मरदूद) हैं, जिन पर अल्लाह का गजब नाजिल होता है, पहला वो शख्स जो हरम शरीफ बैतुल्लाह में जुल्मो-ज्यादती गुनाह बे-दीनी के काम करने वाला हो, दूसरा जो इस्लाम में जाहिलियत की बातें जारी करना चाहे, जिससे बिदअत मुराद है। तीसरा वो शख्स जो अपने किसी मुसलमान भाई का नाहक खून बहाये। यह तीनों किस्म के लोग अल्लाह के नजदीक बहुत ही बदतर हैं बल्कि मलऊन (मरदूद) हैं।

बुजुर्गो, दोस्तों और अजीजों!

माहे सफर और दूसरे महीनों की बिदआत ने माली तौर पर भी मुसलमानों को तबाह करके रख दिया है। क्योंकि इन बिदअतों को अंजाम देने में काफी पैसे खर्च करते हैं। जिस बिदअत को देखो सन्दल को, उर्स को देखो, मौलूद को देखो, ग्याहरवें, सत्रहवें को देखो, हर हर बिदअत अंजाम देने में काफी खर्च होता है। अगर यही पैसा मुसलमानों के तालीमी, तबलीगी कामों पर खर्च किया जाये तो कितने बेहतर नतीजे निकल सकते हैं। मगर मुसलमान हैं जो आंखों पर पट्टी बांधे हुए, बिना सोचे समझे, लकीर के फकीर बने हुए हैं। कोई साफ नियत से समझाये तो उसे वहाबी, ला-मजहब वगैरह नामों से याद करते हैं। आज मुसलमान कौम जिहालत व जलालत की टीबी में चौथे दर्जे को पहुंच गयी है, और बीमारी बढ़ती गई, ज्यों ज्यों दुआ की, की मिसदाक हो रही है। लिहाजा बिरादराने

मिल्लत का फर्ज हे कि वो मुसलमानों को इन बीमारियों से निजात दिलायें, उनको सही रास्ते पर लाने की कोशिश करें, जिस पर सहाबा और बुजुर्गाने दीन गुजरे हैं और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद गिरामी याद दिलायें जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आखरी वक्त में मुसलमानों को वसीयत के तौर पर फरमाया था।

تَرَكْتُ فِيكُمْ اَمْرَيْنِ لَنْ تَضِلُّوا مَا تَمَسَّكْتُمْ بِهِمَا كِتَابُ اللهِ وَسُنَّتِيْ۔ (مؤطا امام مالك)

(मुअत्ता इमाम मालिक)

''मैं तुम्हारे बीच दो चीजें छोड़कर जा रहा हूँ, जब तक इन पर अमल करते रहोगे, हरगिज गुमराह ना होगे, एक अल्लाह की किताब ''कुरआन मजीद'' है और दूसरी चीज मेरी ''सुन्नत'' है।

पस किताब व सुन्नत को हर वक्त सामने रखना, बाल बराबर भी इधर उधर ना होना, क्योंकि यही सिराते मुस्तकीम है, इसी राह पर चलने से अल्लाह की खुशी हासिल होगी।

दीनी भाईयों।

सफर के अलावा रबीअ उल अव्वल में ईद मीलाद करना, बारह वफात का त्यौहार मनाना, मीलाद की मजलिसें करना, ग्यारहवीं के नाम से हजरत ख्वाजा बगदादी रहमतुल्लाह की नजरो-नियाज करना, सत्रहवीं करना, यह सारे काम ऐसे ही हैं जिनका शरीअते इस्लामिया में कोई सबूत नहीं है। सलफ सालेहीन में इन रस्मों का कोई रिवाज नहीं था। अहदे रिसालत व अहदे सहाबा व ताबेईन के मुसलमान इन रस्मों का नाम भी नहीं जानते थे, ना अइम्मा मुजतहिदीन हजरत इमाम अबू हनीफा, हजरत इमाम शाफअी वगैरहम रहम-हुमुल्लाह से इन कामों का कोई सबूत है। इसलिए खुद-ब-खुद नयी नयी चीजें निकालकर इस्लाम का हुलिया बिगाड़ना यह शरीअते इस्लामी के साथ गद्दारी है। जिसमें कितने ही मुसलमान नाम के उलमा व सूफिया वगैरह गिरफ्तार हैं। इन खिलाफे शरीअत रसमों को मिटाना बहुत बड़ा जिहाद है, सुन्नत और बिदअत में यही इम्तियाज है, जो आग और पानी है। लिहाजा सुन्नत को जारी करना और बिदअत को मिटाना बहुत ही बड़ा सवाब है।

बिरादराने इस्लाम!

दूसरों को तब्लीग करने से पहले अपने घर की खबर लो। अपने भाईयों को सुधारो, उनको सच्चे मुसलमान बनाओ। यह इस्लाम की बहुत बड़ी खिदमत है और इन खुराफात पर जुबान ना खोलना बल्कि खामोशी के साथ इनमें शिरकत करना बहुत बड़ा जुर्म है।

अल्लाह पाक हर मुसलमान को बिदअत और खुराफात के कामों से बचाये और सब को सच्ची तौहीद और सुन्नत वाला बनाये और इस्लाम के नौजवानों को तौफीक दे कि वो इन फिजूल कामों के खिलाफ आम बगावत करके नए सिरे से मजबूती देने की कोशिश करें। आमीन या रब्बुल आलमीन!

بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ـ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 27

खुत्बाः आपस के मेल-जोल और भाईचारे की बड़ाई के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ (اٰل عمران ٣)

(सूरह इमरानः 102-103, पारा 3)

अल्लाह की तारीफ और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम के बाद। आयत खुत्बा का तर्जुमा।

"ऐ ईमान वालों! अल्लाह से ऐसा डरो जैसे डरने का हक है और मत मरो मगर मुसलमान होकर और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूत पकड़ लो और आपस में फूट मत डालो और अल्लाह के अहसान और ईनाम को याद रखो कि आपस में तुम दुश्मन थे। अल्लाह ने तुम्हारे दिल मिला दिये कि आपस में तुम भाई-भाई हो गये।"

हजरात!

आज का खुत्बा आपस के मेलजोल की जरूरत पर है। आयत खुत्बा मदीना के कबाइल औस और खजरज के बारे में उतरी थी जो इस्लाम से पहले आपस में लड़ते चले आ रहे थे, जिसकी वजह से दोनों कबीलों के बेशुमार लोग मौत के घाट उतर चुके थे। अल्लाह ने जब उन कबीलों को इस्लाम की दौलत बख्शी तो यह आपस में भाई-भाई हो गये। यही कबीले वो हैं जो तारीखुल इस्लाम में अनसार के

नाम से याद किये गये हैं। मुसलमानों के लिए आपसी मेल-जोल बहुत ही जरूरी है। आजकल जिन हालात से हम गुजर रहे हैं उनमें इस जरूरत का अहसास हर दर्दमन्द मुसलमान के दिल में होना चाहिए। कुरआन व हदीस में बहुत से मकामात पर मुसलमानों को आपस में मिल कर रहने का हुक्म दिया गया है और आपस के लड़ाई झगड़े से रोक दिया गया है, जैसाकि सूरह अनफाल में है:

وَاَطِيۡعُوا اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوۡا فَتَفۡشَلُوۡا وَتَذۡهَبَ رِيۡحُكُمۡ وَاصۡبِرُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيۡنَ ۚ (الانفال ٨)

(सूरह अल अनफालः 46, पारा 9)

यानी अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानो और आपस में झगड़ा मत करो। अगर आपस में फूट होगी तो कमजोर हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।"

यानी यह बात सब्र के साथ बन सकती है। मसलन कभी कोई शख्स बेवकूफी कर बैठता तो दूसरे ने सब्र कर लिया, फिर बिगाड़ ना होगा। इसलिए कि बदसुलूकी के बदले में अगर सुलूक व मेहरबानी की जाये तो कैसा ही सख्त दिल इन्सान हो, वो भी नरम हो जाता है। अल्लाह तआला ने सूरह हामीम सज्दा में फरमाया है:

اِدۡفَعۡ بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ فَاِذَا الَّذِىۡ بَيۡنَكَ وَبَيۡنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيۡمٌ ۔

तर्जुमा- यानी कोई तुझको सताये उसके बदले में तू उसको मत सता, बल्कि अच्छा सुलूक करो, तेरा गहरा दोस्त बन जायेगा।"

और सूरह बकरा में है

وَلَا تَنۡسَوُا الۡفَضۡلَ بَيۡنَكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ۝ (البقرة ٢)

(सूरह अल बकराः 237, पारा 2)

यानी "तुम आपस में सुलूक और मेहरबानी करते रहा करो, अल्लाह तआला तुम्हारे काम देख रहा है।"

यानी अगर ऐसा कभी कभार हो जाये कि कोई अहसान भुलाकर सुलूक के बदले बदसुलूकी करे तो भी तुम उसके साथ अच्छा सुलूक करना मत छोड़ो, क्योंकि अल्लाह तआला जो इस काम को देखता है, वो एहसान फरामोश को

हिदायत कर सकता है। इसीलिए अल्लाह तआला ने हामीम सज्दा में फरमाया है:

وَمَا يُلَقّٰهَا اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾

(حٰمٓ السَّجْدَة ٤١)

(सूरह हामीम सज्दह: 35, पारा 24)

"और यह बात उन्हीं को नसीब होती है जो सब्र वाले हैं और जो बहुत खुशनसीब लोग होते हैं।"

और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ فِيْ تَرَاحُمِهِمْ وَتَوَادِّهِمْ وَتَعَاطُفِهِمْ كَمَثَلِ الْجَسَدِ اِذَا اشْتَكٰى عُضْوٌ تَدَاعٰى لَهٗ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمّٰى۔ (مشکوٰۃ) [بخاری۔ الادب، مسلم۔ البر والصلة)

(मिश्कात, बुखारी, अलअदब, मुस्लिम, अलबिर्रू वस्सिलह)

यानी "मुसलमान उनको जानो जो आपस की मुहब्बत और खैरख्वाही में एक जिस्म की तरह हों, जिस तरह जिस्म के एक हिस्से में तकलीफ होने से सारे जिस्म को दर्द पहुंचता है, उसी तरह एक मुसलमान को तकलीफ हो तो सब मुसलमानों को उसका दर्द पहुंचे।"

और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

لَا تَقَاطَعُوْا وَلَا تَدَابَرُوْا وَلَا تَبَاغَضُوْا وَلَا تَحَاسَدُوْا وَكُوْنُوْا عِبَادَ اللّٰهِ اِخْوَانًا وَلَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ اَنْ يَّهْجُرَ اَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثٍ۔ (ترمذی)

यानी "आपस में मेल-मिलाप ना छोड़ो, एक दूसरे से नाराज मत रहो और आपस में दुश्मनी और जलन ना करो। सब मिलकर अल्लाह तआला के बन्दे और आपस में भाई भाई बने रहो और किसी मुसलमान को जायज नहीं कि अपने भाई से तीन दिन से ज्यादा नाराज रहे।"

और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ لَا یُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰی یُحِبَّ لِاَخِیْهِ مَا یُحِبُّ لِنَفْسِهٖ

(مشکوٰة) [احمد، بخاری الایمان، و مسلم۔ الایمان]

(मिश्कात, अहमद, बुखारी अल ईमान, व मुस्लिम अल ईमान)

यानी ''उस जात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है कि कोई शख्स पूरा ईमानदार ना होगा जब तक कि उसमें यह खूबी ना होगी कि जैसा अपना भला चाहता है, वैसा ही अपने भाई मुसलमान का भला चाहे।''

और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

اَلَا اُخْبِرُکُمْ بِاَفْضَلَ مِنْ دَرَجَةِ الصِّیَامِ وَالصَّدَقَةِ وَالصَّلَاةِ؟ قُلْنَا

بَلٰی، قَالَ: اِصْلَاحُ ذَاتِ الْبَیْنِ وَفَسَادُ ذَاتِ الْبَیْنِ هِیَ الْحَالِقَةُ۔ (مشکوٰة)

[ترمذی، صفة القیامة، ابوداؤد، الادب، احمد]

(मिश्कात, तिर्मिजी, सिफ्तुल कयामा, अबू-दाउद, अदब व अहमद)

यानी ''फरमाया कि मैं तुमको ऐसी चीज ना बतला दूं कि जिसका दर्जा नफ्ली रोजों, खैरात और नफ्ली नमाजों से भी बढ़कर हो?हम ने कहा कि हां, जरूर बतलाइये। फरमाया: कि वो चीज आपस का सुलूक है और आपस की फूट ऐसी बला है कि नेकियों को ऐसा बर्बाद कर देती है, जैसा उस्तरा बालों को मुण्ड डालता है। कुछ भी बाकी नहीं छोड़ता।''

बिरादराने इस्लाम!

अल्लाह पाक ने कुरआने मजीद की सूरह फतह में सच्चे मुसलमानों की कुछ निशानियाँ बतलायी हैं। इरशाद होता है:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَی الْکُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ

(اَلْحُجُرٰت ۲۹)

(सूरह अल-फतह: 29, पारा 26)

यानी ''मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।

और जो आप के सच्चे साथी हैं, उनकी शान यह है कि वो काफिरों के मुकाबले पर बड़े ही सख्त हैं और आपस में एक दूसरे पर रहम खाते हैं।''

मालूम हुआ कि आपस की इस्लामी मुहब्बत एक सच्चे मुसलमान की बहुत बड़ी खूबी है।

अगला खुत्बा नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में इन हकाइक को बड़ी शान के साथ बयान किया गया है। जो गौर से सुनने के काबिल है।

عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِنَّ مِنْ عِبَادِ اللهِ لَاُنَاسًا مَا هُمْ بِاَنْبِيَآءَ وَلَا شُهَدَآءَ يَغْبِطُهُمُ الْاَنْبِيَآءُ وَالشُّهَدَآءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِمَكَانِهِمْ مِنَ اللهِ. قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللهِ! تُخْبِرُنَا مَنْ هُمْ؟ قَالَ: هُمْ قَوْمٌ تَحَابُّوْا بِرُوْحِ اللهِ عَلٰى غَيْرِ اَرْحَامٍ بَيْنَهُمْ وَلَا اَمْوَالٍ يَتَعَاطَوْنَهَا فَوَاللهِ اِنَّ وُجُوْهَهُمْ لَنُوْرٌ وَاِنَّهُمْ لَعَلٰى نُوْرٍ لَا يَخَافُوْنَ اِذَا خَافَ النَّاسُ وَلَا يَحْزَنُوْنَ اِذَا حَزِنَ النَّاسُ وَقَرَأَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ. (اَلَا اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ) (رواه ابوداؤد)

''हजरत उमर रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कुछ अल्लाह के बन्दे इस शान वाले हैं कि वो नबी और रसूल होंगे, ना शहीद होंगे, मगर अज्रो सवाब और दर्जात के लिहाज से कयामत के दिन अम्बिया और शहीद भी उनको देखकर रश्क करेंगे। अल्लाह के यहां उनको बहुत बड़ी जगह मिलेगी। लोगों ने कहा, या रसूलुल्लाह वो कौन खुशनसीब होंगे?उनकी जरा खबर दीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह वो लोग होंगे जो महज अल्लाह की मुहब्बत में डूब कर अल्लाह वालों से भी सच्ची मुहब्बत रखते हैं और उनके दरमियान आपस में कोई रिश्ता नाता ना होगा, ना लेन-देन का ताल्लुक होगा, मगर फिर भी वो आपस में इन्तिहाई प्यार व मुहब्बत रखने वाले बन्दे होंगे। कसम है अल्लाह की, उनके चेहरे पर नूर होगा और उस

दिन कोई डर नहीं होगा, जिस दिन सारे लोग डरे हुए होंगे। ना उनको उस दिन कोई गम व फिक्र होगा, जिस दिन लोग गम व फिक्र में डूबे हुए होंगे। उस वक्त आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फरमायी, जिसका तर्जुमा यह है ''खबरदार सुन लो! बेशक औलिया अल्लाह पर कयामत के दिन ना कोई खौफ होगा और ना वो गमजदा होंगे।''

इस हदीस से मालूम हुआ कि सिर्फ इस्लामी भाईचारा व मुहब्बत की बिना पर आपस में मुख्लिसाना ताल्लुकात रखना अल्लाह के यहां बहुत ही बड़ा सवाब का काम है और इस्लाम का नाम लेते हुए फिर आपस में जलन दुश्मनी रखना ना-इत्तेफाकी पैदा करना, झगड़े-फसाद बरपा करना है। इस बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गरामी भी सुन लो। अल्लाह पाक अमल की तौफिक बख्शे। आमीन!

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ یُفْتَحُ اَبْوَابُ الْجَنَّةِ یَوْمَ الْاِثْنَیْنِ وَیَوْمَ الْخَمِیْسِ فَیُغْفِرُ لِکُلِّ عَبْدٍ لَا یُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَیْئًا اِلَّا رَجُلٌ كَانَتْ بَیْنَهٗ وَبَیْنَ اَخِیْهِ شَحْنَآءُ فَیُقَالُ اَنْظِرُوْا هٰذَیْنِ حَتّٰی یَصْطَلِحَا۔ (رواہ مسلم)

यानी ''हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हर पीर व जुमेरात के दिन जन्नत के दरवाजे खोल दिये जाते हैं और हर उस बन्दे को बख्श दिया जाता है, जिसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना किया हो। मगर वो आदमी नहीं बख्शे जाते जिनके दिलों में आपस में जलन व दुश्मनी भरी हुई हो। कहा जाता है, उनको छोड़ दो जब तक यह आपस में सुलह सफायी ना कर लें।''

मुसलमान भाईयों!

कुरआने मजीद की आयत और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस तो आप सुन चुके हैं। अब खुद सोचने का मुकाम है कि आज आपस के मेल-जोल की किस कद्र जरूरत है। जबकि आज सारी दुनिया में मुसलमान नाजुक दौर से गुजर रहे हैं। इस्लाम के दुश्मनों ने चारों तरफ से घेरे में ले रखा

है। यहूदी, मुश्रिकीन नित नये हथियारों से लेस होकर इस्लाम ओर मुसलमानों को मिटाने के दरपे हैं। इन हालात का मुकाबला सिर्फ इस तरह हो सकता है कि मुसलमान एक हो जायें। उनमें आपस में मेल-मिलाप हो जाये, शिया-सुन्नी, वहाबी वगैर वहाबी सब एक होकर काम करें। अपने अन्दुरूनी, छोटे-छोटे मसलों को बाहर ना आने दें, इस्लाम की हिफाजत और मिल्लत की तरक्की के लिए सबको मिलकर सीना सिपर होना है, वरना ऐसा ना हो कि हमारी यह आपसी दुश्मनी और भी तबाही व बर्बादी का सवाब बन जाये, जैसाकि देखा जा रहा है।

बिरादराने मिल्लत व इस्लाम के नौनिहालों!

इस्लाम आपको कदम-कदम पर एक जान देखना चाहता है, जमाअत के साथ नमाज का सिलसिला इसीलिए कायम किया गया है ताकि मुसलमान पांचो वक्त मस्जिद में जमा होकर आपसी मुहब्बत का इजहार करें और एक इमाम के पीछे इक्ट्ठा हो सकें। इस्लामी जमाअत व इत्तिहाद मस्जिद से शुरू होते हैं, इसलिए सुन्नत वालों का फैसला है कि नमाज हर इमाम के पीछे जायज है। चाहे वो फासिक, फाजिर (गुनहगार) ही क्यों ना हो। (1) इसलिए कि नमाज में एक जगह अगल-अलग जमाअतें बनाना बहुत बड़ा गुनाह है और यह इस्लामी तंजीम व एकता के लिए कातिलाना जहर है। पांच वक्त की नमाज बा-जमाअत के बाद इस्लामी इत्तिफाक की ट्रेनिंग हफ्तावारी ईद यानी जुमे की नमाज में करायी जाती है। जबकि एतराफ और मोहल्ले के सारे मुसलमान मस्जिद में जमा होकर अपनी एकता दिखाते हैं। यही मंजर ईद के मैदानों का है। फिर मुसलमानों का आलमी एकता का नजारा हज पर दुनिया के सामने आता है, जहां मुसलमान दुनिया के कोने कोने से सिमट कर बैतुल्लाह शरीफ में एक हो जाते हैं। इस्लामी इत्तिफाक का यह ऐसा शानदार मंजर है जिसकी दुनिया के तमाम मजहबों में ऐसा नजारा नहीं मिल सकता। इस कद्र पुख्ता तंजीम के बावजूद मुसलमानों में इत्तिफाक ना हो, एक कलमा-गो मुसलमान दूसरे कलमा-गो मुसलमान से नफरत करे, एक भाई दूसरे भाई से जलन व दुश्मनी रखे, एक का सलाम दूसरे से ना हो, यह सारी बातें बहुत ही अफसोसनाक हैं।

(1) मगर बद-अकीदा इमाम के पीछे नमाज पढ़ना जायज नहीं जो खुद शिर्क या बिदअत का करने वाला हो और दूसरों को शिर्क व बिदअत की तरफ दावत देता हो। उसके पीछे नमाज पढ़ने से बचना चाहिए, इसलिए कि इमाम का अकीदा सही

होना बेहद जरूरी है, वरना नमाज नहीं होगी। इस सिलसिले में अल्लामा बदीउद्दीन शाह राशदी रहमतुल्लाह अलैह की तसनीफ ''इमाम सहीहुल अकीदा होना चाहिए'' और प्रोफेसर हाफिज मुहम्मद अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह की किताब फायदेमन्द है। (युगवी)

मेरे समझदार मुसलमान भाईयों!

वक्त आपको पुकार रहा है कि आपस में मुहब्बत पैदा करो। कुरआने मजीद दावत दे रहा है कि मौमिन आपस में सब भाई भाई हैं। अहादीसे नबवी पुकार रही हैं कि :

لَا تَحَاسَدُوْا وَلَا تَبَاغَضُوْا وَلَا تَقَاطَعُوْا وَلَا تَدَابَرُوْا وَ كُوْنُوْا عِبَادَ اللّٰهِ اِخْوَانًا ۔ (صحیح بخاری ومسلم)

(सही बुखारी व मुस्लिम)

''आपस में दुश्मनी ना रखो, आपस के ताल्लुकात को ना काटो, आपस में एक दूसरे को पीठ देकर ना चलो। ऐ अल्लाह के बन्दों! सब भाई भाई बन जाओ।''

इन सब पुकारों का असर लेकर अगर मेल-जोल ना पैदा करो तो फिर उस घर का फिर अल्लाह ही हाफिज है। सुन लो और गौर से सुन लो।

ना समझोगे तो मिट जाओगे, ऐ प्यारे (1) मुसलमानों!
तुम्हारी दास्तान तक भी ना होगी, दास्तानों में।

या अल्लाह मुसलमानों को भाईचारा पैदा करने की ताकत अता फरमा। हमारे आपस के झगड़े मिटा दे, हम को कुरआन, कअबा, कलमा पर एक कर दे, दुश्मनों के मुकाबले पर हम को सीसे की दीवार बना दे। आमीन या रब्बुल आलमीन!

بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَاِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۔

(1) अल्लामा इकबाल के शेअर में लफजी तगय्युर है। (अल-असरी)

खुत्बा नम्बर 28

खुत्बा-ए-रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज का नक्शा दस सहाबियों के सामने

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ط اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ

وَالْمُنْكَرِ ط وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ط (العنكبوت ٢٩)

(सूरह अनकबूत: 45, पारा 20)

अल्लाह पाक की हम्दो सना और उसके महबूब प्यारे नबी पर बहुत बहुत दुरूद व सलाम।

हजरात!

नमाज इस्लाम का जिस तरह अहम हिस्सा है, वो आप सबको मालूम है। यह इस्लाम की बुनियाद है, पहला सतून है, जिस पर इस्लाम की इमारत कायम है। यह पहला वो काम है जिसके मुताल्लिक कयामत के दिन बिलाशुबा सबसे पहले हिसाबो किताब होगा। इसलिए फर्ज पर पूरी तरह ध्यान देकर इसे पूरे पूरे अदब व शर्तों के साथ पढ़ना बहुत ही जरूरी है। वरना कुरआन मजीद में कुछ ऐसे नमाजियों का भी जिक्र है जिनकी नमाज उनको दोजख में ले जाएगी, जैसाकि इरशादे बारी है:

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ○ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ○ الَّذِيْنَ هُمْ

يُرَآءُوْنَ ○ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ○ (الماعون ١٠٧)

(सूरह अल माऊन, पारा 26)

"कुछ नमाजियों के लिए दोजख का वो गड्ढा है जिसका नाम "वैल" है। जिसकी आग से दोजख के दूसरे हिस्से रोजाना अल्लाह पाक से सत्तर सत्तर बार पनाह मांगते हैं। वो आग उन नमाजियों के लिए तैयार की गयी है जो महज दिखावे के लिए नमाज पढ़ते हैं। और जो अपनी नमाजों की हकीकत को भूले होते हैं। और उनके दिलों की सख्ती का हाल यह है कि वो अल्लाह की मख्लूकात पर रहम करना जानते ही नहीं। यहां तक कि वो लोगों के नफे की मामूली से मामूली चीजें भी रोक कर रख लेते हैं।"

मालूम हुआ कि नमाज वही कबूल होती है जो पूरा ध्यान देकर अदा की जाये।

प्यारे भाईयों!

खूब याद रखो, नमाज के जाहिरी कामों को सुन्नते नबवी के मुताबिक अदा करना जरूरी है और अन्दुरूनी कामों का भी पूरे तौर पर ख्याल रखना है। जिससे मुराद ध्यान से पढ़ना है। अल्लाह पाक ने फरमाया है:

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝ (الْمُؤْمِنُوْن ٢٣)

(सूरह अल मोमिनून: 1-2, पारा 18)

"वो मोमिन लोग कामयाब हो गये जो अपनी नमाजों को ध्यान के साथ दिल लगाकर अल्लाह को हाजिर व नाजिर जानकर पूरे दिल व दिमाग के साथ अदा करते हैं।"

हदीस शरीफ में आया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अहसान के दर्जे के बारे में सवाल हुआ था जिसके जवाब में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अहसान यह है कि तुम अपने रब की इबादत इस यकीन के साथ करो कि जैसे तुम उसको खुद अपनी आंखों से देख रहे हो। अगर यह दर्जा हासिल ना हो सके तो इतना यकीन तो बेहद जरूरी है कि वो तुमको देख रहा है। यह अन्दुरूनी हाल है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को सही मायने में नमाजी बनाये और पूरे साफ दिल से नमाज अदा कराये।

खुत्बे की आयत का तर्जुमा यह है कि ऐ रसूल जो किताब आपकी तरफ वह्य के जरिये उतारी जा रही है, उसे लोगों के सामने पढ़ो ताकि वो भी उसे सीखें और उस पर अमल करें। और नमाज कायम करो। बेशक नमाज एक सच्चे नमाजी को बुरे कामों से खुद रोक देती है। और अल्लाह की याद बहुत बड़ा काम

है। काश लोग इसकी कद्र व कीमत जान लें।

कुछ नमाजी ऐसे भी होते हैं जो रुकूअ व सज्दे का जरा भी ख्याल नहीं करते, वो नमाज नहीं पढ़ते, बल्कि कसरत करते हैं। एक ही मिनट में सारी नमाज खत्म कर डालते हैं। ऐसे नमाजियों को नमाज का चोर कहा गया है। नमाज वही है जो इत्मीनान के साथ अदा की जाये, सज्दे तसल्ली से जमकर अदा किये जायें, कयाम व रुकूअ और नमाज के हर काम को पूरे तौर पर अदा हो।

नमाजी भाईयों!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक बहुत प्यारा खुत्बा नमाज से मुताल्लिक हजरत अनस रजि. ने नकल फरमाया है, जो इस काबिल है कि इसका एक एक लफ्ज दिल व दिमाग के अन्दर महफूज रखा जाये और इस पर अमल किया जाये, ताकि हमारी नमाजें सही तौर पर अदा होकर कबूल हो सकें। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक खिताब में फरमाया:

مَنْ صَلَّى الصَّلَاةَ لِوَقْتِهَا وَاَسْبَغَ لَهَا وُضُوءَهَا وَاَتَمَّ لَهَا قِيَامَهَا وَخُشُوعَهَا وَرُكُوعَهَا وَسُجُودَهَا خَرَجَتْ وَهِيَ بَيْضَاءُ مُسْفِرَةٌ تَقُولُ حَفِظَكَ اللّٰهُ كَمَا حَفِظْتَنِيْ وَمَنْ صَلَّاهَا لِغَيْرِ وَقْتِهَا وَلَمْ يُسْبِغْ وُضُوءَهَا وَلَمْ يُتِمَّ خُشُوعَهَا وَلَا رُكُوعَهَا وَلَا سُجُودَهَا خَرَجَتْ وَهِيَ سَوْدَاءُ مُظْلِمَةٌ تَقُولُ ضَيَّعَكَ اللّٰهُ كَمَا ضَيَّعْتَنِيْ حَتّٰى إِذَا كَانَتْ حَيْثُ شَاءَ اللّٰهُ لُفَّتْ كَمَا يُلَفُّ الثَّوْبُ الْخَلِقُ ثُمَّ ضُرِبَ بِهَا وَجْهُهُ۔ (رواه الطبرانى فى الاوسط)

(रवाहतिबरानी फिल अवसत)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जिस शख्स ने नमाज ठीक वक्त पर पढ़ी और वजू भी ठीक किया और उसका कयाम अच्छा किया और दिल लगाकर पढ़ा और रुकूअ सज्दा बहुत तसल्ली से अदा किया तो वो नमाज उस नमाजी के पास से जब जाती है तो वो चमकती हुई होती है। नमाजी

से कहती है कि तुझको भी अल्लाह तआला सलामत रखे, जैसा तूने मुझको सलामत रखा और जिस शख्स ने नमाज को उसका वक्त टालकर पढ़ा और वजू भी ठीक तौर से ना किया और दिल भी हाजिर ना रखा और रुकूअ और सज्दे को भी इत्मीनान से अदा ना किया तो जब वो नमाज जाती है तो काली भुजंगी होती है। यानी उसमें नूर नहीं होता और उस नमाजी से कहती है कि जिस तरह तूने मुझको बर्बाद किया, उसी तरह अल्लाह तआला तुझको भी बर्बाद करे। यहां तक कि जब वो थोड़ी सी ऊपर को जाती है, जिस कद्र कि अल्लाह पाक को मंजूर हो, फिर उस नमाज को पुराने कपड़े की तरह लपेट कर उस नमाजी के मुंह पर मार देते हैं।

और सही बुखारी में हजरत अबू हुरैरा रजि. से इरशादे नबवी है।

اَرَأَيْتُمْ لَوْ اَنَّ نَهْرًا بِبَابِ اَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ فِيْهِ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسًا مَا تَقُوْلُوْنَ ذٰلِكَ يُبْقِي مِنْ دَرَنِهٖ شَيْئًا ۔ قَالَ فَذٰلِكَ مِثْلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ يَمْحُوا اللّٰهُ بِهَا الْخَطَايَا ۔ (بخاری)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रजि. से पूछा कि "भला बताओ तो अगर किसी शख्स के दरवाजे पर कोई नहर हो ओर वो शख्स हर रोज उस नहर में पांच बार नहाता हो तो तुम्हारे ख्याल में हर रोज पांच बार नहाना उसके बदन पर कुछ मैल-कुचैल छोड़ेगा?सहाबा ने अर्ज किया कुछ मैल-कुचैल नहीं छोड़ेगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बस पांच वक्त की नमाजो की यही मिसाल है कि अल्लाह तआला उनकी बरकत से सब गुनाहों को मिटा देगा।"

और तरगीब व तरहीब में हजरत अनस रजि. से रिवायत है:

اِنَّ لِلّٰهِ مَلَكًا يُّنَادِىْ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ يَا بَنِىْ اٰدَمَ قُوْمُوْا اِلٰى نِيْرَانِكُمْ الَّتِىْ اَوْقَدْتُّمُوْهَا فَاَطْفِئُوْهَا ۔ (رواه الطبرانی)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "बेशक अल्लाह तआला ने एक फरिश्ता मुकर्रर कर रखा है जो पुकारता है, हर एक नमाज

के वक्त पुकारता है कि ऐ आदम अलैहिस्सलाम की औलाद उस आग के बुझाने को उठो, जिसको तुमने गुनाहों से भड़काया है।''

यानी आदमी से जब कोई गुनाह होता है तो दोजख की आग भड़कती है और तेज होती है, क्योंकि वो अल्लाह पाक के गजब और गुस्से का घर है। जब किसी नमाज का वक्त आता है तो रहमत और बख्शिश के खजाने खोले जाते हैं। इसलिए वो फरिश्ता पुकारता है कि लोगों अब बख्शिश और रहमत का वक्त आया है, ऐसे वक्त में अल्लाह की इबादत और तौबा कर लो, ताकि तुम्हारे गुनाह माफ हों और दोजख की आग ठण्डी हो जाये। यह नमाज वो चीज है कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वफात के वक्त जब तक कि आपकी जुबाने मुबारक जारी रही उस वक्त तक बराबर इसका हुक्म फरमाते रहे, जैसाकि हजरत उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है।

اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ فِىْ مَرَضِهِ الَّذِىْ تُوُفِّيَ فِيْهِ الصَّلَاةُ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَمَا زَالَ يَقُوْلُهَا حَتّٰى مَا يُفِيْضُ بِهَا لِسَانُهٗ......" (ابن ماجه الجنائز)

यानी ''उम्मुल मोमिनिन हजरत उम्मे सलमा रजि. फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस बीमारी की हालत में जिसमें आप की वफात हुई थी, फरमाते थे कि नमाजों की हिफाजत करना और लौण्डी-नौकरों का ख्याल रखना। यानी उन पर जुल्म ना करना। जब तक आपकी जुबान मुबारक जारी रही, तब तक बराबर इसी तरह फरमाते रहे।''

और अबू दाऊद में उबादा बिन सामित रजि. से रिवायत है:

خَمْسُ صَلَوَاتٍ اِفْتَرَضَهُنَّ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ مَنْ اَحْسَنَ وُضُوْءَهُنَّ وَصَلَّاهُنَّ لِوَقْتِهِنَّ وَاَتَمَّ رُكُوْعَهُنَّ وَخُشُوْعَهُنَّ كَانَ لَهٗ عَلَى اللّٰهِ عَهْدٌ اَنْ يَّغْفِرَ لَهٗ وَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ فَلَيْسَ لَهٗ عَلَى اللّٰهِ عَهْدٌ اِنْ شَآءَ غَفَرَلَهٗ وَاِنْ شَآءَ عَذَّبَهٗ۔ [ابوداؤد۔ الصلاة. ابن ماجه۔ اقامة الصلاة. احمد]

(अबू दाऊद अस्सलातु, इब्ने माजह, इकामतुल सलातु, अहमद)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जो पांच वक्त की नमाजें हैं उनको अल्लाह पाक ने फर्ज कर दिया है। जिस शख्स ने उनका वजू अच्छी तरह किया और ठीक वक्तों पर पढ़ा और रुकूअ और सज्दा अच्छी तरह अदा किये। उसके लिए अल्लाह तआला का जिम्मा यह है कि उसे बख्शे। और जिस शख्स ने ऐसा ना किया, उसके वास्ते अल्लाह पाक का कोई वादा नहीं है, चाहे उसको बख्श दे, चाहे अजाब दे।"

यानी जिसने पांच वक्त की नमाज को कायदे की पाबन्दी और इंतेजाम से अदा किया, उसके वास्ते तो अल्लाह पाक ने बख्शिश का वादा फरमा लिया है और जिसने ऐसा नहीं किया, यानी नमाज को दुरुस्त और ठीक करके नहीं पढ़ा तो उस नमाजी के वास्ते कोई अहद और वादा नहीं है, जैसे और गुनहगार हैं, वैसा ही वो भी है। अल्लाह पाक चाहे बख्श दे और चाहे अजाब दे।

और तिर्मिजी में हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है:

اَلْكَفَّارَاتُ: اَلْمَكْثُ فِي الْمَسْجِدِ بَعْدَ الصَّلَاةِ وَالْمَشْيُ عَلَى الْأَقْدَامِ إِلَى الْجَمَاعَاتِ وَإِسْبَاغُ الْوُضُوءِ عَلَى الْمَكَارِهِ مَنْ فَعَلَ ذٰلِكَ عَاشَ بِخَيْرٍ وَمَاتَ بِخَيْرٍ وَكَانَ مِنْ خَطِيْئَتِهٖ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهٗ۔ (ترمذی، کتاب التفسیر)

(तिर्मिजी, किताबुल तफसीर)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "गुनाहों को मिटाने वाली यह चीजें हैं। मस्जिद में नमाज के बाद ठहरना यानी घबराकर जल्दी ना भागें बल्कि इत्मीनान से नमाज के बाद कुछ देर अल्लाह के जिक्र में दुआ में लगा रहें। या दूसरे वक्त की नमाज के इन्तिजार में ठहरा रहे। और नमाज बा-जमात के वास्ते पैदल चलना और वजू करना मुश्किल होने के बावजूद पूरा वजू करना यानी बाज वक्त सर्दी की वजह से या और किसी वजह से पानी में हाथ-पांव वगैरह भिगाने को जी नहीं चाहता, ऐसे वक्त में अच्छी तरह और पूरा वजू करना। जिस शख्स ने ऐसा किया, वो भलाई के साथ जिन्दा रहा और भलाई के साथ मरा। और गुनाहों से ऐसा पाक हो गया जैसा वो उस वक्त था जब कि वो मां के पेट से पैदा हुआ था।"

यानी ऐसे नमाजियों का वो मर्तबा है कि उनकी जिन्दगी भी अच्छी है और

मौत भी अच्छी। और गुनाहों से पाक जाते है। और तिर्मिजी में बुरैदा असलमी से रिवायत है-

بَشِّرِ الْمَشَّائِيْنَ فِي الظُّلَمِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِالنُّوْرِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

(ترمذی۔ الصلاۃ، ابوداؤد)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जो लोग रात के अंधेरे में जमाअतों की खातिर मस्जिदों में जाते हैं, उनको खुशखबरी सुना दो कि कयामत के दिन उनको पूरा और मुकम्मल नूर मिलेगा।'

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ (العنکبوت ۲۹)

(सूरह अल-अनकबूत: 45, पारा 20)

फरमाया अल्लाह तआला ने अपने रसूल को कि 'तेरे ऊपर जो किताब वह्य के जरीये से आयी है, उसको सुना और नमाज के बारे में खूब कोशिश कर। क्योंकि नमाज बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है। और यह बहुत ऊंचे दर्जे की इबादत है।"

इस आयत के तहत तफसीर जामेअ अलबयान में यह हदीस मनकूल है:

قِيْلَ لَهٗ عَلَيْهِ السَّلَامُ فُلَانٌ يُصَلِّيْ بِاللَّيْلِ وَاِذَا اَصْبَحَ سَرَقَ قَالَ سَيَنْهَاهُ مَا تَقُوْلُ۔

यानी " आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गया कि फलां शख्स रात को नमाज पढ़ता है और सुबह चोरी करता है। आपने फरमाया कि करीब है कि नमाज उसकी यह आदत छुड़ा देगी।"

अब ज्यादातर लोग ऐसे देखने में आते हैं कि मुद्दतों नमाज पढ़ते रहते हैं और जिस गुनाह की आदत हो गयी है, उसको भी किये जाते हैं। उसकी वजह यह मालूम होती है कि उन्होंने नमाज को संवार कर नहीं पढ़ा। क्योंकि जब कुरआन शरीफ व हदीस से बिलकुल साफ मालूम हुआ कि नमाज बुरे कामों को छुड़ा देती हैं तो जरूर नमाज का यह असर जाहिर होना चाहिए। और जिसकी नमाज में यह

असर जाहिर नहीं, उसको समझना चाहिए कि मेरी नमाज में कुछ कमी है।

और तफसीर जामेअ अलबयान में यह हदीस मनकूल है:

مَنْ لَمْ تَنْتَهِ الصَّلَاةُ عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ لَمْ يَزِدْ مِنَ اللهِ إِلَّا بُعْدًا۔

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जो शख्स नमाज पढ़ता है, और उसकी बुरी आदतें दूर ना हुई तो नहीं ज्यादा हुआ वो शख्स अल्लाह से मगर दूरी में।''

यानी उसने नमाज तो पढ़ी, लेकिन वो नमाज नहीं जिससे अल्लाह पाक के नजदीक-करीब का मर्तबा हासिल होता। हकीकत में बहुत लोग ऐसी नमाजें पढ़ते हैं जिसमें कुछ सवाब नहीं मिलता। चुनांचे अबू कतादा से रिवायत है:

اَسْوَءُ النَّاسِ سَرِقَةً الَّذِیْ یَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهٖ۔ قَالُوْا یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! فَکَیْفَ یَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهٖ؟ قَالَ: لَا یُتِمُّ رُکُوْعَهَا وَلَا سُجُوْدَهَا۔

[الدارمی فی الصلاۃ، احمد]

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''सब चोरों से बदतर वो चोर है जो अपनी नमाज में चोरी करता है। सहाबा ने कहा, या रसूलुल्लाह! नमाज में चोरी करना क्या है?फरमाया कि जो शख्स रुकूअ और सज्दा पूरा नहीं करता।''

और तलक बिन अली रजि. की रिवायत में यूं है कि ''अल्लाह तआला उस शख्स की नमाज की तरफ कबूलियत की नजर नहीं डालता जो उसके रुकूअ और सज्दों में अपनी पीठ सीधी नहीं करता।''

और अबू दाऊद जिल्द अव्वल में इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जिसके पास अजान की आवाज आ जाती है, फिर उसको कोई उज्र शरई (बीमारी, बुढ़ापा या और कोई जाइज परेशानी) ना हो और घर में नमाज पढ़ ले तो उसकी नमाज कबूल नहीं होती। सहाबा किराम ने पूछा कि उज्र से क्या मुराद है?फरमाया कि जान वगैरह

का खौफ या ऐसी कोई बीमारी हो कि मस्जिद में जाना मुश्किल है।''

और सही बुखारी बाब फजलु सलातिल जमाअत में अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरा यह इरादा होता है कि लकड़ियों के गटठे जमा कराऊं, फिर किसी शख्स को अपनी जगह इमामत के लिए कायम कर लोगों के घरों में जाकर देखूं, जिन लोगों ने बिना किसी वजह से नमाज (घरों में) पढ़ ली है उनके घरों में आग लगा दूं। मगर औरतों और बच्चों के ख्याल से फिर मैं ऐसा करने से रुक जाता हूँ।

मुहतरम बुजुर्गों!

इन हदीसों से मालूम हुआ कि उन लोगो की नमाज ही नहीं होती जो बिना किसी वजह घर में नमाज पढ़ लेते हैं। मगर यह खास हुक्म मर्दों के वास्ते है औरतों के वास्ते नहीं है। औरत के वास्ते यही बेहतर है कि घर में नमाज पढ़ ले। जैसाकि अबू दाऊद में हजरत इब्ने मसऊद रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि औरत के हक में वो नमाज बेहतर है जो उसने घर के सहन में पढ़ी हो और जो नमाज उसने सबसे अन्दर की कोटरी में पढ़ी हो, वो नमाज उस नमाज से बेहतर है जो उसने आंगन वगैरह में पढ़ी हो।

मतलब यह कि जिस कद्र पर्दा ज्यादा होगा उसी कद्र सवाब ज्यादा होगा। हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर की रिवायत में यह लफ्ज आये हैं कि औरत के हक में मस्जिद की नमाज से घर की नमाज अफजल है। अगर कुछ औरतें पूरे पर्दे के साथ मस्जिद में नमाज के लिए जाना चाहती हैं तो उनको रोकना नहीं चाहिए। जुमा के लिए भी इसी तरह पर्दे की पाबन्दी के साथ औरतें मस्जिद में जा सकती हैं और ईद की नमाज में शरीक होने के लिए औरतों को खास हुक्म है। यहां तक कि हैज वाली औरतें भी निकलें। वो नमाज में शरीक ना हो मगर दुआ में शरीक हो।

बिरादराने इस्लाम!

आखिर में आप को एक और हदीस सुनाते हैं जिसमें दस सहाबियों के सामने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज का नक्शा बयान किया गया है। इसे गौर से सुनिये और सोचिये कि आपकी नमाज जाहिरी तौर पर उस नक्शे के मुताबिक है या नहीं है। अगर कुछ कमी है तो फौरन ध्यान दीजिए और नमाज शुरू से आखिर तक इस नक्शे के मुताबिक अदा करने की आदत डालिये। अल्लाह पाक हम सबकी नमाजों को सामने और अन्दुरूनी लिहाज से कबूल

फरमाये और हमारी कमजोरियों को दूर करे। आमीन!

عَنْ اَبِیْ حُمَیْدِنِ السَّاعِدِیِّ قَالَ فِیْ عَشْرَةٍ مِّنْ اَصْحَابِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَا اَعْلَمُکُمْ بِصَلَاةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالُوْا فَاَعْرِضْ قَالَ النَّبِیُّ ﷺ اِذَا قَامَ اِلَی الصَّلَاةِ رَفَعَ یَدَیْهِ حَتّٰی یُحَاذِیَ بِهِمَا مَنْکِبَیْهِ ثُمَّ یُکَبِّرُ ثُمَّ یَقْرَأُ ثُمَّ یُکَبِّرُ وَرَفَعَ یَدَیْهِ حَتّٰی یُحَاذِیَ بِهِمَا مَنْکِبَیْهِ ثُمَّ یَرْکَعُ وَیَضَعُ رَاحَتَیْهِ عَلٰی رُکْبَتَیْهِ ثُمَّ یَعْتَدِلُ فَلَا یَصُبُّ رَأْسَهٗ وَلَا یُقْنِعُ ثُمَّ یَرْفَعُ رَأْسَهٗ فَیَقُوْلُ "سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ" ثُمَّ یَرْفَعُ یَدَیْهِ حَتّٰی یُحَاذِیَ بِهِمَا مَنْکِبَیْهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ یَقُوْلُ "اَللّٰهُ اَکْبَرُ" ثُمَّ یَهْوِیْ اِلَی الْاَرْضِ سَاجِدًا فَیُجَافِیْ یَدَیْهِ عَنْ جَنْبَیْهِ وَیَفْتَحُ اَصَابِعَ رِجْلَیْهِ ثُمَّ یَرْفَعُ رَأْسَهٗ وَیُثْنِیْ رِجْلَهُ الْیُسْرٰی فَیَقْعُدُ عَلَیْهَا ثُمَّ یَعْتَدِلُ حَتّٰی یَرْجِعَ کُلُّ عَظْمٍ اِلٰی مَوْضِعِهٖ مُعْتَدِلًا ثُمَّ یَسْجُدُ ثُمَّ یَقُوْلُ "اَللّٰهُ اَکْبَرُ" وَیَرْفَعُ وَیُثْنِیْ رِجْلَهُ الْیُسْرٰی فَیَقْعُدُ عَلَیْهَا ثُمَّ یَعْتَدِلُ حَتّٰی یَرْجِعَ کُلُّ عَظْمٍ اِلٰی مَوْضِعِهٖ ثُمَّ یَنْهَضُ ثُمَّ یَصْنَعُ فِی الرَّکْعَةِ الثَّانِیَةِ مِثْلَ ذٰلِكَ ثُمَّ اِذَا قَامَ مِنَ الرَّکْعَتَیْنِ کَبَّرَ وَرَفَعَ یَدَیْهِ حَتّٰی یُحَاذِیَ بِهِمَا مَنْکِبَیْهِ کَمَا کَبَّرَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلَاةِ ثُمَّ یَصْنَعُ ذٰلِكَ فِیْ بَقِیَّةِ صَلَاتِهٖ حَتّٰی اِذَا کَانَتِ السَّجْدَةُ الَّتِیْ فِیْهَا التَّسْلِیْمُ اَخْرَجَ رِجْلَهُ الْیُسْرٰی وَقَعَدَ مُتَوَرِّکًا عَلٰی شِقِّهِ الْاَیْسَرِ ثُمَّ سَلَّمَ قَالُوْا صَدَقْتَ هٰکَذَا

كَانَ يُصَلِّیْ۔ (رواہ ابو داؤد، والدارمی، وروی الترمذی، وابن ماجة فی معناہ وقال الترمذی ھٰذا حدیث حسن صحیح)

"रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस सहाबी रजि. एक मजलिस में बैठे हुए थे। उनके सामने एक मशहूर सहाबी अबू हुमैद साअदी रजि. ने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज को तुम सब में ज्यादा जानने वाला मैं हूँ। वो हजरात बोले कि फिर यहां बयान फरमायें कि हमको भी आपकी नमाज का नक्शा पूरे तौर पर मालूम हो सके। चूनांचे हजरत अबू हमैद साअदी रजि. ने नमाजे नबवी का नक्शा इन अल्फाजों में बयान करना शुरू किया कि "जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज के लिए खड़े होते तो आप पहले दोनों कंधों तक दोनों हाथ उठाते ओर अल्लाहु अकबर कहते (फिर ब-रिवायत सहीहा इब्ने खुजैमा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सीने पर हाथ बांधते और दुआये इस्तफताह यानी "अल्लाहुम्मा बा-इद बयनि व-बयना खताया.... आखिर तक, या "सुब्हान कल्लाहुम्मा व बिहमदि-का...... आखिर तक पढ़कर सूरह फातिहा पढ़ते और साथ ही दूसरी सूरह मिलाते) फिर रूकूअ के लिए तकबीर कहते दोनों हाथों को कंधों तक उठाते। यानी रूकूअ में जाते हुए रफअ यदैन करते फिर रूकूअ में दोनों हाथों को दोनों कंधों पर खूब जमाकर रखते। फिर ऐतदाल के साथ रूकूअ में झुकते। ना सर को ज्यादा झुकाते और ना ऊपर को उठाते बल्कि पूरे तौर पर रूकूअ में पीठ को सीधा रखते। और रूकूअ की दुआयें पढ़ते। फिर "समिअल्लाहु लिमन हमिदह" कहते हुए दोनों हाथों को कंधों तक उठाते और बिलकुल सीधे खड़े होकर "रब्बना लकल हम्दु" दुआ पढ़ते। फिर अल्लाहु अकबर कहकर सज्दे में चले जाते, जिसमें अपने दोनों हाथों को दोनों कंधों से जुदा रखते और पीछे से पैरों की अंगुलियों को चौड़ा करके उनको भी किब्ला रुख मोड़ लेते और सज्दा बिलकुल सही तौर पर अदा करते, जिसमें सज्दे की दुआयें पढ़ते। फिर तकबीर कहते हुए सज्दे से सर उठाकर जलसा-ए-इस्तराहत में बैठते और अपने बायें पैर को मोड़कर उस पर बैठते और निहायत इत्मिनान के साथ ऐतदाल के साथ बैठ जाते कि सब हड्डियाँ अपने अपने ठिकानों पर होतीं। (इस हालत में दुआये इस्तराहत पढ़ते फिर अल्लाहु अकबर कहकर दूसरे सज्दे में चले जाते। फिर अल्लाहु अकबर कहकर सज्दे से सर उठाते और आराम व इत्मिनान से पूरे तौर पर बैठ जाते। फिर दूसरी रकअत में भी

ऐसा ही करते। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो रकअत पढ़कर खड़े होते तो तकबीर कहते हुए रफअ यदैन करते, उस तौर पर जैसे नमाज के शुरू में रफअ यदैन करते हुए हाथ बांधते थे। फिर बाकी नमाज भी इसी तरह अदा करते और आखरी रकअत में अपना बांया पैर निकाल देते और बायीं तरफ के कूल्हे पर बैठ जाते। फिर अत्तहियात, दरूद और दूसरी दुआओं को पढ़कर सलाम फेर देते। नमाजे नबवी का यह नक्शा सुनकर तमाम सहाबा रजि. ने जो वहां मौजूद थे, सबने मिलकर कहा कि बेशक आप सच्चे हैं। वाकई रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज इसी तरह से होती थी।

मुसलमान भाईयों!

हजरत अबू हुमैद साअदी रजि. रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बड़े अच्छे सहाबी हैं। और उनकी तसदीक करने वाले दस बुजुर्ग सहाबा किराम भी बड़े ही बुजुर्ग सच्चे और अच्छे इस्लाम के वाकई वफादार लोग हैं। उन सबकी तसदीक से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज का जो नक्शा आपने सुना है, अब आप अपनी नमाजों को इस नक्शे से मिला लो। अगर पूरे तौर पर मिलती है तो अल्लाह का शुक्र अदा करो कि उसने आपको प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसी नमाज अदा करने की तौफीक अता की। और अगर नक्शे में कुछ फर्क नजर आता है तो उसको निकाल दो, ताकि कयामत के दिन हौजे कौसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुशी हासिल हो और आपके मुबारक हाथ से आपको कौसर नहर का पानी नसीब हो। आमीन!

بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 29

रस्म मजलिसे मीलाद का रद और सीरते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान

أَمَّا بَعْدُ: أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ وَّدَاعِيًا إِلَى اللّٰهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ۝ (الأحزاب ٣٣)

(सूरह अहजाब: 46, पारा 21)

"ऐ नबी! हमने आपको रसूल बनाकर भेजा है, गवाही देने वाला, खुशखबरी सुनाने वाला और अल्लाह के अजाब से डराने वाला और सीधी राह की तरफ दावत देने वाला जो अल्लाह की रजामन्दी तक पहुंचाने वाली राह है। यह दावत अल्लाह ही के हुक्म से दी जा रही है और ऐ नबी हमने आपको चमकता हुआ चिराग बनाकर भेजा है।"

हम्दो सना के बाद

बिरादराने इस्लाम!

आयते कुरआनी जो आपने सुनी है, अल्लाह तबारक व-तआला ने इसमें पाक सीरते नबवी के अहम पहलुओं पर रोशनी डाली है और यह बतलाया है कि रिसालते मुहम्मदिया एक ऐसा सच है जिसके साथ बहुत सी सच्चाईयां जुड़ी हुई हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारी इन्सानियत की कामयाबी के लिए एक चमकता हुआ चिराग बनकर दुनिया में तशरीफ लाये हैं। यह किस कद्र सच्चाई है कि इस्लाम पर चौदह सौ बरस गुजर जाने के बावजूद पैगम्बरे इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम का नाम नामी दुनिया के हर कोने में, खुश्की में, तरी में, शहरों में, देहातों में चौदहवीं रात के चांद की तरह चमक रहा है, जहां भी दो

मुसलमान हैं, आसमान की फिजां दिन और रात में पांच बार "अशहदु अन्-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि" के हक के नारे से गूंज रही है। यह काम लगातार रात दिन, चौबिस घण्टे जारी है। यही चमकते हुए चिराग की तफसीर है। दुनिया में दीनों व मजहबों की आज भी ज्यादती है। मगर किसी दीन व मजहब के बानी को यह इज्जत हासिल नहीं, चाहे तादाद के लिहाज से उसके मानने वाले कितने ही हों मगर जीता-जागता होने का मुकामे मुहम्मदी सबसे ऊंचा और अशरफ है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ۔

हजरात!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यारी जिन्दगी व अच्छे अख्लाक से मुताल्लिक मुख्तसर बयानात आपके सामने पेश किये जाते हैं। उम्मीद है कि गौर से सुनकर ना सिर्फ दिल में जगह देंगे बल्कि इनके मुताबिक अमल करके रसूल की मुहब्बत का सच्चा सबूत पेश करेंगे।

عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ خَدِمْتُ النَّبِیَّ ﷺ عَشَرَ سِنِیْنَ فَمَا قَالَ لِیْ اُفٍّ، وَلَا لِمَ صَنَعْتَ وَلَا اَلَا صَنَعْتَ؟ (بخاری و مسلم)

(बुखारी व मुस्लिम)

खादिमे खास हजरत अनस रजि. बयान करते हैं कि "मैंने पूरे दस साल रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत मे गुजारे मगर इस लम्बे वक्त में कोई मौका ऐसा नहीं आया कि आपने मुझे कभी किसी बात पर उफ लफ्ज भी कहा हो या कभी यूं फरमाया हो कि ऐ अनस तुमने यह काम क्यों नहीं किया।"

हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख्लाक मुबारका यह थे कि अपने नौकरों पर आपने कभी गुस्सा नहीं किया। यहां से उन लोगों को सबक लेना चाहिए जो बात बात पर अपने पास काम करने वालों को डांटते हैं और उनको गालियां सुनाते हैं बल्कि मारते-पीटते हैं। ऐसे लोग रसूल की मुहब्बत के दावे में बिलकुल झूठे हैं और सुनिये

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قِیْلَ یَا رَسُوْلَ اللهِ اُدْعُ عَلَى الْمُشْرِكِیْنَ قَالَ اِنِّیْ لَمْ اُبْعَثْ لَعَّانًا اِنَّمَا بُعِثْتُ رَحْمَةً۔ (رواہ مسلم)

"हजरत अबू हुरैरा रजि. मशहूर सहाबी रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गया कि आप मुश्रिकीन के लिए बद्दुआ फरमायें। आपने जवाब दिया कि मैं किसी पर लान-तान करने के लिए नहीं भेजा गया हूँ। मैं तो पूरी दुनिया के लिए सरापा रहमत बनाकर भेजा गया हूँ।"

चुनांचे कुरआन मजीद में आपके बारे में वाजेह तौर पर कहा गया है:

وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾ (الانبياء ٢١)

(सूरह अल अम्बिया: 107, पारा 17)

तर्जुमा: ऐ रसूल, आपको सारे जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजा है।

इस्लामी भाईयों!

अपने मुकद्दस रसूल की यह शान मुबारक हमारे लिए फख्र करने का सबब है कि आप सरापा रहमत बनकर दुनिया में तशरीफ लाये। अगर हम मुसलमान भी आपस में रहमत बन जायें, बल्कि गैरों के दिलों पर भी अपने अच्छे बर्ताव से कब्जा कर लेते तो हमारा दावा मुहब्बते रसूल का सच्चा होता। मगर अफसोस यह है कि अमली तौर पर मुसलमानों ने अपने पाकीजा रसूल की जिन्दगी को भुला दिया है। अल्लाह के प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कितने शानदार अल्फाज हैं:

مَنْ لَمْ يُوَقِّرْ كَبِيْرَنَا وَلَمْ يَرْحَمْ صَغِيْرَنَا فَلَيْسَ مِنَّا ۔ [ترمذی، البر والصلة، احمد]

"जो छोटा आदमी हमारे बड़े आदमियों की इज्जत ना करे और जो बड़ा आदमी हमारे छोटों पर रहम ना करे वो हमारी उम्मत में से नहीं है।"

इसलिए बड़ों और छोटों सबको अपना फर्ज अदा करना और सीरते नबवी का अमली नमूना पेश करना है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को यह तौफीक अता करे। आमीन!

और सुनिये उम्मुल मोमिनीन हजरत आइशा रजि. बयान करती हैं

لَمْ يَكُنْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ فَاحِشًا وَّلَا مُتَفَحِّشًا وَّلَا سَخَّابًا فِى الْاَسْوَاقِ وَلَا يُجْزِىْ بِالسَّيِّئَةِ السَّيِّئَةَ وَلٰكِنْ يَعْفُوْ وَيَصْفَحُ ۔ (رواہ احمد)

यानी "रसूलुल्लाह कोई झूठी बात बोलने वाले नहीं थे, ना जानबूझकर बद-गो थे, ना बाजारों में बेतहाशा चीखने चिल्लाने वाले और किसी बुराई करने वाले के साथ बदले में बुराई नहीं करते थे। बल्कि हर हाल में माफ और दरगुजर करते थे।"

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यही अच्छे अख्लाक थे जिनकी वजह से आपने सरकशों को अपनी मुट्ठी में ले लिया और आपने दुश्मनों तक के दिल जीत लिए, जैसाकि अल्लाह पाक ने कुरआन पाक में फरमाया:

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ص (اٰل عمران ۳)

(सूरह आले इमरान: 159, पारा 4)

"ऐ नबी! आप अल्लाह की रहमत से इन अरबों के लिए नरम दिल हो गये हैं, जिसके नतीजे में यह आपके वफादार बन गये, अगर आप बद-मिजाज, सख्त दिल वाले होते तो यह अरब लोग आपके आसपास से सब भाग जाते।"

मुहतरम भाईयों!

अख्लाके मुहम्मदी पैदा करो ताकि आज भी दूसरे लोग तुम्हारे अख्लाक से तुम्हारे दोस्त बन जायें। हमको खुद आपस में भी अपने अन्दर अख्लाक व मुहब्बत से काम करना चाहिए। मुसलमान आपस में एक दिल, एक जान, एक जिस्म होते हैं। काश मुसलमान अगर ऐसा नमूना पेश करते तो आज दुनिया का कुछ नक्शा ही और होता। मगर इस दौर में मुसलमानों ने सीरते मुहम्मदी को अमली तौर पर भुला करके कुछ ऐसी नित-नयी रस्में निकाल ली हैं जिनकी वजह से मुसलमान असली इस्लाम से दूर होता जा रहा है। इन्हीं में मजालिसे रस्मे मीलाद भी हैं यानी आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जिक्रे खैर करने के लिए मीलाद के नाम से मजलिस करते हैं। जिसमें रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश का जिक्र करते हुए कयाम भी किया जाता है। इस ख्याल की बिना पर कि इस मजलिस में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह मुबारक हाजिर होती है। लिहाजा कयाम करके इसका अदब करना है। यह किस कद्र भूल है। भला कहां रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह मुबारक और कहां यह मजालिस जिनमें जमीन व आसमान का फर्क है।

मजलिसे मीलाद कब से जारी हुई, इसमें क्या-क्या खराबियां हैं, इन सबकी तफसीलात के लिए हम हजरत मौलाना अब्दुस्सलाम साहब शैखुल हदीस बस्तवी देहलवी का एक साफ बयान नकल करते हैं, जिससे हम सब लोगों को बहुत कुछ फायदा पहुंचेगा। अल्लाह पाक गौर से सुनने और समझने और अमल करने और याद रखने की तौफीक अता करे। आमीन!

पैगम्बरे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी नबूवत के बाद दुनिया में तेईस साल तक जिन्दा रहे। हर साल रबीउअ उल अव्वल आता रहा और हर रबीउल अव्वल में बारहवीं तारीख भी आती रही। लेकिन ना तो आपने कोई मजलिसे मीलाद मनाई, ना इसका हुक्म दिया और जाने से पहले फरमा गये कि मेरे बाद इस दीन में जो नया काम निकले, मैं उससे नाखुश हूँ और उस काम और उस काम के निकालने वाले को मरदूद कहता हूँ। (बुखारी)

और यह मीलाद सातवीं सदी यानी 604 हि. में निकाला गया। मुल्लाओं में इसे निकालने वाला शख्स अम्र बिन मुहम्मद है। जो एक मजहूल शख्स है। ना हदीसों के आलिमों में से है, ना फिकहा में से, ना अइम्मा में से। बादशाहों में सबसे पहले इसे रिवाज देने वाला अबू सईद कबूरी बिन अबुल हसन अली ...... तुरकमानी है जिसका लकब मलक अल-मोअज्जम मुजफ्फरदीन था, जिसे 586हि. में सुल्तान सलाहुद्दीन ने बअ्ल शहर का जो मूसिल के करीब है, गवर्नर मुकर्रर किया था और जिसका इन्तेकाल 630 हि. में हुआ। (तारीख इब्ने खलकान व कामूस)

पस चूंकि यह आपके बाद की चीज है और रस्में मीलाद को दीनी काम समझा जाता है। इसलिए यह बिदअत है। सहाबा-ए-किराम ने भी नबी सल्ल. के इन्तेकाल के बाद रस्मे मीलाद नहीं मनाई। इसकी वजह या तो यह समझनी चाहिए कि उस वक्त रबीउल अव्वल का महीना आता ही ना हो या आता हो, मगर उसमें बारहवीं तारीख ना आती हो। या आती हो, लेकिन उन हजरात को हम जैसी मुहब्बत अकीदत आप हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ना हो। या कंजूसी की वजह से या काम के ढंग ना जानने की वजह से इस नेक काम से वो महरूम रह गये हों या उनके बुजुर्गों ने इस काम को बिदअत और नाजाइज समझा हो और इसके बावजूद कि माह और तारीख के आने के बावजूद कंजूसी और ला-इल्मी ना होने के इन हजरात ने भी जानबूझकर इस काम से ऐतराज किया हो और इसे पसन्द ना फरमाया हो। अब जाहिर बात है कि पहली वजहें बिलकुल झूठी हैं तो अब यही बात हक है। मुहब्बत और अकीदे के बावजूद अंदर बढ़े हुए होने के,

नेकियों और भले कामों की तरफ पूरी तरह रागिब होने के इस नई चीज यानी बिदअत निकालने से वो बचे रहते तो जिस काम को उन बुजुर्गों ने अपने इज्तमाअ में बुरा जाना, पिछले वाले कोई हक नहीं रखते कि उन हजरात के बाद इस तरह की बातें निकालें ''व मंय्यत्तबिअु गय-र सबीलिल मौमिनीन'' में दाखिल होकर अल्लाह के गजब के हकदार हों।

और ताबईन, तबा-ताबईन और चारों इमामों का भी वक्त गुजर जाता है। लेकिन बुजुर्गान इस काम को नहीं करते, बल्कि उन हजरात की किताबें इससे बिलकुल खाली नजर आती हैं तो जैसे उस जमाने में उस काम के कम से कम तर्क पर इज्मा रहा है। गर्ज चारों इमामों के नजदीक यह अमल गलत है, इसी वास्ते इमाम अहमद बसरी अपनी किताब ''कौल मुअतमिद'' लिखते हैं:

قَدِ اتَّفَقَ عُلَمَاءُ الْمَذَاهِبِ الْاَرْبَعَةِ عَلٰى ذَمِّ الْعَمَلِ بِهٖ۔

यानी ''चारों मजहबों के उलमा का मजलिसे मीलाद की बुराई पर एक राय है।''

अब सिवाय इसके यह मजलिस मीलाद नाजायज है, और इसको करने के लिए कोई सूरत बाकी नहीं, इसलिए उलमा-ए-सल्फ इसे खुल्लम खुल्ला बिदअत मुकर्रर व हराम और मम्नूअ लिखते हैं और अकवाल भी मुलाहिजा फरमायें।

शैख ताजुद्दीन फाकहानी अपनी किताब में लिखते हैं:

هُوَ بِدْعَةٌ اَحْدَثَهَا الْبَطَّالُوْنَ وَشَهْوَةُ نَفْسٍ اِعْتَنٰى بِهَا الْاَكِلُوْنَ۔

यानी ''रस्म मीलाद बेहूदा लोगों की निकाली हुई बिदअत है और पेट के पुजारियों की नफ्सपरस्ती को पूरा करने की एक मशीन है।

तुहफतुल कजाहा में है:

لَا يُنْعَقَدُ لِاَنَّهٗ مُحْدَثٌ وَكُلُّ مُحْدَثَةٍ ضَلَالَةٌ وَكُلُّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ۔

यानी ''यह मजलिसे मीलाद नहीं मनाई जाये। इसलिए यह दीन में एक नयी घड़ंत है और नयी बात बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।''

जखीरूल सालिकिन में है कि:

''चीजें नाम आमवलूद नामन्द बिदअत अस्त'' यानी मौलूद बिदअत है।

नूरूल यकीन में हजरत मज्द दालिफ सानी अपने दो सौ तेहतरवें मकतूब में लिखते हैं:

यानी "फर्ज करो अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस जमाने में जिन्दा मौजूद होते और मीलाद की इन मजिलसों को देखते तो हरगिज इसे पसन्द ना फरमाते बल्कि कतअन आप इससे रोक देते।"

हाफिज अबू बकर बगदादी रहमतुल्लाह अश्शहीर बाबुन नुकता अपने फतावा में लिखते हैं:

إِنَّ عَمَلَ الْمَوْلُوْدِ لَمْ يُنْقَلْ عَنِ السَّلَفِ وَلَا خَيْرَ فِي مَا لَمْ يَعْمَلِ السَّلَفُ۔

यानी "मजलिस मौलूद का सहाबा से सबूत नहीं और इस काम में कभी खैर व बरकत नहीं होती, जिसे सहाबा ने ना किया हो।"

हजरत मौलाना शाह अब्दुल अजीज मुहद्दिस देहलवी अपनी एक किताब "तोहफा सना अशरिया" में लिखते हैं:

"रोज तुलद हीच नबी इद गरदानिदन" किसी पैगम्बर की वफात या पैदाइश के दिन को ईद की तरह मनाना जायज नहीं है।"

इसी तरह उलमा-ए-मुताख्खरीन में से मौलाना रशीद अहमद गंगोही फतावा मौलूद अरूस में लिखते हैं:

"ऐसी मजलिसें नाजायज और उनमें शरीक होना गुनाह है, और खिताबे नबी अलैहिस्सलाम का करना और अगर हाजिर व नाजिर जानकर करे तो कुफ्र है और ऐसी मजलिसों में जाना शरीक होना नाजायज है।" इस पर मौलाना महमूद साहब देवबन्दी, मौलाना मुहम्मद नजीर साहब देवबन्दी और मौलवी अब्दुल खालिक साहब देवबन्दी वगैरह के दस्तख्त हैं।

जब यह मजलिस मौलूद साबित हो गयी कि यह बिदअत है तो कयाम जो कि इसके जिम्न में था वो भी बिदअत व मना साबित हो गया।

अलावा अर्जी कुरआन पाक में साफ मौजूद है "कूमू लिल्लाहि कानितीन" यानी कयाम बा-अदब सिर्फ अल्लाह ही के लिए किया करो।"

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने लिए अपनी जिन्दगी में अपने सहाबा किराम को कयाम करने से मना फरमा दिया था। चुनांचे अबू उमामा रजि. से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार लकड़ी

हाथ में लिए हुए हमारे मजमे में तशरीफ लाये। हम आपको देखकर खड़े हो गये तो आप नाराज हुए और फरमाया:

لَا تَقُوْمُوْا كَمَا يَقُوْمُ الْاَعَاجِمُ يُعَظِّمُ بَعْضُهُمْ ۔ (ترمذی)

यानी मुझे देखकर खड़े ना हो जाया करो, जैसे अजमी लोग (दूसरे मुल्क के लोग) एक दूसरे को देखकर खड़े हो जाया करते हैं।''

हजरत अनस रजि. से रिवायत है कि बावजूद इसके कि हमको आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज्यादा मुहब्बत किसी से ना थी, लेकिन चूंकि जानते थे कि आपको देखकर खड़े हो जाना आपको बुरा मालूम होता है और आपने इससे मना फरमाया है। इसलिए हम कभी भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखकर खड़े ना होते थे। (तिर्मिजी)

हजरत अबू बकर रजि. जो एक बुजुर्ग सहाबी हैं, एक बार एक मजलिस में आते हैं, उन्हें देखकर एक शख्स खड़ा हो जाता है। आप उस पर नाराज हो जाते हैं और फरमाते हैं ''अन-नन नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहा अनजा'' यानी आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इससे मना फरमाया है। (अबू दाऊद)

बुरहान शरह मवाहिबुल रहमान में लिखा है ''तुकरहुल कियामु लितअजीम'' यानी ताजीम के तौर पर खड़ा होना मना है।

चलीसी हाशिया शरह वकाया में है ''लम युजकरिल कियामु तअजीमल लिगैरिही'' यानी किसी की ताजीम के लिए खड़े होना कहीं नहीं लिखा है।

ताजीम वो करता है जो हाजिर हो और उसके सामने कोई बड़ा जलीलुल कद्र शख्स आ जाये। क्या पैदाइश के वक्त कोई माजूद होता है। यानी जिस वक्त बच्चा पैदा होता है, क्या उसकी पैदाइश पर देखने के लिए कोई जमाअत वहां हाजिर होती है, अगर नहीं सचमुच पैदाइश के वक्त जब कयाम नहीं हुवा तो अब उसके जिक्र के वक्त क्यों किया जायें। फकीर मुहम्मद शामी ने अपनी किताब ''सीरते शामी'' तहनया दोम बाबुल छः में लिखा है:

جَرَتْ عَادَةٌ كَثِيْرَةٌ مِنَ الْمُحِبِّيْنَ اِذَا سَمِعُوْا بِذِكْرِ وَضْعِهِ ﷺ اَنْ يَقُوْمُوْا لَهُ تَعْظِيْمًا وَّهٰذَا الْقِيَامُ بِدْعَةٌ لَا اَصْلَ لَهُ۔

यानी 'लोगों की आदत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश

का बयान सुनकर खड़े हो जाया करते हैं, यह कयाम बिदअत है जिसकी कोई दलील नहीं है।''

तुहफतुल कजाह में है:

وَيَقُومُونَ عِنْدَ تَوَلُّدِهِ ﷺ وَتَزْعُمُونَ اَنَّ رُوْحَهٗ تَجِيْئُ وَحَاضِرَةٌ فَزَعْمُهُمْ بَاطِلٌ بَلْ هٰذَا الْاِعْتِقَادُ شِرْكٌ وَقَدْ مَنَعَ الْاَئِمَّةُ عَنْ مِثْلِ هٰذَا۔

यानी '' लोग आपकी पैदाइश का जिक्र सुनकर खड़े हो जाया करते हैं और जानते हैं कि आपकी रूह तशरीफ लायी है। और आप उस वक्त हाजिर होते हैं। यह अकीदा झूठा है बल्कि यह ऐतकाद शिर्क है और चारों इमामों ने इन जैसी बातों से मना फरमाया है।''

बहरहाल रस्म मीलाद का सबूत नहीं। अब बजाये लफ्ज मीलाद के सीरते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जलसे के नाम से याद किया जाता है। सीरत के जलसे दरअसल मीलादुन्नबी के जलसे ही हैं। नामों का फर्क है, काम एक ही है। आम लोग बड़े जौक-शौक से जलसे में जाते हैं और उलमाऐ किराम भी खूब तारीफ वसूल करते हैं।

नबी सल्ल. की प्यारी जिन्दगी के जलसे करना, खूबियाँ बयान करना वगैरह रस्मो रिवाज और बिना फिक्स किये महीना नौ तारीख के बहुत ही नेक काम हैं, शर्त यह है कि सही सच्ची बातें बताई जाए। क्योंकि इसमें अल्लाह और रसूल का जिक्र खैर होता है। जो इबादत में दाखिल है। अल्लाह तआला हमको और आपको बिदअतों से बचाये और किताब व सुन्नत पर अमल करने की तौफीक अता करे। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔

खुत्बा नम्बर 30

अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने की बड़ाई और बनी इस्राईल के तीन आदमियों पर एक इबरतनाक खुत्बा-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝ (ابرٰهيم ١٤)

(सूरह इब्राहिमः 7, पारा 13)

तारीफों का हकदार सिर्फ वो अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन है जो कायनात का पैदा करने वाला, जमीनों व आसमानों और हर चीज का संभालने वाला, मौत और जिन्दगी पर पूरी-पूरी ताकत रखने वाला है। कायनात का जर्रा-जर्रा जिसके उसूल व कानूनों से वाबस्ता है जो ऐसा बादशाह है कि कोई उसके सामने बात नहीं कर सकता, जो अव्वल है और आखिर है, जो जाहिर है और बातिन है जो अपनी जात से अर्शे अजीम पर मुस्तवी है, जिसका इल्म व कब्जा हर चीज को शामिल है। उस परवरदिगार ही के लिए सारी तारीफें लायक हैं। दरूद व सलाम उस प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो दुनिया में हिदायत का चिराग बनकर तशरीफ लाये, जिन्होंने अपनी कोशिश से अल्लाह के फजल से अरब और गैर अरब में खुदा परस्ती का झण्डा लहरा दिया, उस नबी पर बार बार बेहद व अनगिनत दरूद व सलाम।

बिरादराने मिल्लत! इस्लाम के नौनिहालों!

आज का खुत्बा शुक्रे इलाही की बड़ाई और नाशुक्री की सजाओं के बारे में है। अल्लाह पाक की नेमतों पर उसका शुक्र अदा करना जुबान और अमल हर दो

से जरूरी है। जुबान से अल्हमदुलिल्लाह कहना और अमल से नेमत की कद्र व हिफाजत करना इसी का नाम शुक्र है। जिस पर अल्लाह पाक ने तरक्की का वादा फरमाया है, जैसाकि आपने खुत्बे की आयते करीमा में सुना है। आयत हजरत मूसा अलैहिस्सलाम से ताल्लुक है, जिन्होंने अपनी कौम से कहा था कि ऐ लोगों! अल्लाह पाक ने तुमको बेशुमार नेमतें दे रखी है, अब अल्लाह का यह ऐलान है कि अगर तुम अल्लाह की नेमतों की कद्र करोगे तो वो तुमको और ज्यादा तरक्की देगा और अगर अल्लाह तआला की नेमतों की नाकद्री करोगे तो अल्लाह का इरशाद है कि मेरा अजाब भी बड़ा सख्त है, जिसका मतलब साफ है कि वो नेमत भी छीन ली जायेगी और उसकी जगह अल्लाह तआला के अजाब में गिरफ्तार होना पड़ेगा। मसलन जो लोग अपनी सेहत की कद्र करते हैं और उन कामों से बचते हैं जो सेहत को खराब करते हैं, अल्लाह उनकी तन्दुरुस्ती में तरक्की कर देता है और जो सेहत से गफलत बरतते हैं वो बीमारी में फंसकर अल्लाह के अजाब में गिरफ्तार हो जाते हैं। अल्लाह पाक ने इन्सान को जिस कद्र नेमतें दी हैं, सब का यही हाल है। इस्लाम और ईमान भी अल्लाह की नेमते हैं। कुरआन मजीद भी अल्लाह की नेमत है। मगर यह उन लोगों के लिए जो इनकी कद्र व कीमत समझते हैं और उनके मुताबिक अमल करते हैं। ऐसे खुशनसीबों के लिए यकीनन अल्लाह की तरफ से बहुत तरक्की मिलती है और नाकद्री करने वाले कुफ्र में मुब्लाता होकर अजाबे दोजख के हकदार बन जाते हैं।

बुजुर्गो, दोस्तों, अजीजों!

बुखारी शरीफ में ऐसे ही तीन आदमियों का वाक्या रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबान मुबारक से बयान हुआ है जो बनी इस्राईल के तीन आदमियों के बारे में है। जिनमें से दो आदमियों ने अल्लाह की नाकद्री की, अल्लाह ने उनसे उन नेमतों को छीन लिया और एक खुशनसीब ने अल्लाह का शुक्र अदा किया। अल्लाह ने उसे तरक्की अता की। अल्लाह पाक का यह कानून आज भी जारी है। इन्सान इस कानून के तहत तरक्की व बुलन्दी पा रहा है। ऐसे कानूनों को अल्लाह की हदें कहा गया है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को दीन व दुनिया की तरक्कियां अता करे, अब आपको रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबान मुबारक से बनी इस्राईल के इन तीनों आदमियों का पूरा वाक्या सुनाते हैं।

गौर से सुनिये और देखिये और याद रखिए:

حَدَّثَنِیْ اَحْمَدُ بْنُ اِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا اِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ حَدَّثَنِیْ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ اَبِیْ عَمْرَةَ اَنَّ اَبَا هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ حَدَّثَهٗ اَنَّهٗ سَمِعَ النَّبِیَّ ﷺ یَقُوْلُ اِنَّ ثَلَاثَةً فِیْ بَنِیْ اِسْرَائِیْلَ اَبْرَصَ وَاَقْرَعَ وَاَعْمٰی بَدَا لِلّٰهِ اَنْ یَبْتَلِیَهُمْ فَبَعَثَ اِلَیْهِمْ مَلَكًا فَاَتَی الْاَبْرَصَ فَقَالَ اَیُّ شَیْءٍ اَحَبُّ اِلَیْكَ؟ قَالَ : لَوْنٌ حَسَنٌ وَجِلْدٌ حَسَنٌ قَدْ قَذِرَنِیَ النَّاسُ۔ قَالَ فَمَسَحَهٗ فَذَهَبَ عَنْهُ فَاُعْطِیَ لَوْنًا حَسَنًا وَجِلْدًا حَسَنًا فَقَالَ اَیُّ الْمَالِ اَحَبُّ اِلَیْكَ؟ قَالَ الْاِبِلُ اَوْ قَالَ الْبَقَرُ هُوَ شَكَّ فِیْ ذٰلِكَ اَنَّ الْاَبْرَصَ وَالْاَقْرَعَ قَالَ اَحَدُهُمَا الْاِبِلُ وَقَالَ الْآخَرُ الْبَقَرُ فَاُعْطِیَ نَاقَةً عُشَرَاءَ۔ فَقَالَ یُبَارَكُ لَكَ فِیْهَا۔ وَاَتَی الْاَقْرَعَ فَقَالَ اَیُّ شَیْءٍ اَحَبُّ اِلَیْكَ؟ قَالَ : شَعْرٌ حَسَنٌ وَیَذْهَبُ عَنِّیْ هٰذَا قَدْ قَذِرَنِیَ النَّاسُ۔ قَالَ فَمَسَحَهٗ فَذَهَبَ عَنْهُ فَاُعْطِیَ شَعْرًا حَسَنًا فَقَالَ اَیُّ الْمَالِ اَحَبُّ اِلَیْكَ؟ قَالَ الْبَقَرُ قَالَ فَأَعْطَاهُ بَقَرَةً حَامِلاً وَقَالَ یُبَارَكُ لَكَ فِیْهَا وَأَتَی الْأَعْمٰی فَقَالَ أَیُّ شَیْءٍ أَحَبُّ إِلَیْكَ قَالَ: یَرُدُّ اللّٰهُ اِلَیَّ بَصَرِیْ فَاُبْصِرُ بِهِ النَّاسَ قَالَ فَمَسَحَهٗ فَرَدَّ اللّٰهُ اِلَیْهِ بَصَرَهٗ قَالَ فَاَیُّ الْمَالِ اَحَبُّ اِلَیْكَ قَالَ الْغَنَمُ۔ فَاَعْطَاهُ شَاةً وَالِدًا فَاُنْتِجَ هٰذَانِ وَ وُلِّدَ هٰذَا فَكَانَ لِهٰذَا وَادٍ مِنْ اِبِلٍ وَلِهٰذَا وَادٍ مِنْ بَقَرٍ وَلِهٰذَا وَادٍ مِنَ الْغَنَمِ ثُمَّ اَتَی الْاَبْرَصَ فِیْ صُوْرَتِهٖ وَهَیْئَتِهٖ فَقَالَ رَجُلٌ مِسْكِیْنٌ تَقَطَّعَتْ بِیَ الْحِبَالُ فِیْ سَفَرِیْ فَلَا بَلَاغَ الْیَوْمَ اِلَّا بِاللّٰهِ ثُمَّ بِكَ اَسْئَلُكَ

بِالَّذِیْ اَعْطَاكَ اللَّوْنَ الْحَسَنَ وَالْجِلْدَ الْحَسَنَ وَالْمَالَ بَعِيْرًا اَتَبَلَّغُ عَلَيْهِ فِيْ سَفَرِیْ۔ فَقَالَ لَهٗ اِنَّ الْحُقُوْقَ كَثِيْرَةٌ فَقَالَ لَهٗ كَاَنِّیْ اَعْرِفُكَ! اَلَمْ تَكُنْ اَبْرَصَ يَقْذَرُكَ النَّاسُ فَقِيْرًا فَاَعْطَاكَ اللّٰهُ فَقَالَ لَقَدْ وَرِثْتُ كَابِرًا عَنْ كَابِرٍ فَقَالَ اِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ اللّٰهُ اِلٰى مَا كُنْتَ وَاَتَى الْاَقْرَعَ فِيْ صُوْرَتِهٖ وَهَيْئَتِهٖ فَقَالَ لَهٗ مِثْلَ مَا قَالَ فَرَدَّ عَلَيْهِ مِثْلَ مَا رَدَّ عَلَيْهِ هٰذَا فَقَالَ اِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ اللّٰهُ اِلٰى مَا كُنْتَ وَاَتَى الْاَعْمٰى فِيْ صُوْرَتِهٖ فَقَالَ رَجُلٌ مِسْكِيْنٌ تَقَطَّعَتْ بِیَ الْحِبَالُ فِيْ سَفَرِیْ فَلَا بَلَاغَ الْيَوْمَ اِلَّا بِاللّٰهِ ثُمَّ بِكَ اَسْئَلُكَ بِالَّذِیْ رَدَّ عَلَيْكَ بَصَرَكَ شَاةً اَتَبَلَّغُ عَلَيْهِ فِيْ سَفَرِیْ۔ فَقَالَ: قَدْ كُنْتُ اَعْمٰى فَرَدَّ اللّٰهُ بَصَرِیْ، وَفَقِيْرًا فَقَدْ اَغْنَانِیْ، فَخُذْ مَا شِئْتَ فَوَاللّٰهِ مَا اَجْهَدُكَ الْيَوْمَ بِشَیْءٍ اَخَذْتَهٗ لِلّٰهِ۔ فَقَالَ: اَمْسِكْ مَالَكَ ، فَاِنَّمَا ابْتُلِيْتُمْ۔ فَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْكَ وَسَخِطَ عَلٰى صَاحِبَيْكَ۔ [بخاری کتاب احادیث الانبیاء حدیث 3464-6653، مسلم الزهد والرقائق]

(बुखारी: किताबु अहादीसिल अम्बिया हदीस 3464-6653, मुस्लिमः अज-जुहद वर-रकाइक)

यानी ''हजरत अबू हुरैरा रजि. ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बनी इस्राईल में तीन शख्स थे, एक कोढ़ी, दूसरा गंजा, तीसरा अंधा। अल्लाह तआला ने चाहा कि उनका इतेहान ले। इसलिए अल्लाह तआला ने उनके पास

एक फरिश्ता भेजा, फरिश्ता पहले कोढ़ी के पास आया और उससे पूछा कि तुम्हें सबसे ज्यादा क्या चीज पसन्द है? उसने जवाब दिया कि अच्छा रंग और अच्छी चमड़ी। क्योंकि लोग मुझसे नफरत करते हैं। बयान किया कि फरिश्ते ने उस पर अपना हाथ फेरा तो उसकी बीमारी दूर भाग गयी और उसका रंग भी खूबसूरत हो गया और चमड़ी भी अच्छी हो गयी। फरिश्ते ने पूछा किस तरह का माल पसन्द करोगे? उसने कहा कि ऊंट या उसने गाय कहा। इस्हाक बिन अब्दुल्लाह को इस सिलसिले में शक था कि कोढ़ी और गंजे दोनों में से एक ने ऊंट की ख्वाहिश की और दूसरे ने गाय की। चुनांचे उसे हाम्ला (जिसके पेट में बच्चा हो) ऊंटनी दी गयी और कहा कि अल्लाह तआला तुम्हें इसमें बरकत देगा। फिर फरिश्ता गंजे के पास आया और उससे पूछा कि तुम्हें क्या चीज पसन्द है? उसने कहा कि अच्छे बाल और मौजूदा ऐब मेरा खत्म हो जाये, क्योंकि इसकी वजह से लोग मुझसे नफरत करते हैं। बयान किया कि फरिश्ते ने उसके सर पर हाथ फेरा और उसका ऐब जाता रहा और उसके उम्दा बाल आ गये। फरिश्ते ने पूछा किस तरह का माल पसन्द करोगे? उसने कहा कि गाय। बयान किया कि फरिश्ते ने उसे हाम्ला गाय दे दी और कहा कि अल्लाह तुम्हें इसमें बरकत देगा। फिर अंधे के पास फरिश्ता आया और उससे कहा, तुम्हें क्या चीज पसन्द है? उसने कहा कि अल्लाह मुझे आंखों की रोशनी दे ताकि मैं लोगों को देख सकूं। बयान किया कि फरिश्ते ने हाथ फेरा और अल्लाह तआला ने उसकी आंखों की रोशनी उसे वापिस कर दी। फरिश्ते ने पूछा कि किस तरह का माल पसन्द करोगे? उसने कहा कि बकरियां। फरिश्ते ने उसे हाम्ला बकरी दे दी। फिर तीनों जानवरों के बच्चे पैदा हुए। यहां तक कि कोढ़ी के ऊंट से उसकी वादी (घाटी) भर गयी, गंजे की गाय-बैल से उसकी वादी भर गयी, और अंधे की बकरियों से उसकी वादी भर गयी। फिर दोबारा फरिश्ता अपनी उसी पहली शक्ल में कोढ़ी के पास आया और कहा कि मैं एक बहुत गरीब और फकीर आदमी हूँ। सफर का तमाम सामान खत्म हो चुका है और अल्लाह तआला के सिवा और किसी से जरूरत पूरी होने की उम्मीद नहीं। मैं तुमसे उसी जात का वास्ता देकर जिसने तुम्हें अच्छा रंग और अच्छा चमड़ा और माल अता किया है, एक ऊंट का सवाल करता हूं, जिससे सफर पूरा कर सकूं। उसने फरिश्ते से कहा कि मेरे जिम्मे और बहुत से हक हैं। फरिश्ते ने कहा कि गालिबन मैं पहचानता हूँ। क्या तुम्हें कोढ़ की बीमारी नहीं थी? जिसकी वजह से लोग तुमसे घिन किया करते थे? तुम एक फकीर और कंगाल थे। फिर तुम्हें अल्लाह ने यह चीजें अता कीं। उसने कहा कि सारी दौलत तो मेरे बाप-दादा से

चली आ रही है। फरिश्ते ने कहा कि अगर तुम झूठे हो तो अल्लाह तुम्हें अपनी पहली हालत पर लौटा दे। फिर फरिश्ता अपनी पहली शक्ल में गंजे के पास आया और उससे भी वही दरख्वास्त की और उसने भी वही कोढ़ी वाला जवाब दिया। फरिश्ते ने कहा कि अगर तुम झूठे हो तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारी पहली हालत पर लौटा दे। उसके बाद फरिश्ता अंधे के पास आया और अपनी उसी सूरत में, और कहा कि मैं एक गरीब आदमी हूँ। सफर के तमाम सामान खत्म हो चुके हैं। और सिवाय अल्लाह तआला के और किसी से जरूरत पूरी होने की उम्मीद नहीं। मैं तुमसे उस जात का वास्ता देकर जिसने तुम्हें तुम्हारी आंखों की रोशनी वापिस दी है, सिर्फ एक बकरी मांगता हूँ, जिससे अपने सफर की जरूरतें पूरी कर सकूं। अंधे ने जवाब दिया कि वाकई मैं अंधा था और अल्लाह तआला ने मुझे अपने फजल से आंखों की रोशनी अता फरमायी और वाकई मैं मोहताज और फकीर था और अल्लाह तआला ने मुझे मालदार बना दिया। तुम जितनी बकरियां चाहो ले सकते हो। अल्लाह की कसम जब तुमने अल्लाह का वास्ता दिया है तो जितना भी तुम्हारा जी चाहे, ले लो। मैं तुम्हें हरगिज नहीं रोक सकता। फरिश्ते ने कहा कि तुम अपना माल अपने पास रखो, यह तो सिर्फ इम्तेहान था और अल्लाह तआला तुम से राजी और खुश है। और तुम्हारे दोनों साथियों से नाराज है।"

मुहतरम बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

जो कुछ आपने सुना है, उसे महज किस्सा ना समझना। यह ऐसी हकीकत का इजहार है जिसकी सच्चाई रोजे रोशन की तरह साफ है। अल्लाह तबारक वतआला लेने और देने हर चीज पर कुदरत रखता है। कोई इन्सान कभी यह नहीं समझे कि वो हमेशा किसी मुसीबत में ही गिरफ्तार रहेगा। मुमकिन है कि कल अल्लाह तआला का फजल हो और वो मुसीबत एक भूली-बिसरी बात बन जाये। इसी तरह कोई इन्सान यह ना समझे कि उसकी तन्दुरुस्ती उसकी जवानी उसकी दौलत हमेशा रहे, उसके हमेशा एक जैसे हाल रहेंगे। तन्दुरुस्ती को खराब होते एक मिनट नहीं लगती, जवानी एक आंधी का झोंका है जो बड़े जोरों से आता है और मिनटों में गायब हो जाता है। माल व दौलत ढलती फिरती छांव है, जिसे कभी सबात व करार नहीं है। इस वाक्ये में पहले दो शख्स वो थे जिन्होंने अल्लाह की नेमतों की नाकद्री की, उन्होंने अपनी पहली हालत को भुला दिया। वो कोढ़ और गंज जैसी बीमारियों में फंसे थे। लोग उनसे नफरत करके दूर भागते थे, उनकी बीमारी बहुत खतरनाक थी। बल्कि बीमारी ना थी, अल्लाह पाक का इम्तेहान था।

अल्लाह पाक ने फरिश्तों को उनका इम्तेहान लेने वाला बनाकर भेजा वो उस इम्तेहान में फेल हो गये। आयते करीमा "व-ल-इन कफरतुम इन-न अजाबी ल-शदीद' का वो मिस्दाक (सबूत) हुए कि अगर मेरी नेमतों को भूल जाओगे और नाकद्री करोगे तो मेरा अजाब भी बड़ा सख्त है। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि उनको नाकद्री की यह सजा मिली कि वो फिर पिछली हालत पर आ गये। कोढ़ी तन्दुरुस्ती के बाद फिर कोढी हो गया और गंजा भी तन्दुरुस्त होने के बाद फिर गंजा हो गया और नाशुक्री का बदला उनको फौरन मिल गया। तीसरे शख्स ने जो पहले नाबीना और अंधा था, अल्लाह का शुक्र अदा किया। अपनी पिछली हालत को याद करके अल्लाह का शुक्र अदा किया। अल्लाह पाक ने उसकी आंखों की रोशनी को कायम रखा और उसकी बकरियों में दिन-दूनी रात चौगुनी तरक्की हुई। इन्सान की यह पूरी जिन्दगी एक इम्तेहानगाह है, जैसा कि इरशादे बारी तआला है:

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا (المُلك ٢٧)

(सूरह मुल्क: 2, पारा 29)

"अल्लाह वो है जिसने मौत व जिन्दगी को पैदा किया ताकि वो तुमको आजमाये कि कौन तुम में से अच्छे और नेक काम करता है।"

कितने लोग जिन्दगी के इस मकसद को समझकर इस चन्द रोज की जिन्दगी में नेक अमलों का खजाना जमा कर लेते हैं, कितने जानवरों की तरह जिन्दगी गुजारकर आखिरत की जिन्दगी के लिए खाली हाथ दुनिया से वापिस जाते हैं। अल्लाह तआला ने इसीलिए कुरआन मजीद में बार बार इन्सान को पहली हालत याद दिलायी है:

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ① (الدَّهر ٧٦)

(सूरह दहर: 1, पारा 29)

"इन्सान पर एक ऐसा वक्त गुजर चुका है कि वो दुनिया में याद आने वाली कोई भी चीज नहीं था।" हमने उसे एक बूंद से पैदा करके उसको क्या से क्या बना दिया। अल्लाह का फरमान बेशक दुरुस्त और सही है।

बिरादराने मिल्लत व नौनिहालाने इस्लाम!

खुत्बाते नबवी जो आपने सुने हैं, उनका हर लफ्ज दिल में उतार लेने के काबिल है, याद रखने के काबिल है। यह ऐसे जवाहरात हैं जिनकी कीमत कोई

अदा नहीं कर सकता। जिनका लफ्ज-लफ्ज हीरे जवाहरात से तौलने के काबिल है। इनके सुनने और याद रखने का शौक ईमान की निशानी है और मुहब्बत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दलील है।

अल्लाह तआला हम सबको पाकीजा बातों पर अमल करने और उसकी नेमतों की कद्र व शुक्र करने की तौफीक अता फरमाये और सुनने-सुनाने वालों को अमल की दौलत से मालामाल कर दे। आमीन या रब्बल आलमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِىْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللهَ لِىْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 31

शराब पीने, जुएबाजी और बदकारी की बुराई में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ (اَلْمَآئِدَة ٥)

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنْ شَرِبَ الْخَمْرَ لَمْ يَقْبَلِ اللّٰهُ لَهٗ صَلَاةً اَرْبَعِيْنَ صَبَاحًا فَاِنْ تَابَ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِ فَاِنْ عَادَ لَمْ يَقْبَلِ اللّٰهُ لَهٗ صَلَاةً اَرْبَعِيْنَ صَبَاحًا فَاِنْ تَابَ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِ فَاِنْ عَادَ لَمْ يَقْبَلِ اللّٰهُ لَهٗ صَلَاةً اَرْبَعِيْنَ صَبَاحًا فَاِنْ تَابَ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِ فَاِنْ عَادَ فِي الرَّابِعَةِ لَمْ يَقْبَلِ اللّٰهُ لَهٗ صَلَاةً اَرْبَعِيْنَ صَبَاحًا وَلَمْ يَتُبْ عَلَيْهِ وَسَقَاهُ مِنْ نَهْرِ الْخَبَالِ۔ (رواه الترمذی)

तमाम खूबियों, बड़ाईयों का मालिक वो अल्लाह पाक है, जिसके हाथ में जिन्दगी और मौत है। जो इज्जत व जिल्लत देने वाला है जो अमीर को गरीब और गरीब को अमीर बना देने वाला है। रोजी-रिज्क जिसके हाथ में है, जमीन आसमान, बादल, हवा, चांद, सूरज और कायनात की हर चीज पर जो कंट्रोल कर रहा है। उस अल्लाह पाक का जिस कद्र भी शुक्र किया जाये, कम है। उसने हमारी हिदायत के लिए अपने महबूब रसूले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

हमारा आखरी काइद, रहनुमा बनाकर भेजा। अल्लाह पाक उन पर हजार-हजार दरूद सलाम नाजिल फरमाये और उनके आल और उनकी पाक बीवियों और तमाम सहाबा किराम पर अपनी रहमतों की बारिश फरमाये।

मुहतरम भाईयों!

हम्दो सलात के बाद आज का खुत्बा शराबनोशी, जुएबाजी, जिनाकारी जैसे बुरे कामों की बुराई पर है। शराब ऐसी बर्बाद करने वाली और खराब चीज है जो इन्सान को जानवर बना देती है, जिसे अल्लाह पाक ने हराम करार दिया है और उसकी बुराई पर सारे ही नेक लोगों का इत्तेफाक है। दुनिया के सारे मजहब इससे रोकते हैं और तमाम मुल्कों के कानून में इसको बुरा मानते है। कुरआन मजीद में बड़ी सख्ती के साथ इससे मना फरमाया है, जैसाकि इरशाद है:

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ (اَلْمَآئِدَة ٥)

(सूरह माइदहः 90, पारा 6)

''ऐ ईमान वालों! याद रखो कि शराब पीना, जुआ खेलना, बुत पूजना, तीरों से फाल निकालना यह सब शैतानी काम हैं, इनसे दूर रहो और अगर दीन व दुनिया में अपनी कामयाबी चाहते हो।''

मुश्रिकीने मक्का ने खाना-ए-काबा के बुतों के हाथों में तीर दे रखे थे, जिन पर ''कर'' और ''ना कर'' का लफ्ज लिखा होता था। वो कोई काम शुरू करने से पहले वहां जाकर उन बुतों के हाथों से एक तीर निकालते। उस पर अगर करने का हुक्म लिखा होता, तो वो काम करते और अगर ना करने का होता तो वो काम ना करते। इन तीरों से मना किया गया। शराब और जुए की बुराईयों के सिलसिले में आगे अल्लाह तआला ने फरमाया:

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

(اَلْمَآئِدَة ٥)

(सूरह माइदहः 91, पारा 6)

यानी ''शैतान तो यही चाहता है कि वो शराब और जुए के जरीये तुम्हारे आपस में दुश्मनी और जलन पैदा करे और तुमको अल्लाह की याद और नमाज से

गाफिल करे। इन खराबियों को मालूम करने के बाद क्या तुम बुरे कामों से रूकने वाले नहीं हो।''

शराब और जुए से कितने फसादात और झगड़े पैदा होते हैं, कई बार खून-खराबे तक की नौबत पहुंच जाती है, इनसे अकलमन्द इन्सान जानकार हैं।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस मुसलमान ने एक बार शराब पी ली, अल्लाह पाक चालीस दिनों तक उसकी नमाज कबूल नहीं करता। फिर अगर उसने तौबा की तो अल्लाह पाक भी उसकी तौबा कबूल कर लेता है। उसके बाद फिर उसने तौबा तोड़ दी और शराब पी डाली तब भी चालीस दिन तक उसकी नमाज कबूल नहीं होती, फिर अगर उसने तौबा की तो अल्लाह पाक उसकी तौबा कबूल कर लेता है। बद-किस्मती से अगर फिर उसने शराब पी ली तो अल्लाह पाक फिर चालीस रोज उसकी नमाज कबूल नहीं करता। फिर अगर उसने तौबा की तो अल्लाह पाक उसकी तौबा कबूल कर लेता है। अगर चौथी बार भी उसने तौबा को तोड़ डाला और शराब पी ली तो अल्लाह पाक उसकी तौबा कबूल नहीं करेगा, बल्कि दोजख में ''नहरे खबाल'' से पीप पिलाया जायेगा।

नहर खबाल वो है जिसमें दोजखियों का खून और पीप जमा होकर सड़ता रहता है, वो गंदा बदबूदार खून व पीप उस शराबी को पिलाया जायेगा। जुएबाजों और नाकारों के लिए भी अल्लाह के यहां सख्त तरीन सजा तय है।

बिरादराने इस्लाम!

आपने अन्दाजा किया होगा कि शराब कितनी बुरी चीज है और उसकी एक मुसलमान के लिए किस कद्र संगीन सजा है कि वो दोबारा रहमत से दूर कर दिया जाता है और आखिर में दोजख में दाखिल होकर उसको वो गंदा मवाद पीने को मिलेगा जिसका जिक्र आप सुन चुके हैं। जो लोग इन नसीहतों को सुनकर भी बाज ना आयें और वो मुसलमान भी हों, उनके लिए और सख्त तरीन फरमाने नबवी सुनिये और गौर फरमाइये कि वो कितने बड़े मुजरिम हैं।

عَنْ دَيْلَمِ الْحِمْيَرِيِّ قَالَ قُلْتُ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ إِنَّا بِأَرْضٍ بَارِدٍ نُعَالِجُ فِيْهَا عَمَلًا شَدِيْدًا وَإِنَّا نَتَّخِذُ شَرَابًا مِنْ هٰذَا الْقَمْحِ نَتَقَوّٰى بِهٖ عَلٰى أَعْمَالِنَا وَعَلٰى بَرْدِ بِلَادِنَا قَالَ هَلْ يُسْكِرُ؟ قُلْتُ نَعَمْ.

قَالَ: فَاجْتَنِبُوْهُ. قُلْتُ إِنَّ النَّاسَ غَيْرُ تَارِكِيْهِ قَالَ: إِنْ لَمْ يَتْرُكُوْهُ قَاتِلُوْهُمْ. (رواه ابوداؤد)

''एक सहाबी दैलम हिमयरी कहते हैं कि मैंने एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि हुजूर हम एक बहुत ठण्डे मुल्क के रहने वाले हैं, वहां इलाज व मुआलिजा की जरूरत पेश आती रहती है और हम उस गैहवे से शराब बनाते हैं जिससे हम काम के लिए ताकत हासिल करते हैं और सर्दी से भी महफूज रहते हैं। आपने पूछा, क्या वो नशा लाती है?मैंने कहा, हां-हां! आपने फरमाया कि उससे बिलकुल दूर रहो। मैंने कहा कि लोग उसके छोड़ने वाले नहीं हैं। आपने फरमाया कि फिर ऐसे लोगों से लड़ाई करो।''

भाईयों!

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस हुक्म से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि शराब पीना कितना बड़ा गुनाह है। कि जब एक गिरोह इससे बाज ना आये तो उनके खिलाफ हथियार उठाने का हुक्म है। हालांकि लड़ाई करना कोई अच्छा काम नहीं है। मगर शराबियों के खिलाफ लड़ाई को भी जायज करार दिया जा सकता है। यह शराबनोशी का जुर्म सिर्फ शराबी ही को नहीं बल्कि उसके पूरे समाज को तबाह कर देने वाला है। क्योंकि आम तौर पर शराबी लोग बे-हया हो जाते हैं। और फिजूल खर्च चोर-डाकू सब कुछ बन सकते हैं। वो नाहक खून भी बहा सकते हैं और वो जिनाकारी की बीमारी में भी फंस कर ऐसी बीमारियों का शिकार हो सकते हैं जो उनकी नस्लों में मुद्दत तक बाकी रह जाती है। इसीलिए उनसे लड़ाई की इजाजत दी गई है ताकि उनकी खराबियां आम ना हो सकें। इसलिए शराब को ''उम्मुल खबाइस (बुराईयों की मां)'' कहा गया है। कि यह सारे ही गंदे कामों की जड़ है एक हदीसे नबवी आपको सुनायी जाती है जो गौर से सुनने और याद रखने के काबिल है:

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَاقٌّ وَلَا قَمَّارٌ وَلَا مَنَّانٌ وَلَا مُدْمِنُ خَمْرٍ.

यानी ''हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जन्नत में मां-बाप का नाफरमान दाखिल ना होगा और ना जुएबाज जन्नत में दाखिल हो सकेगा और ना एहसान जतलाने वाला और रिश्ते तोड़ने वाला जन्नत में दाखिल हो सकेगा और ना हमेशा शराब पीने वाला जन्नत में जा सकेगा।''

इन बुराईयों की यह सजा कम नहीं है कि इन बुराईयों में गिरफ्तार होने वाले जन्नत की हवा भी ना पा सकेंगे।

बिरादराने इस्लाम!

आज दुनिया में ऐसे ही लोग ज्यादा हैं, ज्यादातर बच्चे अपने मां बाप के नाफरमान हो रहे हैं। जुएबाजी का आम धंधा है जो कितने ही नामों से सैलाब की तरह दुनिया में फैल रहा है। लाटरी, रेस, मोआमाबाजी यह सब जुऐ की किस्में हैं, जिसमें किस कद्र मखलुक तबाह है। बड़े-बड़े खानदान इस जुए की लत में फंसकर बर्बाद हो चुके हैं। बड़े-बड़े सेठ साहूकार जुऐ के मरीज बनकर रोटी के मोहताज बन गये हैं और शराब की आदत डाल लेने वाले मुसलमानों में आपको बहुत मिलेंगे, गैर मुसलमानों का तो जिक्र ही क्या है।

अफसोस तो नाम के मुसलमान पर है, कितने लोग सैयद, शेख, पठान कहलाकर शराबी हैं। और जुएबाजी और लाटरी और हरामकारी के मर्जो में मुब्तला हैं। ऐसे लोग इस्लाम के लिए बदनामी हैं। काश ऐसे भाई अपनी इज्जत व आबरू को बहाल करने के लिए इन बुरे कामों से दूर हो जायें। क्योंकि तोबा करने वालों के लिए रहमत के दरवाजे खुले हुए हैं। पस ऐसे मुसलमानों को अल्लाह से डरकर यह बुरी चीजें छोड़ देनी चाहिएं वरना मौत के बाद जो अजाब सामने आने वाले हैं, उनको बर्दाश्त करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इन बुराईयों में फंसने वालों के लिए दुनियावी जिन्दगी भी दोजख बन जाती है। क्योंकि वो अफसोस, कर्ज, बेरोजगारी और मुख्तलिफ खतरनाक बीमारियों में मुब्तला होकर जलील व ख्वार हो जाते हैं। दुनिया के शरीफ लोगों की निगाहों से गिर जाते हैं, यह अजाब कम नहीं है।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और आलीशान फरमान सुनिए और दिल में जगह दीजिए

عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ قَالَ قَالَ النَّبِیُّ ﷺ اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰی بَعَثَنِیْ رَحْمَةً لِّلْعَالَمِیْنَ وَهُدًی لِّلْعَالَمِیْنَ وَاَمَرَنِیْ رَبِّیْ عَزَّوَجَلَّ بِمَحْقِ الْمَعَازِفِ وَالْمَزَامِیْرِ وَالْاَوْثَانِ وَاَمْرِ الْجَاهِلِیَّةِ وَحَلَفَ رَبِّیْ عَزَّوَجَلَّ بِعِزَّتِیْ لَا یَشْرَبُ عَبْدٌ مِنْ عَبِیْدِیْ جُرْعَةً مِّنْ خَمْرٍ اِلَّا سَقَیْتُهٗ مِنَ الصَّدِیْدِ۔ مِثْلَهَا وَلَا یَتْرُکُهَا مِنْ مَخَافَتِیْ اِلَّا سَقَیْتُهٗ مِنْ حِیَاضِ الْقُدُسِ۔ (مسند احمد)

"हजरत अबू उमामा रजि. कहते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया, बेशक अल्लाह ने मुझको तमाम जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजा है और सारे जहां वालों के लिए राहे हक दिखाने वाला बनाया है और मुझे मेरे रब ने हुक्म फरमाया है कि मैं गाने-बजाने के सारे आलात को मलिया-मेट कर दूं और बुतों को और सलीब को जो ईसाईयों का मजहबी निशान बना हुआ है, उन सबको मिटा दूं और जाहिलियत के जमाने की सब बातों को खत्म कर दूं। और मेरे रब्बुल इज्जत ने कसम खायी हुई है कि मुझको अपनी इज्जत की कसम कि जो कोई बन्दा दुनिया में एक घूंट शराब भी पीयेगा, मैं उसे दोजख में दोजखियों के लहू और पीप और राद की घूंट पिलाऊंगा और जो भी मेरा बन्दा मेरे डर से दुनिया में शराब पीना छोड़ देगा, उसे आखिरत में पाकीजा हौज का आबे कौसर पिलाऊंगा।"

मेरे मुअज्जज भाईयों!

अल्लाह पाक के इस मुहब्बत भरे इरशाद को सुनकर जो मुसलमान मर्द या औरत गाने बजाने के चाहने वाले बने हुए हैं, जिनको रेडियो सुने बगैर नींद नहीं आती है और जो भाई-बहन शराब पीने की बुरी आदत में गिरफ्तार हैं, उनको चाहिए कि जिस तौर पर मुमकिन हो, इन बुरी आदतों को अल्लाह के डर से छोड़ दें, पुख्ता तौबा कर लें और अल्लाह पाक को राजी कर लें ताकि कयामत के दिन अल्लाह पाक के यहां हौजे कौसर का बेहतरीन पानी नसीब हो सके। अल्लाह पाक हर मुसलमान को अपना डर अता करे। आमीन!

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

ثَلَاثَةٌ قَدْ حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِمُ الْجَنَّةَ مُدْمِنُ خَمْرٍ وَالْعَاقُّ وَالدَّيُّوثُ الَّذِيْ يُقِرُّ فِيْ أَهْلِهِ الْخُبْثَ۔ (رواه احمد والنسائی)

"तीन शख्सों पर अल्लाह ने जन्नत को हराम कर दिया है,एक वो शख्स जो हमेशा शराब पीता पीता मर गया और दूसरा मां-बाप का नाफरमान, तीसरा वो दय्यूस जो अपने घर में अपने घर-वालों में गन्दे कामों को बरकरार रखता है और उनको खत्म नहीं करता।"

इन तीनों पर अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है। दय्यूस वो शख्स है जिसकी औरत बदकार है और वो उस पर शर्म नहीं करता। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसे गन्दे कामों से बचाये।

हजरत अबू मूसा अशअरी रजि. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तीन आदमी जन्नत में दाखिल ना होंगे, हमेशा शराब पीने वाला और रिश्तेनातों को तोड़ने वाला और जादू-टोनों, टोटकों को सच्चा जानने वाला।

और हदीस अब्दुल्लाह बिन अब्बास में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि

مُدْمِنُ الْخَمْرِ إِنْ مَاتَ لَقِيَ اللهَ كَعَابِدِ وَثَنٍ۔ (رواه احمد)

यानी "शराब पीते-पीते मर जाने वाला अल्लाह से ऐसे ही मिलेगा, जैसे बुतों के पुजारी मिलेंगे।"

मालूम हुआ कि शराबनोशी इतना बुरा जुर्म है कि उस पर मरने वाला अल्लाह पाक से बुतपरस्ती की सी हालत में मुलाकात करेगा। इसलिए उसने अपने नफ्स को खुदा बनाकर जिन्दगी गुजारी और मरते दम तक अपने नफ्स के बुत को पूजता रहा।

अल्लाहु अकबर! इससे अन्दाजा किया जा सकता है कि शराब पीने वाले अल्लाह के यहां कितने बड़े मुजरिम हैं। यह भी याद रखना चाहिए कि शराबनोशी के बहुत बुरे नतीजों में से जिनाकारी का होना भी एक बदतरीन नतीजा है, जिसका

मतलब यह है कि शराबनोशी और जिनाकारी का बहुत करीब का ताल्लुक है और यह बात मालूम है कि इस्लाम में जिनाकारी की सजा किस कद्र सख्त है। अगर जिनाकार मर्द व औरत शादी-शुदा हों तो उनको रज्म किया जायेगा यानी छाती बराबर एक गड्ढा खोदकर उसमें बदकार मर्द को उतारा जायेगा और जो लोग वहां जमा हैं, उस पर इस कद्र पत्थर मारेंगे कि वो खत्म हो जायेगा, यही सजा शादी-शुदा औरत के लिए है। इस बारे में सिर्फ एक हदीस नकल की जाती है कि सारे भाईयों-बहनों और मर्द व औरतों को इबरत हासिल हो।

عَنْ عُمَرَ قَالَ قَالَ إِنَّ اللهَ بَعَثَ مُحَمَّدًا بِالْحَقِّ وَاَنْزَلَ عَلَيْهِ الْكِتَابَ وَكَانَ مِمَّا اَنْزَلَ اللهُ آيَةَ الرَّجْمِ. رَجَمَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَرَجَمْنَا بَعْدَهٗ وَالرَّجْمُ فِيْ كِتَابِ اللهِ حَقٌّ عَلٰى مَنْ زَنٰى إِذَا اَحْصَنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ إِذَا قَامَتِ الْبَيِّنَةُ اَوْ كَانَ الْحَبَلُ اَوِ الْاِعْتِرَافُ. (بخاری و مسلم)

"हजरत उमर रजि. कहते हैं कि बिलाशक अल्लाह ने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना सच्चा रसूल बनाकर भेजा और आपके ऊपर अपनी पाक किताब कुरआने मजीद को उतारा। जिसमें रज्म के बारे में भी आयत नाजिल फरमायी थी, जिस पर अमल करने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी जिन्दगी में रज्म किया और आपके बाद हमने भी अपनी खिलाफत के जमाने में ऐसे मुजरिमों को रज्म किया और रज्म का हुक्म अल्लाह की किताब में बिलकुल हक और सच है। जब कोई शादी-शुदा मर्द या औरत जिनाकारी करे और उस पर शरीअत के कानून के मुताबिक चार गवाह भी गुजर जायें या औरत को जिना का हमल (बच्चा) ठहर जाये या वो खुद इकरार कर ले तो शरीअत के कानून में उनको रज्म करना जरूरी हो जाता है।"

मगर अल्लाह तआला की हदों को कायम करना यह सिर्फ इस्लामी हुकूमत का काम है। कुरआनी अदालत में चार सच्चे मुसलमान हलफिया ऐसी गवाही दें कि उन्होंने खुद अपनी आंखों से उनको यह बुरा काम करते देखा है। अगर एक गवाह भी कम हो तो अदालते कुरआनी इस केस को खारिज कर देती है, क्योंकि जैसी संगीन सजा है, वैसा ही उसे साबित करने के लिए पुख्ता सबूत की जरूरत है।

बिरादराने इस्लाम!

यह किस कद्र हैरत की बात है कि इस ला-दीनी जमाने में भी एक हुकूमत ऐसी मौजूद है जो कुरआनी कवानीन के ऊपर अपनी हुकूमत चला रही है, जिसके यहां शरअी हुदूद कायम हैं, जिससे मुराद हुकूमत सऊदिया अरबिया है। अल्लाह पाक इसे हमेशा कायम व दायम रखे और इस्लामी कानून को कायम रखने में अल्लाह इस हुकूमत की मदद फरमाये।

मुस्लिम नौजवानों!

आज के बदतरीन हालात में बुरे अखलाक का सुधार बहुत जरूरी है और यह वक्त का बहुत बड़ा जिहाद है, जिसके लिए हथियारों की जरूरत नहीं है, बल्कि आपके अज्म व हौसला की जरूरत है। शराबनोशी, जिनाकारी जैसे नापाक कामों को मिटाने के लिए कुछ नौजवान जमा होकर कमर (हिम्मत) बांध लें और इस कोशिश के लिए वो अपने आपको इस काम में लगा दें। इन बुरे अड्डों पर जाकर मुसलमानों को उनसे रोकें। खुश अख्लाकी और नरमी से उनकी बुराईयां सामने लायें। इसके लिए जुबान व कलम से काम लें तो नतीजे बहुत बेहतरीन निकल सकते हैं। अगर आपकी कोशिश से एक इन्सान भी इन गन्दे कामों से बच गया तो आपके लिए यह नेक अमल जहन्नम से बचाव का जरीया बन सकता है।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 32

क़यामत की निशानियों और हालात के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ۝ وَاِذَا الْجِبَالُ سُیِّرَتْ ۝ وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝ وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝ (التکویر ۸۱)

(सूरह तकवीर: 1-5, पारा 30)

तमाम हम्दो सना, तस्बीह व तहमीद व तकबीर और कायनात की सारी खूबियाँ, बड़ाईयां उस पाक परवरदिगार के लिए लायक हैं जो सारी कायनात पर हकीकी बादशाही कर रहा है। जो अपनी जात और सिफात में अकेला है। जिसके हुक्मों से हैरत अंगेज चीजें पैदा हो जाती हैं और जिसके हुक्म से बड़ी से बड़ी मखलूक एक दम में बर्बादी के खडडे में चली जाती है। अल्लाह की तारीफ के बाद बेशुमार दरूद व सलाम, उस सच्चे नबी पर जो खत्मे नबूवत का ताज पहनकर दुनिया में तशरीफ लाये, जिन्होंने इन्सानियत की डूबती हुई नाव को सहारा दिया और इन्सान को तामीर व तरक्की की डगर पर लगाया, उस सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनगिनत दरूद व सलाम के बाद:

बिरादराने इस्लाम!

आज का खुत्बा कयामत की निशानियों और हालात के बयान में है। दरहकीकत कयामत का कायम होना बरहक है। जो शख्स कयामत के कायम होने को नहीं मानता, वो इस्लामी नुक्ता-ए-नजर से ईमान से बिलकुल कोरा है। कयामत के आने को अल्लाह पाक ने कुरआन मजीद की कई आयतों में कसम खाकर बयान फरमाया है। खुत्बे में जो आयत आपने सुनी है, उसका तर्जुमा यह है कि:

"जब सूरज वाकेअ दिया जायेगा और जब सितारे बे-नूर हो जायेंगे और जब पहाड़ चलाये जायेंगे और जब गाभिन ऊंटनियां छोड़ दी जायेगी और जब वहशी जानवर इक्ट्ठे किये जायेंगे। आखिर इन्सान उस दिन अपने कामों का नतीजा खुद जान लेगा।"

इन आयात में दुनिया बर्बाद होने का पूरा नक्शा बयान किया गया है। पहले सूरज की बर्बादी जिससे जाहिर है कि इस कायनात का दारोमदार सूरज पर है। सूरज बर्बाद हो गया तो सारे जहां की तबाही यकीनी है। अल्लाह पाक ने एक नक्शा नीचे दी गयी आयत में पेश फरमाया हैः

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاءَ اللّٰهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۰﴾ (الزمر ۳۹)

"और उस दिन सूर फूंक दिया जायेगा। पस आसमानों और जमीनों वाले बे-होश होकर गिर पड़ेंगे। मगर जिनको अल्लाह चाहे वो बेहोशी का शिकार ना होंगे। फिर दूसरी बार सूर फूंका जायेगा। पस सारे महशर वाले एकदम खड़े होकर देखने लग जायेंगे। महशर का नजारा यह होगा कि महशर की सारी रूये जमीन अपने परवरदिगार के नूर से जगमगा उठेगी। उस दिन लोगों के कामों की किताबें दफ्तरों की शक्ल में मौजूद कर दी जायेंगी। और नबीयों और दीगर गवाहों को अदालत में लाया जायेगा और लोगों के बीच हक-हक फैसले सुनाये जायेंगे और किसी पर जुल्म नहीं किया जायेगा। बल्कि जिस शख्स ने नेक और बद जो भी काम किये हैं, उनका पूरा-पूरा बदला उनको दिया जायेगा और अब दुनियावी जिन्दगी में जो कुछ भी नेक व बद अमल कर रहे हैं, अल्लाह पाक उनको खूब जानता है।"

कयामत के बारे में और भी बहुत सी कुरआनी आयते हैं। सूरह "काफ' का खुलासा यही कयामत का साफ बयान है और न मानने वालों के झूठे ख्यालात का रद्द है।

भाईयों!

कयामत के वाकेअ होने से पहले कुछ निशानियां जाहिर होंगी, जिनके बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक खुत्बा मुबारक आपको सुनाया जा रहा है। अल्लाह पाक सुनने और अमल करने और याद रखने की तौफीक बख्शे। आमीन!

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اِذَا اتُّخِذَ الْفَیْءُ دُوَلًا دُوَلًا وَالْاَمَانَةُ مَغْنَمًا وَالزَّكَاةُ مَغْرَمًا وَتُعُلِّمَ لِغَیْرِ الدِّیْنِ وَاَطَاعَ الرَّجُلُ اِمْرَأَتَهٗ وَعَقَّ اُمَّهٗ وَاَدْنٰی صَدِیْقَهٗ وَاَقْصٰی اَبَاهُ وَظَهَرَتِ الْاَصْوَاتُ فِی الْمَسَاجِدِ وَسَادَ الْقَبِیْلَةَ فَاسِقُهُمْ وَكَانَ زَعِیْمُ الْقَوْمِ اَرْذَلَهُمْ وَاُكْرِمَ الرَّجُلُ مَخَافَةَ شَرِّهٖ وَظَهَرَتِ الْقَیْنَاتُ وَالْمَعَازِفُ وَشُرِبَتِ الْخُمُوْرُ وَلَعَنَ آخِرُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اَوَّلَهَا فَارْتَقِبُوْا عِنْدَ ذٰلِكَ رِیْحًا حَمْرَاءَ وَزَلْزَلَةً وَخَسْفًا وَمَسْخًا وَقَذْفًا وَاٰیَاتٍ تَتَابَعُ كَنِظَامٍ قُطِعَ سِلْكُهٗ فَتَتَابَعَ۔ (رواہ الترمذی)

"हजरत अबू हुरैरा रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कयामत की निशानियां यह हैं कि जब हाकिम लोग लगान (सरकारी टैक्स) को दौलत बनाकर घरों में रखना शुरू कर दें और हकदारों पर खर्च ना करें और लोग अमानत को माले गनीमत जान कर डकारने लग जायेंगे और जकात को बोझ समझने लगेंगे और दीनी इल्म को लोग दुनियावी इज्जत व मर्तबा हासिल करने के ख्याल से पढ़ें और मर्द अपनी बीवी का गुलाम बन जाये और अपनी मां का नाफरमान हो जाये और अपने दोस्तों के करीब रहने को पसन्द करे और अपने बाप से दूर भागे और मस्जिदों में लोग चीखने चिल्लाने लग जायें या मस्जिदों में लोग झगड़ेबाजी और शोर-गुल करने लग जायें और कबीले का, या मुहल्ले का या गांवों का सरदार ऐसे शख्स को बनाया जाये जो उनमें बदतरीन गुनहगार व फाजिर आदमी है और कौम का नुमाईन्दा या मेम्बर वो शख्स बन जाये जो इनमें सबसे ज्यादा कमीना हो और बुरे लोगों की इज्जत उनके

शर के खौफ से की जाये और गाने वालियां और बजाने के आलात दुनियाभर में फैल जायें (जैसा कि आजकल रेडियो, सिनेमा, मोबाईल, टेलीविजन के जरीये से हो रहा है (1) और शराब खुल्लम-खुल्ला पी जाये और इस उम्मत के पिछले लोग अपने पहले सल्फ सालेहिन को लान-तान करने लग जायें। जब यह निशानियां जाहिर हो तो उस वक्त सुर्ख आंधियों के आने का इंतेजार करो जो खुदा के गजब का निशान है और भूंचालों का और जमीनों में धंस जाने का और सूरतों के बदल जाने का और आसमानों से पत्थरों के बरसने का इंतेजार करो। यह कयामत के करीब होने की निशानियां हैं जो वजूद में आ रही हैं और इनके आलवा और भी बहुत सी निशानियां जाहिर होंगी। पे-दरपे जिस तरह एक लड़ी का धागा टूटकर उसके दाने पे-दरपे गिरने शुरू हो जाते हैं। इसी तरह पे-दरपे कयामत की निशानियां सामने आयेंगी।

यह सारी निशानियां आज वजूद में आ चुकी हैं। आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस खुत्बा मुबारक में चौदह निशानियां बतलायी हैं जो सबकी सब हमारे आपके सामने हैं। अब सिर्फ बड़ी बड़ी निशानियों का सामने आना और बाकी है, जैसे: दज्जाल का आना, हजरत इमाम महदी का जाहिर होना, आसमान से हजरत ईसा अलैहिस्सलाम का उतरना। यह निशानियां भी जरूर अपने वक्त पर जाहिर होकर रहेंगी, जिनके बाद फौरन ही कयामत कायम हो जायेगी।

اِنَّهَا لَنْ تَقُوْمَ حَتّٰى تَرَوْا قَبْلَهَا عَشْرَ آيَاتٍ فَذَكَرَ الدُّخَانَ وَالدَّجَّالَ وَالدَّآبَّةَ وَطُلُوْعَ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا وَنُزُوْلَ عِيْسٰى بْنِ مَرْيَمَ وَيَاجُوْجَ وَمَاجُوْجَ وَثَلَاثَةَ خُسُوْفٍ خَسْفٌ بِالْمَشْرِقِ وَخَسْفٌ بِالْمَغْرِبِ وَخَسْفٌ بِجَزِيْرَةِ الْعَرَبِ وَآخِرُ نَارٍ تَخْرُجُ مِنَ الْيَمَنِ تَطْرُدُ النَّاسَ اِلٰى مَحْشَرِهِمْ وَفِيْ رِوَايَةٍ نَارٌ تَخْرُجُ مِنْ قَعْرِ عَدَنٍ تَسُوْقُ النَّاسَ اِلَى الْمَحْشَرِ. (رواه مسلم)

(1) जैसा कि आजकल रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन, मोबाईल, इन्टरनेट जैसे मवासलाती जरीये और म्यूजिकल ग्रुप के जरीये घर-घर, गली-गली, मुहल्ले मुहल्ले में गाना-बजाना आम हो रहा है। (यूगवी)

"ऐ लोगों! बेशक कयामत कायम ना होगी जब तक तुम इससे पहले दस निशानियां ना देख लो जिनमें अव्वल निशानी एक धूंआ होगा (जिसे कहत के जमाने में भूख से लोग आसमान में धूएं की शक्ल में देखेंगे जो भूक का धूंआ होगा, यह रसूले करीम के जमाने में भी हो चुका है और बाद के जमानों में भी) दूसरी निशानी दज्जाल का निकलना, तीसरी निशानी दाबबतुल अर्ज का पैदा होना जो सारी जमीन पर दौरा करेगा जो कुदरत की शान का एक अजीब शाहकार होगा और जिसका दौरा मोमिनों और काफिरों में फर्क पैदा करने के लिए होगा। चौथी निशानी मगरिब (पश्चिम) से सूरज का निकलना होगा, पांचवी निशानी हजरत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना, छठी निशानी याजूज-माजूज का निकलना, सातवीं निशानी दुनिया में तीन जगह जमीन का धंसना, एक मश्रिक (पूर्व) में, एक मगरिब (पश्चिम) में, एक सरजमीने अरब में, आठवीं निशानी एक और आग होगी जो अदन के खड्डों से निकलेगी और सीरिया की जमीन की तरफ लोगों को ले जायेगी। दसवीं निशानी आंधी चलेगी जो लोगों को उड़ाते-उड़ाते समन्दर में गर्क कर देगी। दस की गिनती यूं भी पूरी हो सकती है कि खसफ की निशानियों को तीन शुमार किया जाये और दसवीं निशानी आग को गिना जाये जो रिवायत में मजकूर है।"

प्यारे भाईयों!

अल्लाह के सच्चे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो कुछ फरमाया है वो हक है और बिलकुल हक है। इनमें कुछ निशानियां सामने आ चुकी हैं और बाकी अपने-अपने वक्तों में जरूर सामने आकर रहेंगी। हजरत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम का आसमान से उरतना भी बरहक है। यह उतरना अपने वक्त पर होगा। कुछ लोग आजकल बहुत सी चीजों का इंकार करते हैं। वो लोग सरासर गुमराही में मुब्तला हैं। उनकी बात हरगिज नहीं सुननी चाहिए। एक साहब पंजाब में पैदा हुए और वो खुद मसीह बन बैठे। मसीह इब्ने मरयम का इनकार किया। नबूवत के खत्म होने का इंकार करके जाली नबी होने का दावा किया। यह सब गुमराही है और किताब व सुन्नत के खिलाफ बातें हैं। अल्लाह पाक हर मुसलमान को इन फितनों से महफूज रखे। कयामत की निशानियों से मुताल्लिक रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और मुबारक खुत्बा सुनिये जो दिल व दिमाग में उतार लेने के काबिल है।

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَخْرُجُ الدَّجَّالُ فَيَمْكُثُ اَرْبَعِيْنَ لَا اَدْرِیْ اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا اَوْ شَهْرًا اَوْ عَامًا فَيَبْعَثُ اللّٰهُ عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ كَاَنَّهٗ عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُوْدٍ فَيَطْلُبُهٗ فَيُهْلِكُهٗ ثُمَّ يَمْكُثُ النَّاسُ سَبْعَ سِنِيْنَ لَيْسَ بَيْنَ اثْنَيْنِ عَدَاوَةٌ ثُمَّ يُرْسِلُ اللّٰهُ رِيْحًا بَارِدَةً مِنْ قِبَلِ الشَّامِ فَلَا يَبْقٰى عَلٰى وَجْهِ الْاَرْضِ اَحَدٌ فِیْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ اَوْ اِيْمَانٍ اِلَّا قَبَضَتْهُ حَتّٰى لَوْ اَنَّ اَحَدَكُمْ دَخَلَ فِیْ كَبِدِ جَبَلٍ لَدَخَلَتْهُ عَلَيْهِ حَتّٰى تَقْبِضَهٗ قَالَ فَيَبْقٰى اَشْرَارُ النَّاسِ فِیْ خِفَّةِ الطَّيْرِ وَاَحْلَامِ السِّبَاعِ لَا يَعْرِفُوْنَ مَعْرُوْفًا وَلَا يُنْكِرُوْنَ مُنْكَرًا فَيَتَمَثَّلُ لَهُمُ الشَّيْطَانُ فَيَقُوْلُ اَلَا تَسْتَحْيُوْنَ فَيَقُوْلُوْنَ فَمَا تَاْمُرُنَا؟ فَيَاْمُرُهُمْ بِعِبَادَةِ الْاَوْثَانِ وَهُمْ فِیْ ذٰلِكَ دَارٌّ رِزْقُهُمْ حَسَنٌ عَيْشُهُمْ ثُمَّ يُنْفَخُ فِی الصُّوْرِ فَلَا يَسْمَعُهٗ اَحَدٌ اِلَّا اَصْغٰى لِيْتًا وَيَرْفَعُ لِيْتًا قَالَ وَاَوَّلُ مَنْ يَسْمَعُهٗ رَجُلٌ يَلُوْطُ حَوْضَ اِبِلِهٖ فَيَصْعَقُ وَيَصْعَقُ النَّاسُ ثُمَّ يُرْسِلُ اللّٰهُ مَطَرًا كَاَنَّهُ الطَّلُّ فَتَنْبُتُ مِنْهُ اَجْسَادُ النَّاسِ ثُمَّ يُنْفَخُ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ثُمَّ يُقَالُ يَا اَيُّهَا النَّاسُ هَلُمُّوْا اِلٰى رَبِّكُمْ (وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَسْئُوْلُوْنَ) فَيُقَالُ اَخْرِجُوْا بَعْثَ النَّارِ فَيُقَالُ مِنْ كَمْ فَيُقَالُ مِنْ كُلِّ اَلْفٍ تِسْعَ مِائَةٍ وَتِسْعَةً وَّتِسْعِيْنَ قَالَ فَذٰلِكَ (يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا) وَذٰلِكَ (يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ) (مسلم)

"हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कयामत से पहले दज्जाल निकलेगा पस वो जमीन में चालीस दिन या महीने या साल ठहरा रहेगा। रावी कहते हैं कि मुझको सही तौर पर याद नहीं रहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनमें से कौनसा लफ्ज फरमाया। (दूसरी रिवायत की बिना पर ततबीक यह है कि जमीन पर दज्जाल के शर व फसाद का जमाना चालीस रोज तक रहेगा, जिनमें से एक दिन एक साल के बराबर, एक दिन एक हफ्ते के बराबर होगा और बाकी दिन मामूली दिनों के बराबर होंगे। इस मौके पर सहाबा किराम ने पूछा, हुजूर जो दिन एक साल के बराबर होगा तो उसमें एक दिन की नमाज पढ़नी होगी या साल भर की?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अन्दाजा करके एक साल ही की नमाजें अदा करनी होंगी) इसके नजदीक अल्लाह पाक हजरत ईसा अलैहिस्सलाम को भेजेगा वो हजरत उरवह बिन मसऊद से मिलते जुलते होंगे। पस आप दज्जाल को ढूंढेंगे और वो उसको कत्ल कर देंगे। फिर सात साल तक इस कद्र अमनो-अमान होगा कि दो आदमियों के बीच भी दुश्मनी बाकी ना रहेगी। फिर अल्लाह पाक मुल्के शाम की तरफ से एक ठण्डी हवा भेजेगा, जिससे सारी जमीन पर हर वो आदमी खत्म हो जायेगा जिसके दिल में एक जर्रा बराबर भी ईमान होगा, यहां तक कि अगर कोई आदमी उनमें से पहाड़ के गार में भी घुसा हुआ होगा तो वो हवा उसे वहां पर ही खत्म कर देगी। पस बदतरीन किस्म के लोग दुनिया में बाकी रह जायेंगे जो शरारतों में और फसाद बरपा करने में परिन्दों और दरिन्दों से भी जयादा तेज रफ्तार होंगे जो नेकी को नेकी ना समझेंगे और ना बुराई की उनको कुछ तमीज होगी, उनके लिए शैतान मिसाली सूरत में जाहिर होगा और कहेगा कि तुम अपनी इस बे-दीनी पर शर्म नहीं करते हो। लोग कहेंगे कि फिर आप हमको क्या हुक्म देत हैं? शैतान उनको बुतपरस्ती में लगा देगा। वो लोग अपनी इस हालत में खुशी की जिन्दगी गुजारेंगे, उनको अच्छा ऐश नसीब होगा (जो अल्लाह की तरफ से उनके लिए आजमाइश होगी) वो इस हालत में मगन होंगे कि अचानक सूर में पहला नफका फूंका जायेगा, जिससे सुनने वालों की गर्दनें मुड़ जायेंगी (जैसी हालत फालिज वालों की होती है) उनके सर भी मुड़कर फालिज जदों की तरह हो जायेंगे। इस नफ्ख को पहले एक ऐसा शख्स सुनेगा जो अपने ऊंट को पानी पिलाने के लिए हौज की लिपाई कर रहा होगा, वो सुनते ही बेहोश हो जायेगा और सब ही लोग बेहोश हो जायेंगे। फिर अल्लाह पाक शबनम की शक्ल में बारिश नाजिल करेगा, जिससे लोगों के जिस्म जमीन से निकलेंगे।

फिर दूसरा सूर फूंका जायेगा। पस अचानक सब लोग मैदाने हश्र में खड़े होंगे और हश्र का नजारा देख रहे होंगे। फिर कहा जायेगा अपने रब की तरफ चलो और फरिश्तों से कहा जायेगा कि इन महशर वालों को रोक लो, इनसे आज हिसाब लिया जायेगा। जिससे निपटने के बाद कहा जायेगा कि फरिश्तों! दोजख वालों की फौज निकाल लो और दोजख में ले जाकर डाल दो। फरिश्ते पूछेंगे कि किस तादाद में से कितने-कितने लोग दोजख के लिए निकाले जायें। तो हुक्म होगा कि हर हजार में से नौ सौ निन्यानवें दोजख के लिए और सिर्फ एक उनमें से जन्नत के लिए। यह ऐलान सुनकर लोगों को बेहद सदमा होगा। यही दिन होगा जो बच्चों को गम व फिक्र से बूढ़ा सफेद बालों वाला बना देगा और यही वो दिन होगा, जिस दिन पिण्डली खोली जायेगी।'' (जिसे देखकर सारे तौहीद वाले अल्लाह के सामने सज्दे में गिर जायेंगे)

मुसलमान भाईयों!

कयामत का अकीदा बरहक है, जिसकी तफसीलात कुरआने मजीद में बहुत ज्यादा आई हुई हैं और अहादीसे नबवी के दफातिर कयामत के हालात से भरे हुए हैं। कयामत के दिन की हाजिरी का ख्याल रखना हर मोमिन मर्द व औरत का अहम तरीन फरीजा है। उस दिन जर्रा-जर्रा नेकी और बदी का हिसाब देना होगा। और पुल सिरात पर से गुजरना होगा, उस दिन आमाल का तोला जाना बरहक है, शिफाअत बरहक है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को उस दिन साबित कदमी अता करे और अपने हबीब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबको शिफाअत नसीब करे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ से सबको जामे कौसर नसीब हो और जन्नत का दाखिला नसीब हो।

या अल्लाह! हम सब हाजिरीन को कयामत के दिन इज्जत अता फरमाना, सुर्ख रूई नसीब करना और उस दिन की जिल्लत और रूसवाई से बचाना। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 33

बड़ी सिफारिश और एक जन्नती इन्सान के बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक ईमान को रोशन करने वाला खुत्बा

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

(اَلْبَقَرَة ۲)

(सूरह बकरह: 25, पारा 1)

"ऐ रसूल! मेरे ईमान वाले बन्दों को जिन्होंने नेक कामों में जिन्दगी गुजारी है, खुशखबरी दे दीजिए कि उनके लिए आखिरत में बिलाशुबा जन्नत तैयार की गयी है, जिसके कई एक दर्जे हैं, उनके दरख्तों के नीचे से मीठे और ठण्डे पानी की नहरें जारी हैं और उसमें हर किस्म के मेवे तैयार हैं। जब कभी उन जन्नतियों को जन्नत के फल रिज्क के तौर पर दिये जायेंगे वो कहेंगे कि यह उन ही फलों जैसे हैं जो पहले हमको दुनियावी जिन्दगी में दिये जा चुके हैं। मगर जब उनको खायेंगे तो उनके मजे के आगे दुनिया के फलों को भूल जायेंगे। हां यह सही है कि वो फल दुनियावी फलों से मिलते-जुलते होंगे और उनके लिए जन्नत में साफ सुथरी पाक बीवियां होंगी और वो उस जन्नत में हमेशा रहने वाले होंगे।"

हम्दो सना के बादः

इस्लामी भाईयों!

आज का खुत्बा बड़ी सिफारिश और एक जन्नती के बारे में है, अल्लाह पाक ने अपने नेक मोमिन बन्दों और बन्दियों के लिए मरने के बाद आखिरत की जिन्दगी में जो जगह तैयार की है, उसका नाम जन्नत है। जिसका मौजूद होना सच है। जिसके बारे में शक करने वाले का ईमान खत्म हो जाता है। अल्लाह तआला के लाखों अम्बिया व रसूलों ने जन्नत और दोजख के मौजूद होने की खबर दी है। खास तौर पर कुरआन मजीद की बहुत सी आयतों में इनका जिक्र आया है। बल्कि जन्नत की बहुत सी तफसीलात कुरआन पाक में बयान की गयी हैं जो लोग मुसलमान कहला कर जन्नत को महज वहम व गुमान की हद तक मानते हैं, वो इस्लाम की रोशनी और ईमान की चाश्नी से दूर हैं।

कुरआन मजीद में जन्नत की नेमतों का बयान सूरह रहमान में खास तौर पर किया गया है। वहां के बाग-बगीचों, दरख्तों में फूलों और मकानात के ऐशो आराम को बड़ी तफसील से कुरआन पाक में बयान किया गया है। एक जगह जन्नत वालों का कौल नकल हुआ है। वो जन्नत में दाखिल होकर इन लफ्जों में अल्लाह का शुक्र अदा करेंगे:

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿ الزمر ٧٤ ﴾

(सूरह अल जुमर: 74, पारा 23)

यानी "जन्नती कहेंगे सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमसे अपना वादा सच्चा कर दिखाया और हमको आजादी के साथ जन्नतों का वारिस बना दिया। हम जहां चाहें जन्नत में बिना रोक-टोक आजादी के साथ अपनी-अपनी जगह बना लेते हैं। पस नेक काम करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है।"

यह आयत साफ बतला रही है कि जन्नत महज किसी ख्वाबो ख्याल का नाम नहीं है, बल्कि वो उसी तरह मौजूद है जिस तरह यह खत्म होने वाली दुनिया मौजूद है। उसी तरह एक जन्नती दुनिया बन चुकी है। अल्लाह पाक ने उसे अपने नेक बन्दों के लिए हर किस्म की नेमतों से मालामाल फरमाया है। वो हमेशा की जगह है जो खत्म ना होगी। कुरआन मजीद में जन्नत वालों के लिए बार-बार खुलूद का लफ्ज आया है। यानी वो जन्नत में हमेशा रहेंगे, अल्लाह हम सबको

जन्नत नसीब करे। आमीन!

हजरात!

जन्नत एक ऐसी जगह है जिसके बारे में इरशाद है:

مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلٰى قَلْبِ بَشَرٍ (الحديث)

[بخاری بدء الخلق، تفسیر، دارمی الرقاق]

(बुखारी बद-उल खलक, तफसीर, दारमी रिकाक)

यानी ''जन्नत एक ऐसी जगह है जिसका नमूना किसी आंख ने यहां नहीं देखा, ना किसी ने सुना और ना किसी के दिल में उसका सही ख्याल आ सकता है।''

वो ऐसी प्यारी जगह है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को जन्नत नसीब करे। आमीन!

इस बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक बेहतरीन खुत्बा गौर से सुनकर उसके लफ्ज लफ्ज याद रखें और इबरत हासिल करें। हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. कहते हैं कि एक दिन आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फज्र की नमाज पढ़ाई, फिर नमाज की जगह आप बैठे रहे। यहां तक कि जुहर की नमाज अदा की। फिर असर की, फिर मगरिब की, फिर इशा की। इस वक्त में ना तो आप अपनी जगह से उठे, ना किसी से कोई बात की, फिर आप इशा पढ़कर घर को जाने लगे तो सहाबा किराम ने अबू बकर सिद्दीक से कहा कि आप हुजूर से मालूम करें कि आज क्या बात थी? आज की तरह आप कभी इस तरह नहीं बैठे। हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. के पूछने से पहले ही आपने इस मजलिस में एक खिताबे आम शुरू फरमाया, जिसके अल्फाज मुबारक यह हैं:

عُرِضَ عَلَيَّ مَا هُوَ كَائِنٌ مِنْ أَمْرِ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَجُمِعَ الْاَوَّلُوْنَ وَالْاٰخِرُوْنَ فِىْ صَعِيْدٍ وَاحِدٍ حَتّٰى انْطَلَقُوْا اِلٰى اٰدَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَالْعَرَقُ يَكَادُ يُلْجِمُهُمْ فَقَالُوْا يَا اٰدَمُ اَنْتَ اَبُو الْبَشَرِ اِصْطَفٰكَ اللّٰهُ اِشْفَعْ لَنَا اِلٰى

رَبِّكَ. فَقَالَ: قَدْ لَقِيتُ مِثْلَ الَّذِيْ لَقِيتُمْ اِذْهَبُوا اِلٰى اَبِيكُمْ بَعْدَ اَبِيكُمْ اِلٰى نُوحٍ اِنَّ اللهَ اصْطَفٰى آدَمَ وَنُوحًا وَّآلَ اِبْرَاهِيمَ وَّآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ. فَيَنْطَلِقُونَ اِلٰى نُوحٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَيَقُولُونَ اِشْفَعْ لَنَا اِلٰى رَبِّكَ فَاَنْتَ اِصْطَفٰكَ اللهُ وَاسْتَجَابَ لَكَ فِيْ دُعَائِكَ فَلَمْ يَدَعْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكَافِرِيْنَ دَيَّارًا. فَيَقُولُ لَيْسَ ذَاكُمْ عِنْدِيْ فَانْطَلِقُوْا اِلٰى اِبْرَاهِيمَ فَاِنَّ اللهَ اتَّخَذَهُ خَلِيلًا. فَيَنْطَلِقُونَ اِلٰى اِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَيَقُولُ لَيْسَ ذَاكُمْ عِنْدِيْ فَانْطَلِقُوْا اِلٰى مُوسٰى فَاِنَّ اللهَ كَلَّمَهُ تَكْلِيمًا. فَيَنْطَلِقُونَ اِلٰى مُوسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ فَيَقُولُ لَيْسَ ذَاكُمْ عِنْدِيْ وَلٰكِنِ انْطَلِقُوْا اِلٰى عِيسَى بْنِ مَرْيَمَ فَاِنَّهُ كَانَ يُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَيُحْيِ الْمَوْتٰى. فَيَقُولُ عِيسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ لَيْسَ ذَاكُمْ عِنْدِيْ وَلٰكِنِ انْطَلِقُوْا اِلٰى سَيِّدِ وُلْدِ آدَمَ فَاِنَّهُ اَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الْاَرْضُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِنْطَلِقُوْا اِلٰى مُحَمَّدٍ فَلْيَشْفَعْ لَكُمْ اِلٰى رَبِّكُمْ قَالَ فَيَنْطَلِقُونَ اِلَيَّ وَآتِيْ جِبْرِيْلَ فَيَأْتِيْ جِبْرِيْلُ رَبَّهُ فَيَقُولُ ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ قَالَ فَيَنْطَلِقُ بِهِ جِبْرِيْلُ فَيَخِرُّ سَاجِدًا قَدْرَ جُمُعَةٍ ثُمَّ يَقُولُ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى يَا مُحَمَّدُ اِرْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ تُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَيَرْفَعُ رَأْسَهُ فَاِذَا نَظَرَ اِلٰى رَبِّهِ خَرَّ سَاجِدًا قَدْرَ جُمُعَةٍ اُخْرٰى فَيَقُولُ اللهُ يَا مُحَمَّدُ

اِرْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ تُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَيَذْهَبُ لِيَقَعَ سَاجِدًا فَيَأْخُذُ جِبْرِيْلُ بِضَبْعَيْهِ وَ يَفْتَحُ اللّٰهُ عَلَيْهِ مِنَ الدُّعَآءِ مَالَمْ يَفْتَحْ عَلٰى بَشَرٍ قَطُّ۔ فَيَقُوْلُ اَیْ رَبِّ جَعَلْتَنِیْ سَيِّدَ وُلْدِ آدَمَ وَلَا فَخْرَ وَاَوَّلَ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الْاَرْضُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ۔ حَتّٰى اِنَّهٗ لَيَرِدُ عَلَى الْحَوْضِ اَكْثَرُ مَا بَيْنَ صَنْعَآءَ وَاَيْلَةَ۔ ثُمَّ يُقَالُ ادْعُوا الصِّدِّيْقِيْنَ فَيَشْفَعُوْنَ ثُمَّ يُقَالُ اُدْعُوا الْاَنْبِيَآءَ فَيَجِيْءُ النَّبِیُّ مَعَهُ الْعِصَابَةُ وَالنَّبِیُّ مَعَهُ الْخَمْسَةُ وَالسِّتَّةُ وَالنَّبِیُّ لَيْسَ مَعَهٗ اَحَدٌ۔ ثُمَّ يُقَالُ ادْعُوا الشُّهَدَآءَ فَيَشْفَعُوْنَ فِیْ مَنْ اَرَادُوْا فَاِذَا فَعَلَتِ الشُّهَدَآءُ ذٰلِكَ يَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَزَّوَعَلَا۔ اَنَا اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ اَدْخِلُوْا جَنَّتِیْ مَنْ كَانَ لَا يُشْرِكُ بِیْ شَيْئًا فَيَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ ثُمَّ يَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰى۔ اُنْظُرُوْا فِی النَّارِ هَلْ فِيْهَا اَحَدٌ عَمِلَ خَيْرًا قَطُّ فَيَجِدُوْنَ فِی النَّارِ رَجُلًا فَيُقَالُ لَهٗ عَمِلْتَ خَيْرًا فَيَقُوْلُ لَا غَيْرَ اَنِّیْ كُنْتُ اُسَامِحُ النَّاسَ فِی الْبَيْعِ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ اِسْمَحُوْا لِعَبْدِیْ كَاِسْمَاحِهٖ اِلٰى عَبِيْدِیْ۔ ثُمَّ يُخْرِجُ مِنَ النَّارِ آخَرُ فَيُقَالُ لَهٗ هَلْ عَمِلْتَ خَيْرًا قَطُّ؟ فَيَقُوْلُ لَا غَيْرَ اَنِّیْ كُنْتُ اَمَرْتُ وَلَدِیْ اِذَا مِتُّ فَاَحْرِقُوْنِیْ بِالنَّارِ ثُمَّ اطْحَنُوْنِیْ حَتّٰى اِذَا كُنْتُ مِثْلَ الْكُحْلِ اِذْهَبُوْا بِیْ اِلَى الْبَحْرِ فَذَرُوْنِیْ فِی الرِّيْحِ۔ فَقَالَ اللّٰهُ لِمَ فَعَلْتَ ذٰلِكَ؟ قَالَ مَخَافَتَكَ ..... الخ [مسند احمد]

यानी "आज मेरे सामने दीन व दुनिया के तमाम काम पेश किये गये। सारे अगले पिछले इन्सान एक चटयल मैदान में जमा किये गये। इस हाल में कि पसीने उनके मुंह तक पहुंचने को थे कि वो हजरत आदम अलैहिस्सलाम के पास गये और जाकर कहा कि ऐ आदम आप तमाम इन्सानों के बाप हैं। आप अल्लाह तआला के नेक बन्दे हैं। आप अल्लाह के पास हमारी सिफारिश करें। लेकिन हजरत आदम अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि आज मैं भी तुम्हारी तरह फंसा हुआ हूँ। तुम अपने इस बाप के बाद के बाप हजरत नूह अलैहिस्सलाम के पास जाओ। अल्लाह तआला ने आदम को और नूह को और आले इब्राहीम और आले इमरान को पसन्दीदा बनाया है और सारे जहां पर उन्हें बड़ाई बख्शी है, अब यह सब हजरत नूह अलैहिस्सलाम की तरफ चले, उनसे शिफाअत की दरख्वास्त की कि आप अल्लाह के प्यारे हैं। आपकी दुआ कबूल फरमाकर अल्लाह तआला ने कुफ्फार को डूबो दिया था लेकिन वो भी यही जवाब देंगे कि मैं इस काबिल नहीं, तुम हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाओ। उन्हें अल्लाह तआला ने अपना खलील (प्यारा दोस्त) बनाया है। चुनांचे सब लोग हजरत खलीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के पास जायेंगे, लेकिन वो भी यही जवाब देंगे कि मैं इस काबिल नहीं। तुम हजरत मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ, जिनसे अल्लाह तआला ने सीधे बातचीत की थी। जब महशर वाले हजरत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आयेंगे वो यही जवाब देंगे कि मैं इस मर्तबे के लायक नहीं। तुम हजरत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम के पास जाओ कि वो अंधे और कोढ़ियों को अल्लाह के हुक्म से अच्छा-भला कर देते थे, लेकिन हजरत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम भी यही जवाब देंगे और वो फरमायेंगे तुम औलादे आदम के सरदार के पास जाओ जो सबसे पहले अपनी कब्र से निकले हैं। यानी जाओ हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास। चुनांचे सब लोग मेरे पास आयेंगे। मैं हजरत जिब्राईल के पास जाऊंगा। जिब्राईल अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के पास जायेंगे। अल्लाह तआला फरमायेगा, जाओ उन्हें शिफाअत की इजाजत दे दो और जन्नत की खुशखबरी भी सुना दो। हजरत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से यह खुशखबरी सुनकर मैं सज्दे में गिर पडूंगा और एक हफ्ते तक सज्दे में पड़ा रहूंगा। फिर अल्लाह तबारक वतआला मुझसे फरमायेंगे, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपना सर उठाओ, कहो जो चाहो तुम्हारी सुनी जायेगी, सिफारिश करो तुम्हारी सिफारिश कबूल की जायेगी। आप अपना सर उठायेंगे और जनाब बारी तआला की तरफ नजर करके फिर सज्दे में चले जायेंगे। बकद्र जुमा से जुमा तक फिर सज्दे में पड़े रहेंगे। फिर अल्लाह तबारक

व-तआला फरमायेगा।

ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! अपना सर उठाइये, कहिये आप की बात सुनी जायेगी, सिफारिश करो, सिफारिश कबूल की जायेगी। मैं इस नेमत पर फिर सज्दे में जाना चाहूंगा। लेकिन जिब्राईल अलैहिस्सलाम मेरे बाजू थाम लेंगे। अब अल्लाह तआला मुझे वो दुआ सिखलायेगा जो किसी इन्सान को नहीं सिखाई। पस आप कहेंगे कि ऐ अल्लाह तूने मुझे तमाम औलादे आदम का सरदार बनाया। मैं कह रहा हूँ, मुझे तूने सब से पहले कब्र से उठने वाला बनाया। इस पर भी मुझे कोई फख्र नहीं। (चुनांचे अब मैं शिफाअत करूंगा) इसके बाद लोग मेरे हौज पर आने शुरू होंगे जो सनआ (यमन में) से लेकर अयला तक से भी ज्यादा चौड़ा होगा। फिर कहा जायेगा, सच्चे लोगों को बुलाओ, वो भी शिफाअत करें। फिर कहा जायेगा नबियों को बुलाओ। अम्बिया आने शुरू होंगे। किसी के साथ तीस-चालीस आदमी होंगे, किसी के साथ पांच, किसी के साथ छः, किसी नबी के साथ एक भी ना होगा। फिर शहीदों को शिफाअत के लिए बुलाया जायेगा। यह भी जिसकी चाहेंगे, शिफाअत करेंगे। फिर अल्लाह पाक फरमायेगा कि मैं रहमानुर्रहीम हूँ। हुक्म देता हूं कि जिन लोगों ने मेरे साथ किसी को शरीक नहीं किया, उन सबको जन्नत में भेजो। फिर फरमायेगा कि जहन्नम में कोई ऐसा आदमी भी है जिसने कभी भी कोई भला काम किया हो?देखेंगे तो एक शख्स को पायेंगे। उससे सवाल होगा कि कभी तूने कोई नेकी की है?वो कहेगा, हाँ सिर्फ यह कि मैं व्यापार में बहुत नरमी किया करता था। किसी पर मेरा कोई हक रह भी जाता तो माफ कर देता था। अल्लाह तआला फरमायेगा, मेरे इस बन्दे से भी नरमी करो, जैसे यह मेरे और बन्दों से नरमी किया करता था। इससे दरगुजर कर दो और इसे भी जन्नत में दाखिल कर दो। इतने में एक आदमी और निकलेगा, उससे भी पूछा जायेगा तूने भी कभी कोई नेक काम किया था?वो कहेगा, नहीं सिवाये इसके कि मैंने अपनी औलाद से कहा था कि जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना फिर मेरी खाक को पीस डालना। बिलकुल सूरमे जैसी कर देना, फिर समन्दर के किनारे जाकर जब तेज हवायें चल रही हों, उड़ा देना। अल्लाह तआला फरमायेगा, तूने ऐसा क्यों किया?वो कहेगा, सिर्फ तेरे डर से। जनाबे बारी तआला फरमायेगा, देखो सबसे बड़ा मुल्क देख लो, तेरे लिए वो है और ऐसे ही दस मुल्क और। तो वो कहेगा, इलाही तू मुझसे मजाक क्यों कर रहा है?तू तो मालिक है। इससे अल्लाह तआला हंस देगा। इसी चीज ने सुबह मुझको भी हंसा दिया था।

मुहतरम भाईयों!

आपने अन्दाजा लगाया होगा कि लेन-देन के मामलों में गरीबों से नरमी करना कितना बड़ा सवाब का काम है। आज बिजनेस की दुनिया में यह खूबी खत्म हो चुकी है। एक बिजनेस-मैन किसी गरीब के पीछे लग जाये तो जब तक सूद-दर-सूद के चक्कर में फांस कर उसे बिलकुल खत्म ना कर दे, उसे सब्र नहीं आता। अल्लाह पाक ऐसे जालिमों से हर मुसलमान को महफूज रखे। आमीन!

इसी तरह अल्लाह तआला का खौफ भी कितनी बड़ी चीज है कि अल्लाह पाक ने उस बन्दे को बिलकुल बख्श दिया। अल्लाह पाक हर मुसलमान को अपना डर अता करे और दीन व दुनिया में कामयाबी बख्शे।

ऐ अल्लाह! तू हमको इत्तेफाक और मुहब्बत और अमल की तौफीक अता फरमा। आमीन या रब्बल आलमीन।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 34

खुत्बाः रमजानुल मुबारक के फजाइल व मसाइल के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ (البقرة ٢)

(सूरह अल बकरहः 183-184, पारा 2)

यानी "अल्लाह तआला ने फरमाया कि ऐ ईमान वालों! तुम पर रोजे फर्ज किये गये हैं, जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फर्ज किये गये थे, ताकि तुम परहेजगार हो जाओ और वो रोजे खास गिनती के दिनों में हैं। अगर उन दिनों में कोई बीमार हो या सफर में हो तो जब सेहत हो जाये या सफर से वापिस आये, तब उनके बदले रोजे रख ले।"

बिरादराने इस्लाम!

बेहद खुशी का मुकाम है कि अल्लाह पाक ने अपने फजलो करम से आपको फिर माहे रमजानुल मुबारक नसीब फरमाया। जिसके रोजे रखना इस्लाम का तीसरा रुकन है कि उसका इनकार करने वाला इस्लाम के दायरे से निकल जाता है। दुआ है अल्लाह पाक हर मुसलमान को यह महीना मुबारक नसीब करे और बार-बार नसीब फरमाये। आमीन!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शाबान के आखिर में एक खुत्बा दिया था जो हजरत सलमान फारसी रजि. ने नकल फरमाया है। इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

يَا اَيُّهَا النَّاسُ قَدْ اَظَلَّكُمْ شَهْرٌ عَظِيْمٌ شَهْرٌ مُبَارَكٌ شَهْرٌ فِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِنْ اَلْفِ شَهْرٍ جَعَلَ اللّٰهُ صِيَامَهٗ فَرِيْضَةً وَقِيَامَ لَيْلِهٖ تَطَوُّعًا

....الی آخرہ۔ (1)

" ऐ लोगों! एक बहुत बड़े अजीमुश्शान महीने ने तुम पर साया डाला है। जो बहुत ही बरकत वाला महीना है। जिसमें एक रात की इबादत अल्लाह पाक ने हजार महीनों की इबादत से बेहतर करार दी है। जिसके दिनों में अल्लाह पाक ने रोजा रखना फर्ज करार दिया है और उसकी रातों में बतौरे नफ्ल कयाम करना बड़े ही अजरो सवाब का काम है।"

आयते खुत्बा जो आपने तजुर्मे के साथ सुनी है, इसमें अल्लाह तआला ने ना सिर्फ रमजान के रोजों की फरजियत का ऐलान फरमाया है, बल्कि साथ ही यह भी बतलाया है कि तुम से पहले के मजहबों में भी रोजा रखना फर्ज करार दिया गया था। चुनांचे मौजूदा दुनिया के मजहबों में रोजा आज भी किसी ना किसी शक्ल में मौजूद है। पस तुम समझ लो कि यह कोई तुम्हारे लिए ही नया हुक्म नहीं है। साथ ही अल्लाह पाक ने रोजे का मकसद भी बतलाया है कि इसके अदा करने से तुम्हारे अन्दर तकवा पैदा होगा। यह रोजा इस बात का सबूत होगा कि तुम्हारे दिलों में अल्लाह पाक की हुकूमत का सिक्का बैठा हुआ है। ईमान से तुम्हारे दिल रोशन हैं। इन बहुत खूबियों का मजमूआ यह मुबारक महीना है और इस माह के रोजे रखना इस्लाम का तीसरा अजीमुश्शान रुकन है।

हजरात!

रमजान की खूबियाँ और मसाइल से मुताल्लिक कुछ हदीसे नबवी हैं जो आपको सुनाई जा रही हैं। गौर से सुनना और याद रखना और इनके मुताबिक अमल करना आपका फर्ज है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को माहे रमजान की बरकतों से नवाजे और ईमान में तरक्की अता करे। आमीन!

(1) इसकी सनद जईफ है। अलबत्ता इसके बाज अतराफ सही सनद के साथ साबित हैं।

पहले यह समझ लीजिए कि आयते खुत्बा में जो फरमाया, रोजे हैं चन्द गिनती के। इसका मतलब यह है कि कुछ बहुत नहीं हैं, गिनती के चन्द दिन हैं पस घबराओ नहीं, बल्कि खुशी-खुशी रोजे रखो। दूसरा मतलब यह भी है कि मुकर्रर दिन हैं, यानी रमजान का महीना है, जब कभी यह महीना आये तब ही रोजा रखो। हां, अगर बीमारी हो या कोई जरूरी सफर हो तो जायज है कि रमजान में रोजे ना रखे, जब सेहत हो जाने या सफर से वापिस आये तब जितने रोजे रह गये हैं, उसी कद्र रोजे रख ले और हमल वाली (पेट वाली) और दूध पिलाने वाली औरतों को भी इजाजत है। चुनांचे इब्ने माजा में हजरत अनस रजि. से रिवायत है।

اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ رَخَّصَ لِلْحُبْلَى الَّتِىْ تَخَافُ عَلٰى نَفْسِهَا اَنْ تُفْطِرَ وَلِلْمُرْضِعِ الَّتِىْ تَخَافُ... الخ [ابن ماجه الصيام]

यानी ''रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इजाजत दी है कि उस हमल वाली औरत को जिसे अपनी जान का डर हो और उस दूध पिलाने वाली को जिसको अपने बच्चे की तकलीफ का डर हो तो रोजा ना रखें।''

अब यह बात कि हमल वाली और दूध पिलाने वाली इन जरूरतों में रोजा इफ्तार करे तो फिर उसकी कजा रखें या सिर्फ फिदया दें। इस बारे में तिर्मिजी में हजरत अनस रजि. से रिवायत है:

اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ وَضَعَ عَنِ الْمُسَافِرِ شَطْرَ الصَّلَاةِ وَعَنِ الْحَامِلِ اَوِ الْمُرْضِعِ الصَّوْمَ اَوِ الصِّيَامَ۔ [الترمذى، الصوم 649، نسائى، احمد]

(अलतिर्मिजी, अल-सोम **649**, निसाई, अहमद)

यानी ''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने मुसाफिर के जिम्मे से आधी नमाज और हमल वाली औरत या दूध पिलाने वाली के जिम्मे से रोजा माफ कर दिया है।''

इस हदीस से मालूम होता है कि हमल वाली या दूध पिलाने वाली के लिए ना कजा है और ना फिदया है। क्योंकि मुसाफिर को जिस कद्र नमाज माफ होती है, उसकी कजा नहीं है। हजरत इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूले करीम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक खुत्बे में फरमाया:

قَالَ عُرَى الْإِسْلَامِ وَقَوَاعِدُ الدِّيْنِ ثَلَاثَةٌ عَلَيْهِنَّ أُسِّسَ الْإِسْلَامُ مَنْ تَرَكَ وَاحِدَةً مِّنْهُنَّ فَهُوَ بِهَا كَافِرٌ حَلَالُ الدَّمِ: شَهَادَةُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَالصَّلَاةُ الْمَكْتُوبَةُ، وَصَوْمُ رَمَضَانَ، وَفِيْ رِوَايَةٍ: مَنْ تَرَكَ مِنْهُنَّ وَاحِدَةً فَهُوَ بِاللّٰهِ كَافِرٌ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَّلَا عَدْلٌ وَّقَدْ حَلَّ دَمُهُ وَمَالُهُ.

[مسند ابی یعلی، ترغیب وترهیب 110/2]

(मुस्नद अबी याला, तरगीब व तरहीब 110/2)

यानी ''रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस्लाम की रस्सी और दीन के सुतून तीन चीजों में हैं। इन्हीं पर इस्लाम की बुनियाद रखी गयी है। जिस शख्स ने उनमें से एक चीज को भी छोड़ दिया वो काफिर हो गया और उसकी जान व माल की हिफाजत मुसलमानों पर जरूरी नहीं रही। वो तीन चीजें यह हैं, एक गवाही देनी इस बात की कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं है और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। दूसरे पांच वक्त की नमाज, तीसरे रमजान मुबारक के रोजे और एक रिवायत में यह लफ्ज आये हैं कि जिसने इन तीनों चीजों में से एक को भी छोड़ दिया वो अल्लाह का इनकार करने वाला हो गया। फिर नहीं कबूल किया जाता उसका फर्ज, ना नफ्ल और उसकी जान व माल की हिफाजत भी अल्लाह पर फर्ज नहीं रही।

मतलब यह है कि इस्लाम का महल इन तीन बुनियादों पर कायम है। इन्ही के करने से एक इन्सान इज्जत व एहतरामे इस्लामी का हकदार बन जाता है। जिस तरह एक मजदूर अपनी पूरी ड्यूटी करने के बाद अपनी मजदूरी का हकदार हो जाता है, अगर कोई मजदूर बगैर ड्यूटी अदा किये मजदूरी मांगने लग जाये तो वो मजदूर निकाल दिया जाता है। ठीक उसी तरह यही हाल उन इस्लामी अरकान छोड़ने वाले का है। पस जो मुसलमान नमाज या रोजा छोड़ दे या तौहीद व सुन्नत का इनकार कर दे तो अल्लाह पाक के नजदीक उसके जान व माल की कुछ कद्रो

कीमत और इज्जत नहीं रहती और हदीसों में इन तीनों चीजों के अलावा जकात और हज का भी जिक्र है। लेकिन वो दोनों चीजें हर एक शख्स पर जरूरी नहीं हैं। सिर्फ मालदारों पर जरूरी हैं। इसी वास्ते किसी किसी हदीस में उनका बयान नहीं आता है। और हजरत अबू उमामा रजि. से रिवायत है।

قَالَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ مُرْنِيْ بِعَمَلٍ قَالَ عَلَيْكَ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَا عِدْلَ لَهُ۔ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ مُرْنِيْ بِعَمَلٍ قَالَ عَلَيْكَ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَا عِدْلَ لَهُ۔ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ مُرْنِيْ بِعَمَلٍ قَالَ عَلَيْكَ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَا عِدْلَ لَهُ۔ [نسائی۔ الصیام، احمد]

(निसाई, अस्सियाम, अहमद)

यानी 'अबू उमामा रजि. कहते हैं कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! मुझको कोई बेहतर काम बतलाइये। फरमाया: रोजे रखा करो, क्योंकि रोजे के बराबर कोई काम नहीं है। मैंने फिर अर्ज किया या रसूलुल्लाह! मुझको कोई बेहतर काम बतलाइये। फरमाया: रोजे रखा करो, क्योंकि रोजे के बराबर कोई काम नहीं है। मैंने फिर अर्ज किया या रसूलुल्लाह! मुझे कोई बेहतर काम बताइये। आपने फरमाया: रोजे रखा करो, क्योंकि रोजे के बराबर कोई काम नहीं है।''

यानी बहुत बड़ा दर्जे वाला और निहायत सवाब वाला काम रोजा है और इब्ने माजह में रिवायत है:

مَنْ اَفْطَرَ يَوْمًا مِنْ رَمَضَانَ مِنْ غَيْرِ رُخْصَةٍ لَمْ يُجْزِهِ صِيَامُ الدَّهْرِ۔

[ابن ماجہ۔ الصیام، ابو داؤد، احمد]

(इब्ने माजह, अस्सियाम, अबू दाऊद, अहमद)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जिस शख्स ने बगैर इस उज्र के जिसका शरीअत में हुक्म आया है, एक दिन भी रमजान का रोजा कजा किया, वो अगर सारी उम्र भी रोजा रखेगा तो भी उसके वबाल से बरी ना होगा।''

और हजरत उबादा बिन सामित रजि. से रिवायत है:

اَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرُ بَرَكَةٍ يَغْشَاكُمُ اللّٰهُ فِيْهِ فَيُنْزِلُ الرَّحْمَةَ وَيَحُطُّ الْخَطَايَا وَيَسْتَجِيْبُ فِيْهِ الدُّعَاءَ يَنْظُرُ اللّٰهُ تَعَالٰى تَنَافُسَكُمْ فِيْهِ وَيُبَاهِيْ بِكُمْ مَلَآئِكَتَهُ فَاَرُوا اللّٰهَ مِنْ اَنْفُسِكُمْ خَيْرًا فَاِنَّ الشَّقِيَّ مَنْ حُرِمَ فِيْهِ رَحْمَةَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ۔ (رواه الطبرانی، ورواته ثقات الا محمد بن قيس)

(रवाहु तबरानी, व रुवातुहू सिकात इल्ला मुहम्मद बिन कैस)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''रमजान का महीना तुम्हारे पास आया है, जो बरकत वाला है। इसमें अल्लाह तआला अपनी रहमत से तुमको ढांप लेता है और अपनी रहमत नाजिल करता है। गुनाह बख्शता है। दुआयें कबूल करता है, और यह देखता है कि लोग रमजान के वास्ते कैसा जौक-शौक रखते हो और सवाब के कामों में इस महीने में कैसी मेहनत करते हो और फरिश्तों के सामने तुम्हारी तारीफ करता है कि देखो मेरे बन्दे भूक और प्यास की तकलीफ उठाकर और अपनी जरूरतों को छोड़कर मेरी इबादत में कैसे लगे हुए हैं। सो तुम को चाहिए कि अल्लाह तआला को अपनी अच्छी कारगुजारी दिखाओ। वो शख्स बड़ा बदनसीब और बड़ा ही बद-बख्त है जो इस बरकत वाले महीने में अल्लाह तआला की रहमत से महरूम रह गया।''

हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है:

كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ يُضَاعَفُ الْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا اِلٰى سَبْعِ مَائَةِ ضِعْفٍ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى اِلَّا الصَّوْمَ فَاِنَّهُ لِيْ وَاَنَا اَجْزِيْ بِهٖ يَدَعُ شَهْوَتَهُ وَطَعَامَهُ مِنْ اَجْلِيْ لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ فَرْحَةٌ عِنْدَ فِطْرِهٖ وَفَرْحَةٌ عِنْدَ لِقَاءِ رَبِّهٖ۔ [مسلم، الصيام، ترمذی، الصوم]

(मुस्लिम अस्सियाम, तिर्मिजी, अल-सौम)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह पाक फरमाता है कि हर एक अमल इब्ने आदम का बढ़ाया जाता है, एक नेकी की दस

नेकियां लिख जाती हैं और उससे भी ज्यादा यहां तक कि सात सौ तक मगर रोजे का सवाब इतना है कि उसकी हद को मैं ही जानता हूँ और उसका बदला अपने बन्दों को मैं खुद ही दूंगा। रोजेदार के लिए दो वक्त खुशी के हैं एक खुशी इफ्तार के वक्त होती है और एक खुशी उस वक्त होगी जब कि कयामत में अल्लाह पाक से मुलाकात होगी और अल्लाह सुब्हान हू व तआला खुद अपने हाथ से इनाम देगा।

बहुत मुबारकबादी के काबिल हैं वो रोजादार जो यह मकसदे इनाम हासिल करेगे।

बिरादराने मिल्लत!

रोजा खोलते वक्त की खुशी सिर्फ इसलिए नहीं होती कि रोजा खत्म हुआ और खाने पीने का वक्त आ गया, बल्कि इसलिए भी खुशी होती है कि इफ्तार के वक्त दुआ कबूल होती है। हजरत अब्दुललाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि जिसे हर रोजेदार को याद रखना जरूरी है। यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बेशक रोजेदार इफ्तार के वक्त दुआ करता है तो वो रद्द नहीं होती, बल्कि जरूर कबूल होती है।

इफ्तार के लिए वक्ते हदीस में वक्त की पहचान साफ तौर पर आयी है। सही बुखारी में हजरत उमर रजि. से रिवायत है। यह रिवायत इफ्तार के लिए फत्वे का हुक्म रखती है। यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब सूरज पश्चिम में चला जाये और रात यानी स्याही पूर्व की तरफ निकल जाये और सूरज डूब गया। पस रोजेदार के इफ्तार का वक्त हो गया। सो जो शख्स जंगल में या किसी बुलन्द जगह में ऐसे मौके पर हो कि सूरज डूबने के वक्त नजर आता है तो कुछ झगड़ा ही नहीं और अगर ऐसी जगह में है कि सूरज नजर नहीं आता तो भी यह बात है कि स्याही आसमान के किनारों पर आबादी में नजर आ जाती है।

और अबू दाऊद में हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, जिसे इफ्तार में देर करने वालों को गौर से सुन लेना चाहिए। यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बराबर इस दीन का गल्बा रहेगा जब तक कि लोग इफ्तार में जल्दी करते रहेंगे। क्योंकि यहूद व नसारा इफ्तार में देर करते हैं।

मतलब यह है कि इफ्तार में देर करने में यहूद व नसारा से बराबरी है। और उनकी बराबरी से बचना जरूरी है। क्योंकि उन लोगों ने अपने दीन व शरीअत को रद्दो बदल करके रख दिया है।

और इस्लाम में रोजे के वास्ते सहरी का खाना सुन्नत है। सही मुस्लिम में अम्र बिन आस रजि. से रिवायत है कि जो सहरी खाने की ताकीद में काफी-वाफी है। यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हमारे और यहूद व नसारा के रोजे में फर्क यही है कि हम सहरी खाते हैं और वो नहीं खाते।

और तरगीब में अबू सईद रजि. से रिवायत है। कुछ लोग ऐसा ख्याल रखते हैं कि सहरी खाकर रोजा रखा तो क्या कमाल हुआ। तो यह है कि बगैर सहरी रोजा रखा जाये। यह हदीस ऐसे लोगों को बगौर से सुन लेना चाहिए, यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सहरी का खाना सरासर बरकत है, पस सहरी खाना नहीं छोड़ो, अगर कुछ भी ना हो तो एक घूंट पानी ही पी लिया जाये, क्योंकि अल्लाह तआला और उसके के फरिश्ते सहरी खाने वालों पर रहमत भेजते हैं।

जैद बिन साबित रजि. से रिवायत है, जो लोग सहरी बहुत सवेरे खा लेते हैं और सो जाते हैं, उनको गौर करना चाहिए कि उनकी सहरी सुन्नत के खिलाफ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सहरी खायी फिर फज्र की नमाज में हम खड़े हो गये। अनस कहते हैं कि मैंने जैद से पूछा कि सहरी खाने और नमाज शुरू करने के बीच कितनी देर का फासला था। जैद ने कहा, जितनी देर पचास आयतें पढ़ी जायें और सुबह से मुराद सुबह सादिक है। सुबह काजिब पर खाना-पीना मना नहीं है, बल्कि सुबह काजिब के बाद जो सफेदी होती है, जिसकी सफेदी आसमान के किनारों पर फैली होती है, उसके निकलने पर खाना-पीना मना होता है। रमजान शरीफ के और मसाइल अगले खुत्बे में बयान किये जायेंगे।

बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

माहे रमजानुल मुबारक की मिसाल सुनार की भट्टी जैसी है, जिसमें सोने को तपा-तपाकर कंगन बनाया जाता है। यह महीना भी आपको कंगन बनाने के लिए आया है, लेकिन अफसोस यह है कि मुसलमान हर साल माहे रमजान बड़े ठाठ-बाठ से गुजारते हैं, मगर रमजान की असल रूह जिसका नाम तकवा है, वो पैदा नहीं होती, इल्ला माशा-अल्लाह! लिहाजा हमको अपनी मेहनत का फल तलाश करने की कोशिश करनी चाहिए।

अल्लाह पाक हम सबको माहे रमजान की हकीकी रूह से आशना फरमाये। आमीन!

या अल्लाह! यह मुबारक महीना गुजरा जा रहा है, इसमें हम को ईमान की तरक्की नसीब फरमा। और अपने खौफ और अपनी मुहब्बत से हमारे दिलों को भरपूर फरमा दे। और हम में आपस में इत्तेफाक, मुहब्बत पैदा कर दे। हमारे रोजे को झूट, गीबत, चुगली, गाली-गलौच हर किस्म की बीमारी से बचाइये और कबूलियत के दर्जा अता फरमाइये। आमीन या रब्बुल आलमीन!

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ لِيْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 35

फजाइल व मसाइल रमजानुल मुबारक से मुताल्लिक दूसरा खुत्बा

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

تَعْلَمُوْنَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ

(اَلْبَقَرَة ۲)

(सूरह अलबकरहः 185, पारा 2)

"रमजान का महीना वो है जिसमें कुरआने मजीद नाजिल किया गया जो लोगों के लिए सरापा हिदायत है और हिदायत के मायने रोशन दलाइल हैं जो इसमें मौजूद हैं और यह किताब सच और झूठ में फर्क बताने वाली है। पस जिसको भी यह मुबारक महीना मिले, उस पर लाजिम है कि उसमें रोजा रखे।"

अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन की हम्दो सना और उसके महबूब रसूले करीम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बेहद दरूद व सलाम!

इस्लामी भाईयों!

रमजानुल मुबारक की बहुत सी खासियतों में से एक यह भी खासियत है कि कुरआने मजीद का नुजूल इसी महीने में शुरू हुआ। इसलिए रमजान और कुरआन हरदो का खास ताल्लुक है। गोया रमजान नुजूले कुरआन की सालगिरह है। गालिबन यही वजह थी कि हर रमजान में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साथ हजरत जिब्राईल अमीन कुरआन शरीफ का दौर फरमाया करते थे, आज तक पूरी उम्मत में इस मुबारक माह में तिलावत व समाअत कुरआन शरीफ का अमल जारी है।

आप फजाइल व मसाइल रमजान शरीफ से मुताल्लिक कई खुत्बे सुन चुके

हैं और आज के खुत्बे में आपको अल्लाह और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेहतरीन हुक्म सुनाये जा रहे हैं। अल्लाह पाक याद रखने और अमल करने की तौफीक बख्शे। आमीन!

हजरात!

रमजान के साथ कयामे रमजान की भी बहुत बड़ी फजीलत है। हालांकि यह कयाम फर्ज नहीं है। मगर सवाब और दरजात के एतबार से इसका दर्जा भी रोजों के बराबर है। कयाम से मुराद वो कयाम है जो नमाजे तरावीह अदा करने और कुरआने मजीद सुनने के लिए इशा के बाद किया जाता है। इसकी फजीलत में हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है।

مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ۔

[بخاری۔ صلاۃ التراویح]

(बुखारी, सलातुल तरावीह)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि '' जो कोई रमजान की अजमत पर ईमान रखकर और सवाब समझकर शौक से रोजे रखे और इसी तरह कयाम भी करे, उसके सब पिछले गुनाह बख्श दिये जाते हैं।''

और कयामे रमजान मुबारक के महीने के बारे में एक बार आखिर अशरा में ऐसा हुआ कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इशा की नमाज के बाद ऐतकाफ की जगह दाखिल होकर नमाज पढ़ने लगे। बाज लोग भी आपके साथ शामिल हो गये। दूसरी रात को बहुत लोग शामिल हुए, तीसरी रात को और भी ज्यादा लोग जमा हुए, मगर उस रात को आपने जमाअत नहीं कराई और फरमाया कि कहीं तुम पर फर्ज ना हो जाये। फिर तुम मुकिश्ल में पड़ जाओ।

और हजरत जाबिर रजि. ने बयान किया है कि वो जो आपने हमको नमाज पढ़ायी थी, वो आठ रकअतें थी। यह हदीस सही इब्ने खुजैमा और इब्ने हिब्बान में है।

पस तरावीह की सुन्नत आठ रकआत और वित तीन रकअते हैं। हजरत आइशा रजि. का बयान है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमजान और गैर रमजान में रात की नमाज ग्यारह रकआत से ज्यादा नहीं पढ़ते थे। रमजान में भी यही नमाजे तरावीह है और गैर रमजान में भी तहज्जुद के नाम से

मशहूर है। अल्लाह पाक हर मुसलमान की तरावीह और रोजे कबूल फरमाये और यह नमाज बतौरे नफ्ल बीस, चालीस रकअतों तक अदा की जा सकती है। और हजरत अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है।

مَنْ صَامَ رَمَضَانَ وَعَرَفَ حُدُوْدَهٗ وَتَحَفَّظَ مِمَّا يَنْبَغِيْ لَهٗ اَنْ يَّتَحَفَّظَ كَفَّرَ مَا قَبْلَهٗ۔ [احمد]

(अहमद)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जिस शख्स ने रमजान मुबारक के रोजे रखे और उसकी शर्तो को पहचाना और जिस जिस काम से बचना चाहे, उससे बचा तो उसके पिछले गुनाह बख्श दिये जाते हैं।''

और तरगीब व तरहीब में हजरत अनस रजि. से रिवायत है

اِنَّ هٰذَا الشَّهْرَ قَدْ حَضَرَكُمْ وَفِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَهَا فَقَدْ حُرِمَ الْخَيْرَ كُلَّهٗ وَلَا يُحْرَمُ خَيْرَهَا اِلَّا مَحْرُوْمٌ وَفِيْ رِوَايَةِ الطَّبْرَانِيْ هٰذَا رَمَضَانُ قَدْ جَاءَ تُفْتَحُ فِيْهِ اَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَتُغْلَقُ فِيْهِ اَبْوَابُ النَّارِ۔ (الحديث)

(अलहदीस)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''यह मुबारक महीना तुम्हारे पास आया है, इसमें एक रात ऐसी फजीलत वाली आती है, जिसकी इबादत हजार महीने की इबादत से जयादा बेहतर है जो इसकी खैरो बरकत से महरूम रहा, वो तमाम बरकतों से महरूम रहा। और इसकी खैरो बरकत से वही महरूम रहेगा जो बिलकुल ही बद-नसीब है और तबरानी की रिवायत यूं है कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि रमजान तुम्हारे पास आ पहुंचा। इसमें जन्नत के दरवाजे खोले जाते हैं और जन्नत के दरजात रोजेदारों के लिए सजाये जाते हैं और दोजख के दरवाजे बन्द किये जाते हैं। और शैतानों को कैद किया जाता है। नामुराद हो वो शख्स जिसने रमजान मुबारक का महीना पाया, फिर उसको बख्शिश नसीब ना हुई तो फिर कब होगी।''

रसूलुल्लाह का एक और अजीमुश्शान खुत्बा सुनिए।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَلْاَعْمَالُ عِنْدَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ سَبْعٌ عَمَلَانِ مُوْجِبَانِ وَعَمَلَانِ بِاَمْثَالِهِمَا وَعَمَلٌ بِعَشْرِ اَمْثَالِهٖ وَعَمَلٌ بِسَبْعِ مِائَةٍ وَعَمَلٌ لَا يَعْلَمُ ثَوَابَ عَامِلِهٖ اِلَّا اللهُ عَزَّوَجَلَّ۔ فَاَمَّا الْمُوْجِبَانِ فَمَنْ لَقِيَ اللهَ يَعْبُدُهٗ مُخْلِصًا لَا يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ وَمَنْ لَقِيَ اللهَ قَدْ اَشْرَكَ بِهٖ وَجَبَتْ لَهُ النَّارُ وَمَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً جُزِيَ بِهَا وَمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّعْمَلَ حَسَنَةً فَلَمْ يَعْمَلْهَا جُزِيَ مِثْلَهَا وَمَنْ عَمِلَ حَسَنَةً جُزِيَ عَشْرًا وَمَنْ اَنْفَقَ مَا لَهٗ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ضُعِّفَتْ لَهٗ نَفَقَتُهُ الدِّرْهَمُ بِسَبْعِ مِائَةٍ.... الحديث [ابن ماجه الصيام]

(इब्ने माजह अस्सियाम)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "बन्दों के अमल अल्लाह पाक के नजदीक सात दर्जों पर है। दो अमल तो ऐसे हैं कि दो चीजों को वाजिब करते हैं और दो ऐसे हैं कि उनमें एक का बदला एक है और एक वो है कि उसके बदले दस नेकियाँ लिखी जाती हैं और बाज अमल ऐसे हैं कि उसके बदले सात सौ नेकियाँ लिखी जाती हैं और एक अमल ऐसा है कि उसके सवाब की हद अल्लाह पाक के सिवा कोई नहीं जानता। ना किसी फरिश्ते को उसके लिखने की ताकत है। दो अमल दो चीजें वाजिब करने वालों में से एक यह है कि जिस शख्स ने शिर्क ना किया और तौहीद पर मरा, उसके वास्ते जन्नत वाजिब हुई है। और दूसरा यह कि जो शख्स शिर्क पर मरा उसके वास्ते दोजख वाजिब हुई और एक का एक ही बदला लिखे जाने वालों में से एक यह है कि जिस किसी ने एक गुनाह किया तो उसका एक ही गुनाह लिखा जाता है। दूसरा यह कि अगर किसी नेक काम का इरादा किया, फिर अमल करना ना हुआ तो सिर्फ नियत ही की बरकत से एक नेकी लिख दी जाती है। और दस गुना सवाब मिलने वाली तमाम नेकियां यानी जब मुसलमान किसी किस्म का नेक काम करता है तो कम से

कम दस नेकियां लिखी जाती हैं। ओर वो अमल जिसका बदला सात सौ तक है, वो यह है कि अल्लाह के दीन की इशाअत व तरक्की पर माल को खर्च करे तो उसका एक एक (रूपये) का सवाब सात सात सौ (रूपये) तक लिखा जाता है। और वो अमल जिसके सवाब की हद सिवाय अल्लाह के कोई नहीं जानता, वो रोजा है। क्योंकि रोजा एक ऐसा अमल है जिसका ताल्लुक अल्लाह पाक से बराहे रास्त है। रोजा तन्हाई में मर्द मोमिन के दिल को अल्लाह के डर व हुकूमत की तलकीन करता है। इसलिए इसका दर्जा बहुत बड़ा है और इसके सवाब का भी यही हाल है।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لَمَّا كَانَ اَوَّلُ لَیْلَةٍ مِّنْ شَهْرِ رَمَضَانَ صُفِّدَتِ الشَّیَاطِیْنُ وَمَرَدَةُ الْجِنِّ وَغُلِّقَتْ اَبْوَابُ النَّارِ فَلَمْ یُفْتَحْ مِنْهَا بَابٌ وَفُتِحَتْ اَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَلَمْ یُغْلَقْ مِنْهَا بَابٌ وَیُنَادِیْ مُنَادٍ یَا بَاغِیَ الشَّرِّ اَقْصِرْ... الخ

(तिर्मिजी, अस्सौम, इब्ने माजह, अस्सियाम)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जब रमजान मुबारक की पहली रात होती है तो बड़े बड़े सरकश जिन्न और शैतान कैद किये जाते हैं और दोजख के दरवाजे बन्द हो जाते हैं। फिर उनमें से कोई दरवाजा खुलने नहीं पाता और जन्नत के दरवाजे खोले जाते हैं। फिर उनमें से कोई दरवाजा बन्द नहीं किया जाता और अल्लाह तआला की तरफ से पुकारने वाला पुकारता है कि ऐ भलाई और खैर के चाहने वाले आगे बढ़ यानी अब वक्त है कि जो कुछ मांगना हो, वो मांग और ऐ गुनाह के करने वाले अब ठहर जा, यानी इस खैर व बरकत के वक्त शर्म कर और गुनाहों से बाज आ और अल्लाह के वास्ते आजिजी पाने वाले हैं।''

यानी आज अल्लाह तआला अपने बन्दों को दोजख से आजाद कर रहा है और तमाम रमजान में हर एक रात को यही मामला होता है। इसलिए हजरत अबू सईद गिफारी रजि. रिवायत करते हैं:

قَالَ لَوْ یَعْلَمُ الْعِبَادُ مَا رَمَضَانُ تَمَنَّتْ اُمَّتِیْ اَنْ تَكُوْنَ السَّنَةُ كُلُّهَا رَمَضَانُ۔

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि 'रमजान मुबारक जैसा कुछ मर्तबा अल्लाह पाक के नजदीक है, अगर वो बन्दों को मालूम हो जाता है कि तो अलबत्ता मेरी उम्मत के लोग यह तमन्ना करते कि तमाम साल रमजान ही रहा करे।''

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और खुत्बा मुबारक गौर से सुनने के लायक है:

وَعَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَلصِّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَقُوْلُ الصِّيَامُ اَیْ رَبِّ اِنِّیْ مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّهَوَاتِ بِالنَّهَارِ فَشَفِّعْنِیْ فِيْهِ وَيَقُوْلُ الْقُرْآنُ مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِیْ فِيْهِ قَالَ فَيُشَفَّعَانِ۔ الحديث [احمد، طبرانی]

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ::रोजा और कुरआने मजीद कयामत में बन्दे की शिफाअत करेंगे, रोजा कहेगा कि ऐ रब मैंने इस बन्दे को दिन में खाने और ख्वाहिश की चीजों से रोका था, पस इसके हक में शिफाअत कबूल कर और कुरआने मजीद कहेगा कि मैंने इसको रात में नींद से रोका था, यानी मेरे पढ़ने में उसने नींद खोई थी। पस उसके हक में मेरी सिफारिश कबूल कर। पस अल्लाह पाक दोनों की सिफारिश को कबूल करेगा। और उस शख्स को बख्श देगा।''

और हजरत अबू उबैदा से रिवायत है'

اَلصِّيَامُ جُنَّةٌ مَا لَمْ يَخْرِقْهَا قِيْلَ وَبِمَا يَخْرِقُهَا قَالَ بِكَذِبٍ اَوْ غِيْبَةٍ۔ رواه النسائی وابن خزيمة والطبرانی باسناد حسن۔

(रवाहुन निसाई व इब्ने खुजैमह वत्तबरानी बिइसनादिन हसन)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''रोजा ढाल है यानी दोजख के अजाब से हिफाजत करने वाला है। जब तक कि उसको फाड़ ना डाले। अर्ज किया गया कि कौनसी चीज उसको फाड़ देती है?फरमाया कि झूट

और चुगली के साथ यानी रोजादार अगर झूट और गीबत वगैरह से नहीं बचता तो वो रोजा दोजख से बचाने वाला नहीं होता।''

और सही बुखारी में हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रोजा जैसे पाक अमल के अदा करने वालों के लिए जरूरी है कि रोजा को अल्लाह के यहां कबूल कराने के लिए इस हदीस को याद कर लें।

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम में से किसी के रोजे का दिन हुआ करे, पस ना बेहूदा बके और ना झूठी बातें करें और लड़ाई झगड़ा ना करें। फिर अगर कोई बुरा कहे या उससे लड़ने लगे तो उससे कह दे कि मैं रोजे से हूँ, लड़ नहीं सकता।

मुहतरम भाईयों!

गौर करना चाहिए कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोजे की हालत में लड़ने झगड़ने से किस कद्र मना फरमाया है, इसलिए ऐसे लोगों को महज भूखा प्यासा मरना है और कुछ हासिल नहीं है। हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है:

مَنْ لَّمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّوْرِ وَالْعَمَلَ بِهٖ فَلَيْسَ لِلّٰهِ حَاجَةٌ فِيْ اَنْ يَّدَعَ طَعَامَهٗ وَشَرَابَهٗ.... [بخاری]

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जिस शख्स ने रमजान में नाजाइज कलाम को ना छोड़ा तो अल्लाह पाक को उसके खाना-पीना छोड़ने की कुछ परवाह नहीं है।''

और इब्ने माजा में हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है:

كَمْ مِنْ صَائِمٍ لَيْسَ لَهٗ مِنْ صِيَامِهٖ اِلَّا الْجُوْعُ وَكَمْ مِنْ قَائِمٍ لَيْسَ لَهٗ مِنْ قِيَامِهٖ اِلَّا السَّهْرُ. [احمد، الدارمی۔ الرزاق، ابن ماجه]

(अहमद, अलदारमी, अल-रज्जाक, इब्ने माजह)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''कितने रोजेदार ऐसे हैं कि उनको रोजा रखने से सिवाय भूख की तकलीफ उठाने के और

कुछ हासिल नहीं और कितनी रात की तरावीह और तहज्जुद वगैरह पढ़ने वाले ऐसे हैं कि सिवाये उनको नींद को खोने के और कुछ हासिल नहीं है।''

उसके बाद अगर रोजेदार भूलकर कुछ खा-पी ले तो, रोजा नहीं जाता। सही बुखारी में अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि जिसमें अल्लाह पाक की एक मेहरबानी का बयान..... यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि रोजा रखने वाला जो शख्स भूल कर कुछ खा जाये या पी जाये वो अपना रोजा पूरा करे, सिवाय इसके नहीं कि उसको अल्लाह तआला ने खिलाया और पिलाया है।

और रोजादार को मिस्वाक करनी जायज है, जब चाहे करे।

सही बुखारी में आमिर बिन रबीया रजि. से रिवायत है किः

قَالَ رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَسْتَاكُ وَهُوَ صَائِمٌ مَا لَا أُحْصِيْ [بخاری، تعلیقا]

(बुखारी, तअलीकन)

यानी मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रोजे में मिस्वाक करते हुए बहुत बार देखा है।

और बादल वगैरह के सबब सूरज डूबने से पहले रोजा इफ्तार हो जाये तो कजा लाजिम है। बुखारी शरीफ अस्मा बिन्ते अबी बकर रजि. से रिवायत हैः

قَالَتْ أَفْطَرْنَا عَلٰى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فِيْ يَوْمٍ ثُمَّ طَلَعَتِ الشَّمْسُ قِيْلَ لِهِشَامٍ قَالَ فَلَا بُدَّ مِنْ ذٰلِكَ۔ [بخاری، کتاب الصوم]

(बुखारी, किताबुस्सौम)

यानी ''नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में एक रोज बादल था, रोजा इफ्तार हो गया। फिर सूरज निकल आया। रावी ने हिशाम से पूछा कि रोजे की कजा का हुक्म हुआ या नहीं?उन्होंने कहा कि कजा करना तो जरूरी था, कजा क्यों ना करते'

और खुशबू का लगाना या सूंघना राजेदार को जायज है, क्योंकि तिर्मिजी में हजरत हसन बिन अली रजि. से रिवायत है।

تُحْفَةُ الصَّائِمِ الدُّهْنُ............ الحديث [ترمذی، الصوم]

(तिर्मिजी अल-सौम)

यानी "नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि रोजेदार के लिए तेल और खुशबू तोहफा है।"

यानी बे-रोजे वाला किसी की मुलाकात को आये ता उसकी खातिर मेहमानी यह है कि कुछ खिलाये और अगर उसका रोजा है तो उसकी खातिर मेहमानी यह है कि इत्र या खुशबू का तेल या खुशबूदार धूनी उसको दे और सुरमा लगाना भी जायज है। इब्ने माजह में आइशा रजि. से रिवायत है:

اِكْتَحَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَهُوَ صَائِمٌ۔ [ابن ماجه۔ الصيام]

(इब्ने माजह, अस्सियाम)

यानी " रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोजा की हालत में सुरमा लगाया है।"

और मसकी किलाबुस सोम में अबू हुरैरा रजि. अन्हु से रिवायत है।

مَنْ ذَرَعَهُ الْقَيْءُ فَلَيْسَ عَلَيْهِ قَضَاءٌ وَمَنِ اسْتَقَاءَ عَمْدًا فَلْيَقْضِ۔

[ترمذی۔ الصوم، ابوداؤد، ابن ماجه]

(तिर्मिजी, अस्सौम, अबू दाऊद, इब्ने माजह)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जिसको खुद-ब-खुद उल्टी आ जाये जो चाहे थोड़ी हो या बहुत, उसका रोजा नहीं गया और जो कोई अपने इरादे से उल्टी करे उसको कजा लाजमी आती है।"

और तिर्मिजी जिल्द अव्वल में अबू सईद से रिवायत है:

ثَلَاثًا لَا يُفَطِّرَنَّ الصَّائِمَ اَلْحِجَامَةُ وَالْقَيْءُ وَالْاِحْتِلَامُ۔ [ترمذی۔ الصوم]

(तिर्मिजी अस्सौम)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "इन तीनों से रोजा नहीं जाता। पछने लगवाने से और उल्टी के आने से यानी खुद-ब-खुद उल्टी आने से या रोजेदार सो गया और सोते में नहाने की हालत हो गयी।"

यानी अहतलाम (नाइट-फाल) से या बीमारी की वजह से पछने और भरी सींगी लगवाई तो इनसे रोजा नहीं जाता और किसी ने रोजे की हालत में सफर किया और रास्ते में ज्यादा तकलीफ होने लगी तो उस वक्त भी रोजेदार को

इफ्तार कर लेना जायज है, चाहे कोई वक्त हो और सफर के बीच किसी जगह शहर या गांव में किसी जरूरत से ठहर गया और कोई इरादा मुकर्रर नहीं कि कितने दिन ठहरना होगा तो जायज है कि बराबर रोजा ना रखे, जब तक कि अपने वतन वापिस ना पहुंचे।

हजरात!

रमजानुल मुबारक का यह महीना मुसलमानों के लिए बड़ी ही अल्लाह की नेमत है। इसके तमाम दिन और रातें रहमत और बख्शिश से भरी हुई हैं। खासकर आखिर का अशरा यानी इक्कीसवीं तारीख से लेकर महीने के खत्म तक बहुत ही ज्यादा बुजुर्गी वाला है। इस अशरा की इबादत में बहुत ही ज्यादा कोशिश करनी चाहिए।

मिश्कात में हजरत आइशा रजि. से रिवायत है:

كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَاَصْحَابُهٗ اِذَا دَخَلَ الْعَشْرُ شَدَّ مِئْزَرَهٗ وَاَحْيٰ لَيْلَهٗ وَاَيْقَظَ اَهْلَهٗ۔ [بخاری۔ صلاۃ التراویح]

(बुखारी, सलातुल तरावीह)

यानी "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह दस्तूर था कि जब रमजान का पिछला अशरा होता तो आप कमर मजबूत बांधते और रातों को ज्यादा जागते और अपने घर वालों को भी जगाते और दस दिन तक बराबर एतिकाफ में रहते।"

चुनांचे तिर्मिजी में हजरत आइशा रजि. से रिवायत है:

اِنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَعْتَكِفُ الْعَشْرَ الْاَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ حَتّٰى قَبَضَهُ اللهُ۔ [ترمذی۔ الصوم، مسند احمد]

(तिर्मिजी, अस्सौम, मुसनद अहमद)

यानी तहकीक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमजान में आखरी अशरे का एतिकाफ किया करते थे, यहां तक कि कब्ज किया अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यानी वफात के जमाने तक आप का बराबर यही दस्तूर रहा कि दस दिन का बराबर एतिकाफ किया करते थे।

और मिश्कात में हजरत इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है:

إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ فِي الْمُعْتَكِفِ وَهُوَ يَعْتَكِفُ الذُّنُوْبَ وَيُجْزٰى لَهُ مِنَ الْحَسَنَاتِ كَعَامِلِ الْحَسَنَاتِ كُلِّهَا ۔ [ابن ماجه۔ الصيام]

(इब्ने माजह, अस्सियाम)

यानी ''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एतिकाफ करने वाले के हक में कि वो एतिकाफ मे बेठने के सबब गुनाहों से बचा रहता है तो उसके वास्ते वो सब नेकियां भी लिखी जाती हैं जो दूसरे नेकियां करने वालों के वास्ते लिखी जाती हैं।''

मसलन कोई बीमार को पूछने को जाये या जनाजे के साथ जाये या गरीबों मुहताजों का काम करने जाये। एतिकाफ वाला उन कामों में नहीं जा सकता। एतिकाफ की बरकत से उन सब नेकियों का सवाब भी उसके आमाल नामे में लिखा जाता है।

और एतिकाफ वाले के वास्ते बगैर सख्त जरूरत के बाहर निकलना दुरुस्त नहीं है।

अबू दाऊद में हजरत आइशा रजि. से रिवायत है:

اَلسُّنَّةُ عَلَى الْمُعْتَكِفِ اَنْ لَّا يَعُوْدَ مَرِيْضًا وَلَا يَشْهَدَ جَنَازَةً وَلَا يَمَسَّ اِمْرَأَةً وَلَا يُبَاشِرَهَا وَلَا يَخْرُجَ لِحَاجَةٍ اِلَّا لِمَا لَا بُدَّ مِنْهُ وَلَا اِعْتِكَافَ اِلَّا بِصَوْمٍ وَلَا اِعْتِكَافَ اِلَّا فِيْ مَسْجِدٍ جَامِعٍ ۔ [ابوداؤد۔ الصوم]

(अबू दाऊद, अस्सौम)

यानी ''एतिकाफ वाले के लिए सुन्नत यह है कि बीमार पुरसी को और जनाजे की हमराही को ना जाये और औरत से सोहबत (हमबिस्तरी) ना करे और सिवाये ऐसी जरूरत के कि जिससे लाचारी है, जैसे पेशाब, पाखाना या गुस्ले जनाबत वगैरह के लिए मस्जिद से बाहर ना निकले और बगैर रोजे के एतिकाफ सही नहीं है और सिवाये ऐसी मस्जिद के जिसमें पांचो वक्त की नमाज और जुमा की नमाज होती हो, एतिकाफ दुरुस्त नहीं है।

यानी रमजान की रातों में अपनी औरत से सोहबत करनी दुरुस्त है, लेकिन

एतिकाफ के दिनों में रात को भी दुरुस्त नहीं है। एतिकाफ के वास्ते ऐसी मस्जिद चाहिए जिसमें पांचों वक्त की नमाज और जुमा होता हो और एतिकाफ में सुन्नत तो हमेशा की यही है कि दस दिन का हो, लेकिन जायज कम भी है। यानी एक, दो दिन का भी एतिकाफ जायज है। और ऐतकाफ के वास्ते मस्जिद में किसी तरफ को किसी कपड़े या बोरिये वगैरह से कुछ आड़ बतौर पर्दा करके उसके अन्दर रहना सुन्नत है।

एतिकाफ की जगह में रमजान की बीसवीं तारीख को मगरिब से दाखिल होना मुनासिब है और चांद देखने पर यह कयाम खत्म हो जाता है। इस तरह पूरे दस दिन का एतिकाफ हो जाता है। अगर पेशाब या पखाना या जरूरी गुस्ल के वास्ते मस्जिद से बाहर जाये और रास्ते में कोई बीमार मिल जाये तो चलते चलते उसको पूछ लेना या कोई शख्स कुछ बात कहे तो चलते चलते उसका जवाब देना दुरुस्त है। उसकी खातिर ठहरना या रास्ते से फिर कर उसकी तरफ जाना दुरुस्त नहीं है।

अबू दाऊद में हजरत आइशा रजि. से रिवायत है:

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَمُرُّ بِالْمَرِيْضِ وَهُوَ مُعْتَكِفٌ فَيَمُرُّ كَمَا هُوَ وَلَا يُعَرِّجُ يَسْأَلُ عَنْهُ۔ [ابوداؤد۔ الصوم]

(अबू दाऊद, अस्सौम)

यानी "नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब एतिकाफ में होते थे और राह में कोई बीमार होता तो अपना रास्ता चलते हुए उसको पूछ लेते, रास्ते से हटकर उसकी तरफ को नहीं जाते थे।"

मुहतरम भाईयों!

शबे कद्र भी इसी आखरी अशरा में होती है। कुछ लोगों ने माहे शअबान की पन्द्रहवीं रात को शबे कद्र का दर्जा दे रखा है, यह सही नहीं है। इस रात को लोग शबे बरात से याद करते हैं, हलवे बनाते हैं, चिराग करते हैं, आतिश बाजी छोड़ते हैं, कब्रिस्तान में मेला लगाते हैं और घरों को सजाते हैं और समझते हैं कि इस रात को (मुर्दों की) रूहें घरों में आती हैं। यह सब बे-सबूत काम हैं, इनसे बचाना चाहिए।

मिश्कात में हजरत आइशा रजि. से रिवायत है:

تحرّوا ليلة القدر في الوتر من العشر الأواخر من رمضان....

[بخاری۔ صلاۃ التراویح، مسلم الصیام، ترمذی۔ الصوم]

(बुखारी, सलातुत्तरावीह, मुस्लिम अस्सियाम, तिर्मिजी, अस्सौम)

यानी ''रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लैलतुल कद्र को रमजान के आखिरी अशरा की ताक रातों यानी इक्कीसवीं और तेइसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं और उन्तीसवीं रात में तलाश करो।'' यानी जागो और इबादत करो।

और तरगीब व तहरीब में अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है:

مَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ إِيْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ۔

[بخاری، مسلم]

(बुखारी, मुस्लिम)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जिस शख्स ने ईमान के साथ और सवाब समझकर शबे कद्र में कयाम किया उसके पिछले सब गुनाह बख्शे जाते हैं।''

और हजरत अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है:

قَالَ دَخَلَ رَمَضَانُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ إِنَّ هٰذَا الشَّهْرَ قَدْ حَضَرَكُمْ وَفِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَهَا فَقَدْ حُرِمَ الْخَيْرَ كُلَّهٗ وَلَا يُحْرَمُ خَيْرَهَا إِلَّا مَحْرُوْمٌ۔ (رواہ ابن ماجۃ واسنادہ حسن)

(रवाहु इब्ने माजह व इसनादुहू हसन)

यानी ''रमजान मुबारक का महीना आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तहकीक यह महीना तुम्हारे पास आया है और इसमें एक रात ऐसी है कि उसमें इबादत करनी हजार महीने की इबादत से भी ज्यादा बेहतर है। जो शख्स इस मुबारक रात की बरकत से महरूम रहा, वो सब ही बरकतों से महरूम रहा। और नहीं महरूम रहता उसकी बरकत से मगर वही जो बेनसीब हो।''

इस्लामी भाईयों!

यह मुबारक महीना जल्द ही खत्म होने को जा रहा है, याद होगा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि इस महीने का पहला अशरा रहमत और दूसरा अशरा बख्शिश के खजानों की तकसीम का अशरा है। और तीसरा अशरा दोजख से आजादी और जन्नत में दाखिले के परवानों की तकसीम का अशरा है। दुआ करो कि अल्लाह पाक हम सबको अपनी रहमत और बख्शिश से नवाजे ओर दोजख से आजादी अता करे और जन्नत नसीब करे और अल्लाह पाक हमारे रोजों को कबूल करे और जो भी गलतियां हमसे हुई हैं, उनको माफ करे। और जलन व दुश्मनी से हमारे दिलों को पाक फरमाये। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ اَجْمَعِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 36

तीसरा खुत्बा: लयलतुल कद्र और सदका-ए-फितर के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ۝ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ۝ (القدر ۹۷)

(सूरह कदर: 1-3, पारा 30)

यानी अल्लाह पाक ने फरमाया कि "तहकीक उतारा है हमने कुरआने मजीद को लयलतुल कद्र में और तुम जानते भी हो कि लयलतुल कद्र कैसी चीज है, लयलतुल कद्र हजारों महीनों से बेहतर है।"

हजरात!

आज का खुत्बा लयलतुल कद्र और सदकये फित्र वगैरह की तफसीलात से मुताल्लिक है। लयलतुल कद्र वो मुबारक रात है जो अल्लाह पाक ने खास इस उम्मत को (इस रमजान) माहे मुबारक में अता फरमायी है, कुरआन मजीद पूरे तौर पर लौहे-महफूज से नकल होकर इस मुबारक रात में आसमाने दुनिया पर लाया गया, वहां से जरूरत के मुताबिक तेईस साल नाजिल होता रहा। एक रिवायत यह भी है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पिछली उम्मतों में से एक शख्स का जिक्र फरमाया कि उसने अल्लाह पाक की राह में जिहाद के वास्ते कमर बांधी तो बराबर जिहाद करता रहा, यहां तक कि एक हजार महीने के बाद कमर खोली। सहाबा किराम रजि. ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह! कयामत में ऐसे लोगों के मुकाबले में हमारी नेकियों की क्या कद्रो कीमत होगी। क्योंकि ना हमारी ऐसी उम्र होती है, ना ऐसी ताकत है। इस पर अल्लाह पाक ने शबे कद्र इस उम्मत को दी कि लो एक यही रात में इससे ज्यादा सवाब हासिल कर सकते हो, जितना कि उन को हजार महीने की मेहनत में मिलता था।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब उस रात की खुशखबरी मिली और यह नहीं बताया गया था कि आखरी अशरा में होती है तो आपने इसकी तलाश में तमाम महीने एतिकाफ किया। चुनांचे हजरत अबू सईद रजि. से रिवायत है:

إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ اِعْتَكَفَ الْعَشْرَ الْاَوَّلَ مِنْ رَمَضَانَ ثُمَّ اعْتَكَفَ الْعَشْرَ الْاَوْسَطَ فِيْ قُبَّةٍ تُرْكِيَّةٍ ثُمَّ اَطْلَعَ رَأْسَهٗ فَقَالَ اِنِّيْ اَعْتَكِفُ الْعَشْرَ الْاَوَّلَ اَلْتَمِسُ هٰذِهِ اللَّيْلَةَ ثُمَّ اَعْتَكِفُ الْعَشْرَ الْاَوْسَطَ ثُمَّ اُوْتِيْتُ فَقِيْلَ لِيْ اِنَّهَا فِي الْعَشْرِ الْاَوَاخِرِ فَمَنْ كَانَ اعْتَكَفَ مَعِيَ فَلْيَعْتَكِفِ الْعَشْرَ الْاَوَاخِرَ فَقَدْ اُرِيْتُ هٰذِهِ اللَّيْلَةَ ثُمَّ اُنْسِيْتُهَا وَلَقَدْ رَاَيْتُنِيْ اَسْجُدُ فِيْ مَآءٍ وَطِيْنٍ مِنْ صَبِيْحَتِهَا فَالْتَمِسُوْهَا فِي الْعَشْرِ الْاَوَاخِرِ وَالْتَمِسُوْهَا فِيْ كُلِّ وِتْرٍ قَالَ فَمَطَرَتِ السَّمَآءُ تِلْكَ اللَّيْلَةَ وَكَانَ الْمَسْجِدُ عَلٰى عَرِيْشٍ فَوَكَفَ الْمَسْجِدُ فَبَصُرَتْ عَيْنَايَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ وَعَلٰى جَبْهَتِهٖ اَثَرُ الْمَآءِ وَالطِّيْنِ مِنْ صُبْحَةِ اِحْدٰى وَعِشْرِيْنَ۔ (متفق عليه)

(मुत्तफक अलैहि)

यानी "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमजान के पहले दस दिनों में एतिकाफ किया। फिर दूसरे दस दिन का एतिकाफ किया और एतिकाफ के वास्ते मस्जिद में एक छोटा सा तम्बू लगाया था। उसमें बैठते थे, जब दूसरा अशरा गुजर गया तो आपने उस तम्बू से चेहरा मुबारक निकाल कर फरमाया कि मैंने शबे कद्र की तलाश में पहले दस दिन का एतिकाफ किया। फिर दूसरे दस दिन का एतिकाफ किया। फिर मुझको यह बतलाया गया है कि वो रात आखिर के दस दिन में होती है। पस जिन लोगों ने मेरे साथ एतिकाफ किया, वो आखिर अशरा का भी एतिकाफ करें। तहकीक वो रात मुझको दिखलाई गयी है। फिर भुलायी गई और तहकीक मैंने उस रात की सुबह को अपने आप को कीचड़ में

सज्दा करते देखा है। पस तुम उस रात को आखिरी दस दिन की ताक रातों में तलाश करो। अबू सईद रजि. ने कहा कि फिर उस रात को बारिश हुई और मस्जिद टपकी। क्योंकि मस्जिद की छत बोरिया और फूंस वगैरह से बनी हुई थी। पस मेरी आंखों ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप की पेशानी मुबारक पर कीचड़ लगी हुई थी, क्योंकि सज्दा की जगह में मस्जिद की जमीन गीली थी। और वो सुबह इक्कीसवीं तारीख थी।

इस हदीस में तो इक्कीसवीं रात का बयान है और अकसर रिवायतों में सत्ताईसवीं रात का बयान है और सिवा इसके और रिवायतें होने की वजह से यह मालूम होती है कि वो रात किसी खास तारीख पर मुकर्रर नहीं है। बल्कि आखिरी दस दिनों की ताक रातों में होती है। किसी रमजान में कोई रात और किसी रमजान में कोई रात हो जाती है

शबे कद्र की रातों में इस दुआ को ज्यादा से ज्यादा पढ़ना सुन्नत है:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ۔

(ابن ماجه۔ الدعاء، ترمذی۔ الدعوات)

(इब्ने माजह, अद्दुआ, तिर्मिजी, अद्दावात)

हजरात!

अब इस मुबारक महीने का बहुत-सा हिस्सा गुजर चुका है, थोड़ा-सा बाकी है। रहमत और बख्शिश के खजाने खुले हुए हैं। ऐसा ना हो कि यह वक्त यूं ही हाथ से निकल जाये। फिर अफसोस करना पड़े। फिर खूब शौक और चाहत के साथ इबादत करो, लेकिन इबादत में बिदअत का दखल ना हो। क्योंकि बिदअत बुरी बला है। बिदअत से तमाम नेकियाँ बर्बाद हो जाती हैं। आखिर जुमा के वास्ते लोगों ने एक यह बात मुकर्रर कर रखी है कि खुत्बे में अलविदाअ-अलविदाअ पढ़ा करते हैं। याद रखना चाहिए कि यह काम बिदअत है, क्योंकि हदीस और कुरआन से कहीं इसका सबूत नहीं और जिस चीज का सबूत कुरआन व हदीस से ना हो और उसको सवाब जानकर करें, वही बिदअत है। सारी खूबी और भलाई तो सुन्नत की पैरवी में है और खुशकिस्मत वही लोग हैं जिनको सुन्नत की पाबन्दी नसीब हो।

पस सुन्नत इसी कद्र है कि इस मुबारक रात को तलाश करने की पूरी

कोशिश करें। तलाश करने से आखिर अशरा ताक रातों से 21, 23, 25, 27, 29 रात को जागना मुराद है। अब खुत्बा मुबारक सुनिये:

عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِذَا كَانَ لَيْلَةُ الْقَدْرِ نَزَلَ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِیْ كُبْكُبَةٍ مِّنَ الْمَلَآئِكَةِ يُصَلُّوْنَ عَلٰى كُلِّ عَبْدٍ قَائِمٍ اَوْ قَاعِدٍ يَذْكُرُ اللهَ عَزَّوَجَلَّ فَاِذَا كَانَ يَوْمُ عِيْدِهِمْ يَعْنِیْ يَوْمَ فِطْرِهِمْ بَاهٰى بِهِمْ مَلَآئِكَتَهٗ فَقَالَ يَا مَلَآئِكَتِیْ مَا جَزَآءُ اَجِيْرٍ وَفّٰى عَمَلَهٗ قَالُوْا رَبَّنَا جَزَاؤُهٗ اَنْ يُوَفّٰى اَجْرُهُمْ قَالَ يَا مَلَآئِكَتِیْ عَبِيْدِیْ وَاِمَآئِیْ قَضَوْا فَرِيْضَتِیْ عَلَيْهِمْ ثُمَّ خَرَجُوْا يَعُجُّوْنَ اِلَى الدُّعَاءِ وَعِزَّتِیْ وَجَلَالِیْ وَكَرَمِیْ وَعُلُوِّیْ وَارْتِفَاعِ مَكَانِیْ لَاُجِيْبَنَّهُمْ فَيَقُوْلُ ارْجِعُوْا قَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ بَدَّلْتُ سَيِّئَاتِكُمْ حَسَنَاتٍ قَالَ فَيَرْجِعُوْنَ مَغْفُوْرًا لَّهُمْ....

[شعب الايمان للبيهقى]

(शुअबुल ईमान अलिबैहिकी)

यानी "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब शबे कद्र होती है तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम फरिश्तों की एक बड़ी जमाअत के साथ जमीन पर तशरीफ लाते हैं और जो लोग उस वक्त इबादत में लगे होते हैं उनके वास्ते दुआ-ए-खैर करते हैं। फिर ईद के दिन अल्लाह पाक फरिश्तों के सामने उनकी बड़ाई बयान करके फरमाता है कि ऐ मेरे फरिश्तो जो मजदूर अपनी मेहनत पूरी कर दे, उसका बदला क्या है?फरिश्ते अर्ज करते हैं कि ऐ रब हमारे पास इसका बदला यह है कि उसकी मजदूरी मिले। अल्लाह पाक फरमाता है कि ऐ मेरे फरिश्तो! मेरे गुलामों और लौण्डियों ने वो फर्ज अदा कर दिया जो मैंने उन पर फर्ज किया था। फिर अब मेरा नाम लेते हुए और दुआ करते हुए नमाज के वास्ते

निकले हैं। सो कसम है मुझको अपनी इज्जत की, कसम है मुझको अपने जलाल की, कसम है मुझको अपनी बख्शिश की, कसम है मुझको अपनी बुजुर्गी की, कसम है मुझको अपनी बुलन्द मर्तबे की, उनकी दुआयें जरूर कबूल करूंगा। फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐ बन्दों! तुम बख्शे हुए अपने घरों को लौट जाओ। बेशक मैंने तुम्हारे गुनाह बख्श दिये हैं और तुम्हारी खताओं को नेकियों में बदल डाला। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पस वो गुनाहों से साफ सुथरे होकर घर को वापिस आते हैं।

और ईद के दिन सुन्नत है कि नहाये और अच्छे कपड़े पहने, जो भी नसीब हो। और नसीब हो तो खुशबू भी लगायें और कुछ (ताक अदद) खजूर वगैरह खायें।

और सदका-ए-फितर भी नमाज से पहले अदा करके नमाज को जायें। और रास्ते में तकबीर कहता जाये, यानी धीमी-धीमी आवाज से थोड़ी-थोड़ी देर में यूं कहता जाये।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ. اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

"अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु अल्लाहु अकबरु व-लिल्लाहिल हम्द."

और ईदगाह में बैठा हुआ भी तकबीर कहता रहे जब नमाज या खुत्बा शुरु हो, उस वक्त (तक) तकबीर कहता रहे, और ईद की नमाज वक्त के मुताबिक अदा करे।

और सदका-ए-फितर की मिकदार एक साअ है, जिसका वजन अंग्रेजी तौल के हिसाब से कुछ कम पौने तीन सैर (1) है। और यह हर मुसलमान मर्द और औरत पर वाजिब है। यहां तक कि बच्चों की तरफ से भी निकालना चाहिए। जैसाकि दर्ज जैल हदीस से जाहिर है।

فَرَضَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ زَكٰوةَ الْفِطْرِ صَاعًا مِّنْ تَمْرٍ اَوْ صَاعًا مِّنْ شَعِيْرٍ عَلَى الْعَبْدِ وَالْحُرِّ وَالذَّكَرِ وَالْاُنْثٰى وَالصَّغِيْرِ وَالْكَبِيْرِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَاَمَرَبِهَا اَنْ تُؤَدّٰى قَبْلَ خُرُوْجِ النَّاسِ اِلَى الصَّلٰوةِ۔ (متفق عليه)

(मुत्तफक अलैहि)

यानी "फर्ज कर दिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

सदका-ए-फितर को और वो एक साअ है, खजूर हो या जौ हो और यह हर एक मुसलमान पर है, गुलाम हो या आजाद मर्द हो या औरत, छोटा हो या बड़ा। और हुक्म किया है कि यह सदका-ए-ईद की नमाज को जाने से पहले अदा करें।''

अगरचे बाज उलमा ने निसाब की शर्त लगायी है। लेकिन किसी हदीस में निसाब की कैद नहीं है। बल्कि एक हदीस में मालदार और फकीर का लफ्ज मौजूद है। चुनांचे अबू दाऊद में अबू सुईर की रिवायत में है:

اَمَّا غَنِيُّكُمْ فَيُزَكِّيْهِ اللهُ وَاَمَّا فَقِيْرُكُمْ فَيَرُدُّ اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ اَكْثَرَ

مِمَّا اَعْطٰى۔ [ابوداؤد۔ کتاب الزکاۃ]

(अब दाऊद, किताबुज जकात)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''फितरा देने वाला मालदार है तो वो फितरे देने में कंजूसी ना करे और यूं सोचे कि मेरे गुनाह बख्शे जायेंगे, और अगर गरीब है तो भी फितरा देने में दिल तंग ना करे और अपने दिल को यूं समझाये कि गुनाह भी बख्शे जायेंगे और जितना भी दूंगा, अल्लाह तआला उसका अच्छा बदला देगा।''

हजरात!

अब ईदुल फितर करीब है। जिसके आने से पहले आप को गरीबों और मस्कीनों की सद्का-ए-फितर से इमदाद कर देना जरूरी है। ताकि वो भी खुशी खुशी ईद मना सकें। और वो ईद की जरूरियात पूरी कर सकें। अगर आप सदका-ए-फितर ईद की नमाज के बाद अदा करेंगे तो वो मामूली सदका होगा, सदका-ए-फितर ना होगा।

(1) मौजूदा हिसाब से अढ़ाई किलो है। क्योंकि एक हिजाजी साअ पांच रतल का होता है और एक रतल आधा किलो के बराबर है। और यह कि जिन्स देना बेहतर है और अगर उसकी कीमत लगाकर नकदी दे तब भी जायज है। (युगवी)

आखिर में फिर गौर कीजिए कि रमजान के खत्म होने से पहले आप को रहमत और दोजख से आजादी हासिल हुई है या नहीं। इसका जवाब खुद आप का नफ्स देगा। आप के आमाल देंगे। अल्लाह पाक सबको रमजान शरीफ, फिर ईदुल फितर मुबारक फरमायें। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 37

इस्लामी अजीमुश्शान तकरीब ईद सईद पर ईमान अफरोज खुत्बा

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ۔

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۙ﴿١٤﴾ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾ (الاعلى ٨٧)

"उस शख्स को यकीनन कामयाबी मिल गयी जिसने अपने आपको बिलकुल पाक साफ बना लिया और अपने रब का नाम याद किया और नमाज अदा की।"

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ۔

इस्लामी भाईयों!

आज ईदुल फितर है, पूरी इस्लामी दुनिया के लिए इन्तेहाई मुसर्रत और खुशी का दिन है। खुदापरस्ती वफा शिआरी के जाहिर करने का दिन है। इस्लामी भाईचारा और मुहब्बत की तजदीद का दिन है, गरीबों, मस्कीनों, बेवा और मोहताजों के साथ अहसान और सलूक का दिन है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को यह दिन मुबारक करे और जिन्दगी में बार बार ईदे सईद नसीब फरमाये। आप हजरात ने हजरत अली रजि. की तरफ मनसूब यह कौल बार बार सुना होगा:

لَیْسَ الْعِیْدُ لِمَنْ لَبِسَ الْجَدِیْدَ

اِنَّمَا الْعِیْدُ لِمَنْ خَافَ الْوَعِیْدَ

यानी "ईद उस शख्स के लिए नहीं है जिसने नये नये कपड़े पहन लिये, बल्कि ईद की खुशी सिर्फ उसी मोमिन मर्द और औरत के लिए है जिसके दिल में

कयामत का डर व खौफ पैदा हो गया।"

भाईयों!

यह किस कद्र खुशी का मकाम है कि इस्लामी त्यौहार भी एक अजीब रूहानी शान रखते हैं। दूसरे मजहबों के त्यौहारों का हाल यह है कि वो लोग उनमें नशाबाजी करते हैं, जुएबाजी में लगे होते हैं। खेल-तमाशों में वक्त गुजारते हैं। बहुत से लोग ऐसे मौके पर बहुत कुछ हैवानियत का इजहार करते हैं। मगर इस्लामी त्यौहारों की शान अजीबो-गरीब है। जिसको तसव्वुर में लाकर एक रूहानी खुशी पैदा होती है। मुसलमानों की ईद अपने खालिक-मालिक से वादा निभाने की अस्तवारी का दिन है। अल्लाह का खौफ दिल में मजबूत बैठाने का दिन है। आपसी मुहब्बत व साफ दिल के इजहार का दिन है। अल्लाह पाक की बड़ाई और बुजुर्गी बयान करने का दिन है, इसलिए आज बहुत बड़ी नेकी यह है कि अल्लाह पाक की बड़ाई व बुजुर्गी इन लफ्जों में बुलन्द आवाज के साथ बयान की जाये।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

"अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु अल्लाहु अकबरु व-लिल्लाहिल हम्द."

अल्लाह पाक ही हर किस्म की बड़ाई लायक है, वो अल्लाह बहुत ही बड़ा है, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह पाक बहुत बड़ा है और अल्लाह बहुत बड़ा है तमाम तारीफें खास कर उसी अकेले अल्लाह के लिए लायक है।

दुनिया के मुतकब्बिरीन, मगरूर इन्सानों के घमण्ड व गुरूर तोड़ने के लिए यह एक इंकलाबी नारा है जिसने कितने ही फिरऔन, हामान शद्दाद जैसे लोगों के घमण्ड व गुरूर के महलों को पाश-पाश कर दिया। यह इन्सानी मसावात व बराबरी का इजहार है और इस बात का एलान कि दुनिया में सब इन्सान एक जैसे हैं। बुजुर्गी और बड़ाई सिर्फ उस इन्सान के लिए है जिसने अपने खालिक व मालिक से अपना रिश्ता दुरुस्त कर लिया। उसके सिवा और किसी के लिए बड़ाई नहीं है।

हजरात!

खुत्बे में जो आयात आपने सुनी हैं, बाज मुफस्सिरीन ने उनको ईदुल फितर से मुताल्लिक करार दिया है। यहां आयत में पाकीजगी से मुराद सदका-ए-फितर देना है। जिसके अदा करने से रोजे गुनाहों और गलतियों से पाक व साफ हो जाते हैं और अल्लाह का नाम याद करने से मुराद तकबीरें हैं जो बुलन्द आवाज में पढ़ी जाती हैं जो पहले बयान की जा चुकी हैं। और नमाज से ईद की नमाज मुराद है। बहरहाल कुरआन की यह आयत आम है जिससे ईदुल फितर को भी मुराद लिया जा सकता है। आपको यहां मैदान में इसलिए बुलाया गया है कि आप सारे मर्द औरत उस दिन को याद करे जिस दिन एक मैदान में अल्लाह पाक के सामने हाजिर होना होगा। जहां कोई भाई-दोस्त काम नहीं आयेगा। इस हाजिरी से पहले उस अजीम हाजिरी को याद करो और आखिरत के लिए नेकियों का खजाना जमा करने का पक्का इरादा लेकर यहां से वापिस घरों को लौटना पहला मकसद है। अल्लाह पाक इस पाकीजा मकसद के तहत हम सबको ईदुल फितर मनाने की सआदत अता करे। आमीन!

अभी आपने जिस मुबारक महीने को खत्म किया है, उसके मुताल्लिक रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और अजीमुश्शान खुत्बा सुनाते हैं, जिससे अन्दाजा हो सकेगा कि रमजान शरीफ कितनी खूबियों का महीना था।

हजरत जाबिर रजि. रिवायत करते हैं कि एक रोज रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमजान शरीफ के फजाइल से मुताल्लिक यह मुबारक खुत्बा सुनाया।

أُعْطِيَتْ أُمَّتِيْ فِيْ شَهْرِ رَمَضَانَ خَمْسًا لَمْ يُعْطَهُنَّ نَبِيٌّ قَبْلِيْ: اَمَّا وَاحِدَةٌ فَإِنَّهُ إِذَا كَانَ اَوَّلُ لَيْلَةٍ مِّنْ شَهْرِ رَمَضَانَ يَنْظُرُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ إِلَيْهِمْ وَمَنْ نَظَرَ اللهُ إِلَيْهِ لَمْ يُعَذِّبْهُ اَبَدًا، وَاَمَّا الثَّانِيَةُ فَإِنَّ خُلُوْفَ اَفْوَاهِهِمْ حِيْنَ يُمْسُوْنَ اَطْيَبُ عِنْدَ اللهِ مِنْ رِيْحِ الْمِسْكِ: وَاَمَّا الثَّالِثَةُ فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ: وَاَمَّا الرَّابِعَةُ فَإِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَأْمُرُ جَنَّتَهُ فَيَقُوْلُ لَهَا اِسْتَعِدِّيْ وَتَزَيَّنِيْ لِعِبَادِيْ اَوْشَكَ اَنْ

يَسْتَرِيحُوا مِنْ تَعَبِ الدُّنْيَا إِلَى دَارِي وَكَرَامَتِي، وَأَمَّا الْخَامِسَةُ فَإِنَّهُ إِذَا كَانَ آخِرُ لَيْلَةٍ غَفَرَ اللهُ لَهُمْ جَمِيعًا۔ فَقَالَ رَجُلٌ مِّنَ الْقَوْمِ أَمَّا لَيْلَةُ الْقَدْرِ؟ فَقَالَ لَا أَلَمْ تَرَ إِلَى الْعُمَّالِ يَعْمَلُونَ فَإِذَا فَرَغُوا مِنْ أَعْمَالِهِمْ وُفُّوا أُجُورَهُمْ۔ رواه البيهقي واسناده مُقَارِبٌ [ترغيب وترهيب 92/2]

(रवाहुलबैहिकी ब इस्नादुहू मुकारिब तरगीब ब तरहीब 2/92)

यानी रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत को रमजान के महीने में पांच चीजें ऐसी मिली हैं कि पहले किसी नबी की उम्मत को नहीं मिली। एक तो यह कि जब रमजान मुबारक की पहली रात होती है तो अल्लाह तआला इस उम्मत की तरफ देखता है और जिसकी तरफ अल्लाह तआला नजर फरमाता है, उस पर अजाब नहीं फरमाता है। दूरी बात यह है कि शाम के वक्त रोजेदारों के मुंह की बू अल्लाह तआला के नजदीक मुश्क की खुशबू से भी बेहतर है। तीसरी बात यह कि हर एक रात और दिन में रोजेदारों के वास्ते फरिश्ते बख्शिश की दुआ करते हैं। चौथी बात यह है कि अल्लाह तआला जन्नत को हुक्म फरमाता है कि तू मेरे बन्दों के वास्ते तैयार और आरास्ता हो जा। करीब है कि मेरे बन्दे दुनिया की तकलीफों से निजात पाकर मेरी बख्शिश और रहमत में आराम और राहत हासिल करेंगे। पांचवी बात यह है कि जब रात का पिछला वक्त होता है तो अल्लाह पाक सबको बख्श देता है। एक शख्स ने अर्ज किया कि इससे लैलतुल कद्र मुराद होगी? फरमाया कि तुमने मजदूरों को नहीं देखा कि जब वो काम कर लेते हैं तो मजदूरी मिल जाती है। यानी दिन को रोजा रखा और रात को कुछ कुरआन और तरावीह वगैरह पढ़ी तो उसी वक्त अज्रो सवाब मिलना चाहिए। लैलतुल कद्र का इन्तजार क्यों किया जाये? पस यह बख्शिश हर रात को होती है। रोजेदारों के वास्ते रमजान मुबारक का महीना बड़ी खैर व बरकत का जमाना था और आज उनको खुशी और सुर्खुरोई है और रोजा छोड़ने वालों को बड़ी हसरत और नदामत का दिन है। क्योंकि वो बड़ी खैर और रहमत से महरूम और बेनसीब रह गये।

बिरादराने इस्लाम व ख्वातिने मिल्लत!

आज आप यहां दुनिया में जश्न मना रहे हैं और अल्लाह रब्बुल इज्जत के

यहां आलमे बाला में जश्न मनाया जा रहा है। इस बारे में सच्चों के सच्चे जनाब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और अजीमुश्शान खुत्बा आपको सुनाया जा रहा है।

अल्लाह पाक अमल की सआदत अता फरमायें और हम को उन खुशखबरियों का मिस्दाक बनायें जो खुत्बे में ब-जुबाने रिसालत मय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पेश की गयी हैं। हजरत अनस रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

فَإِذَا كَانَ يَوْمُ عِيْدِهِمْ يَعْنِيْ يَوْمَ فِطْرِهِمْ بَاهٰى بِهِمْ مَلَآئِكَةً فَقَالَ يَا مَلَآئِكَتِيْ مَا جَزَآءُ اَجِيْرٍ وَّفّٰى عَمَلَهٗ قَالُوْا رَبَّنَا جَزَاؤُهٗ اَنْ يُّوَفّٰى اَجْرَهٗ قَالَ يَا مَلَآئِكَتِيْ عَبِيْدِيْ وَاِمَائِيْ قَضُوْا فَرِيْضَتِيْ عَلَيْهِمْ ثُمَّ خَرَجُوْا يَعُجُّوْنَ اِلَى الدُّعَآءِ وَعِزَّتِيْ وَجَلَالِيْ وَ كَرَمِيْ وَعُلُوِّيْ وَارْتِفَاعِ مَكَانِيْ لَاُجِيْبَنَّهُمْ فَيَقُوْلُ ارْجِعُوْا قَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ وَبَدَّلْتُ سَيِّئَاتِكُمْ حَسَنَاتٍ۔ (1)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जब रोजेदार की ईद का दिन होता है तो अल्लाह तआला फरिश्तों में उनकी बड़ाई बयान करता है और फरमाता है। इसका बदला यह है कि इसकी मजदूरी दी जाये। अल्लाह पाक फरमाता है कि ऐ मेरे फरिश्तो! मेरे गुलामों और लौण्डियों ने वो फर्ज अदा कर दिया जो मैंने उन पर फर्ज किया था। फिर अब मेरा नाम लेते हुए यानी तकबीर कहते हुए और मुझ से दुआ करते हुए वो नमाज के वास्ते निकले हैं, इसलिए कसम है मुझको अपनी इज्जत की, कसम है मुझको अपने जलाल की, कसम है मुझको अपनी बख्शिश की कसम है मुझको अपनी बुजुर्गी की और बुलन्द मर्तबे की, मैं उनकी दुआओं को जरूर कबूल करूंगा। फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐ मेरे बन्दो! मैंने तुम को बख्श दिया। और तुम्हारे गुनाह बख्श दिये और तुम्हारी खताओं को नेकियों से बदल दिया।

हजरत इब्ने अब्बास रजि. ने इस आयत :

(1) यह जईफ रिवायत है। (अलअशरी)

يُرِيۡدُ اللّٰهُ بِكُمُ الۡيُسۡرَ وَلَا يُرِيۡدُ بِكُمُ الۡعُسۡرَ وَلِتُكۡمِلُوا الۡعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰٮكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۱۸۵﴾ (اَلْبَقَرَة ٢)

(सूरह अलबकराः 185)
के तहत फरमाया है कि मुसलमानों पर हक है कि जिस वक्त ईद का चांद देखें, अल्लाह की बड़ाईयों का बयान करें, यानी तकबीर कहते रहें, जब तक कि ईद की नमाज हो। तकबीर कहना सुन्नत है और तकबीर में चाहे यही कहा करें:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

चाहे यूं कहें:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا۔

चांद देखने के सिलसिले में ईद के लिए दो मुसलमानों की गवाही काफी है। अगर बादल हो तो पूरे तीस रोजे रखना जरूरी हैं। रमजान के शुरू में एक मुसलमान की गवाही पर भी रोजा रखा जा सकता है। मगर शक के दिन और इस्तिकबाली रोजा रखना मना है।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है:

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهٗ كَانَ يَغْدُوْ اِلَى الْمُصَلّٰى يَوْمَ الْفِطْرِ اِذَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ فَيُكَبِّرُ حَتّٰى يَأْتِيَ الْمُصَلّٰى ثُمَّ يُكَبِّرُ بِالْمُصَلّٰى حَتّٰى اِذَا جَلَسَ الْاِمَامُ تَرَكَ التَّكْبِيْرَ۔

यानी "हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ईद की नमाज के वास्ते सूरज निकलते ही इदगाह को जाया करते थे और रास्ते में भी तकबीर कहते रहते थे। यहां तक कि जब इमाम खुत्बा शुरू करता तब रूकते।"

इस रिवायत से मालूम हुआ कि ईद की नमाज सवेरे इशराक के वक्त पढ़नी

चाहिए और तकबीर आवाज के साथ रास्ते में भी कहनी चाहिए और ईदगाह में भी जब तक नमाज शुरू ना हो, चाहे ईदुल अज्हा हो या ईदुल फित्र हो, तकबीरों का सिलसिला बराबर जारी रहना चाहिए। हजरत बुरैदा रजि. से रिवायत है।

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَا يَخْرُجُ يَوْمَ الْفِطْرِ حَتّٰى يَطْعَمَ وَلَا يَطْعَمُ يَوْمَ الْاَضْحٰى حَتّٰى يُصَلِّيَ۔ (رواه الترمذی وغيرهم) (1)

(रवाहु तिर्मिजी व गैरुहुम) (1)

यानी ''आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईदुल फित्र में नमाज से पहले कुछ खाते थे और बकराईद को जब तक नमाज ना पढ़ लेते थे, कुछ ना खाते थे।''

और सुनिये:

عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا خَرَجَ اِلَى الْعِيْدَيْنِ يَرْجِعُ فِي غَيْرِ الطَّرِيْقِ الَّذِيْ خَرَجَ فِيْهِ (رواه احمد وغيرهم) [احمد بخاری۔ الجمعة۔ مقارب المعنی ترمذی کتاب الجمعة۔ ابن ماجه اقامة الصلاة والسنة]

(रवाहु अहमद व गैरुहुम) (अहमद, बुखारी, जुमुआ, मुकारिबुल मअना तिर्मिजी किताबुल जुमुआ, इब्ने माजा, इकामतुल सलाह व सुन्नाह)

(1) तिर्मिजी, अलजुमुअह 479, मिश्कात 1/452 ह. 1440 व फीहि अयजन रवाहुद दारमी। कालल अलबानी: कालत तिर्मिजी हदीस गरीब, कुलतुः वइसनादुहू सहीह व रिजालुहू सिकात मअरुफू-न गैर सवाब बिन उतबा व कद रवा अन्हु, जमाअत, व वस्सकहू गैर वाहिद मिनल उम्मति फला मुबर्रि-र लित्तवक्कुफ अन कुबूलि हदीसिही (अलअसरी)

यानी ''नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रास्ते से ईद की नमाज को जाते थे और दूसरे रास्ते से वापिस आते।''

और ईदैन की नमाज खुत्बे से पहले सुन्नत है, जैसाकि इस हदीस में।

كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَاَبُوْ بَكْرٍ وَعُمَرُ يُصَلُّوْنَ الْعِيْدَيْنِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ.

(رواه الجماعة الا ابا داؤد) [مسلم. صلاة العيدين بخاری. الجمعة. ترمذی. الجمعة. نسائی. صلاة العيدين ابن ماجه]

(रवाहुल जमाअह इल्ला अबू दाऊद) (मुस्लिम, सलातुल ईदैन, बुखारी, अलजुमुअह, तिर्मिजी, अलजुमुअह, निसाई, सलातुल ईदयनि, इब्ने माजह)

यानी ''नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू बकर और उमर रजि. दोनों ईद की नमाज खुत्बे से पहले पढ़ा करते थे।''

और दोनों ईदों की नमाज में तकबीरात की सही और ठीक रिवायत यह है कि बारह तकबीरें हैं जैसाकि तिर्मिजी में जद कसीर की रिवायत में है।

اِنَّ النَّبِیَّ ﷺ كَبَّرَ فِی الْعِيْدَيْنِ فِی الْاُوْلٰی سَبْعًا قَبْلَ الْقِرَاءَةِ وَفِی الْاٰخِرِ خَمْسًا قَبْلَ الْقِرَاءَةِ.

(तिर्मिजी, अलजमअ, इब्ने माजअ, अकामतुल सलात वल-सुन्ना)

यानी ''नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों ईदों की नमाज इस तरह पढ़ी कि पहली रकअत में तकबीरे तहरीमा के अलावा सात बार अल्लाहु अकबर कहा, फिर किराअत शुरू की और दूसरी रकअत में पांच बार अल्लाहु अकबर कहा, फिर किराअत पढ़ी।''

तिर्मिजी ने कहा है कि तकबीरों के बारे में सब रिवायतों से अफजल और बेहतर यह रिवायत जद कसीर की है। पस पहली रकअत में तकबीरे तहरीमा के अलावा सात तकबीरें और दूसरी रकअत में पांच तकबीरें हैं।

और ईदैन की नमाज के वास्ते अजान या तकबीर नहीं है। और ईदैन की नमाज से पहले या पीछे ईदगाह में कोई नफ्ल नमाज ना पढ़ी जाये।

और अगर ईद और जुमा एक दिन जमा हो जाये तो उस रोज जुमा जरूरी नहीं रहता, चाहे पढ़े चाहे ना पढ़े। नमाज के बाद खुत्बा सुनना चाहिए। फिर दुआओं में शरीक होना चाहिए। इसके बाद ''तकब्बलल्लाहु मिन्ना व-मिनका''

कहते हुए एक दूसरे को ईद मुबारक पेश करें।

बुजुर्गों, दोस्तों, भाईयों और बहनों!

ईदुल फित्र का यह इज्तिमाअ मुबारक आपके लिए बहुत से पैगाम दे रहा है। खास तौर पर नौजवानाने इस्लाम को यह मुसलमानों की गुजिश्ता शानो शौकत याद दिलाकर आइन्दा के लिए इज्जत का रास्ता दिखला रहा है। इस्लाम और मुसलमानो की इज्जत व आबरू, व जाह, इकबाल, खुदापरस्ती, इस्लाम दोस्ती आपस के मिलाप के अन्दर है। अगर मुसलमान आज फिर उन नुस्खों को आजमाना शुरू करें तो वो बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं।

इस्लाम दोस्ती का मतलब अमली जिन्दगी है जो तौहीद व सुन्नत पर मुश्तमिल है। कलमा-ए-तौहीद ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' में यही सबक छिपा हुआ है। मुसलमानों पर आज किस कद्र गलत रस्मों और अवहाम ने डेरा जमा लिया है, जिनकी तफसील बहुत ज्यादा है।

जरूरत है कि नौजवानाने इस्लाम और हमदर्दाने मिल्लत कमर बांधकर खड़े हों और गलत रस्मों रिवाज और बिदआत को बंद करके मुसलमानों को सेहतमंद जिन्दगी के लिए रहनुमाई फरमायें आपस का इत्तेफाक आज कितना जरूरी है। यह आप खुद समझ सकते हैं। आज के जमहूरी (लोकतंत्र) दौर इसकी आजादी के माहौल में अगर आप मुत्तफिक हो जायें तो आपकी वो परेशानियां दूर हो सकती हैं, जिनको आप 1947 के बाद से आज तक बर्दाश्त कर रहे हैं।

इस मौके पर मैं अपनी मुहतरम ख्वातिने इस्लाम से भी अर्ज करूंगा कि अल्लाह ने आपके लिए हजरत खदीजतुल कुबरा, हजरत आइशा, हजरत मैमूना, हजरत फातिमा जैसी ख्वातीने इस्लाम रजि. को अमल का नमूना बनाया है। आपका सुधार मिल्लत का सुधार है। आप घरों की मलिका हैं, आपका फर्ज है कि आप घरों में अदब के साथ रहकर अपनी औलाद की इस्लामी तरबियत करें, बच्चों को शुरू से ही नेक रास्ते पर डालें। नमाज की बाकायदा पाबन्दी करायें, पाकी-नापाकी के अमली मसाइल बतायें। कुरआने मजीद व हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पढ़ने का शौक पैदा करें। अगर इस्लामी मां-बहिने अपने फर्ज को अदा करें तो आज मिल्लते इस्लामिया का सुधार बहुत आसानी से हो सकता है।

दोस्तों!

आओ इस अजीम तकरीब पर अल्लाह पाक को हाजिर नाजिर जानकर उसके सामने अपनी झोलियाँ फैलायें और जो भी कुछ मांगना है, आज अल्लाह से दिल खोलकर मांग लें। वो जरूर सुनेगा और हमारी मुरादों को जरूर पूरा करेगा।

या अल्लाह या रहमान, या रहीम! हम तेरे गुनहगार बन्दे और बन्दियां इस जमीन पर और इस आसमान के नीचे तुझ को "वहदहू ला शरीका लहू" जानकर तेरे रसूल बरहक अहमद मुजतबा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने ईमान व यकीन का इजहार करते हुए तेरे सामने दस्त सवाल दराज करते हैं। हमको यहां से मायूस ना लौटाना। हमारी दुआयें कबूल फरमां, आज जिन परेशानियों में हम फंसे हुए हैं, उन सबको दूर कर दे, हमको अमनो अमान की जिन्दगी अता फरमा। सारी इस्लामिया मिल्लत को इज्जत अता फरमा। बैतुल मुकद्दस को यहूदियों के कब्जे से आजादी अता फरमा। हमको आपसी इत्तेफाक अता फरमा, हमारी सारी परेशानियों को दूर कर दे, बीमारों को शिफा बख्श दे, कर्जदारों को कर्ज से निजात दिला और बैरोजगारों को हलाल रोजगार अता फरमा। हम सबको पक्का तौहीद वाले, सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अमल करने वाले बना दे। हमें पांचो वक्त की नमाज अदा करने की तौफीक अता फरमा।

मुहतरम भाईयों, बहनों!

ईदुल फित्र के बाद शव्वाल में छः रोजे रखने सुन्नत हैं, उनको "शश ईद" के रोजे कहते हैं। हदीस शरीफ में आया है कि जो शख्स ईदुल फित्र के बाद लगातार यह छः रोजे रख ले, उसको इतना सवाब मिलेगा कि गोया वो साल भर रोजे रखता रहा, क्योंकि रमजान शरीफ को मिलाकर यह 36 दिन बन जाते हैं और हर नेकी का दस गुना सवाब होने से इसकी 360 नेकियां हो जाती हैं। क्योंकि साल अक्सर 360 दिनों का होता है। लिहाजा मुबारक हैं वो बहन-भाई जो ईदुल फित्र के बाद लगातार यह रोजे रखकर साल भर के रोजों का सवाब हासिल करें। (1)

اَللّٰهُمَّ انْصُرِ الْاِسْلَامَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاخْذُلِ الْكَفَرَةَ وَالْفَجَرَةَ

وَالْمُبْتَدِعِيْنَ وَلَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ وَاجْعَلْنَا مِنَ الشّٰاكِرِيْنَ

وَالصَّابِرِيْنَ وَاغْفِرْلَنَا اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

(1) शव्वाल के रोजे लगातार रखने बेहतर है, जरूरी नहीं बल्कि जरूरी यह है कि माहे शव्वाल में रखें जायें चाहे अलग-अलग क्यों ना हो, क्योंकि मुतफर्रिक तौर पर रखना जायज है। किसी सही हदीस में लगातार रखने की ताकीद नहीं है। लिहाजा सवाब में फर्क नहीं आयेगा। इन्शा अल्लाह। युगवी

खुत्बा नम्बर 38

जकात व सदकात के फजाइल व मसाइल के बारे में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۗ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾ (التوبة ٩)

(सूरह अल-तौबा: 34)

"बेशक जो लोग सोना और चांदी का खजाना बना बनाकर जमीन में गाड़ते हैं और उसे अल्लाह के रास्ते में (उसके दीन की तरक्की के लिए) खर्च नहीं करते (ना हकदारों को देते हैं) उनको दर्दनाक अजाब की खुशखबरी सुना दो। कयामत के दिन वो सोना और चांदी गर्म करके उनके चेहरों और उनकी करवटों पर और उनकी कमरों पर उससे दाग लगाये जायेंगे और उनसे कहा जायेगा कि लो चखो। यह वो दौलत है जिनको तुम अपने लिए जमीन में गाड़-गाड़ कर रखा करते थे। पस आज अपने खजाने का मजा सख्त तरीन अजाब की शक्ल में चखो।"

अल्लाह तआला की तारीफ और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हजार-हजार दरूद सलाम के बाद।

बिरादराने इस्लाम!

आज का खुत्बा जकात व सदकात पर है। जकात इस्लाम का चौथा अजीमुश्शान रुक्न है। अल्लाह तआला ने कुरआने पाक में जहां भी नमाज का

हुक्म दिया है, साथ ही जकात अदा करने की ताकीद भी फरमायी है। और ऐसी कुरआने मजीद में बयासी आयतें हैं। इसलिए जकात की फरजियत का इनकार करने वाला काफिर है। जकात अदा ना करने वाले की वो सजा है जो आपने खुत्बे की आयत में सुनी है। इसके बारे में हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक मुबारक खुत्बा आपको सुनाते हैं। अल्लाह पाक हर मुसलमान को याद रखने और अमल करने की सआदत अता करे। आमीन!

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنْ آتَاهُ اللّٰهُ مَالًا فَلَمْ یُؤَدِّ زَکٰوتَهٗ مُثِّلَ لَهٗ مَا لَهٗ یَوْمَ الْقِیَامَةِ شُجَاعًا اَقْرَعَ لَهٗ زَبِیْبَتَانِ یُطَوَّقُهٗ یَوْمَ الْقِیَامَةِ ثُمَّ یَاْخُذُ بِلِهْزِمَتَیْهِ یَعْنِیْ شِدْقَیْهِ ثُمَّ یَقُوْلُ اَنَا مَالُكَ اَنَا کَنْزُكَ ثُمَّ تَلَا (وَلَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ بِمَا آتَاهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَیْرًا لَّهُمْ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ سَیُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ یَوْمَ الْقِیَامَةِ۔ الآیة۔ [بخاری۔ الزکوٰة]

(बुखारी, अज-जकात)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस शख्स को अल्लाह पाक ने माल दिया है और वो उसकी जकात नहीं देता तो वो माल कयामत के दिन बहुत जहरीला और बुरी शक्ल का सांप बनाया जायेगा। फिर वो सांप उस शख्स के गले में फंदे की तरह लिपट कर उसकी बाछों को काटेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ, मैं तेरा खजाना हूँ, मेरा मजा चख। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह (मजकूरा) आयत पढ़ी, जिसका तर्जुमा यह है कि हरगिज गुमान ना करें वो लोग जो अल्लाह के दिये हुए माल में कंजूसी करते हैं कि यह कंजूसी उनके हक में अच्छी है। बल्कि कंजूसी उनके हक में बुरी चीज है कि वो माल जिसके हक में कंजूसी करते हैं, उनके गले का फंदा बनाया जायेगा।

इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि माल की मुहब्बत में वो आखिरत को ना भूलें और जहां तक हो सके कयामत की जिल्लत और रुसवाई से बचने की कोशिश करें और जिस वक्त शैतान यह वसवसा डाले कि इस माल में अगर मैं खर्च करूंगा तो मोहताज और लाचार हो जाऊंगा। अपने दिल को यूं समझा दे कि

यह माल हमेशा मेरे पास नहीं रहने वाला, बहरहाल या तो मैं इसको छोड़कर चला जाऊंगा या यह मुझको छोड़कर चला जायेगा। फिर इस बर्बाद होने वाले और बे-हकीकत माल को उस चीज के हवाले करने में खर्च क्यों ना करूं, जिसको कभी खत्म नहीं होना और हमेशा फायदा और तरक्की होती चली जायेगी।

और उन आयतों और हदीसों में गौर करें जिन में जकात और खैरात के लिए बे-इन्तहा और बेशुमार अज्र और दर्जे मजकूर हैं। सूरह बकरा के छत्तीसवें रुकूअ में है:

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ (البقرة ٢)

(सूरह अल-बकरहः 261)

यानी अल्लाह तआला ने फरमाया कि "मिसाल उन लोगों की जो अल्लाह की राह में माल खर्च करते हैं, उस दाने की तरह हैं जिससे सात बालें उगें और हर बाल में सौ दाने हैं और अल्लाह तआला बढ़ाता और ज्यादा करता है। जिसके वास्ते चाहे। अल्लाह पाक फराखी देने वाला है, सबकुछ जानता है।"

हजरत अबू हुरैरा रजि. की रिवायत में आया है :

مَنْ تَصَدَّقَ بِعِدْلِ تَمْرَةٍ مِّنْ كَسْبٍ وَلَا يَقْبَلُ اللّٰهُ اِلَّا الطَّيِّبَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتَقَبَّلُهَا بِيَمِيْنِهٖ ثُمَّ يُرَبِّيْهَا لِصَاحِبِهٖ كَمَا يُرَبِّيْ اَحَدُكُمْ فُلُوَّهٗ حَتّٰى تَكُوْنَ مِثْلَ الْجَبَلِ۔ (بخاری)

(सही बुखारी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जिस शख्स ने एक खजूर के बराबर चीज अल्लाह पाक की राह में खर्च की और अल्लाह तआला हलाल ही कबूल करता है। पस तहकीक उस खैरात को अल्लाह तआला इज्जत से कबूल फरमाता है। उसको उस शख्स के वास्ते पलता है। जिस तरह कोई अपने बिछड़े (खोए हुए) को पा लेता है। यहां तक कि वो खजूर की मिकदार खैरात बढ़ते-बढ़ते पहाड़ के बराबर हो जाती है।"

यानी कयामत के दिन जब नेकी-बदी की तोल होगी तो वो खजूर की खैरात

की मिकदार पहाड़ के बराबर करके नेकियों के पल्ले में रखी जायेगी।

और तिर्मिजी किताबुल जकात में हजरत अनस रजि. से रिवायत है:

إِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ وَتَدْفَعُ مِيتَةَ السُّوءِ۔ [ترمذی۔ الزکوٰۃ]

(तिर्मिजी, अल-जकात)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "तहकीक सदका बुझाता है यानी ठण्डा करता है परवरदिगार के गुस्से को और बचाता है मौत की सख्ती और बुराई से।"

हजरात!

बाज आदमी ऐसे हैं कि साल भर तक तमाम खैर के कामों में सिर्फ इसी कद्र खर्च करते हैं जिस कद्र जकात का हिसाब हो, इससे ज्यादा या और किसी चीज में से खैरात नहीं करते और यूं समझते हैं कि बस जकात ही वाजिब है और कुछ वाजिब नहीं है। इसलिए यह बात गलत है, क्योंकि जकात के अलावा और भी सब किस्म के मालो अस्बाब में गरीबों और पड़ोसियों वगैरह का हक है।

शरह तफसीर जामेअ अल-बयान में आयत "लइसल बिर-र अन तुवल्लु वुजू-ह-कुम" के तहत में इब्ने अबी हातिम की रिवायत है। "फिल मालि हक्कु सिवा जकाति"

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "माल में जकात के अलावा और भी हक हैं।"

यानी मसलन किसी के यहां गाये, भैंस वगैरह दूध के जानवर हैं या सवारी और खेती वगैरह के जानवर या खाने पकाने वगैरह के बर्तन या पेशा और खेती वगैरह का असबाब व औजार-बर्तन वगैरह हों तो कभी-कभी जरूरत व मौके के मुताबिक उन सब चीजों से भी गरीबों और अपने हमसायों वगैरह को फायदा पहुंचाना ऐसा ही वाजिब है कि अगर यह उसको अदा ना करेगा तो उसके वास्ते भी कयामत में पकड़ होगी और बाज लोग जकात और खैरात तो सब तरह की करते हैं लेकिन जिन को देते हैं, उनको अहसान जताते हैं। इसलिए इससे सवाब बिलकुल जाता रहता है। जैसाकि सूरह बकरह के छब्बीसवें रुकूअ में है:

لَا تُبْطِلُوا صَدَقٰتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذٰى (البقرة ۲)

(अल-बकरह 264)

यानी अल्लाह तआला ने फरमाया कि "तुम अपनी खैरात को अहसान जतलाकर और गरीब व मिस्कीन जिसको तुमने खैरात दी है, उसको तकलीफ पहुंचाकर बर्बाद ना करो।"

और इब्ने माजह में अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है:

إِذَا أَعْطَيْتُمُ الزَّكٰوةَ فَلَا تَنْسَوْا ثَوَابَهَا أَنْ تَقُوْلُوْا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا مَغْنَمًا [وَلَا تَجْعَلْهَا مَغْرَمًا]۔ [ابن ماجه۔ الزكوٰة]

(इब्ने माजह, अल-जकात)

यानी रसलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम जकात वगैरह दिया करो तो उसके सवाब को मत भूलो। यानी देते वक्त यह दुआ करो कि या अल्लाह इसको गनीमत कर और मत कर इसको तावान।

चूंकि माल का खर्च करना नफ्स पर मुश्किल है, अगर जुबान से भी कुछ ना कहें तो शायद दिल में कुछ वसवसा आये, इस वास्ते आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह दुआ सिखायी कि अल्लाह तआला से मदद मांगो कि वो ऐसी मदद करे जो तुम्हारे बहुत मजबूत और दीन के काम में खर्च करना भारी ना हो। बल्कि इसमें अपना फायदा और नफा मालूम हो और बाज लोग तो उम्र भर दौलत को गिन गिन कर जमीन में गाड़कर रखते हैं। जब मरने लगते हैं तो उस वक्त वारिसों से कहते हैं कि इतना वहां देना और इतना वहां। सौ यह भी खूब नहीं है, बल्कि खर्च करने की खूबी यह है कि तंदुरुस्ती और सेहत की हालत में खर्च करता रहे।

शरह जामेअ अलबयान में आयत "व आतल मला अला हुब्बिही" के तहत आया है कि

أَنْ تُعْطِيَهُ وَأَنْتَ صَحِيْحٌ تَأْمُلُ الْعَيْشَ وَتَخْشَى الْفَقْرَ۔

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह पाक की मुहब्बत में खर्च करना तो यह है कि तू उस वक्त खर्च कर जब कि तन्दुरुस्ती और सही सलामत और जिन्दगानी की उम्मीद और गरीबी का खौफ रखता हो।

और अबू सईद रजि. से रिवायत है:

لَأَنْ يَتَصَدَّقَ الْمَرْءُ فِيْ حَيَاتِهٖ بِدِرْهَمٍ خَيْرٌ لَّهٗ مِنْ أَنْ يَّتَصَدَّقَ بِمِائَةٍ عِنْدَ مَوْتِهٖ۔ [ابوداؤد۔ الوصايا]

(अबू दाउद, अल-वसाया)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि 'अगर आदमी अपनी सेहत व सलामती के वक्त एक दरहम अल्लाह पाक की राह में खर्च कर दे तो मरते दम के सौ दरहम खर्च करने से बेहतर है।''

बिरादराने इस्लाम!

जकात अदा करने का मसला यह है कि जिसके पास साढ़े बावन तोले चांदी घर में रखी हो और उस पर पूरा एक साल घर में रखे हुए गुजर गया हो, उस पर एक रुपये पांच आने भर चांदी निकालना फर्ज है। रुपये का भी हिसाब यही है। नोट भी चांदी ही के हुक्म में हैं। चांदी का यही निसाब है। इससे कम में जकात फर्ज नहीं है। अगर निसाब में साल के अन्दर कमी होती रहेगी तो उस तादाद पर जकात वाजिब ना होगी। फिर जिस कद्र जमा ज्यादा, सीधा हिसाब यह है कि ढाई रुपये सैकड़े के हिसाब से निकालें। सोने के बारे में निसाब यह है कि जिसके पास साढ़े सात तोले सोना हो, वह उसमें सवा माशा सोने की कीमत जो कुछ उस वक्त के भाव के मुताबिक हो, देना फर्ज है। चांदी का निसाब अलग है और सोने का अलग है। दोनों को मिलाकर निसाब पूरा करने का सबूत नहीं है। जो खेती बरसात से तैयार हो, उसमें दसवां हिस्सा जकात में दें। मसलन बीस मन गल्ला पैदा हो तो उसमें से दो मन गल्ला जकात में दें और जो कुएं के पानी से तैयार हो, उसमें बीसवां हिस्सा जकात का फर्ज है। मसलन बीस मन गल्ला पैदा हो तो मन भर गल्ला जकात में देना चाहिए। सोने चांदी और गल्ले के अलावा तिजारती जानवरों में भी जकात है और तिजारत के माल में भी। लिहाजा ऐसे हजरात का फर्ज है कि इन मसाइलों की तहकीक उलमा से कर लें और अमल करें या बड़ी किताबों को पढ़ लें।

प्यारे भाईयों।

जकात के मसारिफ यानी वो मकामात जहां यह माल खर्च हो, अल्लाह पाक ने कुरआने मजीद में खुद बतला दिये हैं जो आठ हैं। जैसाकि नीचे दी गई आयत में है:

إِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ (التوبة ٩)

(सूरह तौबा: 60)

"जकात का माल (1) फकीरों के लिए है, (2) मिस्कीनों के लिए है (3) और तहीसल दारूने जकात के लिए जिनको बैतुल माल से तनख्वाह दी जायेगी (4) और उन नौ-मुस्लिम लोगों के लिए जिनकी इस्लाम में हिम्मत अफजाई मंजूर हो (5) और गुलामों को आजादी दिलाने के लिए (6) और ऐसे कर्जदारों का कर्ज चुकाने के लिए जो कर्ज ना उतार सकते हों (7) और अल्लाह के दीन की तरक्की व इशाअत के लिए (8) मुसाफिरों के लिए है।"

अगर इस किस्म के कुल लोग जमा हों तो अगर उनमें से किसी शख्स को भी देंगे तो जकात अदा हो जायेगी। जकात के वसूल करने वाले और मुसाफिर और गाजी अगरचे अपने घरों में मालदार हों तब भी उनको जकात लेना जायज है। बेहतर है कि औरत अपने माल से मोहताज खाविन्द और बच्चों को सदका दे और उनको लेना भी दुरुस्त है। मगर खाविन्द अपनी बीवी और नाबालिग बच्चों को नहीं दे सकता। इस वास्ते कि उनका पालन-पोषण उस पर फर्ज है और जिस को मोहताज और गरीब और जरूरत मन्द दिखा दें। जकात अदा हो जायेगी, भीख मांगने वाले लोग मिस्कीन नहीं, तोंगर, गनी, कवी, रोजगार की जरूरत वाले को जकात ना देना चाहिए।

अगर पैशे वाला आदमी तंदुरुस्त और गरीब और लाचार हो तो उसको जकात देना दुरुस्त है। गनी वो है जो साहिबे निसाब हो, और फ़कीर वो है जो साहिबे निसाब ना हो, मिस्कीन वो है जिसके पास कुछ ना हो। जकात का माल मुसलमान गरीबों को देना चाहिए। काफिरों को देना जाइज नहीं है। हाँ मगर फासिक मुसलमान को देना जायज है। गैर मुस्तहक को जानकर जकात देगा तो जकात अदा ना होगी। दोबारा देनी पड़ेगी और अगर उस शख्स को जो जकात का हकदार नहीं है, बगैर जाने दे दी तो कुछ हर्ज नहीं।

हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि औरतों को खाविन्द के माल से बगैर उनकी इजाजत के खर्च ना करना चाहिए। अगर खाविन्द

की इजाजत से खर्च करेंगी तो दोनों को सवाब होगा। बशर्ते कि फिजूल खर्ची ना हो। जकात में से जो माल दे दिया, फिर वापिस उसको खरीदना सख्त मना है। बल्कि कुत्ते की तरह उल्टी करके चाट लेना है। जकात का दिया हुआ माल अगर वरसा में आवे तो लेना दुरुस्त है।

बिरादराने इस्लाम!

आखिर में नाहक सवाल करने के मुताल्लिक रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह खुत्बा सुनने के काबिल है।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنْ سَاَلَ النَّاسَ تَكَثُّرًا فَاِنَّهٗ يَسْاَلُ جَمْرًا فَلْيَسْتَقِلَّ اَوْلِيَسْتَكْثِرْ.

(مشکوۃ)[مسلم۔الزکوٰۃ ابن ماجه]

(मिश्कात) (मुस्लिम अज्कात, इब्ने माजा)

"हजरत अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने लोगों से माल जमा करने के वास्ते सवाल किया तो गोया वो शख्स आग के अंगारे मांगता है, चाहे उनको ज्यादा जमा करे या कम जमा करे।"

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है "सिर्फ तीन किस्म के आदमियों को सवाल करना दुरुस्त है, एक तो वो शख्स कि जो किसी नेक काम में खर्च करने से कर्जदार हो गया हो, दूसरे वो शख्स जिसका माल किसी आफत से हलाक हो गया और तीसरे वो शख्स कि जिसकी फाकाकशी (तंगहाली, भूखमरी) पर तीन आदमियों ने गवाही दीं और जो कोई दौलत जमा करने और माल बढ़ाने को मांगेगा उसके चेहरे पर कयामत के दिन गोश्त ना होगा।"

फरमाया कि सवाल करने वाले की इज्जत नहीं रहती, उसको चाहिए कि जंगल से लकड़ियां लाकर बेचे और मजदूरी करके गुजारा करे।

फरमाया बगैर मांगे जो कुछ मिले, ले लो उस में बरकत होती है और जो नफ्स के लालच से मांगता है, उसमें बरकत नहीं होती।

हदिया कबूल करना और बदले में हदिया देना साबित है।

दफन किया हुआ माल जो किसी को मिले तो उसमें से पांचवा हिस्सा

जकात का है। मसलन सौ रुपये का माल है तो जकात के बीस रुपये होंगे, कान की आमदनी में चालीसवां हिस्सा जकात का है।

बिरादराने इस्लाम!

जकात के बारे में यह चन्द बातें आपको बतलायी गयी हैं। ज्यादा मालूमात के लिए कुतुबे अहादीस वगैरह का मुताअला जरूरी है। इस्लाम की हिफाजत वबका के लिए जकात माली हैसियत से बड़ी अहम चीज है, जिसका ताल्लुक इस्लामी निजाम से है। बेहद अफसोस है कि आजकल इस्लाम गरीब है और कोई इस्लाम का सही निमाज चलाने वाला नहीं है। इसलिए इनफिरादी तौर पर देखभाल करके जकात निकालने और मुस्तहिक्कीन में तकसीम करने से अल्लाह तआला का फर्ज अदा हो जायेगा।

दुआ है कि अल्लाह तआला मुसलमानों को हकीकी निजामे इस्लाम कायम करने की तौफीक अता करे और मुसलमानों से अल्लाह अपने दीनी इस्लामी फराइजों पर पूरे तौर पर अदा कराये। जकात के अलावा वक्तन-फवक्तन गरीबों की इमदाद अतीया सदके के तौर पर खैरात करने की भी हिम्मत और इस हदीस को याद रखने की तौफीक दे, जिसमें आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है ''ऊपर का हाथ यानी देने वाला, नीचे का हाथ यानी लेने वाले के हाथ से बेहतर है।''

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ

وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللهَ لِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ

وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ۔ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 39

इस्लामी सूरत व सीरत के बयान में

أَمَّا بَعْدُ: أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ۔

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ إِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ (الأعراف ٧)

(सूरह आराफ: 31)

"ऐ आदम के बेटों! नमाज के वक्त अपनी सजावट का लिबास पहना करो और खाओ और पिओ और फिजूल खर्ची ना करो। अल्लाह फिजूल खर्ची करने वालों को दोस्त नहीं रखता है।"

सारी खूबियां, बड़ाईयां उस जात व आला सिफात के लिए जेबा हैं जो सारी कायनात का खालिक और मालिक है। जिसके एक लफ्जे कुन से बड़ी बड़ी चीजें वजूद में आती हैं और अपने मुकर्रर वक्त तक दुनिया में रहकर उसी के हुक्म से फिर वो आलमे अदम में चली जाती हैं। कुरआने मजीद का बयान है:

وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ۗ (بني اسرائيل ١٧)

"कायनात की कोई चीज ऐसी नहीं है जो अल्लाह तबारक व तआला की हम्दो सना में लगी हुई ना हो। मगर तुम उनकी तसबीह पढ़ने और हम्दो सना करने को समझ नहीं सकते हो।" (सूरह बनी इस्राईल: 44)

दरूद व सलाम उस बरगुजीदा सच्चों के सच्चे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जिन्होंने कायनात को सीधी राह दिखलाई और इस आलमे वजूद को सही मायनों में अपने पाकीजा अख्लाक और नेक तरीन हिदायतों के अनवार से चमकाया। अल्लाह पाक उन पर बे-शुमार दरूद व सलाम नाजिल फरमाये। आमीन!

बिरादराने इस्लाम!

इस्लाम से पहले अरब में बहुत सी खराबियों के साथ लिबास के बारे में भी कई गलत तस्सूरात कायम थे। बहुत से अरब जब हज को आते तो खाना कअबा का तवाफ बिलकुल नंगे होकर करते थे, उनका ख्याल था कि हमारे रोजमर्रा के लिबास गंदे होते हैं। लिहाजा उनमें तवाफ से बेहतर यह है कि नंगे होकर तवाफ किया जाये। अल्लाह पाक ने उनकी तरदीद में यह आयत नाजिल फरमायी और ताकीद के तौर पर यह हुक्म फरमाया कि नमाजों के वक्त जीनत का लिबास जरूर पहना करो। जीनत से मुराद यहां पाकीजा लिबास है। जिससे शरई तौर पर बदन को ढक सके। नमाज के अलावा भी मर्द औरत सब के लिए बकद्रे बदन के ढकने वाला लिबास पहनना वाजिब है।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक वअज में फरमाया था:

إِيَّاكُمْ وَالتَّعَرِّىْ فَإِنَّ مَعَكُمْ مَنْ لَّا يُفَارِقُكُمْ إِلَّا عِنْدَ الْغَائِطِ

وَحِيْنَ يُفْضِى الرَّجُلُ إِلَىٰ أَهْلِهٖ فَاسْتَحْيُوْهُمْ وَأَكْرِمُوْهُمْ [ترمذی۔ الادب]

(तिर्मिजी अल-अदब)

यानी ''मुसलमानों! खबरदार, नंगे मत रहना किसी हाल में भी, क्योंकि तुम्हारे साथ अल्लाह की एक ऐसी मखलूक हर वक्त रहती है जो तुमको नजर नहीं आती और वो अल्लाह के फरिश्ते हैं। वो तुमसे जुदा नहीं होते मगर कजाये हालत के वक्त और उस वक्त जब मर्द अपनी औरत से सोहबत (हमबिस्तरी) करता है। इन दो वक्तों के अलावा फरिश्ते हर वक्त तुम्हारे साथ हैं। पस उनसे शर्म किया करो और नंगे ना रहा करो।''

मर्दों के लिए कुर्ता, पाजामा, तहबन्द, टोपी, अमामा जीनत का लिबास है। पायजामा या तहबन्द के लिए जरूरी है कि वो टखनों से नीचा ना हो। तहबन्द टखनों से नीचे लटकाना तकब्बुर की निशानी है और जिस इन्सान के दिल में एक राई के दाने के बराबर तकब्बुर होगा, वो जन्नत की खुशबू भी नहीं पायेगा। मर्दों के लिए रेशमी लिबास पहनना और सोने की अंगूठी हराम है, औरतों का लिबास ऐसा होना चाहिए कि उनके जिस्म का हर हिस्सा छुप जाये। चेहरा और हाथों और कदमों के अलावा सारे जिस्म को छुपाना जरूरी है। यह मकसद लुंगी, पायजामा

या साड़ी, जिस चीज से भी हासिल हो जाये, जाइज है। जो औरतें बारीक लिबास पहनती हैं, जिनसे उनका जिस्म नजर आये, वो कयामत के दिन नंगी उठायी जायेंगी और उनका दोजख में बहुत ही खराब और बहुत ही बुरा ठिकाना होगा।

हजरात!

मर्दों की जीनत में दाढ़ी रखना और मूंछों का पस्त करना भी दाखिल है। दाढ़ी रखना तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुलिया मुबारक में है:

كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ كَثِيْرَ شَعْرِ اللِّحْيَةِ۔ (مسلم)

(मुस्लिम)

यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ी मुबारक बहुत घनी थी।''

एक खुत्बे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था:

اَمَرَنِیْ رَبِّیْ بِاِعْفَاءِ لِحْیَتِیْ وَقَصِّ شَوَارِبِیْ...... [تاریخ ابن جریر 91/3]

(तारीख इब्ने जरीर 3/91)

''मेरे रब ने मुझको हुक्म फरमाया है कि मैं अपनी दाढ़ी को बढ़ाऊं और मूंछों को पस्त करूं।''

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

اَحْفُوْا الشَّوَارِبَ وَاَعْفُوْا اللِّحٰی وَلَا تَشَبَّهُوْا بِالْيَهُوْدِ۔ [شرح معانی الآثار 333/2]

(शरह मआनी अल-आसार 2/333)

''मूंछों को खूब पस्त कराओ और दाढ़ी को बढ़ाओ और यहूदियों जैसी सूरत मत बनाओ।''

मालूम हुआ कि दाढ़ी का रखना और मूंछों का पस्त करना सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और इस्लामी तरीका और मर्दाना जीनत है जो लोग दाढ़ी मुण्डवाते या कतराते हैं, उनको गौर करना चाहिए कि वो सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ अमल कर रहे हैं, और जनानी सूरत बना रहे हैं, जिस पर अल्लाह की लानत है, काला खिजाब भी शरअन नाजाइज है। मेहन्दी का (इस्तेमाल) दुरुस्त है।

कुरआने मजीद में कौमे लूत का जिक्र यूं हैः

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ط (الانبياء ۲۱)

(सूरह अम्बियाः 74)

यानी "हमने लूत को इल्म व हिकमत अता फरमायी और हमने उनको उस बस्ती वालों से निजात बख्शी जो बहुत ही गन्दे काम करते थे।"

कौमे लूत के अट्ठारह गन्दे काम थे जिनमें अगलाम बाजी, कबूतरबाजी, दाढ़ी मुण्डवाना भी था, पस दाढ़ी मुण्डवाना कौमे लूत का काम था, पस दाढ़ी ना मुण्डवाना चाहिए।

इन कामों के अलावा मर्दो औरतों के लिए बालों में कंघी करना, तेल लगाना, आंखों में सुरमा लगाना, नाखून तराशना, जेरे नाफ और बगलों के बाल साफ करना, खुशबू का इस्तेमाल करना। औरतों के लिए मेहन्दी का इस्तेमाल करना यह सब इस्लामी लिबास में दाखिल हैं। अल्लाह हम को इस्लामी सीरत व सूरत की तौफीक दे।

मुअज्जज भाईयों!

अब जाहिरी शक्लो सूरत के अलावा सीरत का नम्बर है। इस सिलसिले में दिल को दुश्मनी व जलन से, जुबान को झूठ, गीबत, चुगली, तोहमत तराशी, गाली गलौच से महफूज रखना। कानों को कंसवों से और गानों और बजानों की आवाज से महफूज रखना। यह वो सीरते तैयबा है, जिस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हम देखते हैं। एक आदमी कैसा ही आलिम-फाजिल क्यों ना हो, तारीफ के काबिल नहीं है, अगर झूठ बोलना, अमानत में ख्यानत करना, वादे को पूरा ना करना वगैरह-वगैरह उसकी फितरत में दाखिल है तो उसके हज, नमाज, इल्मो फजल अल्लाह के यहां और लोगों के यहां कोई वजन नहीं रखते। जैसा कि रोजा के बारे में इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है।

مَنْ لَّمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّوْرِ وَالْعَمَلَ بِهٖ فَلَيْسَ لِلّٰهِ حَاجَةٌ فِىْ اَنْ يَّدَعَ طَعَامَهٗ وَشَرَابَهٗ۔ [بخاری الصوم]

(बुखारी अस्सौम)

"जो शख्स झूठ बोलना, झूठी गवाही देना रोजे की हालत में भी ना छोड़े उसके बारे में अल्लाह पाक को कोई जरूरत नहीं है, चाहे बिना मतलब के वो भूखा-प्यासा मरे।" (और रोजेदारों को भी बदनाम करे)

मालूम हुआ कि नेककारों से ऐसे गुनाहों का सरजद होना बहुत ही बुरा है। एक ऐब गीबत भी है, जो आजकल आम है, अवाम, उलमा, फुजला सभी इस बीमारी के शिकार हैं

कुरआने मजीद में गीबत को अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने के बराबर करार दिया है। मेराज वाली हदीस में आपने फरमाया कि मेरा एक ऐसी कौम पर गुजर हुआ, जिसके नाखून ताम्बे के थे, और वो अपने चेहरों और सीनों को नोच रहे थे। मैंने पूछा यह कौन लोग हैं। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बतलाया कि यह वो लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते, उनकी गीबत करते, उनकी इज्जत-आबरू लेते थे। दूसरी हदीस में है कि दोखज में एक गिरोह को मुर्दा लाश खाते देखा गया। आपने बतलाया कि यह लोग गीबत करके उनका गोश्त खाते थे। गीबत के साथ चुगलखारी भी बहुत बड़ा गुना है। चुगलखोर आदमी दो आदमियों के मुतअल्लिक खराब और झगड़ा करा देता है। जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया।

لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ۔ (ابو داؤد)

(अबू दाऊद)

"चुगलखोर जन्नत में दाखिल नहीं होगा"

और कुरआने मजीद ताकीद के साथ हिदायत करता है:

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ۝ هَمَّازٍ مَّشَّاءٍ بِنَمِيمٍ ۝ (القلم ٦٨)

(सूरह अल-कलम: 10-11 पारा 29)

झूठी कसमों के खाने वालों और लोगों पर आवाज कसने वालों और चुगली खाने वालों की बातें हरगिज ना सुनी जायेंगी ओर ना उन पर अमल किया जायेगा, कुछ लोग मुंह देखी बातें करते है।

कुरआने मजीद में यह मुनाफिकीन का तरीका बताया गया है, जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ

إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ۝ (البقرة ٢)

(सूरह बकरा: 14 पारा 1)

"मुनाफिकीन जब ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे महज मजाक करते हैं, हकीकत में मुसलमानों से हमारा कोई ताल्लुक नहीं है।"

ऐसे लोग भी आजकल बहुत हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

وَتَجِدُوْنَ شَرَّ النَّاسِ ذَا الْوَجْهَيْنِ الَّذِىْ هٰؤُلَآءِ بِوَجْهٍ وَهٰؤُلَآءِ بِوَجْهٍ۔

(بخاری)

(बुखारी)

यानी "बदतरीन लोग देखना चाहो तो दो-रुख (दो बातें करने) वाले को देख लो जो मुंह देखी बातें करता है। इसी को दोगलापन कहते हैं।"

एक हदीस में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं। दो-रुखा शख्स कयामत के दिन इस हाल में आयेगा, उसके आग के दो मुंह होंगे।

एक रिवायत में फरमाया कि दोगले आदमी के लिए कयामत के दिन आग की दो जुबानें होगी। उन रिवायतों से इन लोगों को इबरत हासिल करनी चाहिए जो मुंहदेखी बातें करके फितना व फसाद बरपा करते हैं

बिरादराने मिल्लत!

सीरत में ऐब पैदा कराने वाले और भी बहुत से गुनाह हैं जिनसे बचना बहुत जरूरी है। एक बुराई उज्ब है, यानी खुदपसन्दी। अपने आपको बड़ा और दूसरों को छोटा समझना, बहुत नाम निहाद दीनदारों में ऐसे अमराज पैदा हो जाते हैं कि कोई उनकी तारीफ करते तो खुशी से फूल जाते हैं और अगर कोई उन पर जरासी भी रोक-टोक करदे तो उसके जानी दुश्मन बन जाते हैं। एक ऐसा ही मर्ज खुदरायी यानी ऐसा शख्स जो अपनी राये पर चलता हो, चाहे वो गलत हो या सही और किसी की बात नहीं सुनता, चाहे कितनी ही अच्छी क्यों ना हो। सिर्फ अपनी ही हांकता है, बहुत से लोगों में इस किस्म की बीमारियां पैदा हो जाती हैं।

आखिर में हम आपको एक खुत्बा-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सुनाते हैं। अल्लाह पाक याद रखने की तौफीक दे। हजरत जाबिर बिन सलमा रजि. कहते हैं कि मैंने दरबारे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में दरख्वास्त की थीः

اَعْهِدْ اِلَیَّ قَالَ لَا تَسُبَّنَّ اَحَدًا فَمَا سَبَبْتُ بَعْدَهٗ حُرًّا وَلَا عَبْدًا وَلَا بَعِيْرًا وَلَا شَاةً۔ قَالَ لَا تَحْقِرَنَّ شَيْئًا مِنَ الْمَعْرُوْفِ وَلَوْ اَنْ تَلْقٰى اَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلِيْقٍ۔ وَارْفَعْ اِزَارَكَ اِلٰى نِصْفِ السَّاقِ فَاِنْ اَبَيْتَ فَاِلَى الْكَعْبَيْنِ، وَاِيَّاكَ وَاِسْبَالَ الْاِزَارِ فَاِنَّهَا مِنَ الْمَخِيْلَةِ۔ وَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمَخِيْلَةَ وَاِنِ امْرُءٌ شَتَمَكَ وَعَيَّرَكَ بِمَا يَعْلَمُ مِنْكَ فَلَا تُعَيِّرْهُ بِمَا تَعْلَمُ فِيْهِ فَاِنَّ وَبَالَ ذٰلِكَ عَلَيْهِ۔ (ابوداؤد)

(अबू दाऊद)

"या रसूलुल्लाह मुझको कुछ नसीहत फरमायें। आपने फरमाया किसी को गाली मत दो, चुनांचे मैंने इसके बाद ना किसी आजाद और ना किसी गुलाम को ना ऊंट को, ना किसी बकरी को गाली दी। आपने फरमाया कि किसी भी नेकी और भलाई को मामूली मत समझो और अपने मुसलमान भाई से खुशदिली व इज्जत से बात करो। यह भी नेकी है और अपनी लुंगी (तहबन्द) आधी पिण्डली तक रखा करो और अगर उससे भी ज्यादा करना चाहो तो टखनों तक और टखनों से नीचे कपड़ा लटकाने से बचो। क्योंकि यह घमण्ड है और अल्लाह घमण्ड को पसन्द नहीं करता और अगर तुम्हें कोई आर व शर्म दिलाये और गाली दे तो उसके जवाब में अपनी मालूमात की बिना पर उसे शर्म मत दिलाओ। क्योंकि उसका वबाल उसी के ऊपर रहेगा।"

बुजुर्गो और दोस्तों!

इस्लामी सूरत और सीरत ही दीन व दुनिया में एक मुसलमान का बहुत बड़ा सरमाया है। यह दुनियावी इज्जत और आखिरत में निजात का कामयाब वसीला है।

अल्लाह हर मुसलमान को इस्लामी सूरत और सीरत से नवाजे। आमीन!

بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ، وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ إِنَّهٗ تَعَالٰى جَوَّادٌ كَرِيْمٌ مَّلِكٌ بَرٌّ رَّؤُفٌ رَّحِيْمٌ۔ وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ۔ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 40

मेराज के वाक्ये पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबान मुबारक से एक आम खिताब

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ

بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا (بنی اسرآءیل ١٧)

(सूरह बनी इस्राईल: 1)

"वो जात पाक है जिसने अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा तक की सैर करायी, वो मस्जिद जिसके आसपास हमने बहुत बरकतें रखी हैं। यह सैर इसलिए करायी है कि हम उसको अपनी कुदरत की निशानियां दिखायें। बेशक वो अल्लाह देखने वाला, सुनने वाला है।"

बिरादराने मिल्लत!

इस आयत में अल्लाह पाक ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी के अजीमुश्शान वाक्या की तरफ इशारा किया है, जिसे मेराज के नाम से पुकारा जाता है। मेराज से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जमीन से आसमान की तरफ चढ़ना और आलमे मलकूत की सैर कराना मुराद है। यह आप का वो मोअजजा है जो और किसी नबी को नहीं दिया गया। अल्लाह पाक ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (आसमानों) पर बुलाया और वहां बहुत से इनामों से नवाजा।

मेराज का वाक्या 27 रजब 10 नबवी में पेश आया और यह जिस्म के साथ जागने की हालत में हुआ। अल्लाह पाक ने आप के लिए बुराक सवारी को भेजा, जिस पर सवार होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले बैतुल मुकद्दस

तशरीफ ले गये। वहां आपने अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की इमामत फरमायी, फिर आसमान का सफर शुरू हुआ, जिसकी तफसीलात हदीसे मेराज में आप सुनेंगे। कुरआने मजीद की सूरह नज्म में भी मेराज की तफसील मौजूद है। अल्लाह पाक ने फरमाया:

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ۝ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۝ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝ (النجم ٥٣)

(सूरह नज्म)

"सितारे की कसम है जब वो चमके, तुम्हारा यह साथी भूला भटका नहीं है और ना यह अपनी ख्वाहिश से बोलता है। यह कुरआन तो वह्य है जो अल्लाह की तरफ से उस पर नाजिल की जाती है। यह कुरआन उसको पूरी ताकत वाले फरिश्ते ने सिखलायी है जो ताकत वाला है, वो फरिश्ता (जिब्राईल) सीधा खड़ा हो गया और वो बुलन्द आसमानों के किनारों पर था, फिर नजदीक हुआ और उतर आया। पस दो कमान बराबर फासला रहा गया। बल्कि इससे भी कम। पस उसने अल्लाह के बन्दे को पैगाम पहुंचाया या जो भी पहुंचाया। फिर उस रसूल ने जो कुछ हालात देखे उनके बारे में उस रसूल के दिल ने झूठ नहीं बोला। क्या तुम झगड़ा करते हो, इस पर जो रसूल ने देखा सिदरतुल मुन्तहा के पास उसे तो एक बार और भी दिखाया था, उसके पास जन्नतुल मावा है। जबकि सिदरत (बेरी के दरख्त को) छिपाये लेते थी, जो चीज भी छुपा रही थी, ना तो निगाह बहकी, ना हद से बढ़ी। यकीनन उस रसूल ने (मेराज की रात में) अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियां देखी हैं।"

बिरादराने इस्लाम!

सूरह नज्म की आयात का मुख्तसर तर्जुमा है, उनकी तफसीर के लिए बड़े वक्त की जरूरत है। लिहाजा बुखारी शरीफ से आपको मेराज की पूरी हदीस सुनायी जा रही है। इसमें जो वाक्यात बयान किये गये हैं वो गौर से सुनने और याद रखने के काबिल हैं। यह फिर याद रखिए कि मेराज जिस्मानी का अकीदा बिलकुल सही है और जो लोग जिस्मानी मेराज का इनकार करते हैं, वो गलती पर हैं। हदीसे मेराज को बहुत सहाबा किराम रजि. ने रिवायत किया है और यह हदीस की बहुत सी किताबों में मौजूद है। इख्तिसार के पेशे नजर सिर्फ बुखारी शरीफ की रिवायत आपको सुनायी जाती है।

عَنْ مَالِكِ بْنِ صَعْصَعَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بَيْنَا اَنَا عِنْدَ الْبَيْتِ بَيْنَ النَّائِمِ وَالْيَقْظَانِ وَذَكَرَ يَعْنِيْ رَجُلًا بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ فَاُتِيْتُ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مُلِئَ حِكْمَةً وَّاِيْمَانًا فَشُقَّ مِنَ النَّحْرِ اِلٰى مَرَاقِ الْبَطْنِ ثُمَّ غُسِلَ الْبَطْنُ بِمَآءِ زَمْزَمَ ثُمَّ مُلِئَ حِكْمَةً وَّاِيْمَانًا وَاُتِيْتُ بِدَآبَّةٍ اَبْيَضَ دُوْنَ الْبَغْلِ وَفَوْقَ الْحِمَارِ اَلْبُرَاقُ فَانْطَلَقْتُ مَعَ جِبْرِيْلَ حَتّٰى اَتَيْنَا السَّمَآءَ الدُّنْيَا قِيْلَ مَنْ هٰذَا قَالَ جِبْرِيْلُ. قِيْلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ ﷺ قِيْلَ: وَقَدْ اُرْسِلَ اِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ! قِيْلَ: مَرْحَبًا بِهٖ وَلَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَآءَ. فَاَتَيْتُ عَلٰى آدَمَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ. فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ اِبْنٍ وَنَبِيٍّ. فَاَتَيْنَا السَّمَآءَ الثَّانِيَةَ قِيْلَ مَنْ هٰذَا قَالَ جِبْرِيْلُ. قِيْلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيْلَ اُرْسِلَ اِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ! قِيْلَ: مَرْحَبًا بِهٖ وَلَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَآءَ. فَاَتَيْتُ عَلٰى عِيْسٰى وَيَحْيٰى. فَقَالَا: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ اَخٍ وَنَبِيٍّ. فَاَتَيْنَا السَّمَآءَ الثَّالِثَةَ قِيْلَ مَنْ هٰذَا قِيْلَ جِبْرِيْلُ. قِيْلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيْلَ: مُحَمَّدٌ. قِيْلَ: وَقَدْ اُرْسِلَ اِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ! قِيْلَ: مَرْحَبًا بِهٖ وَلَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَآءَ. فَاَتَيْتُ عَلٰى يُوْسُفَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ. فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ اَخٍ وَنَبِيٍّ. فَاَتَيْنَا السَّمَآءَ الرَّابِعَةَ قِيْلَ مَنْ هٰذَا قَالَ جِبْرِيْلُ. قِيْلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيْلَ: مُحَمَّدٌ ﷺ. قِيْلَ: وَقَدْ اُرْسِلَ

اِلَيْهِ؟ قِيْلَ : نَعَمْ! قِيْلَ : مَرْحَبًا بِهٖ وَلَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَآءَ. فَأَتَيْتُ عَلٰى اِدْرِيْسَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ. فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخٍ وَنَبِيٍّ. فَأَتَيْنَا السَّمَآءَ الْخَامِسَةَ قِيْلَ مَنْ هٰذَا قَالَ جِبْرِيْلُ. قِيْلَ مَنْ مَعَكَ؟ قِيْلَ: مُحَمَّدٌ. قِيْلَ: وَقَدْ اُرْسِلَ اِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ! قِيْلَ: مَرْحَبًا بِهٖ وَلَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَآءَ. فَأَتَيْنَا عَلٰى هَارُوْنَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ. فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ اَخٍ وَنَبِيٍّ. فَأَتَيْنَا السَّمَآءَ السَّادِسَةَ قِيْلَ مَنْ هٰذَا قِيْلَ جِبْرِيْلُ. قِيْلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيْلَ : مُحَمَّدٌ. قِيْلَ : وَقَدْ اُرْسِلَ اِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ! قِيْلَ: مَرْحَبًا بِهٖ وَلَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَآءَ. فَأَتَيْتُ عَلٰى مُوْسٰى فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ. فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنْ أَخٍ وَنَبِيٍّ. فَلَمَّا جَاوَزْتُ بَكٰى فَقِيْلَ مَا اَبْكَاكَ؟ قَالَ: يَا رَبِّ هٰذَا الْغُلَامُ الَّذِىْ بُعِثَ بَعْدِىْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ اُمَّتِهٖ اَفْضَلُ مِمَّا يَدْخُلُ مِنْ اُمَّتِىْ. فَأَتَيْنَا السَّمَآءَ السَّابِعَةَ... قِيْلَ مَنْ هٰذَا قِيْلَ جِبْرِيْلُ. قِيْلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قِيْلَ: مُحَمَّدٌ. قِيْلَ: وَقَدْ اُرْسِلَ اِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ! قِيْلَ: مَرْحَبًا بِهٖ وَلَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَآءَ. فَأَتَيْتُ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ. فَقَالَ: مَرْحَبًا بِكَ مِنِ ابْنٍ وَنَبِيٍّ فَرُفِعَ لِيَ الْبَيْتُ الْمَعْمُوْرُ فَسَأَلْتُ جِبْرِيْلَ. فَقَالَ: هٰذَا الْبَيْتُ الْمَعْمُوْرُ يُصَلِّىْ فِيْهِ كُلَّ يَوْمٍ سَبْعُوْنَ اَلْفَ مَلَكٍ اِذَا خَرَجُوْا لَمْ يَعُوْدُوْا اِلَيْهِ آخِرُ مَا عَلَيْهِمْ وَرُفِعَتْ لِيْ سِدْرَةُ الْمُنْتَهٰى فَاِذَا نَبِقُهَا كَاَنَّهٗ قِلَالُ

هَجَرَ وَوَرَقُهَا كَأَنَّهُ آذَانُ الْفُيُولِ فِي أَصْلِهَا أَرْبَعَةُ أَنْهَارٍ نَهْرَانِ بَاطِنَانِ وَنَهْرَانِ ظَاهِرَانِ فَسَأَلْتُ جِبْرِيلَ فَقَالَ أَمَّا الْبَاطِنَانِ فَفِي الْجَنَّةِ وَأَمَّا الظَّاهِرَانِ النِّيلُ وَالْفُرَاتُ ـ ثُمَّ فُرِضَتْ عَلَيَّ خَمْسُونَ صَلَاةً فَأَقْبَلْتُ حَتَّى جِئْتُ مُوسَى فَقَالَ مَا صَنَعْتَ؟ قُلْتُ: فُرِضَتْ عَلَيَّ خَمْسُونَ صَلَاةً ـ قَالَ: أَنَا أَعْلَمُ بِالنَّاسِ مِنْكَ عَالَجْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَشَدَّ الْمُعَالَجَةِ وَإِنَّ أُمَّتَكَ لَا تُطِيقُ فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَلْهُ ـ فَرَجَعْتُ فَسَأَلْتُهُ فَجَعَلَهَا أَرْبَعِينَ ـ ثُمَّ مِثْلَهُ ثُمَّ ثَلَاثِينَ ثُمَّ مِثْلَهُ فَجَعَلَهُ عِشْرِينَ ثُمَّ مِثْلَهُ فَجَعَلَهُ عَشْرًا فَأَتَيْتُ مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ فَجَعَلَهَا خَمْسًا ـ فَأَتَيْتُ مُوسَى فَقَالَ مَا صَنَعْتَ؟ قُلْتُ جَعَلَهَا خَمْسًا فَقَالَ مِثْلَهُ ـ قُلْتُ سَلَّمْتُ بِخَيْرٍ فَنُودِيَ أَنِّي قَدْ أَمْضَيْتُ فَرِيضَتِي وَخَفَّفْتُ عَنْ عِبَادِي وَأَجْزِي الْحَسَنَةَ عَشْرًا ـ

[بخاری۔ بدء الخلق باب ذکر الملائکة 3035]

(बुखारी, बदअ अलखल्क बाबु जिकरिल मलाइकति 3035)

''मालिक बिन सअसआ रजि. ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं एक बार बैतुल्लाह के पास नींद और बेदारी के दरमियान की हालत में था। फिर आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो आदमियों के दरमियान लेटे हुए एक तीसरे आदमी का जिक्र फरमाया, उसके बाद मेरे पास सोने का तश्त लाया गया जो हिकमत और ईमान से भरपूर था। मेरे सीने को पेट के आखरी हिस्से तक चाक किया गया। फिर मेरा पेट जमजम के पानी से धोया गया और उसे हिकमत और ईमान से भर दिया गया। इसके बाद मेरे पास एक सवारी लायी गयी, सफेद, खच्चर से छोटी और गधे से बड़ी यानी बुराक मै इस पर सवार होकर जिब्राईल अलैहिस्सलाम के साथ चला। जब हम आसमाने

दुनिया पर पहुंचे तो पूछा गया कि कौन साहिब हैं?उन्होंने कहा जिब्राईल! पूछा गया आप के साथ और कौन हैं?उन्होंने बताया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! पूछा गया कि क्या इन्हें बुलाने के लिए आपको भेजा गया था?उन्होंने कहा कि हाँ। इस पर जवाब आया कि अच्छी खुली जगह आने वाले क्या ही मुबारक हैं। फिर मैं आदम अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाजिर हुआ और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फरमाया आओ प्यारे बेटे और अच्छे नबी, इसके बाद हम दूसरे आसमान पर पहुंचे। यहां भी वही सवाल हुआ, कौन साहब हैं?कहा कि जिब्राईल! पूछा कि आपके साथ और कौन हैं?उन्होंने बताया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। पूछा गया कि क्या इन्हें बुलाने के लिए आपको भेजा गया था?उन्होंने कहा कि हां! अब उधर से जवाब आया कि अच्छी कुशादा जगह आये हैं। आने वाले क्या ही मुबारक हैं। इसके बाद हम तीसरे आसमान पर आये। यहां भी यही सवाल हुआ। कौन साहब हैं?उन्होंने कहा कि जिब्राईल! पूछा कि आपके साथ और कौन हैं?उन्होंने बताया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। पूछा गया कि क्या इन्हें बुलाने के लिए आपको भेजा गया था?उन्होंने कहा कि हां। अब उधर से जवाब आया कि अच्छी कुशादा जगह आये हैं। आने वाले क्या ही मुबारक हैं यहां युसूफ अलैहिस्सलाम से मिला और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फरमाया अच्छी कुशादा जगह आये हो मेरे भाई और नबी। यहां से हम चौथे आसमान पर आये। यहां भी यही सवाल हुआ। कौन साहब हैं?उन्होंने कहा जिब्राईल! पूछा कि आपके साथ और कौन हैं?उन्होंने बताया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। पूछा गया कि क्या इन्हें बुलाने के लिए आपको भेजा गया था?उन्होंने कहा कि हां! अब उधर से जवाब आया कि अच्छी कुशादा जगह आये हैं। आने वाले क्या ही मुबारक हैं। यहां इदरीस अलैहिस्सलाम से मिला और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फरमाया मरहबा भाई और नबी। यहां से हम पांचवे आसमान पर आये। यहां भी यही सवाल हुआ। कौन साहब हैं?उन्होंने कहा जिब्राईल! पूछा कि आपके साथ और कौन हैं?उन्होंने बताया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। पूछा गया कि क्या इन्हें बुलाने के लिए आपको भेजा गया था?उन्होंने कहा कि हां! उधर से जवाब आया कि अच्छी कुशादा जगह आये हैं। आने वाले क्या ही मुबारक हैं। यहां हम हारून अलैहिस्सलाम से मिले और मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने फरमाया मुबारक मेरे भाई और नबी, तुम अच्छी खुली जगह आये हो। यहां से हम छठे आसमान पर आये। यहां भी यही सवाल हुआ। कौन साहब?उन्होंने कहा जिब्राईल! पूछा कि आपके साथ और कौन

हैं?उन्होंने बताया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। पूछा गया कि क्या इन्हें बुलाने के लिए आपको भेजा गया था?उन्होंने कहा कि हां! अब उधर से जवाब आया कि अच्छी कुशादा जगह आये हैं। आने वाले क्या ही मुबारक हैं। यहां मूसा अलैहिस्सलाम से मिला और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फरमाया मेरे भाई और नबी, अच्छी कुशादा जगह आये। जब यहां से आगे बढ़ने लगा तो वो रोने लगे। किसी ने पूछा बुजुर्गवार आप क्यों रो रहे हैं?उन्होंने फरमाया कि अल्लाह यह नौजवान जिसे मेरे बाद नबूवत दी गयी, उसकी उम्मत से जन्नत में दाखिल होने वाले मेरी उम्मत के जन्नत में दाखिल होने वाले लोगों से ज्यादा होंगे। यहां से हम सातवें आसमान पर आये। यहां भी यही सवाल हुआ। कौन साहब हैं?उन्होंने कहा जिब्राईल! पूछा कि आप के साथ और कौन हैं?उन्होंने बताया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! पूछा गया कि क्या इन्हें बुलाने के लिए आपको भेजा गया था?उन्होंने कहा कि हां! अब उधर से जवाब आया कि अच्छी कुशादा जगह आये हैं। आने वाले क्या ही मुबारक हैं। यहां मैं इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मिला और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फरमाया कि मेरे बेटे और नबी, अच्छी कुशादा जगह आये हो। उसके बाद मुझे बैतुल मअमूर दिखाया गया। मैंने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से उसके बारे में पूछा। बताया गया कि यह बैतुल मआमूर है। इसमें सत्तर हजार फरिश्ते रोजाना नमाज पढ़ते हैं और एक बार पढ़कर जो इससे निकल जाता है तो फिर कभी दाखिल नहीं होता और मुझे सिदरतुल मुन्तहा भी दिखाया गया। उसके फल ऐसे थे जैसे मकामे हिज्र के मटके होते हैं और पत्ते ऐसे थे जैसे हाथी के कान, उसकी जड़ से चार नहरें निकलती थीं। दो नहरें बातिनी और दो जाहिरी थीं। मैंने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछा तो आपने बताया कि जो दो बातनी नहरें हैं, वो जन्नत में हैं और जो जाहिरीं हैं वो नील और फुरात हैं। फिर जब मैं वापिस होकर हजरत मूसा अलैहिस्सलाम से मिला तो उन्होंने पूछा कि क्या कर के आये हो?मैंने अर्ज किया कि पचास नमाजें मुझ पर फर्ज की गयी हैं। उन्होंने फरमाया कि इन्सानों को मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ, बनी इसराईल का मुझे बड़ा तर्जुबा हो चुका है। तुम्हारी उम्मत भी इतनी नमाजों की ताकत नहीं रखती। इसलिए अपने रब की बारगाह में दोबारा हाजरी दो और कुछ तख्फीफ (कमी) की दरख्वास्त करो। मैं वापिस हुआ तो अल्लाह तआला ने नमाजें चालीस वक्त की कर दीं। फिर भी मूसा अलैहिस्सलाम अपनी बात यानी तख्फीफ कराने पर अड़े रहे। इस बार तीस वक्त की रह गयीं। फिर उन्होंने वही फरमाया तो अब बीस वक्त की अल्लाह तआला ने कर दीं। फिर मूसा अलैहिस्सलाम ने वही

फरमाया और इस बार बारगाहे रब्बुल इज्जत में मेरी दरख्वास्त की पेशी पर अल्लाह तआला ने उन्हें दस कर दिया। जब मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया तो अब भी उन्होंने कम कराने के लिए और इस बार अल्लाह तआला ने पांच वक्त कर दीं। अब मूसा अलैहिस्सलाम से मिला तो उन्होंने फिर पूछा कि क्या हुआ?मैंने कहा कि अल्लाह तआला ने पांच कर दी हैं। इस बार फिर उन्होंने कम कराने को कहा। मैंने कहा कि अब मैं तो अल्लाह के हवाले कर चुका हूँ। फिर आवाज आयी मैंने अपना फैसला (पांच नमाजों का) जारी कर दिया। अपने बन्दों पर तख्फीफ कर चुका और मैं एक नेकी का बदला दस गुना देता हूँ।''

हजरात!

मेराज के वाकये की शुरूआत हतीम से हुई जहां आप हजरत अमीर हमजा रजि. और हजरत जाफर रजि. के बीच सोये हुए थे, वहां से आपका यह मुबारक सफर बुराक (सवारी का नाम) के जरीये शुरू हुआ जो बुराक का मतलब बिजली है। मेराज जिस्मानी बरहक है। इसका इनकार करने वाला गुमराह और गुनाहगार है।

आज के दौर में हक्के तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सदाकत जाहिर करने के लिए इन्सानों के दिमाग में आसमानी सफर का ख्याल पैदा किया है। गोया कुदरत का इशारा है कि इन्सानियत के लिए खलाई का आगाज आज से चौदह सौ साल पहले पैगम्बर आजम हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कराया जा चुका है। जो लोग मेराजे जिसमानी का इनकार करते हैं, उनको ना भूलना चाहिए कि कुदरत बन्दों से ऐसे ऐसे काम करा देती है जो देखने में नामुमकिन नजर आते हैं। ''सुब्हानल्लजी असरा बि अबदिही'' में ''असरा'' से जिस्मानी मेराज पर साफ इशारा है।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 41

जंगे तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक निहायत अजीमुश्शान खुत्बा

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝ (الصف ٦١)

(सूरह अल-सफ: 4)

"बेशक अल्लाह पाक अपने बन्दों को दोस्त रखता है जो अल्लाह के दीन की खिदमत व इशाअत के लिए सर जोड़कर जालिमों और बागियों का मुकाबला करते हैं। उनका आपस का मैल-मिलाप देखकर मालूम होता है कि गोया वो एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।"

हम्दो सना के बाद

बिरादराने मिल्लत!

आयते खुत्बा मय तर्जुमा आपने सुनी है, अल्लाह पाक ने अपने महबूब बन्दों के कुछ हालात बयान फरमाये हैं कि वो अल्लाह के दीन की खिदमत के लिए शरफरोशाना कोशिश करते हैं इनमें आपस का प्यार और इत्तेफाक निहायत ही खलूस लिए हुए होता है। पहले जमानों में मुसलमानों का यही नक्शा था। खास तौर पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने के मुसलमान हर वक्त इस्लाम की खिदमत के लिए सरशार रहते और आपस में सब मां जाये भाई की तरह मालूम होते थे। यही सबब था कि अल्लाह ने उनको हर मैदान में कामयाबी बख्शी और बहुत थोड़ी मुद्दत में वो तरक्की के आसमान तक पहुंच गये। उनके शानदार कारनामे पढ़ पढ़कर ना सिर्फ मुसलमान बल्कि सारे समझदार लोग हैरान

हैं कि वो कितने अच्छे लोग थे जो इत्तेफाक व इत्तेहाद की जिन्दा तस्वीर थे। अल्लाह तआला आज भी मुसलमानों को यही इत्तेफाक, यही मुहब्बत और यही खिदमत अता फरमाये। आमीन!

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक जमाने का एक सफर जंगे तबूक के नाम से मशहूर है। हम आज अपने भाईयों को उसका कुछ हाल और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उसमें एक पाकीजा और अजीम खुत्बा सुनाना चाहते हैं। और गुजारिश करेंगे कि हाजिरीन गौर फरमाकर कान लगाकर सुनें और दिल में जगह दें।

प्यारे भाईयों!

9 हिजरी का साल था, मदीना में मुसलमानों को खबर मिली कि शाहे रूम कैसर की फौजें मदीना पर हमले की तैयारियों में मशगूल हैं। और अरब के इसाई कबीले बड़ी तादाद में उनके साथ हो गये हैं और वो उस हार का बदला लेने की तैयारी कर रहे हैं जो थोड़े ही दिन पहले मकामे मूता में कैसरे रूम की फौज को हो चुकी थी।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब यह खबर सुनी तो आपने यह ख्याल जाहिर फरमाया कि दुश्मन की फौज का सरहद पर मुकाबला किया जाये। ताकि दुश्मन मुल्क के अन्दर दाखिल होकर बद-अमनी ना फैला सके। यह मुकाबला ऐसी ताकत से था जो कि आधी दुनिया पर हुकूमत कर रही थी और जिस की फौज अभी हाल में ईरान को नीचा दिखा चुकी थी। उधर मुसलमानों का अन्दुरूनी हाल बहुत ही नाजुक था जो बे-सरो सामान थे। सफर दूर दराज का था, अरब की मशहूर गर्मी जोरों पर थी। मदीने में खजूरों की फसलों का जमाना था। फसलों का समेटना मदीना वालों के लिए जरूरी था। इन सारे हालात के बावजूद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आम तौर पर जंगी सामान जमा करने का ऐलान फरमाया था। साथ ही चन्दे की फेहरिस्त जारी कर दी गयी। यही मौका था, जिसमें हजरत उस्मान गनी रजि. ने नौ सौ ऊंट एक सौ घोड़े और एक हजार दीनार चन्दे में दी। जिसके शुक्राने में दरबारे रिसालत से आपको मुजहज जैश अलअसरा (यानी तंग-दस्त फौज को सामान से लैस करने वाला) का सरकारी खिताब मिला।

हजरत अब्दुल रहमान बिन औफ रजि. ने चालीस हजार दिरहम पेश फरमायी। हजरत उमर रजि. के घर में जो भी था, उसका आधा ले आये जो कई

हजार की रकम से ज्यादा थी। हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. घर का सारा सामान ही ले आये थे। पूछने पर कहने लगे "तरकतु अल्लाह व रसूला" घर में सिर्फ अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत के सिवा और कुछ नहीं छोड़कर आया हूँ। एक अनसारी नौजवान अबू अक़ील नामी ने दो सैर छुहारें लाकर पेश किये, जो रात भर एक खेत में पानी देने की मजदूरी में उनको मिले थे। कहने लगे कि हुजूर मजदूरी में चार सैर छुहारे कमाकर लाया था। आधे बच्चों को रखकर आया हूँ और आधे यह हाजिर हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत खुश हुए और उन दो सैर छुहारों को सारे असबाब और चन्दे के सामान के ऊपर बिखेरवा दिया।

जहां मुखलिस मुसलमान इस तरह से बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे थे, वहां नाम के मुसलमान जिनको मुनाफिक कहा गया है, वो खिलाफ में प्रोपगण्डा कर रहे थे। जिनमें अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफिकों का सरदार यह बक रहा था कि इस जंग में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके साथी वापिस मदीना नहीं आ सकेंगे। सबका उधर ही खात्मा हो जायेगा। और मुनाफिक सफर में शरीक ना होंने के अलग अलग बहाने तलाश कर रहे थे। इन हालात में अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीस हजार जांनिसारों का अजीम लश्कर लेकर ईसाईयों का सामना करने के लिए रवाना हो गये।

प्यारे मुसलमानों!

लश्कर में सवारियों की इस कद्र कमी थी कि अट्ठारह आदमियों के बीच सिर्फ एक ऊंट हिस्से में आया। राशन की इस कद्र कमी थी कि रास्ते में अकसर जगह दरख्तों के पत्ते खा-खाकर गुजारा किया गया। पानी बिलकुल नायाब था, इसलिए उसको जैशुल असरा यानी तंगदस्ती का लश्कर भी कहा गया है। रास्ते में मुसलमानों को बहुत सी तकलीफें हुई, मगर उन अल्लाह के शेरों ने सारी तकलीफों को खुशी के साथ बर्दाश्त किया। और आखिर तबूक नामी मकाम में पहुंच गये। मुसलमानों की इस पेश कदमी से शाम के ईसाईयों में एक तहलका बरपा हो गया और उस वक्त उन्होंने अरब पर हमला करने का ख्याल छोड़ दिया। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक माह तक उधर रुके हुए रहे। अतराफ के लोगों में आपके कयाम से आपकी पाकीजा तालीम का बहुत अच्छा असर हुआ। कई हुकूमतों ने आपसे सुल्ह का समझौता कर लिया। तबूक के ठहरने के जमाने में आपने एक आम खुत्बा फरमाया था, जिसे हम आपको सुना रहे हैं।

हर इरशादे गिरामी पर नम्बर डाल दिया गया है। ताकि ईमान वाले हर फिकरा को दिल में जगह देकर ईमान की लज्जत हासिल करें और अपने प्यारे नबी के प्यारे प्यारे इरशादात को सुनकर ईमान की रोशनी पैदा करें।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदत के मुताबिक हम्दो सना के बाद अपने मुबारक खुत्बा का आगाज फरमाया।
अम्माबाद!

(١) فَإِنَّ اَصْدَقَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللهِ (٢) وَاَوْثَقَ الْعُرٰى كَلِمَةُ التَّقْوٰى (٣) وَخَيْرَ الْمِلَلِ مِلَّةُ اِبْرَاهِيْمَ (٤) وَخَيْرَ السُّنَنِ سُنَّةُ مُحَمَّدٍ (٥) وَاَشْرَفَ الْحَدِيْثِ ذِكْرُ اللهِ۔ (٦) وَاَحْسَنَ الْقَصَصِ هٰذَا الْقُرْآنُ (٧) وَخَيْرَ الْاُمُوْرِ عَوَازِمُهَا (٨) وَشَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا (٩) وَاَحْسَنَ الْهَدْيِ هَدْىُ الْاَنْبِيَآءِ (١٠) وَاَشْرَفَ الْمَوْتِ قَتْلُ الشُّهَدَآءِ (١١) وَاَعْمَى الْعُمْيِ الضَّلَالَةُ بَعْدَ الْهُدٰى (١٢) وَخَيْرَ الْمَالِ مَا نَفَعَ (١٣) وَخَيْرَ الْعِلْمِ مَا اتُّبِعَ (١٤) وَشَرَّ الْعُمْيِ عُمْيُ الْقَلْبِ (١٥) وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلٰى (١٦) وَمَا قَلَّ وَكَفٰى خَيْرٌ مِّمَّا كَثُرَ وَاَلْهٰى (١٧) وَشَرَّ الْمَعْذِرَةِ حِيْنَ يَذْكُرُ اللهَ اِلَّا هَجْرًا (٢١) وَمِنْ اَعْظَمِ الْخَطَآءِ اللِّسَانُ الْكَذُوْبُ (٢٢) وَخَيْرَ الْغِنٰى غِنَى النَّفْسِ (٢٣) وَخَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى (٢٤) وَرَأْسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ (٢٥) وَخَيْرَ مَا وُقِرَ فِي الْقُلُوْبِ الْيَقِيْنُ (٢٦) وَالْاِرْتِيَابُ مِنَ الْكُفْرِ (٢٧) وَالنِّيَاحَةُ مِنْ عَمَلِ الْجَاهِلِيَّةِ (٢٨) وَالْغُلُوْلُ مِنْ حَرِّ جَهَنَّمَ (٢٩) وَالسُّكْرُ كَيٌّ مِّنَ النَّارِ

(٣٠) وَالشِّعْرَ مِنْ اِبْلِيْسَ (٣١) وَالْخَمْرَ جُمَّاعُ الْاِثْمِ (٣٢) وَشَرَّ الْمَاكَلِ مَاكُلُ مَالِ الْيَتِيْمِ (٣٣) وَالسَّعِيْدُ مَنْ وُعِظَ بِغَيْرِهٖ (٣٤) وَالشَّقِيُّ مَنْ شُقِيَ فِيْ بَطْنِ اُمِّهٖ (٣٥) وَمِلَاكُ الْعَمَلِ خَوَاتِمُهٗ (٣٦) وَشَرُّ الرُّؤْيَا رُؤْيَا الْكَذِبِ (٣٧) وَكُلُّ مَا آتٍ فَهُوَ قَرِيْبٌ (٣٨) وَسِبَابُ الْمُؤْمِنِ فُسُوْقٌ (٣٩) وَقِتَالُهٗ كُفْرٌ (٤٠) وَاَكْلُ لَحْمِهٖ مِنْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ (٤١) وَحُرْمَةُ مَالِهٖ كَحُرْمَةِ دَمِهٖ (٤٢) وَمَنْ يَتَاَلّٰى عَلَى اللّٰهِ يُكَذِّبْهُ (٤٣) وَمَنْ يَّغْفِرْ يُغْفَرْ لَهٗ (٤٤) وَمَنْ يَعْفُ يَعْفُ اللّٰهُ عَنْهُ (٤٥) وَمَنْ يَّكْظِمِ الْغَيْظَ يَاجُرْهُ اللّٰهُ (٤٦) وَمَنْ يَّصْبِرْ عَلَى الرَّزِيَّةِ يُعَوِّضُهُ اللّٰهُ (٤٧) وَمَنْ يَّتَّبِعِ السُّمْعَةَ يُسْمِعُهُ اللّٰهُ (٤٨) وَمَنْ يَّصْبِرْ يُضَعِّفِ اللّٰهُ لَهٗ (٤٩) وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ يُعَذِّبْهُ اللّٰهُ (٥٠) ثُمَّ اسْتَغْفَرَ ثَلَاثًا۔

(زاد المعاد ج اوّل) [زاد المعاد 541/3، اخرجه البيهقى، فيه نكارة ۔ قال ابن كثير 25/4، هذا حديث غريب فيه نكارة وفى اسناده ضعف]

(जादुल मआद जिल्द अव्वल) (जादुल मआद 3/541, अखरजहुल बैहिकी, फीहि निकारह काला इब्ने कसीर 4/25 हाजा हदीसुन गरीब फीहि नकारा व फी इसनादिही जुअफ)

हजरात!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह व अजीम खुत्बा है जिसका हर हर जुम्ला एक गहरा समुन्दर है जिसकी तफसीर के लिए बड़े दफ्तर भी काफी नहीं हैं। हम इस तरह नम्बरवार हर जुम्ले की मुख्तसर मायने व मतालिब आपको सुनाते हैं। अल्लाह पाक याद रखने और अमल करने की तौफीक अता फरमाये। आमीन!

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

1. सच्चाई में हर एक बात में बढ़-चढ़ कर अल्लाह की किताब कुरआने मजीद है जिसका एक एक हुरूफ सच्चाई और हकीकत से भरपूर है।
2. बहुत ही पुख्ता मजबूत भरोसे की चीज परहेजगारी व तकवा का कलमा "ला इलाहा इल्लल्लाह" है।
3. सारे दीनों से बेहतरीन दीन और सबसे बेहतरीन मिल्लते इब्राहीम अलैहिस्सलाम है, जिसकी बुनियाद तौहीद और अच्छे अख्लाक पर है।
4. सब तरीकों से बेहतर तरीका हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीका है।
5. अल्लाह के जिक्र करके कलिमात को सब बातों पर शराफत और बुजुर्गी हासिल है और इन्सान का फर्ज है कि जहां तक मुमकिन हो, जिक्रे इलाही में जबान को ज्यादा से जयादा इस्तेमाल करे।
6. सारे बयानों से बेहतरीन बयान कुरआने पाक है।
7. बेहतरीन तौर पर वो नेक काम पूरे होते हैं, जिसमें इन्सान के इरादे की पुख्तगी शामिल हो, जिसका नाम उलुल अजमी है।
8. बदतरीन काम वो है जो दीने इस्लाम के नाम पर कोई शख्स खुद की तरफ से नया काम निकाले, जिसका कोई सबूत कुरआने मजीद और सुन्नत से ना हो।
9. अम्बिया की तहजीब व रोश रविश दुनिया की तहजीब व रविश से बेहतर है।
10. सबसे बुजुर्ग मौत शहीदों की मौत है।
11. सबसे बुरी गुमराही वो अंधापन है जिसमें इन्सान हिदायत पाने के बाद दोबारा मुब्तला हो जाये।
12. अमलों में बेहतर अमल वो है, जो नफा देने वाला हो।
13. बेहतरीन रविश वो है जिस पर लोग आसानी से चल सकें।
14. बदतरीन अंधापन दिल का अंधापन है।
15. बुलन्द हाथ ऊपर वाला नीचे हाथ से यानी देने वाला हाथ लेने वाले हाथ से बेहतर होता है।
16. थोड़ा और किनाअत वाला माल उस ज्यादती व कसरत से अच्छा है जो गफलत में डाल दे।
17. बदतरीन मअजरत वो है जो जान निकलने के वक्त की जाये, फिर पछताये

क्या होत जब चिड़िया चुग गयी खेत।

18. बहुत बुरी शर्मिन्दगी वो है जो कयामत के दिन गुनहगारों को होगी।
19. बाज लोग वो हैं जो बजाहिर जुमा पढ़ने आते हैं, मगर उनके दिल पीछे घर में लगे होते हैं।
20. और बाज लोग उनमें से वो हैं जो अल्लाह का जिक्र यों ही बे-दिल के साथ कभी कभार करते हैं।
21. सब गुनाहों से बड़ा गुनाह जुबान से झूट बोलना है।
22. और सब से बड़ी मालदारी दिल की मालदारी है।
23. सब से बेहतरीन तोशा परहेजगारी का तोशा है।
24. दानाई की जड़ अल्लाह का खौफ है।
25. बेहतरीन चीज जो दिल में उतरनी चाहिए, वो पक्का यकीन है जो अल्लाह की जात पर हासिल हो।
26. इस्लामी बातों में शको-शुबा पैदा करना कुफ्र से है।
27. मरने वाले पर नोहाजारी करना जाहिलियत का काम है।
28. ख्यानत और चोरी दोजख की जलन का सबब है।
29. इन्सान का नशाबाजी करना गोया खुद आग में कूद पड़ना है।
30. शरीअत के खिलाफ शअरबाजी करना इबलीस के कामों में से है।
31. शराब पीना सारे गुनाहों की वजह है।
32. बदतरीन रोजी यतीम का माल खाना है।
33. सआदतमन्द इन्सान वो है जो दूसरों से नसीहत और इबरत हासिल करे।
34. असल बदबख्त वो है जो मां के पेट ही से बख्त पैदा हो।
35. बेहतरीन अंजाम वो है जिसमें नेक आमालों का सरमाया शामिल हो।
36. बदतरीन ख्वाब वो है जो झूठा हो।
37. हर आने वाली घड़ी बहुत ही करीब है।
38. मोमिन को गाली देना सख्त गुनाह है।
39. मोमिन का कत्ल करना कुफ्र है।
40. मोमिन का गोश्त खाना यानी उसकी गीबत करना अल्लाह की नाफरमानी करना है।

41. मोमिन का माल दूसरों पर ऐसा ही हराम है जैसाकि उसका खून हराम है।
42. जो अल्लाह से बेपरवाही करता है, अल्लाह पाक खुद उसको झूठा कर देता है।
43. जो किसी का ऐब छुपाये अल्लाह उसका ऐब छुपाता है।
44. जो औरों को माफ कर देता है, अल्लाह उसको माफ कर देता है।
45. जो गुस्से को पी जाता है, अल्लाह उसको सवाब देता है।
46. जो कोई नुकसान पर सब्र करता है, अल्लाह तआला उसे उसका बदला देता है।
47. जो चुगली करता और बुराई को फैलाता है, अल्लाह उसे आम तौर पर रुसवा करता है।
48. जो सब्र करता है, अल्लाह उसको बढ़ा देता है।
49. जो अल्लाह की नाफरमानी करता है, अल्लाह उसे किसी ना किसी अजाब में मुब्तला कर देता है।
50. फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार इस्तिगफार पढ़कर अपने इस खुत्बे को खत्म फरमाया।

हाजरीन!

दुआ करो अल्लाह पाक यह अजीम खुत्बा जिसका एक एक जुम्ला याद रखने के काबिल है, हम सबको याद रखने की तौफीक बख्शे और इसकी रोशनी में हमको अमल करने की हिम्मत अता करे। हमारे दीन व दुनिया को दुरुस्त फरमाये और हम को अपन नेक बन्दों में शामिल करे। आमीन या रब्बुल आलमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 42

मक्का फतह की तकरीब पर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अजीमुश्शान आम खुत्बा

أَمَّا بَعْدُ: أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝ (النصر ١١٠)

(सूरह नस्र: पारा 30)

"ऐ नबी जब अल्लाह की मदद आ चुकी और मक्का शहर फतह हो गया तो आप देख रहे हैं कि लोग अल्लाह के दीन में फौज-दर-फौज दाखिल हो रहे हैं। पस अब आपका काम पूरा हो गया। आपको चाहिए कि अब अपने रब की तारीफों के साथ उसकी पाकी बयान करें और इस्तिगफार ज्यादा पढ़ा करें। बेशक वो अल्लाह पाक तौबा कबूल करने वाला है।"

हाजरीने किराम!

हम्दो सना के बाद आज का खुत्बा मक्का फतह की तकरीब पर है, यह इस्लाम की सच्चाई का वो अजीमुश्शान मुअजजा (निशानी) है जो कयामत तक दानिशमन्दों के जहनों पर ताजादम रहेगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मक्का शरीफ छोड़कर मदीने जा रहे थे उस वक्त अल्लाह पाक ने कसम खाकर फरमाया था कि जैसाकि "सूरह बलद" में है

لَا أُقْسِمُ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَأَنتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ۝ (البلد ٩٠)

(सूरह अल-बलद: 1-2)

"ऐ नबी मैं इस शहर मक्का की कसम खाता हूं कि आप एक दिन जरूर

इसी शहर में फातिहाना शान से दाखिल होंगे।''

चुनांचे अल्लाह का यह वादा पूरा हुआ और 8 हिजरी माहे रमजानुल मुबारक में अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में बड़ी शानो शौकत से दाखिल हुए। मक्का पर इस चढ़ाई में खुद मक्का वालों की गद्दारी का दखल था क्योंकि 6 हिजरी में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मक्का वालों के बीच जो अमन का वादा हुआ था, जिसको ''सुल्ह हुदैबिया'' के नाम से पुकारा जाता है। उस वादे को खुद मक्का वालों ने तोड़ दिया था। मजबूरन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कदम उठाना पड़ा आज आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ दस हजार इस्लाम के मुजाहिदीन थे जो आपके मामूली इशारे पर अपनी जानें कुरबानी करने को तैयार थे। मदीने से आगे दो मंजिलें तय की थी कि रास्ते में अबू सुफियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब और अब्दुल्लाह बिन अबू उमैया मुलाकात के लिए मक्का से निकल कर आ गये। यह वो लोग थे जिन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सख्त तकलीफें दी थी और इस्लाम को मिटाने में ऐड़ी से चोटी तक का जोर लगाया था। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पिछले सारे हालात थे। आपने उनको देख कर अपना रुख फेर लिया और उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। यहां तक कि आपकी प्यारी बीवी हजरत उम्मे सलमा रजि. ने सिफारिश करते हुए कहा कि या रसूलुल्लाह! अबू सूफियान आपके हकीकी चाचा का बेटा है और अब्दुल्लाह आपकी हकीकी फूफी का इकलौता लड़का है। यह आपके बहुत करीबी रिश्तेदार हैं। इन पर आप की नजरे करम होनी चाहिए।

प्यारे भाईयों!

यह शाने इलाही के करिश्मे हैं, अबू सूफियान को यह गुमान तक ना था कि एक दिन ऐसा भी आ सकता है। वो आखिर वक्त तक मदीना की ईट से ईट बजाने के ख्वाब देख रहे थे। मगर इरशादे बारी है:

كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً بِإِذْنِ اللّٰهِ ط (اَلْبَقَرَة ٢)

(सूरह अलबकरह: 249)

''कितनी छोटी जमाअतें अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअतों पर गालिब आ जाया करती हैं (भारी पड़ती हैं)''

अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया और आज अबू सुफियान की आंखें खुल

रही हैं। वो अपनी पिछली गलतियों की माफी चाहने के लिए रिसालत के दरबार में हाजिर हो रहे हैं। लेकिन अभी वहां पहुंच तक नहीं हो रही है। आखिर हजरत अली रजि. ने उन दोनों को यह तरकीब बतलाई कि जिन लफ्जों में हजरत यूसुफ अलैहि. से उनके भाईयों ने माफी मांगी थी, आप दोनों भी दरबार में हाजिर होकर उन्ही लफ्जों में माफी मांगे। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेहद रहमदिल हैं। अल्लाह ने आपको रहमतुल लिल आलमीन का शर्फ अता फरमाया है। उम्मीद है कि इस तरकीब से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुमको माफ कर देंगे। चुनांचे उन दोनों ने यही रास्ता इख्तेयार किया और दरबारे नबवी में हाजिर होकर वही बिरादराने यूसुफ के अलफाज अदा किये।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ ۝٩١ (يُوْسُف ١٢)

(सूरह यूसूफ, 91)

जो आज तक आपकी मुखालफत में सरगरम रहे हैं। उसमें इशारा था कि अब हम माफी मांगने और इस्लाम कबूल करने हाजिर हुए हैं। आयते कुरआनी सुनते ही रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रहमत का दरिया जोश में आ गया और फौरन ही आपकी जुबाने मुबारक से वही अल्फारज जारी हुए जो हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम की जुबान से निकलते थे। हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۭ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۡ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝٩٢ (يُوْسُف ١٢)

(सूरह युसूफ: 92)

यानी ''आज तुम पर कोई पकड़ नहीं है जो हुआ वो हो चुका। अब अल्लाह पाक तुम्हारी गलतियों को माफ करे। वो बहुत ही रहम करने वाला, मेहरबान है।''

इस मौके पर हजरत अबू सुफियान ने इस्लाम कबूल करने के साथ जोश व मुसर्रत में डूबकर यह अशआर नबवी की खिदमत में पेश किये:

لعمرك انى حين أحمل رأية لِتغلبَ خَيلُ اللات خيلَ محمد

لكا لمدلج الحيران اظلم ليلة فهذا أوانى حين اهدى فاهتدى

هدانى هاد غير نفسى ودلنى الى الله من طرددته كلّ مطرد

कसम है कि मैं जिन दिनों लड़ाई का झण्डा इसलिए उठाया करता था कि लात बुत का लश्कर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लश्कर पर गालिब आ जाये, मैं उन दिनों उस खारे-पश्त जैसा था जो अंधेरी रात में टक्करें खाता हो (खारेपस्त वो जानवर है जिसके बदन पर लम्बे लम्बे कांटे होते हैं) अब वो वक्त आ गया है कि मैं हिदायत पाऊं और सीधे रास्ते पर चलने लग जाऊं, मुझे उस शख्स ने रास्ता दिखला दिया जिसे मैंने अपनी कम अक्ल से धुतकारा और छोड़ दिया था।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह अशआर सुनकर इजहारे खुशी फरमाया कि हां तुम तो मुझे छोड़ ही दिया करते थे, मगर अल्लाह तआला ने अपने फजलो करम से मुझे और आपको मिला दिया।

प्यारे भाईयों!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख्वाहिश थी कि मक्का वालों की बेखबरी में हम मक्का पहुंच जायें ताकि जंग की नौबत ना आये। ऐसा ही हुआ। (सही बुखारी) जब आप मक्का पहुंच गये, उधर शहर से बाहर ही इस्लामी लश्कर ने डेरे लगाकर आग के अलाव रोशन कर दिये तब मक्का वालों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने की खबर हुई। दूसरी सुबह को रसूले करीम ने हुक्म दिया कि मुख्तलिफ रास्तों से फौज शहर में दालिख हो और जो शख्स हथियार फैंक दे उसे कत्ल ना किया जाये। जो शख्स खाना कअबा में पहुंच जाये उसे कत्ल ना किया जाये, जो शख्स अबू सुफियान के घर में पनाह पकड़े उसे कत्ल ना किया जाये, जो शख्स हकीम बिन हिजाम के घर में जाकर रहे उसे कत्ल ना किया जाये। कैदियों को कत्ल ना किया जाये। इन अहकाम से अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह फातिहाना दाखिला किस कद्र अमनो अमान के साथ था।

मुहतरम बुजुर्गों, दोस्तों!

अल्लाह के प्यारे पक्के और सच्चे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 20 रमजान 8 हिजरी को ऊंट पर सवार सर झुकाये सूरह फतह की तिलावत फरमाते हुए बैतुल्लाह खाना काबा के लिए तशरीफ ले जा रहे थे। अजब नजारा था, मक्का वालों पर अजीब हैबत तारी थी, कोई उफ नहीं कर रहा था। आप खाना कअबा के सहन में तशरीफ ले गये और उसे बूतों से पाक किया। आप अपनी कमान की नोक से हर एक बुत को गिराते जाते थे और जुबान मुबारक पर

यह आयत थी:

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝ (بنی اسرآئیل ١٧)

(सूरह बनी इस्राईलः 81)

यानी "हक आ गया और बातिल दूर हुआ, बेशक बातिल को दूर होना ही था।"

उस वक्त खाना कअबा के आसपास तीन सौ साठ बुत रखे हुए थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सब को खत्म किया और आज कअबा कयामत तक के लिए बुत परस्ती से पाक हो गया। इस काम से फारिग होकर आपने उस्मान बिन अबी तल्हा को बुलवाया, जिनके खानदानों में मुद्दतों से कअबा की कुंजी चली आ रही थी। एक बार हिजरत से पहले नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि मेरे लिए कअबा को खोल दो। उस्मान ने इनकार कर दिया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि अच्छा ना खोलो, मगर याद रखो कि एक दिन ऐसा भी आयेगा कि यह कुंजी मेरे हाथ में होगी और मैं जिसे चाहूंगा, यह कुंजी उसके हवाले कर दूंगा। उस्मान ने कहा था कि क्या उस रोज कुरैश सब मर ही जायेंगे?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि ऐसा नहीं है, बल्कि कुरैश उस दिन और भी इज्जत व इकबाल वाले हो जायेंगे। क्योंकि वो इस्लाम कबूल कर लेंगे। आज आप कअबा के बादशाह हैं और कअबा की कुंजी आपके कब्जे में हैं। उस्मान बिन अबी तल्हा कुंजी के रखवाले खड़े हुए यह नजारा देख रहे हैं और पुरानी बातें दिमाग में घूम रही हैं। रसूले करीम ने कअबा का दरवाजा खोला। अन्दर दाखिल हुए और हर एक कोने में नारा-ए-तकबीर बुलन्द फरमाया। शुक्राने की नमाज पढ़कर अल्लाह पाक के लिए सज्दा करते हुए उसकी कुदरत का नजारा देखा। इस अरसे में मक्का के बड़े बड़े सरदार हरम शरीफ में जमा हो गये थे। आप जब कअबा से बाहर निकले तो हजरत अब्बास रजि. (आपके मुहतरम चचा ने दरख्वास्त की कि अब यह कुंजी बनू हाशिम को अता फरमायी जाये। आपने जवाब में फरमाया "अलयवमु यवमुल बिर्रि-रा वल-वफाअि" आज का दिन तो सुलूक करने और वफादारी करने और पूरे अतियात देने का दिन है।

आपने अपने मुहतरम चचा की दरख्वास्त पर ध्यान नहीं फरमाया, बल्कि उस्मान बिन अबी तलहा ही को बुलाया और फरमाया कि यह कअबा की कुंजी संभालो और यह कयामत तक तुम्हारे ही खानदान में रहेगी और जो कोई तुम से इसे छीनेगा वो जालिम होगा।

उस वक्त आपने वो अजीम खुत्बा-ए-आम फरमाया जो आज भी सुनहरे अक्षरों में लिखने के काबिल है। हम आपके इस अजीम खुत्बे के कुछ-कुछ फिकरे अलग-अलग हदीसों को सामने रख कर नकल कर रहे हैं। रावी हजरत अबी शुरैह अलअरवी कहते हैं:

حَمِدَ اللّٰهَ وَاَثْنٰى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ اِنَّ مَكَّةَ حَرَّمَهَا اللّٰهُ وَلَمْ يُحَرِّمْهَا النَّاسُ فَلَا يَحِلُّ لِامْرِئٍ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ اَنْ يَّسْفِكَ بِهَا دَمًا وَّلَا يَعْضُدُ بِهَا شَجَرَةً فَاِنْ اَحَدٌ تَرَخَّصَ لِقِتَالِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فِيْهَا فَقُوْلُوْا لَهٗ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ اَذِنَ لِرَسُوْلِهٖ وَلَمْ يَأْذَنْ لَكُمْ وَاِنَّمَا اَذِنَ لِيْ فِيْهَا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ وَقَدْ عَادَتْ حُرْمَتُهَا الْيَوْمَ كَحُرْمَتِهَا بِالْاَمْسِ وَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ۔ (بخاری شریف)

(बुखारी शरीफ)

आपने हम्दो सना के बाद फरमाया: बेशक यह शहर मक्का ऐसा है कि इसे अल्लाह ने हुरमत और इज्जत वाला शहर करार दिया है। इसकी हुरमत लोगों की कायम की हुई नहीं है, बल्कि यह अल्लाह की मुकर्रर की हुई हुरमत है जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल और पिछले दीन पर ईमान रखता हो, उसके लिए हरगिज हलाल नहीं है कि वो यहां खून बहाये या किसी दरख्त को उखाड़े। अगर कोई कहे कि खुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस शहर में लड़ाई की है। लिहाजा लड़ाई जाइज है तो उससे कह देना कि अल्लाह ने अपने रसूल के वास्ते सिर्फ एक घड़ी की लड़ाई के लिए इजाजत दी थी। जो उसी वक्त खत्म हो गयी और अब उसकी हुरमत कयामत तक के लिए कायम हो चुकी है। अब किसी के लिए यहां लड़ाई करना जाइज नहीं है। चाहिए कि जो लोग हाजिर हैं, वो गायब लोगों को जो बाद में आयेंगे, कयामत तक मेरा यह पैगाम पहुंचा दें।

इस मौके पर आपने हाजिरीन को खास तौर पर कुरैश को मुखातिब फरमाया:

يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ اِنَّ اللهَ قَدْ ذَهَبَ عَنْكُمْ نَخْوَةَ الْجَاهِلِيَّةِ وَتَعَظُّمَهَا بِالْآبَاءِ. اَلنَّاسُ مِنْ آدَمَ وَآدَمُ خُلِقَ مِنْ تُرَابٍ. ثُمَّ تَلَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ (يَا اَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوْا اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللهِ اَتْقَاكُمْ) اِذْهَبُوْا فَاَنْتُمُ الطُّلَقَاءُ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ. [ترمذی. تفسير. بالفاظ مختلفة]

(तिर्मिजी, तफसीर, बिअलफजिम मुख्तलिफह)

यानी ''ऐ कुरैश के लोगों! अल्लाह पाक ने आज तुम्हारा जाहिलाना घमण्ड व गुरूर और बाप दादाओं के हस्बो नसब पर इतराना सब खाक में मिला दिया। सुन लो कि सब लोग आदम के बेटे हैं और हजरत आदम मिट्टी से पैदा हुए हैं। पस याद रखो कि तुम्हारी सबकी असल मिट्टी है। किसी खानदान पर गुरूर करना जाइज नहीं है। फिर आपने यह आयत तिलावत फरमायी।

''लोगों! हमने तुम सबको एक ही मर्द और औरत (आदम व हव्वा) से पैदा किया है और गोत-कबीले सब सिर्फ तुम्हारी आपस की रिश्तेदारियों की पहचान के लिए हैं और सुन लो अल्लाह के यहां सिर्फ उसकी इज्जत है जो अल्लाह से बहुत डरने वाला है।'' फिर आपने बुलन्द आवाज से फरमाया। ऐ कुरैशियों! आज तुम सब आजाद हो, अगरचे तुम्हारी माजी बहुत खून आलूदा है, मगर आज तुम से कोई पकड़, बदला व इन्तेकाम का ख्याल नहीं है। जाओ, तुम सब आजाद हो, तुम सब के लिए पूरा पूरा अमन व अमान है।''

आपका यह खुत्बा सुनकर ना सिर्फ कुरैश बल्कि अरब के लोगों में मुसर्रत और खुशी की लहर दौड़ गयी और अरब के कबीले दूर और नजदीक से आकर इस्लाम में दाखिल होने लगे, जिसका जिक्र सूरह फतह में सुना है। सच है।

नूरे खुदा है कुफ्र की हरकत पे खुन्दा जन।
फूंकों से यह चिराग बुझाया ना जायेगा।

इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस्लाम कबूल करने वालों से बैअत लेने के लिए सफा पहाड़ पर बैठ गये। हजरत उमर फारूक रजि. ऐसे लोगों को

बारी बारी पेश करके इस्लाम कबूल करवा रहे थे। आज सारा मक्का मुसर्रत से बकआ-ए-नूर बना हुआ था।

बिरादराने इस्लाम!

अल्लाह का शुक्र अदा करो कि उसने तुमको इस्लाम की दौलत अता फरमायी हैं अब फतह मक्का का खुत्बा सुनकर वादा कर लो कि हमेशा इस्लाम के वफादार, ताबेदार बनकर जिन्दगी गुजारोगे। और अपनी ताकत के मुताबिक इस्लामी हिदायतों पर अमल करोगे। अल्लाह पाक हम सबको यही तौफीक अता फरमाये। आमीन!

رَبَّنَا تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ وَاَلْحِقْنَا بِالصَّالِحِيْنَ اَقُوْلُ قَوْلِىْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِىْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 43

औरतों से मुताल्लिक में जरूरी नसीहतों के बारे में

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِى الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ۚ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾ (النور ٢٤)

(सूरह अल-नूर: 31)

"ऐ रसूल ईमान वाली औरतों से कह दो कि वो अपनी निगाहें गैर मर्दों के देखने से नीची रखें और अपने बनाव-श्रृंगार को जाहिर ना करें, सिवाय जीनत के उस हिस्से के जो खुद-ब-खुद ज्यादातर खुला रहता है। और उनको चाहिए कि अपने सीनों और गर्दनों पर अपनी औढ़नियां डाले रखें। और अपनी जीनत को खुला ना रखें। मगर उन लोगों के सामने खुला रखे, यानी शौहरों, बाप, खुसर, बेटे, सौतेले बेटे या भाई, भतीजे-भांजे, अपनी औरतें और अपने लोण्डी व गुलाम और वो मर्द जो औरतों के काम के नहीं हैं। या नाबालिग लड़के जो अभी औरतों के पर्दे की बातों से वाकिफ नहीं हुए हैं। और उन औरतों के लिए यह भी जरूरी है कि वो चलते वक्त अपने पांव को जमीन पर इस तरह ना मारें जिससे छुपी हुई

जीनत मालूम हो जाये और ईमान वाले मर्द व औरतों! सब अल्लाह की जनाब में तौबा करो ताकि तुम दोनों जहान में कामयाब हो जाओ।''

हम्दो नात के बाद!

बिरादराने इस्लाम!

कुरआनी आयत जो आपने सुनी है, उसमें अल्लाह पाक ने औरतों को वो सारी हिदायतें फरमा दी हैं जिनकी पाबन्दी करना ईमानदार-शरीफ मुसलमान औरतों के लिए जरूरी है। निगाहों को नीचा रखना और गैर मर्द को ना देखना औरत के लिए बहुत जरूरी है। पर्दे की यही मसलिहत है कि कोई औरत किसी गैर मर्द को ना देख सके, ताकि कोई फितना ना खड़ा हो। बदकारी से अपने आपको महफूज रखना एक ईमानदार शरीफ औरत के लिए बहुत ही बड़ा फरीजा है। बदकार जानिया फाहिशा औरतें इस्लाम के लिए, अपने खानदान के लिए शर्म की वजह होती हैं। इसीलिए इस्लाम में जिना की संगीन सजा रखी गयी है कि शादी शुदा औरतों और मर्दों को जिना का जुर्म साबित होने पर जिन्दगी से महरूम कर दिया जाये ताकि उस संगीन जुर्म का जड़ से खात्मा किया जा सके। औरत के लिए अपने जिस्म को पर्दे में छुपाना और किसी भी जीनत की चीज को जाहिर ना होने देना किस कद्र जरूरी है। आयते खुत्बा से इसका अन्दाजा लगाया जा सकता है। मगर अफसोस है कि आजकल इस आजादी के दौर में कितनी औरतें बेपर्दा फिरती हैं। बाजारों में, मेलों में, ठेलों में घूमती हैं। सिनेमा देखने में आगे-आगे रहती हैं। ऐसी औरतों को अल्लाह के अजाब से डरना चाहिए। जिनकी बे-हयाई इस दर्जा बढ़ चुकी है कि ऐसे बारीक कपड़े पहनती हैं जिनमें सारा जिस्म नंगा नजर आता हैं अब बुर्कापोश औरतों का भी हाल ऐसा है कि ऐसे बे-हयाई के बुर्को को छुपाने के लिए भी किसी दूसरे मोटे कपड़ों के बुर्को की जरूरत है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

صِنْفَانِ مِنْ اَهْلِ النَّارِ اَرَهُمَا قَوْمٌ مَّعَهُمْ سِيَاطٌ كَاَذْنَابِ الْبَقَرِ يَضْرِبُوْنَ بِهَا النَّاسَ وَنِسَآءٌ كَاسِيَاتٌ عَارِيَاتٌ مُمِيْلَاتٌ مَائِلَاتٌ رُؤُوْسُهُنَّ كَاَسْنِمَةِ الْبُخْتِ الْمَائِلَةِ لَايَدْخُلْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يَجِدْنَ رِيْحَهَا وَاِنَّ رِيْحَهَا لَيُوْجَدُ مِنْ مَسِيْرَةِ كَذَا وَكَذَا۔ [مسلم۔ كتاب اللباس والزينة]

(मुस्लिम किताबुल लिबास वज्जीनह)

यानि ''दो किस्म के दोजखी हैं जिनको अभी मैंने देखा नहीं है। एक वो लोग हैं जिनके हाथों में गाय की दुम की तरह कोड़े होंगे, जिनसे वो लोगों को जुल्म से मारेंगे। और दूसरी वो औरतें जो जाहिर में कपड़े पहने हुए होंगी और हकीकत में वो नंगी होंगी और वो लोगों को अपनी तरफ मायल करने वाली, फेरफ्ता करने वाली औरतें होगीं और उनकी तरफ रगबत करेंगी और उनके सर बख्ती ऊंट के कोहान की तरह होंगे। यानी एक तरफ झुके हुए यानी ऐसी बे-हया औरतें जन्नत में दाखिल ना होंगी, ना उसकी खुश्बू पा सकेंगी। हालांकि जन्नत की खुशबू बहुत दूर से पायी जा सकेगी।''

हजरत आइशा रजि. कहती हैं कि मैं एक रोज अपने भतीजे अब्दुल्लाह बिन तुफैल के सामने आ गयी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको नापसन्द फरमाया। मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह यह तो मेरा भतीजा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

اِذَا عَرِقَتِ الْمَرْاَةُ لَمْ تَحِلَّ لَهَا اَنْ تُظْهِرَ اِلَّا وَجْهَهَا وَاِلَّا مَا دُوْنَ هٰذَا وَقَبَضَ عَلٰى ذِرَاعِ نَفْسِهٖ فَتَرَكَ بَيْنَ قَبْضَتِهٖ وَبَيْنَ الْكَفِّ مِثْلَ قَبْضَةٍ اُخْرٰى۔ (ابن جرير)

(इब्ने जरीर)

यानी ''कोई औरत जब बालिग उम्र तक पहुंच जाये तो उसके लिए हलाल नहीं है कि अपने जिस्म के किसी हिस्से को जाहिर करे, सिवाय चेहरे के और सिवाये उसके, यह फरमाकर आपने अपना हाथ कलाई पर इस तरह रखा कि आपकी गिरफ्त के मकाम और हथेली के बीच सिर्फ एक मुट्ठी भर जगह बाकी रह गयी थी।''

बिरादराने किराम!

आज के नाजुक दौर में ख्वातीने इस्लाम के संभलने और अन्दुरूनी हालात के सुधारने की सख्त तरीन जरूरत है। अगर घर में औरतें नेक, दीनदार, परहेजगार, पर्दानशीन और हयादार होंगी तो उनके पाकीजा असरात औलाद पर भी पड़ेंगे। इस तरह घराना सुधर सकेगा। और अगर बद-दीन और बद अख्लाक हों तो सारे खानदान में उसका बुरा असर फैलेगा। इसलिए घरो में औरतों के सुधारने की सख्त तरीन जरूरत है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

मर्दों की तरह औरतों की इस्लाह सुधारने के लिए भी भरपूर कोशिश फरमायी है। एक मौके पर आपने खुत्बे में फरमाया था:

يَا مَعْشَرَ النِّسَآءِ مَا لَكُنَّ فِي الْفِضَّةِ مَا تُحَلِّيْنَ بِهٖ اَمَا اِنَّهٗ لَيْسَتْ مِنْكُنَّ اِمْرَأَةٌ تَتَحَلّٰى ذَهَبًا وَتُظْهِرَهٗ اِلَّا عُذِّبَتْ بِهٖ۔ (رواه ابو داؤد)

(रवाहु अबू दाऊद)

यानी "ऐ औरतों की जमाअत क्या चांदी के जेवरात तुम को बस नहीं हैं? तुम में से जो औरत सोने के जेवरात पहने और उन पर इतराए और गरीब औरतों के सामने उनको जाहिर कर के उनके सामने अपनी मालदारी पर फख्र करे, उनको उन ही जेवरों से कयामत के दिन अजाब किया जायेगा। इस तरह पर कि उनको आग पर सुर्ख करके उनके जिस्मों पर उनसे दाग लगाये जायेंगे।

अल्लाह पाक हर मुसलमान मर्द औरत को ऐसे अजाबों से निजात दे। आमीन। इसी तरह एक बार खास औरतों का मजमअ था और आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे बैअत ले रहे थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया।

اُبَايِعُكُنَّ عَلٰى اَنْ لَا تُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَلَا تَسْرِقْنَ وَلَا تَزْنِيْنَ وَلَا تَقْتُلْنَ اَوْلَادَكُنَّ وَلَا تَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ تَفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْكُنَّ وَاَرْجُلِكُنَّ وَلَا تَعْصِيْنَ فِيْ مَعْرُوْفٍ وَلَا تَخْمِشْنَ وَجْهًا وَلَا تَلْطِمْنَ خَدًّا وَلَا تَنْتِفْنَ شَعْرًا وَلَا تُمَزِّقْنَ جَيْبًا وَلَا تُسَوِّدْنَ ثَوْبًا وَلَا تَدْعِيْنَ وَيْلًا وَلَا تَقُمْنَ عِنْدَ قَبْرٍ۔ (رواه ابو داؤد)

(रवाहु अबू दाऊद)

"ऐ औरतों की जमाअत में तुम से इन बातों पर वादा लेता हूँ कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना करना, चोरी ना करना, जिना कारी ना करना, अपनी औलाद को कत्ल ना करना, किसी पर तोहमत बोहतान ना बांधना, मैं जो नेकी का हुक्म दूं, उसमें मेरी नाफरमानी ना करना, मुसीबत के वक्त मुंह ना नोचना, गालों

पर थप्पड़ ना मरना, ना बाल नोचना, ना कपड़े फाड़ना, ना मुंह पर कालिक मलना, ना हाये वाये हलाकत को पुकारना, और ना कब्रों पर खड़ी होना।''

इस वअज में औरतों को वो सब हिदायत फरमायी हैं जो उनके दीन व ईमान, शर्म व हया और अच्छे अख्लाक को बाकी रखने वाली हैं। आखिर में आप ने जो नोहा से मना फरमाया, क्योंकि आमतौर पर औरतों में नोहा का रिवाज है, जिसे इस्लाम ने सख्ती के साथ मना फरमाया, क्योंकि एक बार सबके सामने मिन्बर पर फरमाया:

وَلَا تَحِلُّ لِامْرَأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ اَنْ تُحِدَّ عَلٰى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ اِلَّا عَلٰى زَوْجٍ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا۔ (مسند احمد)

(मुसनद अहमद)

''किसी भी औरत के लिए जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखती है, हलाल नही है कि किसी भी मय्यत पर तीन रात से ज्यादा सोग करे, हां औरत अपने खाविन्द के ऊपर चार माह और दस दिन सोग कर सकती है।''

एक ईमान अफरोज खुत्बा और सुनिये:

عَنْ اُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ لَمَّا قَدِمَ الْمَدِيْنَةَ جَمَعَ نِسَآءَ الْاَنْصَارِ فِيْ بَيْتٍ فَاَرْسَلَ عَلَيْنَا عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فَقَامَ عَلَى الْبَابِ فَسَلَّمَ عَلَيْنَا فَرَدَدْنَا عَلَيْهِ السَّلَامَ ثُمَّ قَالَ اَنَا رَسُوْلُ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اِلَيْكُنَّ وَاَمَرَنَا بِالْعِيْدَيْنِ اَنْ نُخْرِجَ فِيْهِنَّ الْحُيَّضَ وَالْعُتَّقَ وَلَا جُمُعَةَ عَلَيْنَا وَنَهَانَا مِنْ اِتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ۔ (ابو داؤد)

(अबू दाऊद)

''हजरत उम्मे आतिय्या रजि. अन्हा रिवायत करती हैं कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ लाये तो आपने अनसार की तमाम औरतों को एक घर में जमा होने का हुक्म फरमाया। जब सब आ गयीं तो आपने हजरत उमर रजि. को भेजा। आप तशरीफ लाकर दरवाजे पर खड़े हो गये और सलाम किया। हम सबने सलाम का जवाब दिया तो उन्होंनें कहा कि हुजूर का

भेजा हुआ आया हूँ। आपने तुमको हुक्म फरमाया है कि अपनी जवान और हायजा औरतों को भी जरूर ईदगाह में ले जाया करो, तुम पर जुमा की नमाज फर्ज नहीं है, तुम्हें जनाजों के साथ जाना मना है।''

लेकिन औरतें चाहें तो पर्दे के साथ जुमे की नमाज में भी शरीक हो सकती हैं।

हजरात!

यह किस कद्र ताज्जुब की बात है कि औरतों के ईदैन में शरीक होने की कुछ मौलाना साहबान सख्ती से मुखालफत करते हैं। और हदीसे नबवी की कुछ परवाह नहीं करते। और कितनी मुसलमान औरतें जो मेलों, तमाशों, उर्सों और ताजियों में शिरकत करती हैं। तो ऐसे मौलाना लोग खामोश हो जाते हैं। हालांकि औरतों का ईद में शरीक होना जमाना-ए-रिसालत का आम रिवाज था। यहां तक ताकीद थी कि हैज वाली भी जायें और नमाजों से दूर रहकर दुआओं में शरीक हो। बहरहाल वो औरतें जो ईदगाह में जाकर ईद की नमाज में शिरकत करती हैं वो बहुत ही तारीफ के काबिल हैं। उनको बुखारी व मुस्लिम की हदीस जो उम्मे अतिय्या रजि. ने रिवायत की है, वो याद रखनी चाहिए। वो फरमाती हैं कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि हम पर्दानशीन कुंवारी औरतों को भी ईदगाह ले आयें। आपसे पूछा गया कि अगर वो हैज वाली हों जब भी। फरमाया कि हां वो भी आयें और मुसलमानों की दुआओं में शिरकत करें मजमा में से एक औरत ने सवाल किया कि अगर उसके पास ऊपर डालने की चादर ना हो तो क्या करे? फरमाया कि उसे कोई दूसरी औरत अपनी चादर में ले आये।

इस रिवायत से भी जाहिर है कि जमाना-ए-नबवी में औरतों को ईदगाह में ले जाने का कितना बड़ा एहतेमाम था। मगर साथ में यह भी याद रखना जरूरी है कि यह सबकुछ पर्दे के साथ है। बे-पर्दा होकर जाने की हरगिज इजाजत नहीं है। यह भी हुक्म है कि ईदगाह जाने वाली औरतें अपने रोजमर्रा के मामूली लिबास ही में जायें, बन-ठन कर हरगिज ना जायें। यह भी आया है कि जो औरतें इत्र लगाकर बन-ठनकर अपनी तरफ ध्यान बटाने के लिए मर्दों के पास से गुजरती हैं, अल्लाह के नजदीक वो बदतरीन गुनहगार औरतें हैं। अल्लाह पाक हर मुसलमान मोमिन औरत को ऐसी बुराईयों से महफूज रखे। और अपनी नेक बन्दियों में शामिल फरमाये। आमीन!

एक और खुत्बा भी सुनने के काबिल है:

عَنْ زَيْنَبَ اِمْرَأَةِ عَبْدِ اللهِ قَالَتْ خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ يَا مَعْشَرَ النِّسَآءِ تَصَدَّقْنَ.... الحديث [بخارى. الزكاة. ترمذى. الزكاة]

(बुखारी अज्जकात, तिर्मिजी, अज्जकात)

''हजरत जैनब अब्दुल्लाह की औरत रिवायत करती हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमको एक खुत्बा सुनाते हुए फरमाया कि ऐ औरतों की जमाअत! सदका-खैरात जरूर दिया करो अरगचे तुम को अपने जेवरों में से देना पड़ें, बेशक कयामत के दिन दोजख में ज्यादा तादाद तुम औरतों की होगी। एक रिवायत में यह भी है कि औरतों ने इसकी वजह पूछी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

تَكْفُرْنَ الْعَشِيْرَ وَتُكْثِرْنَ اللَّعْنَ. [مسلم الايمان]

(मुस्लिम अल ईमान)

तुम अपने खाविन्द की नाशुक्री बहुत करती हो और आपस में बहुत ज्यादा लान-तान करती रहती हो।''

औरत की फितरत है कि जरा भी मिजाज के खिलाफ कोई बात सामने आ जाये तो फिर आपे से बाहर हो जाती है। और कई बार तो अल्लाह तआला की भी शिकवा-शिकायत से नहीं चूकती। खाविन्द पर बुरी तरह बरसने लगती है। उसके सारे अहसानों को खाक में मिला देती है। यही वजह है कि दोजख में जयादा तर उन्हीं को रखा गया है। अल्लाह पाक हमारी ख्वातीन को ऐसी बुरी आदतों से बचाये और सब को नेक रास्ते पर चलाये और सबको जन्नतियों में शामिल फरमायें। आमीन!

आखिर में इज्जतदार ख्वातीने इस्लाम से गुजारिश करूंगा कि इस्लाम की इज्जत व आबरू को कायम रखने के लिए आपको पर्दे की पाबन्दी करना जरूरी है। सख्त जरूरत से घर से निकलना हो जाये तो चेहरे पर नकाब डालना, घूंघट निकाल कर चलना, रास्ते में किसी गैर मर्द को ना देखना आपकी इस्लामी शराफत का तकाजा है। और दीन का इल्म हासिल करना औरतों के लिए बहुत जरूरी है। ताकि वो मसाइले दीन से जानकारी हासिल कर सकें। वजू, गुसल, पाकीजगी, नमाज, रोजा के अहकामात सुन्नते नबवी के मुताबिक अमल में ला

सकें।

या अल्लाह! जो कुछ अर्ज किया गया है, उसे हमारी औरतों के दिलो-दिमाग में उतार दे। हमारी बच्चियों को हजरत सय्यदतुन निसा फातिमज्जुहरा और हजरत आइशा रजि. के रास्ते पर चलने की तौफीक अता फरमा। और हमारी बुजुर्ग ख्वातीन को हजरत खदीजतुल कुबरा रजि. के नक्शे कदम पर चला और हम सबको इस्लामी अहकाम की पाबन्दी करने की सआदत अता फरमा। हमारी गलतियों को माफ कर दे और सब को कयामत के दिन आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिफाअत नसीब फरमाइयो और आपके झण्डे के नीचे हमारा हश्र फरमाइयो और हम सबको जन्नत में जमा करना। आमीन या रब्बुल आलमीन!

ऐ परवरदिगार! हमारी मांओं, बेटियों को तौफीक दे कि वो इस्लाम व ईमान पर साबित कदमी के लिए हजरत आसिया रजिअल्लाहु अन्हा फिरऔन की बीवी की मिसाल याद रखें और दुनिया की जेब व जीनत पर फरेफता होने से अपने आपको बचायें और जान लें कि एक दिन यह दुनिया छोड़कर दरबारे इलाही में हाजिर होना यकीनी है। अल्लाह पाक हर मर्द औरत को मरने के बाद जन्नत की जिन्दगी अता करे। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ

بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 44

शादी-ब्याह की अहमियत किताब व सुन्नत की रोशनी में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ. بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ۝

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِیْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ۝ (النسآء ۴)

(सूरह निसाअ: 1)

"ऐ लोगों। अपने पैदा करने वाले से डरो, जिसने तुमको एक जान (आदम) से पैदा किया और उसी से उसकी बीवी को पैदा किया। फिर उन दोनों मियां-बीवी के मिलाप से बहुत से मर्द और औरतों को जमीन में फैला दिया और उस अल्लाह से डरो जिसका नाम लेकर आपस में एक दूसरे से सवाल किया करते हो और सिलारहमी का भी पूरा पूरा ख्याल रखो। बेशक अल्लाह पाक तुम पर निगहबान है।"

हम्दो सना के बाद:

बिरादराने इस्लाम!

शादी ब्याह का मामला इतना अहम है कि इसकी अहमियत अक्ल और नकल हर तरह से रोजे-रोशन की तरह जाहिर है। अल्लाह पाक ने आयते खुत्बा में साफ साफ फरमा दिया है कि अगर मियां और बीवी का जोड़ा ना हो तो इन्सानी आबादी का वजूद नामुमकिन था। अल्लाह पाक ने अपने फजलो करम से मर्द औरत हर-दो को पैदा करके उनमें शादी-ब्याह का ताल्लुक पैदा कर दिया और इसी सिलसिले में यह पूरी आबादी सारी जमीन पर फैलती हुई नजर आ रही है।

इस रिश्ते की बरकत से आगे चलकर अलग-अलग रिश्तेदारियां वजूद में आती हैं। ददिहाल, ननिहाल और ससुराल सारे रिश्ते इसी शादी-ब्याह से कामय होते हैं। जिनके साथ अहसान व सुलूक करके रिश्ते को कायम रखना सिलाह रहमी कहलाता है और रिश्तेदारियों को तोड़ना अहसान व सुलूक से हाथ खींचना कतअ-रहमी (रिश्ते-तोड़ना) कहलाता है। जो शरीअत में बदतरीन गुनाह है। अल्लाह पाक ने कुरआन पाक में इसी लिए एक मुस्तकिल सूरह शरीफ नाजिल फरमायी, जिसका नाम सूरह निसा है। जिसमें मर्द औरतों की खानगी अजदवाजी जिन्दगी के बहुत से मसाइल का बयान हुआ है। यह महज इस्लाम की बरकत है कि शादी ब्याह की अहमियत को इन्सानों ने समझा, वरना पहले बहुत से मजहब बगैर शादी-ब्याह की जिन्दगी गुजारना बेहतर जानते रहे। हालांकि कुदरत की मंशा यह नहीं थी, बल्कि इसके उल्टे कुदरत का ऐन तकाजा था कि शादी ब्याह से इन्सानी नफ्स में तरक्की हो। सूरह रअद में इरशादे बारी तआला है:

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ط (الرعد ۱۳)

(सूरह अल रअद: 38)

यानी "ऐ रसूल हमने आपसे पहले बहुत से रसूल दुनिया में भेजे हैं जिनको हमने बीवियां इनायत की और उनको साहिबे औलाद भी बनाया"

मालूम हुआ कि बीवी बच्चों का होना अल्लाह तआला की मर्जी है। यह नबियों और रसूलों की सुन्नत है। हजरत आदम अलैहिस्सलाम के बाद हजरत नूह अलैहिस्सलाम, हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम, हजरत याकूब अलैहिस्सलाम, हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम, हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम, हजरत जकरिया अलैहिस्सलाम, हजरत मूसा अलैहिस्सलाम के नाम जमाने में मशहूर हैं। यह सब अम्बिया किराम बीवियों और बच्चों वाले थे। बच्चों के लिए हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, और हजरत जकरिया अलैहिस्सलाम का दुआयें करना कुरआने मजीद में मजकूर है। लिहाजा जो लोग शादी ब्याह को अहमियत नहीं देते, वो सख्त गलती पर हैं। हिन्दुस्तान के भी बहुत लोगो को हम तारीख में देखते हैं कि वो बीवी बच्चों वाले थे।

हजरात!

कुरआने मजीद में शादी ब्याह के उसूल व जाबते बड़ी खूबी से बयान किये गये हैं, फरमाया:

فَانْكِحُوْا مَاطَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً (النساء ۴)

(सूरह निसाअ: 3)

यानी "जो औरतें तुमको पसन्द हों उनसे शादी किया करो। वो दो, तीन, चार तुम्हारे लिए जायज हैं। हां अगर तुम इन्साफ ना कर सको तो सिर्फ एक ही शादी करो ताकि दो तीन चार करके ना-इन्साफी और हकों की अदायगी के गुनहगार ना हो सको।"

और सूरह नूर में फरमाया:

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ۚ (النور ۲۴)

(सूरह अलनूर: 32)

यानी "अपनी बेवा हो जाने वाली औरतों का दूसरा निकाह कर दिया करो और नेक गुलामों और बांदियों का भी निकाह कर दिया करो।"

पहले कितने ही लोग थे जो बेवा औरतों की दूसरी शादी को ऐब जानते थे। इस्लाम ने इस बुरी रस्म को खत्म कर डाला। आज दुनिया की बहुत सी कौमों में बेवा औरतों की शादी का रिवाज पाना यह इस्लाम की बरकत है। जो इस तरह उन मजलूम बेवा होने वाली औरतों को हासिल हुआ कि उनको दूसरे निकाह की इजाजत मिल गयी। बहुत से लोग बेवा औरतों की शादी को ऐब समझते थे। मगर अब यह बुरी रस्म खत्म हो चुकी है। और बेवा औरतों की शादी ब्याह करने की ताकीद में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत से इरशादात हदीसों की किताबों में नकल हुए हैं, जिनमें से हम चन्द इरशादात आपको सुनाते हैं। जिनसे आपको मालूम होगा कि शादी करना एक मर्द मोमिन के लिए सुन्नते नबवी की हैसियत से बहुत बड़ा नेकी का काम भी है।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَا مَعْشَرَ الشَّبَابِ مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمُ الْبَاءَةَ زَوَّجْ فَاِنَّهٗ اَغَضُّ لِلْبَصَرِ وَاَحْصَنُ لِلْفَرْجِ وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ فَاِنَّهٗ لَهٗ وِجَاءٌ۔

(मुत्तफक अलैहि)

(متفق عليه)

मशहूर सहाबी "हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐ जवानों की जमाअत तुम में से जो शख्स महर और नान व नफका अदा करने की ताकत रखता है उसको शादी जरूर कर लेनी चाहिए। क्योंकि शादी करने से आंखे नीची हो जाती हैं। (ख्वाहिश पूरी होने के कारण गैर औरत को देखने और शैतानी नजर डालने की ख्वाहिश नहीं रह जाती) और यह अमल शर्मगाह की भी हिफाजत करता है। और जिसे निकाह की ताकत ना हो तो उसे रोजा रखना चाहिए, क्योंकि ज्यादा से ज्यादा रोजा रखने से भी नफ्सानी ख्वाहिश कम हो जाती है।"

निकाह में आने वाली औरत का महर अदा करना और उसका खर्च बर्दाश्त करना जरूरी है और यह मर्द पर उसकी बीवी का ऐसा हक है जो किसी सूरत में भी माफ नहीं हो सकता। हां औरत अगर खुशी से खुद महर माफ कर दे तो वो बात अलग है। बहरहाल मर्द का फर्ज होता है कि जो खाये वो अपनी औरत को भी खिलाये। अपनी औरत को लिबास पहनाये, उसे भूखा-नंगा ना रहने दे। अगर मर्द उसमें कोताही करता है तो वो अपनी औरत का हक मारता है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ لِأَرْبَعٍ لِمَالِهَا وَلِحَسَبِهَا وَلِجَمَالِهَا وَلِدِيْنِهَا فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّيْنِ تَرِبَتْ يَدَاكَ۔ [بخاری۔ النکاح]

(बुखारी अन्निकाह)

"हजरत अबू हुरैरा रजि. अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि औरत चार बातों की वजह से शादी के लिए पसन्द की जाती है। इसके माल की वजह से और उसके हस्बो नसब की वजह से यानी अच्छे खानदान की वजह से और उसके हुस्नो जमाल की वजह से और उसकी दीनदारी की वजह से। पस ऐ मुसलमानों! तुम दीन वाली को तरजीह देकर कामयाबी हासिल करो।

बेहतरीन औरत को पसन्द करने में दीनदारी को अव्वल दर्जा देना जरूरी हैं और चीजें बाद की है। वो भी अगर हो तो नूर पर नूर वरना निकाह के काबिल औरत सिर्फ दीनदार, परहेजगार औरत है। माल और हस्बो नस्ब और हुस्नो जमाल यह चीजें बाद की हैं। कितनी मालदार हुस्नो जमाल वाली औरतें शादी के बाद खाना बर्बादी की वजह बन जाती हैं। खासकर आज के जमाने में तो ऐसी औरतें बहुत कम वफादार, इताअत शिआर निकलती हैं। इसलिए जहां तक

मुमकिन हो, नेक सालेह औरत से शादी करना दीन व दुनिया में हर तरह से सकून व इत्मीनान हासिल करना है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसी ही नेक औरत अता करे।

बुजुर्गो, अजीजों और दोस्तों!

शादी खाना आबादी की मंजिल वो मंजिल है जिसके बाद इन्सानी जिन्दगी का एक दूसरा दौर शुरू होता है। लिहाजा इस मामले को बहुत ही हुस्न व खूबी के साथ समझना है और बहुत देख-भाल कर रिश्ता कायम करना है। सिर्फ औरत को ही देखना जरूरी नहीं, बल्कि बेटी वालों का फर्ज है कि वो लड़का भी खूब देखभाल कर पसन्द करें। क्योंकि आज कल बहुत से नौजवान बचपन ही में गलत रास्तों पर चलकर बहुत खराब हो जाते हैं। खासतौर पर मालदार घरानों के लड़के शुरू ही में सिनेमा, थियेटर, बाइस्कोप में जाकर बेहयाई के मंजर देखकर खुद बे-राह बन जाते हैं। खास कर आजकल स्कूलों, कालेजों से निकलने वाले नौजवान ज्यादा खराब होते हैं। जिनको अखलाक और मजहब से कोई वास्ता नहीं रहता। इसलिए ऐसे लड़कों को पसन्द करना जरूरी है जो अपनी औरत के हक अदा कर सकें, अच्छी तरह से अख्लाके फाजला की जिन्दगी गुजार सकें। और औरत को सुकून व राहत हासिल हो। फिर ऐसा घर दुनिया में जन्नत का नमूना बन जाता है। जैसाकि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं जो बहुत ध्यान से सुनने के काबिल है:

اَلدُّنْيَا كُلُّهَا مَتَاعٌ وَخَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْاَةُ الصَّالِحَةُ۔ [مسلم، نسائی]

(मुस्लिम, निसाई)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह सारी दुनिया चन्द दिन का फायदा है जो करीब में खत्म हो जाने वाला है। मगर बेहतरीन सामान जो दुनिया में एक मर्द मोमिन के लिए हो सकता है, वो नेक बख्त औरत ही है।''

सालेहा के मायने दीनदार, परहेजगार, सुन्नते नबवी की पाबन्द, अल्लाह से डरने वाली। ऐसी औरत जिस मर्द को नसीब हो जाये तो उसके लिए यह दुनिया जन्नत बन सकती है चाहे वो चार पैसे का मजदूर हो तब भी वो चैन की जिन्दगी गुजार सकता है। कुरआने मजीद में अल्लाह ने ऐसी नेक बन्दियों की तारीफ इन

अल्फाजों में फरमायी है:

فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ط (النِّسَآء ٤)

(सूरह अन निसाअ 34)

''वो औरतें अल्लाह की प्यारी और अपने खाविन्द की भी प्यारी होती हैं जो नेक अमल करने वाली, परहेजगार होती हैं और खाविन्द के पीछे उनके माल, औलाद और अपनी इज्जत व आबरू की हिफाजत करने वाली होती हैं।'' ऐसी औरतें जिनको नसीब हो जायें वो बड़े ही खुशकिस्मत हैं। इस बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और इरशादे गिरामी आपको सुनाया जा रहा है।

عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اِنَّهُ يَقُوْلُ مَا اسْتَفَادَ الْمُؤْمِنُ بَعْدَ تَقْوَى اللّٰهِ خَيْرًا لَّهُ مِنْ زَوْجَةٍ صَالِحَةٍ اِنْ اَمَرَهَا اَطَاعَتْهُ وَاِنْ نَظَرَ اِلَيْهَا سَرَّتْهُ وَاِنْ اَقْسَمَ عَلَيْهَا اَبَرَّتْهُ وَاِنْ غَابَ عَنْهَا نَصَحَتْهُ فِيْ نَفْسِهَا وَمَالِهٖ۔

(رواہ ابن ماجه)

(रवाहु इब्ने माजह)

''हजरत अबू उमामा रजि. कहते हैं रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, एक मोमिन मर्द को फायदे के लिए दुनिया में तकवा-ए-इलाही के बाद सबसे बेहतर चीज नेकबख्त बीवी है, ऐसी की जब भी उसको कुछ हुक्म करे वो फौरन फरमां बरदारी करे, अगर वो मर्द उसकी तरफ मुहब्बत की नजर से देखे तो वो औरत अपनी खुशखलकी से उसको खुश कर दे और अगर वो मर्द उसको किसी काम के करने के लिए कसम दिलाये तो वो जरूर उसको पूरा कर दे। और अगर वो मर्द उससे गायब हो जाये तो पीछे से वो अपनी इज्जत आबरू और खाविन्द के माल में उसकी खैर-ख्वाही करे, कोई गफलत ना करे।''

और सुनिये हजरत अनस रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

اِذَا تَزَوَّجَ الْعَبْدُ فَقَدِ اسْتَكْمَلَ نِصْفَ الدِّيْنِ فَلْيَتَّقِ اللّٰهَ فِي النِّصْفِ الْبَاقِيْ۔ (البيهقى)

(अल-बैहिकी)

यानी ''जब किसी बन्दे ने शादी कर ली तो उसने दीन का आधा हिस्सा पूरा कर लिया। अब जो आधा बाकी रह गया है, उसमें उसको अल्लाह से डरना चाहिए।''

मतलब यह है कि दीन फितरत का एक हिस्सा तो शर्मगाह से मुताल्लिक है और दूसरा हिस्सा पेट से मुताल्लिक है। शादी करने से पहला हिस्सा तो पूरा हो गया, अब वो बहुत से गुनाहों से बच गया जो शर्मगाह से मुताल्लिक है। अब पेट से मुताल्लिक भी उसके हलाल व हराम का पूरा पूरा ख्याल करना जरूरी है ताकि हर दो की तरफ से पूरा दीनदार बन सके।

भाईयों!

शादी ब्याह का मामला बड़ा ही अहम है, जिसके बाद कितने घराने आबाद हो जाते हैं। और कितने ही बिगड़ जाते हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद भी देखने के काबिल है कि सबसे ज्यादा खैरो बरकत वाली शादी वो है जिसमें कम से कम खर्च हो। जो लोग शादी ब्याह में पैसा खर्च करते हैं और नामो-नुमूद के लिए बहुत सी दौलत फूंक डालते हैं, वो ना सिर्फ शैतान के भाई हैं, बल्कि वो अपनी और अपनी औलाद की आगे आने वाली जिन्दगी को तबाह करने वाले हैं।

मुसलमानों में शादी ब्याह पर बहुत सी फिजूल बल्कि शिर्किया, कुफ्रिया, बिदअती रस्में जारी हैं, जिनमें बहुत से हाजी, मौलवी, नमाजी लोग गिरफ्तार हो जाते हैं। यह बड़े ही अफसोस की बात है अल्लाह पाक हर मुसलमान को नेक समझ अता करे। फिजूल खर्ची से बचाये और निहायत ही सीधे साधे तरीके सुन्नते नबवी के मुताबिक बच्चों की शादी करने की तौफीक अता करे। आजकल जो तलक या जोड़े घोड़े की रस्म दुनिया में फैली हुई है, यह बहुत ही बुरी रस्म है, जिसकी वजह से कितनी मुसलमान बच्चियों की जिन्दगी तबाह है और जो लोग अपने लड़कों का ऐसा सौदा करते हैं, अल्लाह के नजदीक वो बहुत ही बड़े गुनहगार हैं।

अल्लाह पाक उनको नेक समझ अता करे कि वो इस बुरी रस्म से बाज आ जायें। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ۔ وَالْحَمْدُ

لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

खुत्बा नम्बर 45

निकाह का बयान और शादियों में गलत रस्मों का रद्द

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۙ﴿۷۰﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿۷۱﴾ (الاحزاب ٣٣)

(अल-अहजाब, आयत 70)

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَلنِّكَاحُ مِنْ سُنَّتِىْ ۔ [ابن ماجه۔ النكاح] (وَقَالَ اَيْضًا) مَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِىْ فَلَيْسَ مِنِّىْ۔ [بخارى، مسلم] وَقَالَ اَيْضًا تَزَوَّجُوا الْوَدُوْدَ الْوَلُوْدَ فَاِنِّىْ مُكَاثِرٌ بِكُمُ الْاُمَمَ۔ (مشكوٰة) [ابو داؤد، نسائى]

(मिश्कात, अबू दाऊद, निसाई)

तर्जुमाः ऐ ईमान वालों। अल्लाह से डरो और मुंह से जो निकालो बिलकुल सच और सही बात निकालो। अल्लाह पाक तुम्हारे अमलों को दुरुस्त करेगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा। और जो अल्लाह पाक और उसके रसूल की फरमां बरदारी करे, पस उसने बहुत बड़ी मुराद को हासिल कर लिया।''

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि ''निकाह मेरी सुन्नत है।'' (और आपका फरमान है) और जो मेरी सुन्नत से बे-रगबती करेगा, वो मेरी उम्मत में से नहीं है।'' और फरमाया कि ''ऐ मुसलमानों! तुम ऐसी औरतों से शादी किया करो जो अपने खाविन्दों (शौहरों) से मुहब्बत करने

वाली और ज्यादा औलाद जनने वाली हो, क्योंकि कयामत के दिन मैं उम्मत की ज्यादती पर फख्र करूंगा।''

बिरादराने इस्लाम!

आज आप एक मुबारक मजलिस में तशरीफ फरमा हैं जिसको ''शादी खाना आबादी'' कहा जाता है। इस मुबारक काम में जिस कद्र भी मुसलमान शिरकत कर सकें, बेहतर है। क्योंकि वो उस वक्त अहमतरीन कार्रवाई पर अल्लाह के नजदीक गवाह बन जाते हैं और दुल्हा व दुल्हन के लिए उनकी नेकतरीन दुआयें हासिल हो जाती हैं। इसलिए साफ दिल के साथ ऐसी मुबारक महफिल में शिरकत करना बाइसे सआदत है। शादी में ईजाबो कबूल का होना जरूरी है। जिसके लिए दोनों का राजी होना खास तौर पर औरत की इजाजत का होना गवाहों और वली का मौजूद होना, महर का मुकर्रर करना, निकाह के सही होने की शर्तो में से हैं। बच्ची के वली के लिए जरूरी है कि वो पहले दो गवाहों के साथ अन्दर जाकर बच्ची से बाकायदा इजाजत मांगे और यूं कहे कि तुम्हारा निकाह फलां बिन फलां लड़के के साथ इस कद्र महर के इवज किया जा रहा है, इस पर तुम अपनी रजामन्दी का इजहार करो। फिर कंवारी लड़की का यह सुनकर खामोश हो जाना ही उसकी इजाजत है। अगर वो दुल्हन बेवा है तो उसे जबान से भी इजाजत का इजहार करना बेहतर है। इस कार्रवाई के बाद काजी साहब निकाह का खुत्बा पढ़े, जो यह है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ﷺ۔

اَمَّا بَعْدُ: فَاِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللّٰهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ وَشَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَكُلَّ ضَلَالَةٍ

فِي النَّارِ۔ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
يٰاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَ بَثَّ
مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّ نِسَآءً ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَ الْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ○ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَ لَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ○ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ○ يُّصْلِحْ لَكُمْ
اَعْمَالَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ○

[ترمذی۔ النکاح، ابن ماجه۔ النکاح، ابوداؤد، النکاح، مسند احمد]

(तिर्मिजी, अलन्निकाह, इब्ने माजह, अलन्निकाह, अबू दाऊद, अल निकाह, मुसनद अहमद)

अम्माबाद:

इसके बाद काजी साहब अपने सामने बैठे हुए दुल्हे को बुलन्द आवाज में मुखातिब करे कि मैंने फलां लड़की को जो फलां की बेटी है, फलां फलां गवाहों की गवाही से और फलां बिन फलां की वलायत से इस कद्र रकम महर के ऐवज तुम्हारे निकाह में दिया। लड़का बुलन्द आवाज में कहे कि हाँ कबूल किया और मैं उसको जवजियत में लाया। इसके बाद काजी और जुम्ला हाजरीन इन लफ्जों में दुआ करें।

بَارَكَ اللّٰهُ لَكُمَا وَبَارَكَ فِيْكُمَا وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا بِالْخَيْرِ (آمین) [ابو داؤد،
ترمذی، ابن ماجه]

(अबू दाऊद, तिर्मिजी, इब्ने माजह, रिवायत बिलमअनी के तौर पर मामूली अल्फाज की तब्दीली के साथ)

महर कम से कम मुकर्रर रहना चाहिए और उसे निकाह के बाद ही अदा करना बेहतर है। वरना बाद में उसका अदा करना बतौरे कर्ज बाकी रह जाता है। दुआ के बाद हाजिरीन में छुहारें तकसीम करना मुनासिब है। लेकिन बाज लोग छुहारे वाली रिवायत को जईफ कहते हैं।

हजरात!

खुत्बा मसनूना जो आपने सुना है, उसका तर्जुमा यह है। सब तारीफें हम्दो सना खास अल्लाह के लिए लायक हैं। हम खास उसकी तारीफ करते हैं और खास उसी से मदद चाहते हैं और खास उसी से अपने गुनाहों की माफी मांगते हैं और उस पर हम ईमान रखते हैं और उसी पर हमारा यकीन व भरोसा है और हम अपने नफ्स की शरारतों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं और अपने बुरे कामों की बुराई से भी अल्लाह की पनाह मांगते हैं। जिसको अल्लाह पाक हिदायत की राह नसीब करे, उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं है। और जिसे वो खुद ही गुमराह कर दे, उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह पाक ही अकेला माबूद है। उसका कोई शरीक नहीं और मैं यह भी गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और सच्चे रसूल हैं। हम्दो नात के बाद:

ऐ लोगों! जान लो कि बेहतरीन बात अल्लाह की किताब कुरआने मजीद है और बेहतरीन चाल व चलन तौर तरीका वो है जिसे हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सीरते मुबारका के तौर पर दुनिया के सामने पेश फरमाया। और बदतरीन गुनाहों के काम वो हैं जो दीन के नाम पर खुद ही निकाले जायें। ऐसे नये काम सब बिदअत हैं और हर बिदअत गुमराही है और हर एक गुमराही का नतीजा दोजख की आग है। मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ। अल्लाह रहमान व रहीम के नाम पाक की बरकत से शुरू करता हूँ। ऐ लोगों! अपने परवरदिगार से डरो जिसने तुमको एक जान (आदम) से पैदा किया और उससे उसका जोड़ा बनाया। फिर उन दोनों के मिलाप से जमीन में बहुत से मर्दो और औरतों को फैला दिया। और उस अल्लाह से डरो, जिसके नाम से तुम आपस में एक दूसरे से सवाल करते हो। और रहमो का भी ख्याल रखो, बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे ऊपर नजरें रखे हुए हैं। ऐ ईमान वालों! अल्लाह से ऐसे डरो जैसाकि उससे डरने का हक है और हरगिज ना मरो, मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।

ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो और सीधी सच्ची सही बात मुंह से निकालो, ऐसा करने से अल्लाह तुम्हारे अमलों को सही कर देगा और तुम्हारे गुनाहों को बख्श देगा और जिसने अल्लाह व रसूल की इताअत व फरमां बरदारी की, वो अपनी बड़ी भारी कामयाबी को पहुंच गया।

मुहतरम बिरादराने इस्लाम!

निकाह शादी का मामला भी इस्लाम में इस कद्र आसान सहल फितरत के मुताबिक है कि उसमें कोई तकलीफ नहीं है। मगर बेहद अफसोस कि मुसलमानों ने खुद ही इस सिलसिले में भी बहुत सी रस्में निकाल ली हैं। खास तौर पर शादी में बारात का चढ़ाना लड़के वालों का दहेज मांगने की लम्बी-लम्बी लिस्ट पेश करना, जोड़े-घोड़े की रसम और ऐसी बहुत सी गलत रस्में निकाल करके इस्लाम की शादी को खत्म करके रख दिया है। जिसके नतीजे में आज कितने घराने तबाह हो रहे हैं। कितनी औरतें बगैर शादी के घरों में बूढ़ी हो जाती हैं। मुसलमानों का फर्ज है कि ऐसी गलत रस्मों को मिटायें। खास तौर पर दहेज या मांग की रस्म के खिलाफ जिहाद करना वक्त का बहुत बड़ा मसला है। जो लोग अपने लड़कों की कीमत वसूल करने के ख्वाहिशमन्द हों। सारे मुसलमान मिलकर उसका बायकाट (बहिष्कार) करें। ताकि दूसरे लोगों को इबरत हासिल हो। और शादी के मौके पर ऐसी रस्में भी अदा की जाती हैं जो बड़े गुनाह बन जाते हैं। दुल्हे के हाथों में कंगना बांधना, औरतों में दुल्हे का जुलूस निकालना, किस्म-किस्म के गाने बजाने करना, आतिशबाजी करना, नाच-कूद करना, हद से ज्यदा रोशनी करना बहुत सी रस्में हैं जो ना सिर्फ गुनाह बल्कि बहुत बड़ी फिजूलखर्ची है। समझदार लोगों का फर्ज है कि इन रस्मों के खिलाफ जिहाद करे। और इस्लामी सादगी के तहत शादी-ब्याह को रिवाज दें। बारात का हद से जयादा ले जाना और कई जगह तीन रोज तक लड़की वाले के घर डेरा डाले रहना, इस जमाने में यह ऐसी हरकत है जिससे बहुत बड़ी तबाही, बर्बादी, दीन-ईमान की खराबी लाजिम है। हर मुसलमान को इनके खिलाफ आवाज उठाना जरूरी है।

आखिर में दुआ है कि अल्लाह पाक इस शादी को मुबारक करे, नये जोड़े को दोनों जहां की खूबी अता करे। बुरी रस्मों से बचाये, खास तौर पर मांग की रस्म मलियामेट कर दे और नौजवानों को तौफीक दे कि वो ऐसे लोगों का सख्ती से मुकाबला करें ताकि इस बुरी रस्म से मुसलमानों को निजात मिले। आमीन!

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔ اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔

खुत्बा नम्बर 46

हकीकते वसीला और पहले जमाने के तीन आदमियों के एक वाक्ये का बयान

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ (المآئدة ٥)

(सूरह अलमाइदाः 35)

''ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो और उसकी खुशी हासिल करने के लिए जराये (वसीला) तलाश करो और उसके रास्ते में जिहाद करो, ताकि तुमको कामयाबी हासिल हो।''

अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन की हम्दो सना और उसके प्यारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनगिनत दरूद व सलाम के बादः

बिरादराने इस्लाम!

कुरआने मजीद की जो आयत शरीफ आज आपको सुनायी गयी है, इसमें अल्लाह पाक ने ईमान वालों को अल्लाह की खुशी हासिल करने के जराये हासिल करने की हिदायत फरमायी है। आगे एक अहम जरीये की खुद निशानदेही की है जिसका नाम जिहाद फि-सबिलिल्लाह है। जिसके करने पर कामयाबी का दारोमदार रखा गया है। आयते करीमा में लफ्ज ''वसीला'' इस्तेमाल किया गया है। जिससे अक्सर लोगों ने धोखा खाया है कि वो कुछ बुजुर्गों को वसीला समझते हुए उनकी नजरो-नियाज व फातिहा और उनके मजारों पर हाजरी, उर्स व कव्वाली, गुलपाशी वगैरह-वगैरह काम करने ही को वसीला निजात समझ बैठे हैं। कुछ लोगों ने अपने नकली लीडरों, इमामों, मुर्शिदों की तरफ निस्बत ही को अपने लिए निजात का वसीला बना लिया है। ऐसे लोगों को समझाना और उनकी गलत फहमी को दूर करना बहुत जरूरी है। दरअसल वसीला किसी खास शख्सीयत के

बजाये कुछ नेक काम ही हो सकते हैं। अगर कोई दुकानदार महज किसी दलाल को वसीला बना बैठे और दुकान ना खोले और समझ ले कि सिर्फ वसीला बना लेने से उसकी दुकान दौलत से भर जायेगी तो उसका यह ख्याल सिर्फ ख्याल ही समझा जायेगा। आखिरत की निजात और अल्लाह की खुशी हासिल करने के वसाइल सिर्फ ईमान और अच्छे आमाल हैं। कुरआने मजीद में हर जगह ईमान और अच्छे कामों की तलकीन की गयी है। किसी नबी, रसूल या बुजुर्ग की किसी जात को वसीले के तौर पर पकड़ लेने का कुरआने मजीद की किसी आयत में इशारा तक नहीं है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अरब में नबूवत का एलान किया तब आपके सामने यहूदी, ईसाई और मक्का के मुश्रिकीन थे जो अपने आपको हजरत इब्राहीम और हजरत इस्माईल और हजरत मूसा और हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की तरफ मनसूब करते थे।

अगर किसी रसूल या बजुर्ग का वसीला कुछ जाइज होता तो आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एलान फरमाते कि फलां रसूल व नबी मेरे लिए वसीला हैं। मगर सीरते तय्यबा का हर वरक पढ़ लीजिए, आपको किसी जगह भी ऐसे शख्सी वसीले का जिक्र नहीं मिलेगा।

वफाते नबवी के बाद सहाबा का जमाना, खुलफा-ए-राशिदीन शुरू होता है। इसमें भी तारीख बतलाती है कि कभी भी किसी सहाबी ने आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम, नामी बतौरे वसीला इस्तेमाल नहीं किया, ना किसी बुजुर्ग शहीद सहाबी का नाम वसीले के लिए इस्तेमाल किया गया। जब दौरे रिसालत व दौरे सहाबा व दौरे ताबईन व अइम्मा मुजतहिदीन में ऐसे वाक्यात नहीं मिलते तो फिर आज किसी मुरशिद, इमाम, मौलाना को क्या हक है कि वो नेक कामों से महरूम करके मुसलमानों को शख्स-ए-वसीला तलाश करने में लगा कर अमल से उनको कोरा और नाकारा बनाकर रखें।

सहाबा किराम और जुम्ला सलफ सालेहीन का तर्जे अमल यही रहा कि असल वसीला नेक काम और जिहाद फि सबीलिल्लाह हैं। इन्हीं कामों को लेकर वो सारी दुनिया में फैल गये और अल्लाह ने उनकी मदद फरमायी। आज का मुसलमान कब्रों, मजारों पर झाड़ू ही लिये बैठा है और समझता है कि कब्र वाले बुजुर्ग का मेरे लिए वसीला काफी है। यह किस कद्र नादानी है, बुजुर्गों का एहतेराम अपनी जगह पर हक और जरूरी है, मगर उनके नामों को गलत सोच के साथ इस्तेमाल करना इस्लाम के लिए जहर-ए-कातिल है।

हजरात!

पस वसीले की हकीकत सिर्फ अच्छे आमाल हैं। जिनके बगैर दीन व दुनिया की कामयाबी नामुमकिन है। आपने बारहा सुना होगा कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार खुद अपनी बेटी लख्ते जिगर, नूरे नजर हजरत फातिमा जुहरा रजि. से खुले लफ्जों में फरमा दिया था कि मेरी बेटी दुनिया में तुम जो चाहो मुझ से मांग सकती हो, मगर आखिरत में महज मेरा नाम तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। वहां सिर्फ तुम्हारे अच्छे काम ही काम आयेंगे। यही आपने अपने दूसरे अजीजों, रिश्तेदारों से फरमाया था कि महज मेरी जात से तुम निजात पा जाओ, यह नामुमकिन है। आखिरत की सुधार और निजात के लिए ईमान और अच्छे काम की जरूरत है। यही हजरत फातिमा हैं जब उनको सुपुर्दे खाक किया गया तो हाजिरीन में से किसी के मुंह से निकल गया, ऐ कब्र तू जानती है कि यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लख्ते जिगर की नअश मुबारक है, इसके साथ बेहतर सुलूक होना चाहिए। कब्र से आवाज आयी कि मैं ऐसी जगह हूँ, जहां हस्बो-नस्ब काम नहीं देता, यहां सिर्फ बन्दों के आमाल के मुताबिक मामला किया जाता है। अगर जाती वसीला कोई चीज होती तो हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने वालिद को दोजख में ना जाने देते। हजरत नूह अलैहिस्सलाम अपने बेटे को डूबने से बचा लेते।

इस सिलसिले में बनी इस्राईल के तीन आदमियों का इबरतनाक वाक्या आपको सुनाया जाता है कि वो किस तरह एक बहुत बड़ी मुसीबत में गिरफ्तार हुए और उन्होंने किन किन चीजों का वसीला तलाश करके उस मुसीबत से निजात हासिल की। अल्लाह तआला हर मुसलमान को इस वाक्ये से इबरत हासिल करने की तौफीक अता करे। आमीन! (यह वाक्या बुखारी में मौजूद है जो आप को सुनाया जा रहा है)

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ خَرَجَ ثَلَاثَةٌ يَمْشُوْنَ فَأَصَابَهُمُ الْمَطَرُ فَدَخَلُوْا فِيْ غَارٍ فِيْ جَبَلٍ فَانْحَطَّتْ عَلَيْهِمْ صَخْرَةٌ قَالَ قَالَ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ اُدْعُوا اللّٰهَ بِأَفْضَلِ عَمَلٍ عَمِلْتُمُوْهُ. فَقَالَ أَحَدُهُمْ. اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ كَانَ لِيْ أَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيْرَانِ فَكُنْتُ أَخْرُجُ فَأَرْعٰى

ثُمَّ اَجِیْءُ فَاَحْلِبُ فَاَجِیْءُ بِالْحِلَابِ فَاٰتِیْ بِهٖ اَبَوَیَّ فَیَشْرَبَانِ ثُمَّ اَسْقِی الصِّبْیَةَ وَاَهْلِیْ وَامْرَاَتِیْ فَاحْتَبَسْتُ لَیْلَةً فَجِئْتُ فَاِذَا هُمَا نَائِمَانِ قَالَ فَكَرِهْتُ اَنْ اُوْقِظَهُمَا وَالصِّبْیَةُ یَتَضَاغَوْنَ عِنْدَ رِجْلَیَّ فَلَمْ یَزَلْ ذٰلِكَ دَاْبِیْ وَدَاْبُهُمَا حَتّٰی طَلَعَ الْفَجْرُ. اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنِّیْ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ عَنَّا فُرْجَةً نَرٰی مِنْهَا السَّمَاءَ قَالَ فَفَرِجَ عَنْهُمْ. وَقَالَ الْاٰخَرُ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنِّیْ اُحِبُّ اِمْرَاَةً مِنْ بَنَاتِ عَمِّیْ كَاَشَدِّ مَا یُحِبُّ الرَّجُلُ النِّسَاءَ فَقَالَتْ لَا تَنَالُ ذٰلِكَ مِنْهَا حَتّٰی تُعْطِیَهَا مِائَةَ دِیْنَارٍ فَسَعَیْتُ فِیْهَا حَتّٰی جَمَعْتُهَا فَلَمَّا قَعَدْتُّ بَیْنَ رِجْلَیْهَا قَالَتِ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تَفُضَّ الْخَاتَمَ اِلَّا بِحَقِّهٖ فَقُمْتُ وَتَرَكْتُهَا اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنِّیْ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ عَنَّا فُرْجَةً قَالَ فَفَرِجَ عَنْهُمُ الثُّلُثَیْنِ. وَقَالَ الْاٰخَرُ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنِّیْ اسْتَاْجَرْتُ اَجِیْرًا بِفَرَقٍ مِنْ ذُرَةٍ فَاَعْطَیْتُهٗ وَاَبٰی ذٰلِكَ اَنْ یَّاْخُذَ فَعَمَدْتُ اِلٰی ذٰلِكَ الْفَرَقِ فَزَرَعْتُهٗ حَتّٰی اشْتَرَیْتُ مِنْهُ بَقَرًا وَرَاعِیَهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ یَا عَبْدَ اللّٰهِ اَعْطِ حَقِّیْ. فَقُلْتُ اِنْطَلِقْ اِلٰی تِلْكَ الْبَقَرِ وَرَاعِیْهَا فَاِنَّهَا لَكَ. فَقَالَ اَتَسْتَهْزِئُ بِیْ؟ قَالَ فَقُلْتُ مَا اَسْتَهْزِئُ بِكَ وَلٰكِنَّهَا لَكَ. اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنِّیْ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ عَنَّا فَكُشِفَ عَنْهُمْ. (رواه البخاری

حدیث 3465، 5974، 2272، 2333، 2215]

(रवाहु बुखारी, हदीस 2215, 2333, 2272, 5974, 3465)

''मशहूर सहाबी हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तीन आदमी कहीं बाहर जा रहे थे कि अचानक बारिश होने लगी। उन्होंने एक पहाड़ के गार में जाकर पनाह ली। इत्तेफाक से पहाड़ की एक चट्टान ऊपर से लुढ़की और उस गार का मुंह बंद कर दिया (जिसमें यह तीनों कैद होकर रह गये) अब वो आपस में कहने लगे कि सबसे अच्छे नेक अमल का जो तुमने कभी किया हो, नाम लेकर उसका वसीला ढूंढकर अल्लाह से दुआ करो, ताकि यह मुसीबत दूर हो। इस पर उनमें से एक ने यूं दुआ की। ऐ अल्लाह! मेरे मां-बाप बहुत ही बूढ़े थे। मैं बाहर ले जाकर अपने जानवर चराता था। जब शाम को वापिस आता तो उनका दूध निकालता और बर्तन में पहले अपने मां-बाप को पेश करता। जब वो पेट भरकर पी लेते तो बाद में अपने बच्चों और बीवी और घर वालों को पिलाता। इत्तेफाक से एक रात वापिसी में देर हुई और जब मैं घर आया तो मेरे मां-बाप सो चुके थे। मैंने पसन्द नहीं किया कि उनको जगाऊं। बच्चे मेरे कदमों में भूख से बिलबिला रहे थे। मैं बराबर दूध का प्याला लिए हुए मां-बाप के सिरहाने उनके जागने के इंतेजार में खड़ा रहा, यहां तक कि सुबह हो गई। ऐ अल्लाह! अगर तेरे नजदीक भी मैंने यह अमल सिर्फ तेरी रिजा हासिल करने के लिए किया था तो इस अमल के वसीले से हमारे लिए चट्टान को हटा कर इतना रास्ता तो बना दे कि हम आसमान को देख सकें। आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वो पत्थर कुछ हट गया। फिर दूसरे शख्स ने दुआ कि ऐ अल्लाह तू खूब जानता है कि मुझे अपने चचा की एक लड़की से इतनी ज्यादा मुहब्बत थी जितनी एक मर्द को किसी औरत से हो सकती है। उस लड़की ने कहा कि तुम मुझसे अपनी ख्वाहिश उस वक्त तक पूरी नहीं कर सकते जब तक मुझे सौ अशर्फी (सोने के सिक्के) ना दे दो। मैंने उनके हासिल करने की कोशिश की और आखिर वो मैंने जमा कर ली। और लाकर उसके हवाले कर दी। फिर जब मैं उससे सोहबत (हमबिस्तरी) करने के लिए बैठा तो वो कहने लगी, अल्लाह से डरो और महर को नाजायज तरीके पर ना तोड़। इस पर मैं अल्लाह से डरकर खड़ा हो गया और मैंने उन अशर्फियों को भी छोड़ दिया। ऐ अल्लाह! अगर तेरे नजदीक भी मैंने यह अमल सिर्फ तेरी रिजा हासिल करने के लिए किया था तो इस चट्टान को हटाकर हमारे लिए निकलने का रास्ता बना दे। आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, फिर वो पत्थर दो तिहाई हट गया। फिर तीसरे शख्स ने दुआ कि ऐ अल्लाह तू जानता है कि मैंने एक मजदूर से चन्द ज्वार की मजदूरी पर काम कराया था। जब मैंने

उसकी मजदूरी देनी चाही तो उसने इनकार कर दिया और वो नाराज होकर चला गया। बाद में मैंने उस ज्वार को खेत में बो दिया। इससे इस कद्र ज्वार पैदा हुई कि मैंने उससे एक बैल और उसका चरवाहा खरीद लिया। कुछ अर्से बाद उसने आकर फिर मजदूरी मांगी कि ऐ अल्लाह के बन्दे मेरा हक मुझको दे। मैंने कहा कि इस बैल और चरवाहे को ले जा। इनका मालिक तू ही है। उसने कहा कि आप मुझसे मजाक कर रहे हैं?मैंने कहा मैं मजाक नहीं करता, वाकई यह तुम्हारे ही हैं। मैंने उसे ज्वार बोने का किस्सा सुनाया, फिर वो उन सबको ले गया। ऐ अल्लाह! अगर तेरे नजदीक भी मैंने यह अमल सिर्फ तेरी रजा हासिल करने के लिए किया था तो हमारे लिए इस चट्टान को हटाकर रास्ता बना दे। चुनांचे वो गार पूरा खुल गया और वो तीनों उससे बाहर निकल आये।''

प्यारे भाईयों!

इस वाक्ये की सच्चाई में एक जर्रा बराबर भी शक नहीं है। इसलिए कि यह उस हस्ती की जबान मुबारक से बयान हुआ है जो सच्चों के सच्चे हैं। जिनकी जबान से जो निकलता है, वो अल्लाह की तरफ से होता है। इस वाक्ये में हमारे लिए बहुत सी हिदायतें हैं और सबसे बड़ी हिदायत यह है कि वसीला सिर्फ अच्छे कामों का ही पकड़ा जा सकता है। वो लोग सच्चे अल्लाह तआला की इबादत करने वाले थे। उनको उस नाजुक वक्त में अपने नबी रसूल, पीर, मुर्शिद याद नहीं आये। सिर्फ अल्लाह याद आया और उन्होंने अपने नेक अमलों का वसीला पकड़कर अल्लाह से दुआ की, जो कबूल हो गई। पस हर मुसलमान मर्द औरत का फर्ज है कि नेक अमल करे। तौहीद व सुन्नत व अच्छे अखलाक इख्तेयार करे। अल्लाह तआला के फर्जों को पूरा करे। हर हाल में सुन्नत को सामने रखे, फिर उन अमलों को बतौरे वसीला दुआओं में अल्लाह तआला के सामने पेश करे। यकीनन दुआयें कबूल होंगी।

इस वाक्ये से मां-बाप की अजमत भी साबित हुई, जिससे आज के बच्चों और बच्चियों को सबक लेना चाहिए। मां-बाप का दर्जा कितना बड़ा है और मां बाप की खिदमत करना कितना बड़ा नेक काम है। उनकी खिदमत को सब कामों पर मुकद्दम करना कितना जरूरी है। अल्लाह पाक आज के हर बच्चे और बच्ची को अपने मां-बाप की फरमां बरदारी और खिदमत करने की तौफीक बख्शे।

दूसरे शख्स का वाक्या भी बहुत इबरतनाक है, जिसने महज अल्लाह के डर से अपना बुरा इरादा छोड़ दिया, वो हरामकारी से रुक गया। आज कितने ही

नौजवान हैं जिनके अख्लाक खराब हो चुके हैं। जिनकी शर्म व हया पानी की तरह बह चुकी है। कितने ही जवान बाजारी औरतों के फन्दे में गिरफ्तार होकर अपने दीन व दुनिया को तबाह व बर्बाद कर डालते हैं। इसलिए ऐसे नौजवान के लिए अर्शे अजीम के साये की खुशखबरी दी गई है जो अल्लाह तआला के डर से ऐन मौके पर बदकारी से रुक जाये और अपने दामन को दागदार ना करे। वो नौजवान भी कयामत के दिन अर्श के साये में नूरानी कुर्सियों पर बैठा हुआ होगा। अल्लाह तआला हम सबको यह दर्जा अता करे। आमीन!

तीसरा शख्स भी बहुत ही काबिले तारीफ था जिसने मजदूर की मजदूरी से हासिल की हुई सारी दौलत को सिर्फ अल्लाह के डर से मजदूर के हवाले कर दिया। ऐसे अल्लाह से डरने वाले बहुत कम होते हैं। यह तीनों अपने अच्छे कामों में मुखलिस थे। अल्लाह ने उनके वसीले से उनकी दुआओं को कबूल किया। इससे यही मालूम हुआ कि दुआयें जरूर कबूल होती हैं। मगर इख्लास व ईमान का होना शर्त है। अल्लाह पाक हमको इख्लास व ईमान की दौलत से मालामाल करे और पूरे अजमो यकीन के साथ अच्छे आमाल करने और नेक जिन्दगी गुजारने की तौफीक बख्शे। आमीन!

बुजुर्गों, दोस्तों!

आओ अल्लाह पाक के दरबार में हम आप सब मिलकर दुआयें करें कि ऐ अल्लाह हम को तौहीद व सुन्नत पर जिन्दगी गुजारने की सआदत अता फरमा। हम को हर किस्म के शिर्क व कुफ्र व बिदआत से दूर रख। और ऐ परवरदिगार दीन व दुनिया में हमको हर किस्म की बरकतें अता फरमा, हमारे नौजवानों को अपना खौफ, मिल्लत की शर्म व लाज अता फरमा और हमारे बुजुर्गों को सही मायनों में बुजुर्ग बना दे।

या अल्लाह! इस्लाम को सर बुलन्दी अता फरमा। मुसलमानों को आपस में इत्तेफाक व इत्तेहाद अता फरमा। हमारी परेशानियों को दूर कर दे। आमीन या रब्बुल आलमीन!

بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ ۔ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 47

खुत्बाः मौत से मुताल्लिक अहकाम और मसाइल का बयान

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ،

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ، وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ، فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ، وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ (اٰلِ عِمْرٰن ٣)

(आले इमरान, आयत 185)

हम्दो नात के बादः

बिरादराने इस्लाम!

आज का खुत्बा मौत से मुताल्लिक मसाईल और अहकाम के बयान में है। यह ऐसा काम है जो एक ना एक दिन हर भाई बहन के सामने आने वाला है। खुत्बे की आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि ''हर जान को मौत का मजा चखना जरूरी है। और हकीकत यह है कि तुम सब कयामत के दिन अपने दुनियावी अमलों का पूरा पूरा बदला दिये जाओगे। उस दिन जो इन्सान मर्द या औरत दोजख से बच कर जन्नत में दाखिल होगा, वो कामयाब ही कामयाब होगा। और दुनिया की जिन्दगी तो सिर्फ एक धोके का सामान है।''

कुरआने मजीद और अहादीसे नबवी में मौत के मुताल्लिक बहुत से हकायक बयान हुए हैं। कुछ आप सुन भी चुके हैं। आज निहायत सादा लफ्जों में जनाजे से मुताल्लिक सिर्फ अहकाम और मसाईल आपके सामने बयान किये जाते हैं। उम्मीद है कि आप याद रखेंगे और वक्त पर इन्हीं के मुताबिक अमल करेंगे।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि अल्लाह तआला कयामत के दिन फरमायेगा कि ऐ बनी आदम! मैं बीमार हुआ और तू मेरी पूछताछ

को ना आया और मेरी मिजाजपुरसी नहीं की। मैंने तुझसे खाना पानी मांगा मगर तूने मुझे कुछ नहीं दिया। बन्दा कहेगा, ''ऐ परवरदिगार! तू बीमारी से पाक और मोहताजी से बरी है, तेरी मिजाजपुरसी क्योंकर करता? अल्लाह तआला फरमायेगा, मेरा फलां बन्दा बीमार पड़ा तो उसके पूछने को नहीं गया। मेरे फलां बन्दे ने खाना पानी मांगा, तूने उसे खाना पानी नहीं दिया। क्या तुझे मालूम ना था कि अगर तू मेरे बन्दे की मिजाजपुरसी करता तो मैं उसके पास पा लेता और अगर उसे खिलाता पिलाता तो मेरी तरफ से बहुत कुछ मर्तबा पाता।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो बीमार को पूछने जाते हैं, आसमान से उसे एक फरिश्ता आवाज देता है कि तुझे दुनिया व आखिरत में खुशी हो, तेरा चलना अच्छा हो और तूने जन्नत में बड़ा दर्जा हासिल किया।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जब कोई बीमार लाया जाता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके जिस्म पर हाथ फेरते और शिफा के लिए दुआ मांगते और आप यह दुआ पढ़कर दम करते:

اَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَائُكَ شِفَاءً لَّا يُغَادِرُ سَقَمًا ۔ (بخاری)

''ऐ परवरदिगार तू इस तकलीफ को दूर कर दे और इस मरीज को शिफा अता फरमा, शिफा सिर्फ तेरे ही इख्तेयार में है। ऐसी शिफा जो बीमारी को बाकी ना छोड़े।''

और जब खुद बीमार होते तो सूरह फलक और सूरह नास पढ़कर अपने हाथों पर दम करते और उन्हें बदन मुबारक पर फेरते। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दर्द वाले को फरमाया करते कि तीन बार बिस्मिल्लाह पढ़कर नीचे दी गई दुआ सात बार पढ़े, लेकिन दर्द की जगह हाथ रखकर पढ़ें।

"اَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ" [مسلم]

यानी ''मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह की इज्जत और उसकी कुदरत की हर उस चीज की बुराई से जिसे मैं पाता हूँ और जिसके मुताल्लिक मैं डरता हूँ।''

मोहतरम भाईयों!

जिस वक्त कोई मुसलमान मर्द या औरत मरने के करीब हो, उसे किब्ला रुख लिटा दें। और उसे सूरह यासीन सुनायें। और पास बैठकर बुलन्द आवाज में कलमा पढ़ें। लेकिन मरने वाले को मजबूर ना करें कि वो भी कलमा पढ़ें। (1)

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसका खात्मा "ला इलाहा इल्लल्लाह" पर हो, वो जन्नती है। जब यह शख्स मर जाये तो पास बैठने वाले उसकी आंखें बंद कर दें और लाश को कपड़े से ढक दें। मय्यत पर रोने के बारे में आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आंसुओं से आहिस्ता रोना अल्लाह की रहमत है। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे इब्राहीम रजि. ने इन्तेकाल किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोकर जबान मुबारक से फरमाया कि "ऐ इब्राहीम हम तेरी जुदाई से सख्त गमगीन हैं।" इस हदीस से मालूम होता है कि अगर कोई शख्स गम की हालत में हसरत व अफसोस का कलमा जुबान से निकाल बैठे तो जायज है। कुरआने मजीद में आया है कि जब सच्चा मोमिन मर जाता है तो उसके गम में आसमान व जमीन रोते हैं।

जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो चलाकर और बयान करके रोये मैं उससे सख्त बेजार हूँ, और बेहतर सब्र वो है जो सदमा पहुंचते वक्त किया जाये। मुसलमान को मुनासिब है कि मुंह से कोई ऐसी बात ना निकाले जिससे शिकवा-शिकायत जाहिर हो।

एक सहाबी बीमार थे। आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको देखने गये। इत्तेफाक से उसी वक्त उनकी रूह जिस्म से निकल गई थी, उनकी आंखे खुली हुई थीं और अभी जिस्म गर्म था। आपने आंखें बंद कीं और फरमाया जब आदमी की रूह निकलती है तो उसकी आंखें पीछे लगी रहती हैं। घर वालों ने चिल्लाकर रोना शुरू किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उनके लिए नेक दुआ करो, क्योंकि फरिश्ते तुम्हारी बातों पर आमीन कहते हैं। और जब किसी मुसलमान का बच्चा फौत हो जाये और मां-बाप सब्र व शुक्र करें तो उनके लिए जन्नत में अजीमुश्शान महल बनाया जाता है और "बैतुल हम्द" के नाम से मशहूर किया जाता है। जिस मुवह्हिद मुसलमान के तीन नाबालिग बच्चे मर जायेंगे तो वो दोजख में दाखिल ना होगा, बल्कि जन्नत में जायेगा। और वो पुलसिरात से चश्में जदन में गुजर जायेगा और जिसके दो बच्चे मरे हों, उसके लिए भी यही खुशखबरी है। बशर्ते कि नोहा ना किया हो, बेसब्री जाहिर ना की हो।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनसार की औरतों के हक में

फरमाया कि जिसके दो या तीन नाबालिग बच्चे मर जायें और वो आखिरत का सवाब चाहें तो उन्हें अल्लाह तआला जन्नत में दाखिल करेगा। यह हुक्म कयामत तक मुसलमान औरतों के लिए है।

बिरादराने मिल्लत!

मय्यत को गुस्ल देना वाजिब है। गुस्ल देते वक्त उसका सतर (लुंगी वगैरह) ना खोलें, बल्कि सतर पर एक गाढ़ा कपड़ा डालकर इस तरह से गुस्ल दें। पहले अच्छी तरह तहारत करायें। फिर कुल्ली और नाक में पानी देने के अलावा तमाम वजू ऐसा ही करायें जैसाकि नमाज का वजू होता है। लेकिन वजू की शुरूआत दाहिनी तरफ से हो। इसके बाद सर और दाढ़ी खुत्मी या साबून से मलकर खूब धोयें और सीधी करवट पर लिटाकर सारा जिस्म नरमी से धोयें और जब इस तरफ से फारिग हों तो दूसरी करवट पर लिटाकर उस तरफ का जिस्म पाक साफ करें। तमाम जिस्म पर हाथ पहुंचायें और एक एक जोड़ को तीन तीन या पांच-पांच बार धोयें। अगर जरूरत हो तो इससे ज्यादा बार धोयें, लेकिन ताक अदद (तीन, पांच, सात, नौ) का ख्याल रखें।

पानी गर्म करते वक्त बेरी के पत्ते या कोई और खुशबूदार पत्ते डाल दें। और सबसे आखिर में वो पानी बहायें जिसमें काफूर की मिलावट हो। औरत के बालों के तीन हिस्से करें और चोटियां गूंथकर पीछे डाल दें। गुस्ल देने के बाद मय्यत के उन जगहों पर काफूर मलें जो वजू के वक्त धोये जाते हैं। इसके अलावा पैरों के पंजों पर भी मलें। जो लोग जिहाद में शहीद हों उन्हें गुस्ल ना देना चाहिए, बल्कि जिस हालत में शहीद हों उसी हालत में उन्हें कपड़ों के साथ दफन करना चाहिए। मय्यत के नहलाने वाले को गुस्ल करना और जनाजा उठाने वाले को वजू करना मुस्तहब (सुन्नत) है, फर्ज और वाजिब नहीं। कुछ लोग मय्यत को नहलाते वक्त कुछ पढ़ते हैं, यह आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है।

(1) मरने वाले के पास सूरह यासीन पढ़ने की रिवायत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है। बल्कि मरने वाले को "ला इलाहा इल्लल्लाह" की तलकीन करनी चाहिए, जैसाकि सही मुस्लिम की हदीस में आया है। (बिलत्तसानी)

मर्द अपनी औरत को, औरत अपने मर्द को गुस्ल दे सकते हैं। हजरत फातिमा रजि. को (उनके शौहर) हजरत अली रजि. ने गुस्ल दिया था और जनाब अबू बकर सिद्दीक को उनकी बीवी असमा रजि. ने नहलाया। और यही बात अफजल व बेहतर है।

मुर्दों को तीन सफेद कपड़ों में कफनाना चाहिए, जिस किस्म के मयस्सर हों (मिलें)। और जो तीन मयस्सर ना हो सकें तो एक ही कपड़े में कफन हो सकता है। औरतों के लिए चाहिए पांच कपड़े। लेकिन पांच ना हो तो जिस कद्र हो सकें दुरुस्त है। लेकिन पांच से ज्यादा दुरुस्त नहीं। पांच कपड़ों की तफसील यह है: (1) रूमाल जिससे पूरा सिर लपेट सके (2) सीनाबन्द जो कफनी के नीचे रख कर सीने से घुटनों तक लिपट दिया जाये। (3-4) दो चादरें (5) एक मामूली कफन जिससे सारा जिस्म छुप जाये।

मय्यत को जहां तक हो सके कपड़ा अच्छा दें, लेकिन कीमती कपड़े का कफन देना दुरुस्त नहीं।

अगर हाजी लोग अहराम में फौत हो जायें तो उन्हें उसी हालत में बगैर कफन नंगे सर दफन कर दें। क्योंकि कयामत के दिन यह लोग उसी शक्ल में लब्बैक के नारे बुलन्द करते हुए मैदाने महशर में आयेंगे। मय्यत को नये कपड़े का कफन देना सुन्नत है और बेहतर कफन लुंगी-चादर है। अगर कपड़े की तंगी हो तो दो-दो शहीदों को एक एक कपड़े में कफनाना दुरुस्त है।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीन सूती कपड़ों में कफनाये गये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर मुबारक पर ना अमामा बांधा गया, ना कुर्ता पहनाया गया।

बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

इस्लाम की यह बड़ी खूबी है कि उसने इंसान के लिए हवादिसे जिन्दगी और मौत के मुताल्लिक बेहतरीन हिदायतें पेश की हैं। मरने के साथ इन्सान दुनिया में अहकामे शरई से बे-परवाह हो जाता है। मगर उसके कफनाने दफनाने से मुताल्लिक जो शरई अहकाम हैं, वारिसों के लिए उनकी पाबन्दी करना जरूरी है। आम मुसलमानों ने मय्यत से मुताल्लिक भी बहुत सी रस्में निकाल ली हैं। किसी जगह मय्यत को कब्रिस्तान में ले जाते हुए बीच में ठहरते हैं। कितनी जगह मय्यत के साथ कुछ रोटियां कब्रिस्तान भेजी जाती हैं। किसी जगह कब्रिस्तान में अनाज तकसीम करने का रिवाज है, कितनी जगह मय्यत को दफन करने के बाद कब्र पर

अजान पुकारी जाती है।

अलगर्ज इस किस्म के सारे काम खुल्लम-खुल्ला बिदअत हैं, इससे बचकर हर काम सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताबिक होना चाहिए। अल्लाह पाक हम सबको तौहीद व सुन्नत पर कायम रखे और इसी पर मौत नसीब फरमाये और कब्र में साबित कदमी के साथ हम सबको कामयाबी बख्शे। आमीन!

يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ وَبِكَ نَسْتَعِيْنُ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَاِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ اَسْتَغْفِرُ اللهَ لِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 48

नमाजे जनाजा की फजीलत और अहकाम के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ۔

وَاتَّقُوْا یَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِیْهِ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾ (اَلْبَقَرَة ۲)

(सूरह अल बकरह: 281)

सारी हम्दो सना उस पाक परवरदिगार के लिए जेबा है जो हमेशा तक रहने वाला है। और कायनात के जर्रे-जर्रे पर हुकूमत करने वाला है। जिसके हुक्म करने से जो वो चाहे चीज वजूद में आ जाती है और जब वो चाहे और जिसको चाहे उसे फना कर देता है। उसकी तारीफ व बड़ाई बयान करने से हमारी जबानें आजिज हैं और हमारी भलाई इसी में है कि इस मैदान में हम अपनी कमजोरियों का इकरार करें और इस हालत में भी जबान हर वक्त उसकी याद से तर रखें। अनगिनत दरूद व सलाम उस रसूलों के सरदार मदीने के ताजदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जिनकी शान में बिलकुल सही कहा गया है:

हुस्ने यूसुफ दमे, ईसा यदे बैजादारी
आंचा खोबां हम्मा दारिन्द तो तन्हांदारी

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ۔

हजरात!

आज का खुत्बा नमाजे जनाजा की फजीलत और अहकाम से मुताल्लिक है। यह वो मंजिल है जो एक दिन सबके सामने आने वाली है। आयते खुत्बा में अल्लाह पाक ने खबर दी है कि उस दिन से डरते रहो, जिस दिन तुमको अल्लाह पाक की तरफ लौटना है। वो दुनिया से रुख्सती का दिन है। उस दिन हर जान को उसके

कामों का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर किसी किस्म का जुल्म ना होगा। आज नमाजे जनाजा से मुताल्लिक अहकाम आपके गोशे-गुजार किये जाते हैं। अल्लाह पाक याद रखने और उनके मुताबिक अमल करने की सआदत अता करे। आमीन!

भाईयों!

जब जनाजा बिलकुल तैयार हो जाये तो उसके उठाने में देर ना होनी चाहिए, क्योंकि अगर नेक है तो अपनी मुराद पर जल्द कामयाब होगा और अगर बद है तो तुम्हारी गर्दनें उसके बोझ से जल्द हल्की होगी। जनाजा के साथ बगैर किसी जरूरत व उज्र के सवार होकर चलना ना चाहिए। और अगर उज्र (सवारी) से सवार होकर चले तो जनाजे से पीछे जरा फासले पर रहें। पैदल आदमी जिस तरह चाहें, दाहिने, बायें आगे पीछे चलें। मगर जनाजे से करीब रहें। जिसने तीन बार जनाजे को कंधा दिया, उसने उसका हक अदा कर दिया। फिर जिस कद्र उसको उठायेगा, ज्यादा सवाब पायेगा। जनाजा किसी का भी हो, उसको देखकर खड़ा हो जाना सुन्नत है। जो सिर्फ जनाजे की नमाज पढ़ने तक मय्यत के साथ रहेगा, वो एक ढेर उहद पहाड़ के बराबर सवाब पायेगा। और जो दफन होने तक साथ रहेगा, वो नेकियों के दो ढेरे कमायेगा। जब तक जनाजा जमीन पर ना रखा जाये, बैठना सख्त मना है।

हजरत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिस जनाजे पर चालीस सच्चे पक्के मुसलमान नमाज पढ़ेंगे, अल्लाह तआला उस मय्यत की बख्शिश कर देगा। और फरमाया, जिसके जनाजे पर तीन सफें सच्चे मुसलमानों की नमाजें पढ़ेंगी अल्लाह तआला उसके वास्ते जन्नत वाजिब कर देगा। जनाजे की नमाज मुसलमानों पर वाजिब है, जिन्होंने जनाजे की नमाज ना पढ़ी सो वो भी पढ़ना चाहे तो पढ़ लें। अगर मुर्दा दफन हो चुका हो तो जनाजे की नमाज कब्र पर पढ़ना साबित है। जनाजा अगर मर्द का हो तो इमाम मय्यत के सर के मुकाबिल खड़ा हो और अगर औरत का है तो नाफ के सामने खड़ा हो।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैजाअ के दोनों बेटों पर नमाजे जनाजा मस्जिद में पढ़ी थी। पस नमाजे जनाजा चाहें तो मस्जिद में पढ़ें, चाहें जंगल में, जहां चाहें पढ़ें दुरुस्त है।

दूसरी जगहों से किसी के मरने की खबर पहुंची, उस रोज मुसलमान लोग उसका गायबाना जनाजा पढ़ें जायज है। जो शख्स जानकर मर जाये आप हजरत

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका जनाजा नहीं पढ़ा। ना आप कर्जदार के जनाजे की नमाज पढ़ते थे। जब तक उसका कर्ज नहीं अदा किया जाता या उसके कर्जे की कोई जमानत लेने वाला ना हो जाता था। और फरमाते थे कि मुसलमानों की रूह उसके कर्जे की वजह से टंगी रहती है, जब तक उसका कर्जा नहीं अदा किया जाता। लेकिन सहाबा किराम रजि. आपके हुक्म से ऐसे लोगों पर नमाज पढ़ते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ ना ले जाते थे। हैज व निफास की हालत में मर जाये या ब-मौजिब हुक्मे शरई संगसार किया जाये सिवाय शहीद फि सबीलिल्लाह के सबका जनाजा पढ़ना चाहिए। जनाजे की नमाज में चार तकबीरों की रिवायतें ज्यादा और मजबूती रखने वाली हैं। सूरह फातिहा का जनाजे की नमाज में पढ़ना दुरुस्त है। सूरह फातिहा के साथ और सूरह का पढ़ना भी आया है। जो शख्स जनाजे की नमाज में पीछे आकर शरीक हुआ है, वो इमाम के साथ तकबीरें अदा करे और सलाम फेरने के बाद बाकी तीन तकबीरें जो रह गयी हैं, उनको पूरा करें। अगर इमाम भूलकर तीन तकबीरों पर सलाम फेर दे और फिर खुद-ब-खुद या किसी के याद दिलाने से याद आये तो उसी वक्त चौथी तकबीर कह दे। और दुआ पढ़कर सलाम फेरे। फरमाया जनाजे की नमाज भी एक नमाज है जिसमें ना रुकूअ है, ना सज्दा। इस नमाज में खड़े होकर रफअ-यदैन के साथ सिर्फ तकबीरें कही जाती हैं और किराअत और दुआ है। इसके बाद खड़े-खड़े सलाम फेरना है, फकत! मय्यत के वली का नमाजे जनाजा पढ़ना बेहतर है। या और जिसको वो इजाजत दे दे। और अगर मुर्दों की कई अलग अलग लाशें जंगल में पायी जायें और उनमें से बाज का मुसलमान होना ना हो तो सबको सामने करके मुसलमानों की नीयत के साथ नमाजे जनाजा अदा करें। नमाजे जनाजा के बारे में इस हदीस को याद रखना जरूरी है।

عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِذَا صَلَّيْتُمْ عَلَى الْمَيِّتِ فَاَخْلِصُوْا لَهُ الدُّعَاءَ. [ابوداؤد، الجنائز 2784، ابن ماجه، الجنائز]

(अबू दाउद, 2784, इब्ने माजह अल-जनाइज)

यानी "हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जब तुम मुर्दे पर नमाज पढ़ो तो सिर्फ उसके वास्ते दुआ करो।"

जनाजे की नमाज इस तरह पढ़नी चाहिए कि पहले इमाम व मुक्तदी तकबीरे तहरीमा कह कर दिल में वो दुआ पढ़ें जो हर नमाज में पहली तकबीर

तहरीमा के बाद पढ़ते हैं। फिर "अऊज़ुबिल्लाह...... और बिस्मिल्लाह...." पढ़ें, इसके बाद इमाम पुकार कर या आहिस्ता से सूरह फातिहा पढ़े और चाहें तो और कोई सूरह भी मिला लें और जब किराअत से फारिग हो जायें तो रफअ यदैन करके दूसरी तकबीर कहकर वही दरूद शरीफ पढ़ें जो और नमाजों में पढ़ते हैं और रफेअ यदैन करके फिर तीसरी तकबीर के बाद यह दुआ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا۔ اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ۔ اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ۔

(احمد، ترمذی، ابوداؤد، ابن ماجه)

(अहमद, तिर्मिजी, अबू दाउद, इब्ने माजह)

"ऐ अल्लाह! बख्शिश कर हमारे जिन्दों और मुर्दों के वास्ते और हमारे हाजिर व गायब के वास्ते और हमारे छोटों और बड़ों के वास्ते और हमारे मर्दों और औरतों के वास्ते। ऐ अल्लाह! जिसे तू जिन्दा रखे तो हम में से जिन्दा रख उसको इस्लाम पर और जिसको मारे तो हम में से मार उसको ईमान पर। ऐ अल्लाह। हमको इसके सवाब से महरूम ना रख। और उसके पीछे फितने में ना डाल।"

और चाहें यह दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبُّهَا وَاَنْتَ خَلَقْتَهَا وَاَنْتَ هَدَيْتَهَا اِلَى الْاِسْلَامِ وَاَنْتَ قَبَضْتَ رُوْحَهَا وَاَنْتَ اَعْلَمُ بِسِرِّهَا وَعَلَانِيَتِهَا جِئْنَا شُفَعَآءَ فَاغْفِرْ لَهٗ۔

[ابوداؤد۔ الجنائز، احمد]

(अबू दाउद, अल-जनाइज, अहमद)

यानी "ऐ अल्लाह! तू इसका परवरदिगार है और तूने ही इसको पैदा किया है और तूने ही इसको इस्लाम की हिदायत दी है। और तूने इसकी जान कब्ज की और तू खूब जानने वाला है, उसके जाहिर को और बातिन को। हम इसकी सिफारिश करने आये हैं। पस तू इसको बख्श दे।"

बाज सहाबा बच्चों की नमाजे जनाजा में और दुआओं के बाद यह दुआ भी पढ़ते थे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّسَلَفًا وَّاَجْرًا ۔ (بخاری، تعلیقا، الجنائز)

(बुखारी, तअलीकन, अल-जनाइज)

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! इस बच्चे को हमारे वास्ते गवाह और पेशवा और मौजिबे सवाब का कर दे।"

हजरत अबू हुरैरा रजि. छोटे बच्चों के जनाजों पर और दुआओं के बाद यह दुआ भी पढ़ते थेः

اَللّٰهُمَّ اَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ۔

यानी "ऐ अल्लाह इसको कब्र के अजाब से बचा।"

हर तकबीर कहते हुए रफअ-यदैन करें। जनाजे की दुआयें अगर नमाजे जनाजा पर ऊँची आवाज से भी पढ़ें तो भी जायज है और आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी के जनाजे पर ऊंची आवाज से यह दुआ पढ़ी थी। हजरत औफ बिन मालिक रजि. कहते हैं कि मैंने आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊंची आवाज से पढ़ने पर इस दुआ को याद कर लिया और कहा काश यह जनाजा मेरा होता तो क्या अच्छा होता, वो दुआ यह हैः

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهٗ وَارْحَمْهُ وَعَافِهٖ وَاعْفُ عَنْهُ وَاَكْرِمْ نُزُلَهٗ وَوَسِّعْ مَدْخَلَهٗ وَاغْسِلْهُ بِالْمَآءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّهٖ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَاَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِّنْ دَارِهٖ وَاَهْلًا خَيْرًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَزَوْجًا خَيْرًا مِّنْ زَوْجِهٖ وَاَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَاَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ ۔ (مسلم، مشکوۃ)

"ऐ अल्लाह! इसके गुनाहों को बख्श दे और इस पर रहमत कर और छुटकारा दे और माफ कर खता इसकी और उम्दा कर ठिकाना इसका और कुशादा कर इसकी जगह, इसको पाक कर पानी, बर्फ और ओले से। और साफ कर दे गुनाहों से, इस तरह जैसे सफेद कपड़ा मैल से साफ करता है और बदले में दे दे इसको घर (जन्नत में) इसके (दुनिया) के घर से बेहतर और घर वालों से

बेहतर घर वाले और इसकी बीवी से बेहतर बीवी और इसको जन्नत में दाखिल फरमा और पनाह दे इसको अजाबे कब्र और अजाबे दोजख से।''

फिर चौथी तकबीर कहकर सलाम फेर दें।

जनाजा मर्द का हो या औरत का या बच्चे का सबके वास्ते यही दुआयें सहीह हदीस से साबित होती हैं। जनाजे की नमाज के बाद जनाजे के पास और कुछ सूरतें या दुआयें पढ़ना साबित नहीं। इसलिए बिदअत है।

प्यारे भाईयों!

सूरज के निकलने और डूबने और जवाल के वक्त मुर्दे की नमाज पढ़नी या उसको दफन करना सख्त मना है। जब सूरज निकल कर ऊंचा हो जाये या शाम को सूरज की धूप जर्द ना हुई हो उस वक्त दफन करें, या नमाज पढ़ें तो दुरुस्त है। धूप के जर्द होने के बाद नमाज पढ़ना या दफन करना नहीं चाहिए। बेहतर यही है कि मैयत दिन को दफन की जाये, जरूरत पर रात को भी दफन करें तो कोई मुजायका नहीं। हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. रात ही को दफन हुए हैं।

कब्र गहरी साफ और फैली हुई होनी चाहिए। बगली कब्र सुन्नत है और आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी बगली कब्र में दफन हुए हैं। संदूकी कब्र भी साबित है। हिन्दुस्तान में मैयत को दक्षिण की तरफ से कब्र में उतारा जाना चाहिए, यानी कब्र की पायंती से अव्वल मैयत का सर दाखिल करें। पश्चिम की तरफ से दाखिल करना साबित नहीं अगर कब्र की पायंती की तरफ से जनाजा रखने की जगह ना मिले तो जिस तरफ से आसानी हों, उस तरफ से लाश को उतारें। दफन करते वक्त यह कलिमात कहने चाहिएं:

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ۔ [ترمذی، الجنائز، ابوداؤد، ابن ماجہ]

(तिर्मिजी, अल-जनाइज, अबू दाउद, इब्ने माजह)

फिर कब्र को बन्द करके तीन-तीन बार सब मुसलमान मिट्टी को कब्र पर डालें और कब्र को मिसल कोहाने शुतर के सलामी बना दें। और एक हाथ से ज्यादा ऊंचा ना करें और ऊपर से पानी भी छिड़क दें। फिर सब मुसलमान मिलकर मैयत के वास्ते मगफिरत की दुआयें मांगे। कि या अल्लाह! इस वक्त आसानी कर इस पर और साबित कदम रख इसको और मदद कर इस बेचारे की और रहम फरमां इस पर ताकि मुनकर-नकीर के सवाल जवाब आसान हों इस पर। इसी तरह से बहुत देर तक निहायत हमदर्दी से इसके हक में भलाई की

दुआयें करनी चाहिएं, क्योंकि कब्र इम्तिहान की पहली घाटी और बड़ी सख्त घाटी है। अल्लाह तआला इस पहले इम्तिहान में पूरा उतार दे तो बस बेड़ा पार है और आगे तो फिर खैरियत है। इन्शा अल्लाह तआला और जो यहां पूरे ना उतरे तो फिर पूरी-पूरी कमबख्ती और रुसवाई व परेशानी है। अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे।

नीज कब्र को पक्की बनाना, उस पर चिराग जलाना, चादर या फूल चढ़ाना या कब्र पर नाच-गाना वगैरह नालायक हरकत करना बिलकुल हराम और बेदीनी की बात है। कब्र के पास/बैठकर कुरआन शरीफ पढ़ना, पढ़वाना मना है। कब्र पर कलिमा या मुर्दे का नाम वगैरह लिखना बिदअत है। मुर्दे की हड्डी तोड़ना ऐसा गुनाह है जैसा जिन्दे की हड्डी तोड़ना। लाश को एक मुल्क से दूसरे मुल्क में या एक शहर से दूसरे शहर में ना ले जायें, बल्कि जिस जगह वो मरा हो, वहीं दफन कर दें।

आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कब्र की तरफ नमाज पढ़ने को मना फरमाया है। और फरमाया है आग पर बैठना कब्र पर बैठने से बेहतर है। कब्र पर सिरहाने की तरफ निशान के वास्ते पत्थर खड़ा करना सुन्नत है। अच्छे आदमी के पास मैयत को दफन करना बेहतर है। कब्र पर बैठना या तकिया बनाना या उस पर रास्ता चलना सख्त मना है।

गैर मर्द को गैर औरत का जनाजा कब्र में उतारना दुरुस्त है। अगरचे उसका बाप या खाविन्द भी वहां मौजूद हों।

जिनके घर में मौत हो जाती थी, आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा किराम को हुक्म फरमाते थे कि उनके घर में खाना पहुंचाओ। और जबरदस्ती खाना ना खिलाओ।

फरमाया कि मैयत जूतों की आवाज सुनती है, जब लोग उल्टे फिरते हैं। इसलिए कि इसमें उस वक्त रूह डाली जाती है और बैठाकर सवाल किया जाता है। थोड़ी देर बाद फिर रूह को उसके ठिकाने पर पहुंचा देते हैं। फिर वो मुर्दा कयामत तक नहीं सुन सकता। इस हदीस से मालूम हुआ कि जूते कब्रिस्तान में ले जाना गुनाह नहीं है। नेक आदमी कब्र के सवाल व जवाब में जब ठीक उतरते हैं तो दोजख दिखाई जाती है और कहा जाता है कि देख अल्लाह ने इसके बदले में तुझको जन्नत दी है। और फिर उसको जन्नत दिखाई जाती है और वो उसको देखता रहता है। इसी तरह काफिरों को जन्नत दिखाकर दोजख का वादा किया जाता है और अजाब में मुब्तला रहता है।

मुर्दे को कब्र में रखकर कुल के ढले डालना, और दफन के बाद उसकी कब्र पर चादर चढ़ाना और रोटी व मिठाई रखना, अगरबत्ती जलाना और कब्र पर या उससे हटकर मुर्दे के फायदे की नीयत से अजान देना और चालीस कदम हट कर दुआ मांगना बड़ी बिदअत है। जैसा कि दकन के बिदअती अक्सर ऐसी बिदअतों में मुब्तला हैं। बाज मुल्कों में बिदअती लोग दफन से पहले कब्रिस्तान में मिठाई व पैसे व अनाज व शरबत भी बांटते हैं, इन बिदअतों से बचाना जरूरी है।

बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

कब्रों की जियारतों के बारे में आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि मैंने तुमको कब्रों की जियारत से मना किया था। मगर अब जियारत किया करो, क्योंकि कब्रों की जियारत में बहुत बड़े फायदे हैं। उनमें से एक मौत का याद आना दुनिया को खत्म होने वाली समझना, आखिरत का ध्यान दिल में जमाना, सो खास कर टूटी-फूटी कब्रों से ऐसे फायदे हासिल होने की उम्मीद हो सकती है। लेकिन इन मकबरों की जियारत से जो अच्छी खासी नुमाइश गाहें बनी हुई हैं, ऐसे फायदों की उम्मीद नहीं हो सकती। नाजायज घुमाई व तमाशे के लिए अलबत्ता किसी कद्र दुनियावी फायदा मुमकिन है। फिर दूरदराज मुल्कों से खास खास दिनों में ऐसी कब्रों को देखने के वास्ते सफर करना और वहां जाकर नफा व नुकसान के लिए मदद मांगना और अपनी जरूरत का उनको वसीला बनाना और उनकी मगफिरत दुआ करवाना और जैसी खुराफातें वहां होती हैं, उनका बजा लाना वहां के चढ़ावे को बजाये नापाक समझने के हलाल व पाक समझकर बरकत वाला ख्याल करना ईमान खोने से ज्यादा असर नहीं रखता।

बाकी रही जायज जियारत, उसका तरीका यह है कि जब कब्रों के पास पहुंचे तो पुकार कर या आहिस्ता कहें।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ، نَسْأَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ۔ (مسلم)

(मुस्लिम)

यानी ''सलाम है तुम पर ऐ ईमानदार और मुसलमान घर वालों, इन्शा अल्लाह हम तुम से मिलने वाले हैं, हम अपने और तुम्हारे वास्ते अल्लाह से माफी मांगते हैं।''

और जब तक कब्रिस्तान में रहें, मुर्दों के वास्ते मगफिरत की दुआयें मांगते रहें और अपनी मौत को भी याद करें। औरतें भी जब कब्रिस्तान जायें तो ऐसा ही करें। अक्सर इस जमाने की कम समझ औरतें हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ तरीका-ए-नौहा करती हैं और रोती-पीटती हैं। इस तौर से ज्यादती करने वालों पर हजरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लानत की है। ऐसी औरतों को कब्रिस्तान में जाने की इजाजत देना खुद लानती बनना है और उनको लानती बनाना है। और औरतों का मेले-तमाशे में जाना दोजख मोल लेना है। खाना-ए-काबा मस्जिदे नबवी बैतुल मुकद्दस के सिवा तमाम जियारतों के सफर करके जाने को आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना किया है। जब मदीना पहुंचे हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्र शरीफ और वहां के कब्रिस्तान की जियारत मर्द और औरतें सुन्नत के मुताबिक करें, दुरुस्त हैं।

हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी वफात के करीब फरमाया था कि लानत करें अल्लाह यहूद व नसारा पर कि उन्होंने अपने नबियों की कब्रों को सज्दागाह बनाया है। मैं तुमको मना करता हूँ और दुआ की कि ऐ अल्लाह तू मेरी कब्र को बुत ना बनाना जो पूजे जायें। अल्लाह तआला उस कौम पर बड़ा गुस्सा हुआ है जिसने अपने पेशवाओं, लीडरों की कब्रों को सज्दे किये हैं। पस अल्लाह तआला ने हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ कबूल की और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कब्र मुबारक को बुत बनने से बचा लिया।

हजरात!

आखिर में एक हदीस शरीफ और सुन लीजिए, अल्लाह पाक हर मुसलमान को इस हदीस पर अमल करने वाला बनाये। आमीन!

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ كَعْبٍ عَنْ اَبِيْهِ اَنَّهٗ كَانَ يُحَدِّثُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ اِنَّمَا نَسَمَةُ الْمُؤْمِنِ طَيْرٌ تَعَلَّقُ فِيْ شَجَرِ الْجَنَّةِ حَتّٰى يَرْجِعَهُ اللهُ فِيْ جَسَدِهٖ يَوْمَ يَبْعَثُهٗ۔ [نسائی الجنائز، ابن ماجہ الزهد]

(निसाई-जनाइज, इब्ने माजह-जुहद)

अब्दुर्रहमान बिन कअब ने अपने बाप से रिवायत की है कि वो हदीस बयान करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मौमिन की जान

एक परिन्दा है जो जन्नत के दरख़्त में रहेगी, यहां तक कि अल्लाह तआला फिर उसको कयामत के दिन उसके बदन में पहुंचायेगा।

दुआ है कि अल्लाह तआला हर मुसलमान मर्द, औरत को मौत के वक्त साबित कदमी और कब्र में दुरुस्त (ठीक) जवाबात देने की तौफीक अता फरमाये। आमीन!

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ. أَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ لِيْ وَلَكُمْ أَجْمَعِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

खुत्बा नम्बर 49

वफाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (मेरे मां-बाप उन पर कुर्बान) के बयान में

اَمَّا بَعْدُ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝ (النصر ١١٠)

"जब अल्लाह की मदद और फतह पहुंच गयी और ऐ रसूल आप खुद ने देख लिया कि लोग अल्लाह के दीन में फौज दर फौज दाखिल हो रहे हैं। (आपका काम पूरा हो गया)। अब मुनासिब है कि आप अपने रब की तस्बीह व तहमीद ज्यादा करें और बख्शिश चाहें। बेशक वो अल्लाह पाक अपने बन्दों पर मेहरबानियों के साथ रुजूअ करने वाला है।"

हम्दो नात के बादः

बिरादराने इस्लाम!

आज का खुत्बा वफाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बयान में है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुनिया की रुख्सती से छः महीने पहले यह सूरह नाजिल हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस से समझ गये थे कि इस साल दुनिया से कूच करने की इत्तलाअ दी गयी है। आखिर रमजान 10 हिजरी में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बीस दिन का ऐतकाफ किया। हालांकि पहले आप सिर्फ दस दिनों का ऐतकाफ किया करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी प्यारी बेटी हजरत फातिमा जहरा रजि. से फरमा दिया था कि मुझे अपनी मौत करीब मालूम होती है। हज्जतुल विदा के मशहूर खुत्बे में भी

उम्मत से फरमा दिया था कि मैं जल्द ही अब तुम से जुदा होने वाला हूँ। आखिर शुरू माह सफर मुजफ्फर 11 हिजरी में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आखिरत के सफर की तैयारी शुरू फरमा दी। एक रोज उहद के कब्रिस्तान पर तशरीफ ले गये और शुहदाये उहद के लिए दुआ फरमायी। वहां से वापिस होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी में इज्तमाअ-ए-आम का ऐलान फरमाया और मिम्बर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मुसलमानों! मैं तुम से आगे जाने वाला हूँ, अल्लाह के यहां तुम्हारे ईमान व यकीन व इस्लाम की शहादत दूंगा। अल्लाह की कसम मैं अपने हौजे कौसर को यहां से देख रहा हूँ। मुझे दुनिया के मुल्कों के खजानों की कुंजियां दी गई हैं। मुझे अब यह डर नहीं रहा कि तुम मेरे बाद मुश्रिक हो जाओगे। मगर यह डर जरूर है कि तुम आपस में एक दूसरे से बढ़कर निकलने की जरूर कोशिश करोगे।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आधी रात को बकीअ के कब्रिस्तान में तशरीफ ले गये और दुआये-मगफिरत के साथ ''अना बिकुम सला हिकून'' की बशारत उनको सुनायी, जिसका तर्जुमा यह है कि ऐ बकीअ वालों! अब जल्द ही हम भी तुम से मिलने वाले हैं। इसके बाद फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक रोज मुसलमानों! को जमा फरमाया और बहुत-सी नसीहतों के साथ फरमाया, मरहबा! मुसलमानों अल्लाह तुमको अपनी रहमत में रखे तुम्हारी तंगीयों और परेशानियों को दूर फरमाये। तुमको ज्यादा रिज्क अता फरमाये। तुमको तरक्की दे, तुमको अल्लाह अपने हिफ्ज व अमान में रखे। मैं तुमको अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूँ। और अल्लाह ही को तुम्हारे ऊपर खलीफा बनाता हूँ। और उसी से डरने का हुक्म करता हूँ। क्योंकि मैं खुले तौर पर डराने वाला हूँ।

मुसलमानों! देखना अल्लाह की जमीन पर फसाद ना फैलाना और उसके बन्दों में किसी पर अपने लिए बरतरी ना समझना और घमण्ड हरगिज ना करना। अल्लाह के उस दिन को याद रखना जो उसने मुझको और तुमको सुनाया है।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۭ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝۸۳ (القصص ۲۸)

(सूरह कसस: 83)

''यह आखिरत का घर है यानी जन्नत जिसे हम उन लोगों को देते हैं जो दुनिया में ना अपने लिए बरतरी चाहते हैं और ना कोई फसाद का इरादा करते हैं

और बेहतरीन अंजाम तो सिर्फ परहेजगारों ही के लिए खास है।''

फिर आपने यह आयत तिलावत फरमायी:

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ (الزُّمَر ٣٩)

(सूरह जुमर: 60)

''क्या घमण्ड करने वालों के लिए जहन्नम का ठिकाना नहीं है।''

आखिर में फरमाया, ऐ मुसलमानों! तुम सब पर सलामती हो और कयामत तक आने वाले सारे दुनिया के मुसलमानों पर जो इस्लाम कबूल करके इस बैअत में दाखिल होंगे।

बिरादराने इस्लाम!

29 सफर पीर का दिन था, आपको बहुत तेज बुखार शुरू हुआ। सिर में भी बहुत तेज दर्द था। हजरत अबू सईद खुदरी रजि. कहते हैं कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो रूमाल सर मुबारक पर बांध रखा था, मैंने उसे हाथ लगाया, वो इस कद्र गर्म था कि मेरा हाथ गर्मी को बर्दाश्त ना कर सका। इस पर मैंने ताज्जुब का इजहार किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अम्बिया से बढ़कर किसी को तकलीफ नहीं होती। इसलिए उनका सवाब भी सबसे बड़ा होता है। बीमारी में ग्यारह दिन तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में आकर खुद नमाज पढ़ाते रहे। बीमारी के सारे दिनों की तादाद 13 या 14 थी।

आपका आखरी हफ्ता हजरत आयशा रजि. के घर गुजरा था। जुबान मुबारक से ज्यादातर यह अल्फाज अदा होते रहे:

"اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَاَلْحِقْنِيْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى۔" [ترمذی۔ الدعوات، بخاری۔ المغازی]

(तिर्मिजी-अल-दअवात, बुखारी-अल-मगाजी)

यानी ''या अल्लाह मुझको बख्श दे और बुलन्दतरीन रफीक से मुझको मिला दे।''

इन्तेकाल से पांच दिन पहले बुध का दिन था कि सात कुओं के सात घड़ों का पानी सर पर डलवाया। तबीयत कुछ हल्की मालूम हुई तो मस्जिद में तशरीफ लाये, फरमाया: ऐ मुसलमानों! तुमसे पहले एक कौम हुई है जो अपने अम्बिया की

कब्रों को सज्दागाह बनाती थी, खबरदार तुम ऐसा ना करना। फिर फरमाया:

لَعَنَ اللّٰهُ الْيَهُوْدَ وَالنَّصَارٰى اِتَّخَذُوْا قُبُوْرَ اَنْبِيَآءِهِمْ مَسَاجِدَ۔

[متفق عليه]

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ قَبْرِىْ وَثَنًا يُّعْبَدُ۔ [مؤطا امام مالك]

(मुवत्ता इमाम मालिक)

''अल्लाह तआला यहूद व नसारा पर लानत करे, जिन्होंने अपने नबियों की कब्रों को सज्दागाह बना लिया। या अल्लाह मेरी कब्र को बूत ना बनने देना कि लोग उसकी पूजा-पाठ करने लग जायें।''

फिर फरमाया, उस कौम पर अल्लाह का सख्त गजब है, जिन्होंने अपने नबियों की कब्रों को सज्दागाह बना लिया। देखो मैं तुमको इस हरकत से मना करता रहा हूँ। देखो मैं तबलीग कर चुका हूँ। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने असमान की तरफ इशारा करते हुए फरमाया: या अल्लाह तू गवाह रहना, या अल्लाह तू गवाह रहना। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज पढ़ायी और बाद में मिम्बर पर तशरीफ लाकर हम्दो सना के बाद फरमाया, मैं तुमको अनसार के हक में वसीयत करता हूँ। यह लोग मेरे जिस्म के पैरहन और मेरे लिए जादे राह (सफर का सामान) बनकर रहे हैं, इन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को पूरा कर दिया है और अब उनके हक बाकी रह गये हैं। उनमें से अच्छा काम करने वालों की कद्र करना। और गलती करने वालों से दरगुजर करना और फरमाया कि एक बन्दे के सामने दुनिया और जो कुछ उसमें है, उस सबको पेश किया गया है, मगर उस बन्दे ने दुनिया से मुंह मोड़कर आखिरत को पसन्द कर लिया। इस इशारे को हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. समझ गये और फौरन बोल उठे कि हमारे मां-बाप हमारी जानें, हमारे मालो जर हुजूर पर कुरबान हों।

मिम्बर पर यह आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आखरी खुत्बा था, जुमेरात के दिन बीमारी जोर पकड़ गयी, उस दिन तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन वसीयतें फरमायीं।

1. यहूद को अरब से बाहर निकाल दिया जाये।

2. जो लोग वफद (ग्रुप) की शकल में आएं, उनकी इज्जत और मेहमानी उसी तरह की जाये, जिस तरह मैं करता रहा हूँ।

3. कुरआन शरीफ तुमको बतौरे वरसा दे चुका हूँ, इस पर जब तक अमल करोगे, हरगिज गुमराह ना होंगे। कुरआन के बाद मेरी सुन्नत तुम्हारे लिए वाजिबुल अमल है।

जुमेरात मगरिब तक नमाजें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद पढ़ायी थीं। इशा की नमाज के लिए आपने तीन बार मस्जिद जाने का इरादा फरमाया, हर बार जब वजू करने बैठते, बेहोशी तारी हो जाती। आखिर फरमाया कि अबू बकर से कहो कि नमाज पढ़ायें। चुनांचे इस हुक्म के बाद जिन्दगी मुबारका में हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. ने सत्रह नमाजों की इमामत फरमायी।

बिरादराने मिल्लत!

उम्मत के मुकतदा महबूब रहनुमा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से रुख्सत होने जा रहे हैं। मदीना की फिजां गम व रंज से गुबार आलूद हो रही हैं। आखिर इतवार का दिन आया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सब गुलामों को आजाद फरमाने का ऐलान करा दिया। जो बाज रिवायत की बिना पर चालीस आदमी थे। घर में सात दीनार नकद मौजूद थे, वो खैरात करा दिये। जिस कद्र हथियार थे, वो मुसलमानों को लौटा दिये। एक जिरह (जंगी जॉकेट) रह गयी जो एक यहूदी के यहां तीस साअ जौं के बदले में गिरवी रखी हुई थी। उस दिन की रात में हजरत आयशा सिद्दीका रजि. ने चिराग का तेल एक पड़ोसन से उधार के तौर पर मंगवाया था। दौशंबा पीर के दिन सुबह की नमाज के वक्त रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वो पर्दा उठाया जो आयशा सिद्दीका रजि. और मस्जिदे नबवी के दरमियान पड़ा हुआ था, नमाज बा-जमात का नक्शा देखकर चेहरा मुबारक खुश और होंठों पर मुस्कुराहट थी। इशारे से मुसलामानों को नमाज पूरी करने का हुक्म फरमाया, उसके बाद आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और किसी नमाज का वक्त नहीं आया। दिन चढ़ा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बेटी फातिमा रजि. को तसल्ली दिलाई, हजरत हसन व हुसैन रजि. को बुलाया, उनको चूमा। और उनके एहतराम की वसीयत फरमायी। फिर पाक बीवियों को बुलाया और उनको नसीहतें फरमायी। फिर हजरत अली रजि. को बुलाया, उन्होंने सर मुबारक अपनी गोद में रख लिया, उनको भी नसीहत फरमायी। इसी मौके पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बार बार फरमाया, ''अस्सलाता अस्सलाता वमा म-ल-क-त अैइमा-नु-कुम'' यानी

मैं तुमको नमाज की हिफाजत और अपनी बीवियों और लौण्डी गुलामों के साथ नेक बर्ताव करने की वसीयत करता हूँ। हजरत अनस रजि. कहते हैं कि आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यही आखरी वसीयत थी। हजरत आयशा सिद्दीका रजि. फरमाती हैं कि आप बार-बार इस वसीयत को दोहराते रहे, यहां तक कि नजअ की हालत शुरू हो गई। चेहरा मुबारक कभी सुर्ख और कभी जर्द (पीला) पड़ जाता था। जुबान मुबारक पर यह अल्फाज थे, ''ला इलाहा इल्लल्लाहु इन्ना लिल-मौति स-करातिन''। इतने में हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. के साहबजादे अब्दुर्रहमान आ गये। उनके हाथों में ताजा मिस्वाक थी। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिस्वाक पर नजर डाली तो हजरत आयशा सिद्दीका रजि. ने मिस्वाक को अपने दांतों से नरम बना दिया। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिस्वाक की तरफ हाथ को ऊंचा किया और जुबान मुबारक से फरमाया, ''अल्लाहुम्मर्रफीकल आला''। उस वक्त हाथ लटक गया और आंखों की पुतलियां ऊपर उठ गयीं। 12 रबी उल अव्वल 11 हिजरी, पीर का दिन, चाश्त का वक्त था कि जिस्म मुबारक से रूह निकल गई। उम्र मुबारक उस वक्त 63 साल कमरी, चार दिन थी।

إِنَّا لِلّٰهِ وَ إِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ۔

''इन्ना लिल्लाहि व-इन्ना इलैहि राजिऊन''
अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व-अला आलि मुहम्मदिन व-बारिक व-सल्लिम''

भाईयों!

एक दिन तो वो था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ आवरी से मदीना नूर बना हुआ था। और एक दिन आज है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई से मदीना अंधेरे में डूब रहा है। मुसलमानों के होशो हवास गुम हैं। हर मुसलमान हैरान व परेशान है। हजरत उमर रजि. को वफाते नबवी का यकीन नहीं आ रहा है। आखिर हजरत अबू बकर रजि. घर में गये, पेशानी को चूमा, आंखें आंसुओं से भर गयीं। फिर फरमाया, आप सल्ल. पर मेरे मां-बाप कुरबान हों। वल्लाह! अल्लाह पाक आपको दो मौतें नहीं देगा, यही एक मौत थी

जो आप पर लिखी हुई थी। फिर आप मस्जिदे नबवी में आये। वफात के ऐलान का खुत्बा पढ़ा, जिसके अल्फाज हम्दो सलात के बाद यह थेः

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ (اٰل عمران ۳)

(सूरह आले इमरानः 144)

''वाजेह हो कि जो शख्स तुम में से हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत करता था, वो तो आज दुनिया से रुख्सत हो गये और जो कोई अल्लाह की इबादत करता था तो बेशक अल्लाह पाक तो जिन्दा है, उसे मौत नहीं। अल्लाह ने खुद फरमाया ''मुहम्मद तो एक रसूल ही हैं, इनसे पहले भी बहुत से रसूल हो चुके हैं (जो सब दुनिया से चले गये) क्या अगर हजरत मुहम्मद भी इंतेकाल कर जायें या शहीद हो जायें तो तुम लोग उल्टे पांव फिर जाओगे?हाँ जो कोई ऐसा करेगा तो वो अल्लाह पाक का कुछ ना बिगाड़ सकेगा। बेशक अल्लाह पाक शुक्र करने वालों को बेहतरीन बदला देने वाला है।''

हजरात!

आखिर मुसलमानों ने सब्र व शुक्र के साथ अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कफनाने-दफनाने का इंतजाम किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो कपड़े पहने हुए थे, उन्हीं में आपको गुस्ल दिया गया और गुस्ल के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाश मुबारक को कमरे में रखा गया। मुसलमान दस-दस की तादाद में अन्दर जाते और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम की शक्ल में नमाजे जनाजा पढ़कर बाहर आ जाते। जैसाकि इब्ने माजह में हजरत इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जनाजा घर में एक तख्त पर रखा गया। फिर लोग जमाअतों की शक्ल में एक-एक करके अन्दर जाते और दरूद व सलाम पढ़कर बाहर आ जाते। पहले मर्दो को यह शर्फ हासिल हुआ, फिर औरतों को भी मौका दिया गया, आखिर में बच्चों को भी अन्दर जाने की इजाजत दी गई।

इस नमाज में कोई इमाम न था, सब लोग अलग-अलग दरूद व सलाम और दुआये मगफिरत के बाद बाहर आ जाते, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

तदफीन मुबारक चहार शंबा (बुध) यानी इन्तेकाल से करीबन 32 घंटे बाद अमल में आई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

जिस जगह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दफन किया गया, यह हजरत आयशा रजि. अन्हा का कमरा था। यह बतलाया गया था कि अम्बिया किराम अलैहिमस्सलाम की जहां रूह कब्ज होती है, उसी जगह वो दफन किये जाते हैं। इसी बिना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस कमरे में दफन किया गया। यही वो कमरा है जो बाद में हरी गुंबद की शक्ल में बनाया गया। जिस के अन्दरूनी हिस्से में आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साहिबैन यानी अबू बकर सिद्दीक रजि. और हजरत उमर रजि. की कब्रें असल शक्ल में महफूज हैं। मगर वो इस कद्र महफूज कर दी गई हैं कि यहां तक पहुंच मुमकिन नहीं।

बुजुर्गो, अजीजों, दोस्तों!

यह मुख्तसर हालात आपको इबरत के लिए सुनाये गये हैं कि मौत ऐसी चीज है जिसकी पकड़ से अम्बिया व रसूल अलैहिमस्सलाम भी ना बच सके हैं। दुनिया अगर हमेशा रहने की जगह होती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस में रहते।

आओ अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दिल व जान से दरूद सलाम भेजें।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

يَا رَبِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا

عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 50

कुछ वसीयते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बयान में

عَنْ مَعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِعَشْرِ كَلِمَاتٍ قَالَ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَاِنْ قُتِلْتَ وَحُرِّقْتَ وَلَا تَعُقَّنَّ وَالِدَيْكَ وَاِنْ اَمَرَاكَ اَنْ تَخْرُجَ مِنْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ وَلَا تَتْرُكَنَّ صَلَاةً مَكْتُوْبَةً مُتَعَمِّدًا فَاِنَّ مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مَكْتُوْبَةً مُتَعَمِّدًا فَقَدْ بَرِئَتْ مِنْهُ ذِمَّةُ اللّٰهِ وَلَا تَشْرَبَنَّ خَمْرًا فَاِنَّهٗ رَاْسُ كُلِّ فَاحِشَةٍ وَاِيَّاكَ وَالْمَعْصِيَةَ فَاِنَّ بِالْمَعْصِيَةِ حَلَّ سَخَطُ اللّٰهِ وَاِيَّاكَ وَالْفِرَارَ مِنَ الزَّحْفِ وَاِنْ هَلَكَ النَّاسُ وَاِذَا اَصَابَ النَّاسَ مَوْتٌ وَاَنْتَ فِيْهِمْ فَاثْبُتْ وَاَنْفِقْ عَلٰى عِيَالِكَ مِنْ طَوْلِكَ وَلَا تَرْفَعْ عَنْهُمْ عَصَاكَ اَدَبًا وَاَخِفْهُمْ فِى اللّٰهِ۔ (رواه احمد)

अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन की हम्दो सना और उसके प्यारे हजरत मुम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम!

बिरादराने इस्लाम!

आज का खुत्बा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चन्द मुबारक वसीयतों से मुताल्लिक है। दुनिया के इन्सानों का दस्तूर चला आ रहा है कि हर बड़ा आदमी अपने साथियों से जुदाई के वक्त उनको कुछ न कुछ वसीयत करता है।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिनको अल्लाह पाक ने कयामत तक के लिए आखरी रसूल बनाकर भेजा, जिन्होंने थोड़े से वक्त में अरब में इस

कद्र कामयाबी हासिल की कि जिसकी मिसाल नामुमकिन है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह पाक ने बतला दिया था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत कयामत तक सारी दुनिया में फैलती रहेगी और जमीन के कोने-कोने में आपके बेशुमार वफादार पैदा होते रहेंगे। लिहाजा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मत को अपने खुसूसी औकात में बहुत सी वसीयतें फरमायी हैं जिनमें से आप बहुत सी मुबारक वसीयतें हज्जतुल विदा के खुत्बे में सुन चुके हैं।

हमारा फर्ज है कि इन वसीयतों को याद रखें और इन पर अमल करने की कोशिश करते रहें। अल्लाह पाक हर मुसलमान को तौफीक अता करे। आमीन!

मुहतरम भाईयों!

आज जो वसीयत नामा आपको सुनाया जा रहा है, उसका हर एक लफ्ज दिलो दीमाग में महफूज रखने के काबिल है।

हजरत मआज बिन जबल रजि. मशहूर अनसारी सहाबी हैं जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार यमन का हाकिम बनाकर भेजा था, वो रिवायत करते हैं कि मुझको रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस बातों की वसीयत फरमायी।

1. अल्लाह के साथ किसी भी चीज को हरगिज शरीक ना करना, अगरचे तुझको कत्ल कर दिया जाये और जला दिया जाये। मगर शिर्किया काम हरगिज ना करना। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह इसलिए फरमाया कि मुश्रिक पर जन्नत बिलकुल हराम है। अल्लाह के यहां इसकी बख्शिश के लिए कोई गुंजाइश बिलकुल नहीं है। कब्रों, ताजियों, बुतों वगैरह-वगैरह के पूजने वाले नामो निहाद मुसलमान उठते-बैठते ख्वाजा साहब या बड़े पीर की दुहाई देने वाले अल्लाह तआला के नजदीक यह सारे शिर्क के काम हैं। इन सब से दूर रहना और खालिस अल्लाह तआला को पुकारना अल्लाह की इबादत (बन्दगी) करना हर मुसलमान का पहला फर्ज है।

2. अपने मां-बाप की हरगिज नाफरमानी ना करना, अगरचे वो तुझको हुक्म दें कि तू अहल व माल से अलग हो जाये। फौरन उनका हुक्म मानना।

3. और फर्ज नमाज जानबूझ कर हरगिज-हरगिज ना छोड़ना, जो ऐसा करेगा, उससे अल्लाह का जिम्मा बरी हो जायेगा। यानी दुनिया व आखिरत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए जो नेक वादे किये हैं, उनसे उसका कोई ताल्लुक नहीं रहेगा। दूसरी रिवायत में साफ आया है कि जानबूझ कर बिला वजह एक वक्त

की नमाज छोड़ देने वाला काफिर हो जाता है, वहां अगर उसने तौबा की और नमाज का पाबन्द हो गया तो वो फिर इस्लाम में आ जाता है।

4. शराब हरगिज ना पीना। शराब हर बे-हयाई के काम की जड़-बुनियाद है। मगर बेहद अफसोस की बात है कि मुल्क की आजादी के बाद शराबनोशी मुसलमानों में बहुत ज्यादा फैल रही है। कितने लोग दिन रात में मस्त रहते हैं। रेलों, हवाई-जहाजों, मोटरों के चलाने वालों में यह बुराई इस कद्र आम है कि रोजाना नित नये हादसे होते रहते हैं। जिनसे कितनी जानें जाती रहती हैं। अलगर्ज शराब इस कद्र बुराईयों की जड़ है कि इसकी जिस कद्र बुराई की जाये, कम है।

5. अपने आपको गुनाहों से बचाओ, क्योंकि इससे अल्लाह का गजब व गुस्सा नाजिल होता है।

6. जंग के मैदान से हरगिज ना भागना, अगरचे लोग हलाक हो जायें।

7. और जब लोगों में कोई बीमारी फैलने लगे जिससे लोग बहुत ज्यादा मरने लगें और तू वहां मौजूद हो तो वहां साबित कदमी से रहना।

8. और अपना माल अपने घर वालों पर जरूरत के मुताबिक खर्च करते रहो। इस बारे में कंजूसी ना करो। अल्लाह ने जिस तरह दी है, उसके मुताबिक घर वालों पर खर्च करना जरूरी है।

9. औलाद को अदब सिखलाने, इल्म पढ़ाने में बहुत ज्यादा खुले दिल से रहो। उनके सरों पर डण्डा घुमाते रहो। ताकि वो डण्डे के खौफ से इल्म व अदब हासिल करने में लगे रहें। मगर जो बच्चे-बच्चियां खुद शौक रखते हों, उनके लिए डण्डे की जरूरत नहीं पड़ती। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसी ही औलाद नसीब करे।

10. अपने घर वालों को हमेशा अल्लाह से डराते रहो ताकि वो दीन व दुनिया में नेक रास्ते इख्तेयार करके कामयाबी हासिल करते रहें।

हजरात!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह दस वसीयतें इस काबिल हैं कि उनको हर मुसलमान अपने दिमाग में उतार ले और इन पर अमल करने में हरगिज कोताही ना करे। यह सब दीन की असली बातें हैं जिन पर इस्लाम की बुनियाद है। इन सब पर अमल जरूरी है। अगर एक पर भी अमल ना हो तो बर्बादी

का खतरा है। इनके अलावा सारा कलाम मजीद और हदीसों के तमाम दफ्तर हर मौमिन मुसलमान के लिए हिदायत के खजाने हैं, वसीयतों से मुताल्लिक इस कद्र हदीसें आई हुई हैं कि इन सबको जमा करने के लिए एक दफ्तर की जरूरत है। फिर भी जड़-बुनियाद सबकी यही बातें हैं जो यहां आप सुन रहे हैं। अल्लाह हर मुसलमान को नेक बनाये और सबको दीन व दुनिया की कामयाबी अता करे। आमीन!

मुहतरम भाईयों!

यह खुत्बाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो आपने सुने हैं, इसीलिए जमा करके आपके सामने लाये गये हैं ताकि हर मुसलमान इनको पढ़े और अमल करे। जुमा व ईदैन के खुत्बों में इनको सुनाया जाये। इनकी इशाअत का खालिसन यही मकसद है। अल्लाह पाक जानता है और वो लोगों के भेदों से वाकिफ है। जमा करने वाले की खालिसन यही नीयत है कि वअजो नसीहत करने के सिलसिले की एक बड़ी जरूरत पूरी हो जाये।

अलहम्दु लिल्लाह आज खुत्बात का खजाना आपके सामने है। आओ सब मिलकर अल्लाह पाक से साफ दिल के साथ दुआ करें कि ऐ परवरदिगार सच्चे माबूद बरहक हम सबको दीन व दुनिया की खूबियां अता करे। तौहीद व सुन्नत में पुख्तगी अता फरमा, शिर्क व बिदअत से बचाइये, हमारे दिलों में से जलन और दुश्मनी व छल-कपट को निकाल दीजिए। हम सबको अपने महबूब व मकबूल बन्दों में शामिल फरमा लीजिए। और मरते वक्त ईमान पर खात्मा नसीब कीजिए! दुनिया में कर्ज, तंगी व मोहताजगी से बचाना। किसी के आगे हाथ फैलाने से महफूज रखना। कब्र में साबित कदमी, हश्र में अपने हबीब की शिफाअते कुबरा अता फरमाना और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों से हम सबको जामे कौसर नसीब फरमाना। आमीन या रब्बल आलमीन!

मुहतरम भाईयों!

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और सच्चा वसीयतनामा आपको सुनाया जा रहा है, अल्लाह पाक हम और आप सबको इसे याद रखने और इस पर अमल करने की तौफीक अता करे।

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهٗ قَالَ مَازَالَ يُوْصِيْنِيْ جِبْرِيْلُ بِالْجَارِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ يَجْعَلُهٗ وَارِثًا وَمَا زَالَ يُوْصِيْنِيْ بِالنِّسَآءِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ سَيُحَرِّمُ طَلَاقَهُنَّ وَمَا زَالَ يُوْصِيْنِيْ بِالْمَمْلُوْكِيْنَ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ يَجْعَلُ لَهُمْ وَقْتًا يُعْتَقُوْنَ فِيْهِ وَمَا زَالَ يُوْصِيْنِيْ بِالسِّوَاكِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ فَرِيْضَةٌ وَمَا زَالَ يُوْصِيْنِيْ بِالصَّلَاةِ فِي الْجَمَاعَةِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ تَعَالٰى صَلَاةً اِلَّا فِي الْجَمَاعَةِ وَمَا زَالَ يُوْصِيْنِيْ بِقِيَامِ اللَّيْلِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ لَا نَوْمَ بِاللَّيْلِ وَمَا زَالَ يُوْصِيْنِيْ بِذِكْرِ اللّٰهِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ لَا يَنْفَعُ قَوْلٌ اِلَّا بِهٖ۔ (منبهات ابن حجر مكى، هيثمى)

(मुनब्बिहात इब्ने हजर मक्की, हैसमी)

''हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रजि. रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हजरत जिब्राईल मुझको हमेशा पड़ौसियों के बारे में वसीयत फरमाते रहे हैं। यहां तक कि मैंने गुमान किया कि शायद इसको वारिस ना बना दिया जाये और हजरत जिब्राईल मुझको औरतों के साथ नेक सलूक की वसीयत करते रहे। यहां तक कि मैंने गुमान किया कि कहीं औरतों को तलाक देना हराम ही ना करार दे दिया जाये। हजरत जिब्राईल मुझको लौण्डी, गुलामों के बारे में वसीयत फरमाते रहे। यहां तक कि मैंने गुमान किया कि कहीं उनके लिए कोई ऐसा वक्त मुकर्रर ना कर दिया जाये जिसमें उन सबकी आजादी का हुक्म सादिर हो जाये। और हजरत जिब्राईल मुझको हमेशा मिस्वाक करने की वसीयत फरमाते रहे, यहां तक कि मैंने गुमान किया कि मिस्वाक हर नमाज के वक्त वजू में फर्ज ना करार दे दी जाये। और हजरत जिब्राईल मुझको हमेशा नमाज बा-जमात की वसीयत फरमाते हुए पढ़ने की ताकीद करते रहे, यहां तक कि मैंने गुमान किया कि शायद जमाअत के साथ कोई नमाज अल्लाह के यहां

कबूल ही ना हो। और हजरत जिब्राईल मुझको हमेशा तहज्जुद की नमाज पढ़ने की ताकीद फरमाते रहे, यहां तक कि मैंने गुमान किया कि सारी रात में सोना ही बन्द ना कर दिया जाये। और हजरत जिब्राईल मुझको हमेशा अल्लाह का जिक्र करने की वसीयत फरमाते रहे, यहां तक कि मुझको गुमान हुआ कि बगैर अल्लाह तआला के जिक्र के मुंह से कोई बात निकालना ऐसा है जिसमें बिलकुल कोई फायदा नहीं है।''

यह अजीमुश्शान वसीयत नामा वो है जो हजरत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पेश किया और आपके जरीये से हम तक पहुंचा। इसमें जिस कद्र वसीयतें की गई हैं, सब अपनी-अपनी जगह पर बड़ी अहमियत रखती हैं। पड़ोसियों के हक, औरतों के हक, लौण्डी गुलामों के हक, मिस्वाक करने की अहमियत, नमाज बा-जमाअत, नमाजे तहज्जुद और अल्लाह का जिक्र, यह सात वसीयतें ऐसी हैं जिनकी और ज्यादा तफसील के लिए बड़े वक्त की जरूरत है। अल्लाह पाक याद रखने और अमल करने की तौफीक अता करे। आमीन!

एक वसीयतनामा और सुन लीजिए!

हजरत अरबाज बिन सारिया रजि. कहते हैं कि एक दिन आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा वअज फरमाया जिसे सुनकर हमारी आंखें तर हो गयीं। और हमारे दिल रोने लग गये। एक शख्स ने कहा कि या रसूलल्लाह! यह वअज तो आपने ऐसा फरमाया है जैसे कोई रुख्सत करने वाला आपने घर वालों को खास तौर पर नसीहतें किया करता है। पस बेहतर होगा कि आप इस मौके पर हमको कुछ वसीयत फरमा दें। चुनांचे इरशाद हुआ:

أُوْصِيْكُمْ بِتَقْوَى اللهِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَإِنْ كَانَ عَبْدًا حَبَشِيًّا أَنَّهُ مَنْ يَّعِشْ مِنْكُمْ بَعْدِيْ فَسَيَرٰى اِخْتِلَافًا كَثِيْرًا فَعَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَآءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ تَمَسَّكُوْا بِهَا وَعَضُّوْا عَلَيْهَا بِالنَّوَاجِذِ وَاِيَّاكُمْ وَمُحْدَثَاتِ الْأُمُوْرِ فَاِنَّ كُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ۔ [سنن الدارمی، ترمذی۔ العلم، ابوداؤد۔ السنة، ابن ماجه]

(सुनन दारमी, तिर्मिजी, अल-इल्म, अबू-दाऊद, अस्सुन्नह, इब्ने माजा)

यानी "मैं तुमको हर हाल में अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूँ। और हाकिमे वक्त का हुक्म (जो इस्लामी कानून में हों) दिल से सुन लेने और मान लेने की अगरचे वो हाकिम हब्शी गुलाम ही क्यों ना हो, मैं तुमको वसीयत करता हूँ कि जो तुम में से मेरे बाद जिन्दा रहेगा, वो बहुत से इख्तलाफात देखेगा। पस तुम पर लाजिम है कि मेरे और मेरे खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को मजबूती से पकड़ लो और अपने आपको बिदअत से बचाओ। दीन में हर नया पैदा किया हुआ काम बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है, जिसका नतीजा दोजख है। आपकी एक वसीयत यह भी थी कि मैं किताबुल्लाह और अपनी सुन्नत को तुम्हारे लिए छोड़ कर जाता हूँ, जब तक तुम इन दोनों पर अमल करते रहोगे, हरगिज गुमराह ना होगे।"

बिरादराने इस्लाम!

अपने प्यारे महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इन मुबारक वसीयतों को याद रखना और इन पर अमल करना हमारे और आपके लिए जरूरी है। अल्लाह पाक हमें इनको याद रखने और इन पर अमल करने की तौफीक बख्शे, और तौहीद व सुन्नत में पुख्ता करे, हर किस्म के शिर्क व बिदअत और फिरकाबन्दी से बचाये। आमीन सुम्मा आमीन!

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ
وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
اَجْمَعِيْنَ۔ اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللهَ لِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ وَلِسَائِرِ
الْمُسْلِمِيْنَ۔ وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खुत्बा नम्बर 51

कुरआन मजीद से एक अजीमुश्शान खुत्बा-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

أَمَّا بَعْدُ: أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ۝
قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۝١ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ
الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝٢ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ
بَعِيْدٌ ۝٣ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۝٤
بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ۝٥ (قٓ ٥٠)

(सूरह काफ: 1-5, पारा 26)

अल्लाह तबारक व-तआला की हम्दो सना और उसके प्यारे महबूब रसूल हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम के बाद:

बिरादराने इस्लाम!

यूं तो कुरआन मजीद का एक-एक लफ्ज रुश्दो हिदायत का खजाना है। मगर यह सूरह शरीफा जिसे सूरह 'काफ' कहते हैं अकाइद व अरकाने ईमान के मुताल्लिक बहुत ही अहम सूरह है। इस्लाम में जो चीजें अकाइद में बुनियादी हैसियत रखती हैं, अल्लाह पाक ने इस सूरह शरीफा में खुले तौर पर बयान फरमा दी हैं। इसलिए हजरत वकिद अल-लैसी से रिवायत है कि इदैन की नमाजों में आप ज्यादातर यही सूरह पढ़ा करते थे, हजरत उम्मे हिशाम बिन्ते हारिसा रजि०

कहती हैं कि हमारा और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दो साल या कुछ कम व ज्यादा एक साथ रहना हुआ। आप इस कसरत के साथ इस सूरह की तिलावत फरमाते कि मैंने आपकी जुबान मुबारक से सुन सुनकर इसको मुंह जुबानी याद कर लिया। हर जुमे के दिन जब आप खुत्बे के लिए तशरीफ लाते तो इसी सूरह की तिलावत फरमाया करते थे। कितने ही सहाबा किराम थे जिन्होंने हर खुत्बे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस तिलावत फरमाने से इसे मुंह जुबानी याद कर लिया था।

अल्लाह तआला ने इस सूरह मुबारक में जो कुछ मजामीन बयान फरमाये हैं, उन सबकी तफसील के लिए बड़े वक्त की जरूरत है। लेकिन शुरू ही से जिस मजमून पर जोर दिया है, वो कयामत का कायम होना और उस दिन इन्सान का अल्लाह के दरबार में हाजिरी देना है। चुनांचे शुरू की आयत का तर्जुमा यह है:-

''ऐ नबी! मुझे कुरआन मजीद की कसम। इन अरब के मुश्रिकों को इस बात पर ताज्जुब हो रहा है कि इन्हीं में एक (आखिरत के अजाब से) डराने वाला नबी रसूल इनके पास आ गया, जिसकी तालीम इनको बड़ी अजीब मालूम होती है (वो कहता है कि मरने के बाद फिर जिन्दा होकर अल्लाह के सामने खड़ा होना है) भला हम मरकर जब मिट्टी हो जायेंगे तो फिर कैसे जी उठेंगे। यह दोबारा जिन्दगी तो अक्ल से बहुत दूर है। इन काफिरों को (मौत के जरीये) जमीन जिस कद्र कम कर रही है, हमको इनकी तादाद खूब मालूम है। हमारे यहां एक महफूज दफ्तर है। (बेहद अफसोस) कि हक बात जब इनके कानों में आयी तो इन्होंने (बिना सोचे-समझे) इसको झुठलाना शुरू कर दिया। पस यह लोग एक बे-बुनियाद अकीदे (आखिरत के इनकार) पर जमे हुए हैं।''

आगे अल्लाह पाक ने अपनी कुदरत के नजारे बयान फरमाते हुए ऐलान किया है

تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝٨ (قٓ ٥٠)

यानी ''यह सब कुछ देखने वालों के लिए जो दिल की आंखों से देखते हैं और गौरो फिक्र करने की चीजें हैं। अल्लाह की तरफ झुकने वालों के लिए यह कुदरत का कारखाना नसीहतों का एक खजाना है।''

आगे अल्लाह पाक ने पहली कौमों का जिक्र फरमाया है कि वो किस तरह तबाह व बर्बाद हो गये। कौमे नूह, मकामे रस के कुएं वाले, कौमे समूद व आद और फिरऔन और लूत की बर्बादी वाले और वन में रहने वाले और तब्बा की कौम

इनका उरूज व जवाल सारी इन्सानी बिरादरी के लिए इबरत का सबक है कि यह कौमें किस शान के साथ वजूद में आयीं और अपनी हरकतों और गुनाहों और कुफ्र व शिर्क की वजह से किस तरह सारी दुनिया से नीस्तो-नाबूद हो गयीं कि आज दुनिया में इनका कोई निशान बाकी नहीं है। आगे अल्लाह पाक ने हजरत इन्सान को नसीहत की है कि हमने इन्सान को पैदा करके उसको वजूद दिया है, हम उसके रगो रेशा से वाकिफ हैं, बल्कि इसके दिल के इरादों की भी हमको खबर है। आगे फरमायाः

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾ (قٓ ٥٠)

"इन्सान जो भी लफ्ज मुंह से निकालता है, उसके पास हमारा चौकीदार हर वक्त तैयार रहता है। और उसका हर-हर लफ्ज चौकीदार उसको डायरी में नोट कर लेता है।"

मुहतरम भाईयों!

हजरत इमाम हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि इस आयत की तिलावत करके फरमाया करते थे कि ऐ आदम! की औलाद तुम्हारे लिए सहीफा खोल दिया गया है। और तुम्हारे हर हर फर्द के लिए साथ दो-दो बुजुर्ग फरिश्ते मुकर्रर कर दिये गये हैं। एक तेरे दायीं तरफ, दूसरा बायीं तरफ है। दायीं तरफ वाला तेरी नेकियों की हिफाजत करता है और बायीं तरफ वाला बुराईयों को देखता रहता है। अब तुमको इख्तेयार है जो चाहो अमल करो। नेकी व बदी में कमी और ज्यादती का तुमको इख्तेयार दिया गया है। जब तुम मरोगे, यह दफ्तर लपेट कर तुम्हारे साथ तुम्हारी कब्रों में रख दिया जायेगा। और कयामत के दिन जब तुम अपनी कब्रों से उठोगे तो तुम्हारे सामने पेश कर दिया जायेगा। जैसा कि अल्लाह तआला ने खुद फरमाया हैः-

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿١٣﴾ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿١٤﴾

(بنی اسرآءیل ١٧)

(सूरह बनी इस्राईलः 13-14)

"हमने हर इन्सान का आमाल-नामा उसके गले में लटका दिया है। और हम

कयामत के दिन हर इन्सान के सामने उसके अमलों का दफ्तर फैला देंगे। जिसे वो खुली हुई किताब पायेगा। फिर हम उससे कहेंगे कि अपनी किताब आज तू खुद पढ़ ले। आज तू खुद ही अपना हिसाब करने के लिए काफी-वाफी है।''

फिर इमाम हसन बसरी रह. ने फरमाया, अल्लाह की कसम उसने बड़ा ही अदल किया है। उसने खुद इन्सान ही को उसका हिसाब लेने वाला बना दिया। कयामत के दिन हर इन्सान अपना आमाल-नामा देखकर खुद अपना हिसाब करेगा। कितने लोग उसे पढ़कर खुश हो जायेंगे। क्योंकि अच्छे आमाल पाकर वो जन्नत की खुशखबरी पायेंगे। और कितने लोग उसे देखकर अपना सर पीट लेंगे, दहाड़े मार-मार कर रोयेंगे वावैला करेंगे। मगर कुछ नतीजा ना होगा। वो दोजख को अपनी आंखों से देखकर हसरत व आस में डूबे हुए होंगे।

हजरत इब्ने अब्बास रजि. फरमाते हैं कि इन्सान जो भी बुरे-भले अलफाज जुबान से निकालता है, वो सब उसके दफ्तर में लिख लिये जाते हैं। यहां तक कि उसकी आपसी बातचीत भी दर्ज कर ली जाती है। फिर जुमेरात वाले दिन उसके अकवाल व अफआल अल्लाह की बारगाह में पेश किये जाते हैं। खैर व शर वाले अल्फाज बाकी रख लिये जाते हैं। और दूसरे फिजूल बे-मायनी बातें मिटा दी जाती हैं। अल्लाह ने फरमाया:

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ (الرَّعْد ١٣)

(सूरह रअद: 39)

''अल्लाह पाक जिसे चाहे मिटाये और जिसे चाहे वो साबित रखे। असल दफ्तर उसके यहां है।''

मुहतरम भाईयों!

इस सूरह के हकायक व मआरिफ बयान से बाहर हैं, आगे अल्लाह पाक ने मौत का जिक्र फरमाया:

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۗ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ (قٓ ٥٠)

(सूरह काफ: 19)

''ऐ मरने वाले इन्सान देख ले मौत की सख्ती ने आज तुझको घेर लिया। यही वो चीज है जिसके नाम से भी तुझको नफरत थी। और तू इससे भागा करता था। लेकिन आखिर आज तुझको इसके फंदे में फंसना ही पड़ा।''

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि उस शख्स की मिसाल जो मौत से घबराता है, उस लोमड़ी जैसी है जिससे जमीन अपना कर्ज तलब करने लगे और यह उससे बचने के लिए भागने लगे। भागते-भागते जब थक कर चकनाचूर हो गयी तो अपने घर में जा घुसी। जमीन वहां भी मौजूद थी। उसने लोमड़ी से कहा, ला मेरा कर्ज चुका दे। तो यह फिर वहां से भागी, सांस फूला हुआ था, बुरा हाल हो रहा था। आखिर भागते-भागते बे-दम होकर मर गयी। अलगर्ज उस लोमड़ी को भागने की राहें बिलकुल बन्द थीं। इसी तरह इन्सान को मौत से बचने के रास्ते भी सारे बन्द हैं। आगे अल्लाह पाक ने खबर दी है कि उस दिन को याद करो, जिस दिन सूर फूंक दिया जायेगा और कयामत आयेगी। वही दिन डरावे का होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि मैं किस तरह राहत व आराम हासिल कर सकता हूँ। हालांकि सूर फूंकने वाले फरिश्ते ने सूर मुंह में ले रखा है और गर्दन झुकाये वो अल्लाह के हुक्म का इन्तजार कर रहा है कि कब हुक्म मिले और वो हश्र बरपा होने का सूर फूंके। सहाबा किराम ने कहा, फिर या रसूलल्लाह! हमको क्या कहना चाहिए? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ''हस्बुनल्लाहु व-निअमल वकील'' कहो ''अल्लाह हमको काफी है और वही बेहतरीन कारसाज है।''

आगे दोजख के बहुत से मंजर बयान फरमाने के बाद इरशाद है:

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ۝ (ق ٥٠)

(सूरह काफ: 30)

''हम इस दिन दोजख से (इसकी पूरी खुराक, हजार इंसानों में से नौ सो निन्यानवे आदमी देकर भी) पूछेंगे कि अभी तू भरी है या नहीं?वो कहेगी, मेरे हिस्से में अभी कुछ और भी बाकी है तो उसे भी मेरे पेट में डाल दो।''

बुखारी व मुस्लिम वगैरह में है कि दोजख ''हल मिम-मजीदिन' का नारा लगाती रहेगी, यहां तक कि रब्बुल इज्जत इसमें अपना कदम मुबारक रख देगा तो वो कह देगी कि ''बस-बस''।

इस हदीस को इसके जाहिरी अल्फाज के मुताबिक तस्लीम करना जरूरी है, ज्यादा कुरेदना हदीस से बढ़ना है। आगे अल्लाह पाक ने निहायत ही शानदार लफ्जों में जन्नत का जिक्र फरमाया है। इरशाद होता है:

وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿٣٢﴾ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ﴿٣٣﴾ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾ (ق ٥٠)

(सूरह काफ: 31-35)

"और जन्नत को सजाकर के परहेजगारों के करीब लाया जायेगा, जो दूर ना होगी। यह वही नेमत है जिसका दुनिया में तुमको वादा दिया जाता था। यह नेमत हर उस मर्द-औरत के लिए है जो अल्लाह की तरफ झुकने वाले, अल्लाह की हिदायत की हिफाजत करने वाले होते हैं। जो बगैर देखे अल्लाह रहमान व रहीम से डरते रहते हैं। और झुकने वाला दिल लेकर अल्लाह के दरबार में हाजिरी देते हैं। उनसे कयामत के दिन कहा जायेगा कि आज सलामती के साथ जन्नत में दाखिल हो जाओ, अब तुम यहां हमेशा रहोगे। और उन जन्नत वालों को हर वो चीज मिलेगी जो वो चाहेंगे, उनके लिए हमारे यहां और भी बढ़-चढ़ कर नेमतें होंगी।

बुजुर्गो-भाईयों!

अल्लाह पाक ने जो कुछ फरमाया है, उसका लफ्ज-लफ्ज हक है। इसमें शको-शुबा की जर्रा बराबर भी गुंजाइश नहीं है। सूरह काफ के बयानात आप ने जो सुने हैं, यह बहुत थोड़े हैं। सारी हकीकतों को जानने के लिए जरूरत है कि आप खुद इस सूरह की तिलावत, इसका तर्जुमा और तफसीर का मुताअला करें। जिस कद्र भी आप इसमें गौर व खोज करेंगे, उतने ही ज्यादा मआरिफे कुअरान हासिल होगा। सूरह के आखिर में अल्लाह की तरफ से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके मुबल्लिगी को हिदायत की गयी है।

فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾ (ق ٥٠)

(सूरह काफ: 45)

यानी "जिन लोगों को मेरे अजाबों का डर है और जन्नत दोजख पर उनको यकीन व ईमान हासिल है, उनको कुरआन शरीफ से नसीहतें सुनाया करो। इसकी रोशनी में वअज किया करो।"

या अल्लाह! अपने कलाम पाक पर हमको पुख्ता ईमान व यकीन अता फरमा। और इसकी तिलावत से हमारे दिलो दिमाग को रोशन कर दे। जो कुछ हमने कहा और सुना है, उसका लफ्ज-लफ्ज हमारे दिलों में उतार दे, इसके मुताबिक हमको अमल करने की तौफीक अता फरमा।

ऐ परवरदिगार! हम तेरे गुनहगार बन्दे, तेरे सामने आजिज, मोहताज, लाचार हैं। हमारे गुनाहों को बख्श दे और दुनिया में जो भी मुसीबतों के बादल छाये हुए हैं, झगड़े-फसाद हो रहे हैं, गिरानी हद से आगे बढ़ रही है, गरीब कमजोर सताये जा रहे हैं, जुल्मो जोर का बाजार गरम है, उन सबको दूर फरमा दे और सारे इन्सानों को अमन व सकून नसीब फरमा। दुनिया के मुसलमानों को उरूज अता कर दे। हमको आपस में इत्तेफाक व इत्तेहाद मुहब्बत बख्श दे। आमीन या रब्बल आलमीन!

بَارَكَ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنَا وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ۔ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

खात्मा

किताब खुत्बाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किन जज्बात के तहत तरतीब दी गई है, उनकी तफसील पूरे तौर पर बयान करना मुमकिन नहीं है। ज्यादातर मसाजिद और उनकी मौजूदा बे-रौनकी का तसव्वुर ध्यान में आता रहा है, जिनके लिए ना इमाम नसीब हो रहे हैं, ना मुअज्जिन, ना खतीब, कुछ हैं भी तो बस महज वक्त गुजारने ही के लिए उनको बर्दाश्त किया जा रहा है। बहुत से अइम्मा हजरात ऐसे भी पाये गये जो बहुत मामूली उर्दू पढ़ सकते हैं। अरबी व फारसी से वाकिफियत तो बहुत दूर की चीज है। उम्मीद है कि यह खुत्बात ऐसे शौकीन हजरात की काबिलियत बहुत कुछ बढ़ा सकेंगी। और ब-नजरे गायर मुतालआ करने से वो कुरआन व हदीस की रोशनी में बेहतर व सही फरमा सकेंगे। अल्लाह पाक की जात से पूरी-पूरी उम्मीद है कि किताब खुत्बाते नबवी की इशाअत से बेहतरीन सदक़ा-ए-जारिया का सवाब हासिल होगा। जो हजरात इनको पढ़ेंगे, मुमकिन है कि वो लिखने वाले को भी कभी कभार अपनी नेक तरीन दुआओं में याद फरमायेंगे। और किसी ना किसी की दुआ से आखिरत में बेड़ा पार हो जायेगा। अगरचे इन खुत्बात की इशाअत का प्लान आज से बाईस साल पहले था, मगर हर काम के लिए अल्लाह के यहां वक्त मुकर्रर है। बहरहाल यह सीधे-साधे खुत्बात आप के हाथों में हैं। आपको और सुनने वालों को यह पसन्द आ जाये तो मुअल्लिफ की इन्तहाई खुशकिस्मती होगी। किसी जगह कोई कमी नजर आये तो उसे नजर अंदाज फरमा दें कि मैंने अंजाने में अल्लाह जाने कहां-कहां क्या क्या लिख दिया होगा। कोई वाकई गलती हो, एक खत से आगाह करें। शुक्रिया के साथ दुरूस्तगी कर दी जायेगी। अकाइद व आमाल व अख्लाक में बहुत सी चीजों को खुत्बात में लाने की कोशिश की गयी है, फिर भी इस्लाम एक बहरे नापेरा किनारा है। कोई कमी नजर आये तो उसके लिए माफी चाहता हूँ।

वायजीन व खतीब हजरात से मुकर्रर गुजारिश है कि आप खुत्बा शुरू करने से पहले खुत्बा मसनूना जरूर पढ़ लें। जो किताब के शुरू में दर्ज कर दिया गया है। शुरू में उसे जरूर-जरूर पढ़ लिया जाये। इसको पढ़कर इस किताब में जहां चाहें, आप हस्बे हाल "अम्माबाद" का लफ्ज पढ़ कर यह किताबी खुत्बा शुरू फरमायें। जुमा में पहला खुत्बा पढ़ कर थोड़ी देर बैठ जायें और फिर खड़े होकर दूसरा खुत्बा पढ़कर खुत्बा खत्म कर दें। यह खुत्बा सानिया भी अरबी में है और किताब के शुरू में यह भी मौजूद है। यह दो खुत्बे किताब से देख कर पढ़ने की

आदत डाल लें। इससे आपको बहुत से फायदे हासिल होंगे।

आयाते कुरआन व अहादीसे नबवी सल्ल. के ऐराब दुरुस्त करने की इन्तहाई कोशिश की गई है। फिर भी गलतियों का इमकान है। किसी जगह जेर जबर की कोई गलती नजर आये, ब-नजरे करम उसे दुरुस्त फरमा लें। यह काम इस कद्र नाजुक है कि कितनी भी कोशिश की जाये, गलती रह जाती है। जिनमें कातिबों और प्रेस वालों का भी काफी दखल होता है। बहरहाल गलती लगजिश भूलचूक इन्सानी फितरत है।

आखिर में मुकर्रर दुआओं की दरख्वास्त करता हूं। खासतौर पर तकमीले बुखारी शरीफ के लिए आपकी दुआओं का बहुत मोहताज हूं, जो मेरी हयाते मुस्तआर का अव्वलीन मकसद है। अभी 15 पारों की तसवीद व इशाअत का बड़ा बोझ सर पर है जो हजरात मुझको अपनी दुआओं और हमदर्दियों से नवाजते हैं, उनके लिए और जुमला शाएकीने किराम के लिए हर वक्त दुआ गो हूँ, अल्लाह पाक हम सबको दीन व दुनिया की तरक्कियाँ अता करे। आमीन या रब्बल आलमीन।

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۥ وَاغْفِرْ لَنَا ۥ وَارْحَمْنَا ۥ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ (اٰلِ عمران ٣)

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾

رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ. وَاغْفِرْلَنَا بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ. اٰمِيْنَ ثُمَّ اٰمِيْنَ.

(नाचीज) मुहम्मद दाऊद राज वल्द अब्दुल्लाह सल्फी रह.
मुकीमे हाल मस्जिद अहले हदीस 4121,
अजमेरी गेट, देहली नम्बर 6 (भारत)
10 जमादी उल सानी 1393 हिजरी, बमुताबिक 12 जुलाई 1973 ई.

मुनाजाते मनजूम

मुहम्मद दाऊद राज

या इलाही रोज व शब तौफीक़ एहसां दे मुझे
हुब्बे सुन्नत या इलाही इश्के कुरआं दे मुझे
मैं नहीं कहता कि तू तख्ते सुलेमान दे मुझे
ता-दमे आखिर रहूं इस्लाम पर साबित कदम
अज्म दे ऐसा पहाड़ों से भी जा टकराऊं मैं
मश्अले राहे हक हिदायत उसवा फारूक हो
खिदमते कुरआन व सुन्नत की है मुझको आरजू
तुझको पाकर ऐ अल्लाह पाऊँ हयाते जावेदा
बहरे जुल्मत में बने मेरे लिए जो खिज़रे राह
कल्ब दे ऐसा जो तेरी याद में जाये पिघल
कर मुझे या रब गिनाये जाहिर व बातिन अता
अहले बिदअत और बदकारों की सोहबत से बचा
नुत्क मेरा जिन्दगी भर नगमा-ए-तौहीद हो
खौफ अपना जाहिर व बातिन में यक्सा दे मुझे
नेमते दारैन आईना नूरे ईमान दे मुझे
अपनी उल्फत दे मुझे, बस अज्म वाक्या दे मुझे
इस्तकामत ऐ अल्लाह! हर लम्हा हर आन दे मुझे
कुव्वते हैदर (रजि.) दे मुझको, खिदमते सलमान (रजि.) दे मुझे
मुहब्बते नबवी, जज्बा-ए-सिद्दीक (रजि.) व उस्मान (रजि.) दे मुझे

ऐ मेरे अल्लाह! तू असबाब व सामान दे मुझे
आख़िरत में या इलाही बागे रिज़वां दे मुझे
गैब से ऐसा कोई रहबर मुस्लमां दे मुझे
खौफ से अपने इलाही चश्म गिरयां दे मुझे
तन्दुरुस्ती ऐ तबीब दर्दमन्दा दे मुझे
या इलाही उल्फते परहेज गारां दे मुझे
इश्के सुन्नत दे इलाही नूरे इरफां दे मुझे
राज अहकर को अता कर ऐ अल्लाह अपनी रजा
इस्तकामत ता दम आख़िर ऐ रहमां दे मुझे

शुक्रिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی آلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ۔ اَمَّا بَعْدُ:

जिस दिन से किताब खुत्बाते नबवी (सल्ल.) की इशाअत का ऐलान निकाला है, ऐतराफे मुल्क से कितने ही दोस्तों, अहबाब, बुजुर्गाने, जमाअत, उलमा-ए-इजाम व बुजुर्गाने किराम के खुतूत आये हैं जिनका दिल व जान से शुक्रिया अदा करना मेरा अख्लाकी फरीजा है, मालूम ऐसा होता है कि गोया शायकीने किराम इस अहमो खैरा का इन्तेजार ही फरमा रहे थे। अचानक अल्लाह तबारक वतआला ने उनकी दुआओं को कबूल किया। जिसके नतीजे में यह मुबारक जखीरा वजूद में आया है। कई बुजुर्ग भाईयों ने अपने मुफीद मश्वरों से भी मुस्तफीद फरमाया है, उनका मुकर्रर शुक्रिया अदा करता हूं और उनसे बा-अदब गुजारिश करता हूँ कि इस्लाम एक वसीअ अमीक समन्दर की तरह है जिसके जुम्ला अहकाम व अवामिर व नवाही का अहाता करने के लिए दफातिर दरकार हैं। इसलिए खुत्बाते नबवी सल्ल. में अगरचे जामिअीय की पूरी कोशिश की गई है, मगर फिर भी बहुत से मजामीन के लिए कमी नजर आयेगी, उम्मीद है कि मुअज्जज नाजरीने किराम इस कमी के लिए खादिम को मअजूर तसव्वुर फरमायेंगे। खुत्बाते नबवी सल्ल. का मौजूअ ज्यादातर तरगीब व तरहीब था, इस मकसद को सतर-सतर में मलहूज रखा गया है, बाकी मजीद मालूमात के लिए उम्मत की मुत्तफिकह मुसल्लिमा किताब सही बुखारी शरीफ मुतर्जम उर्दू मौजूद है। जिसमें हजरत इमाम बुखारी रह. ने हत्तल इमकान इस्लामी अहकामात को पूरे तौर पर कलमबन्द फरमाया है। लिहाजा इस्लाम की पूरी मालूमात के लिए शायकीने किराम की खिदमत में बुखारी शरीफ मुतर्जिम उर्दू का तोहफा पेश

करता हूँ। जिसके 15 पारे छप चुके हैं, और अभी 15 बाकी हैं जो अल्लाह ने चाहा तो जल्द से जल्द पाया-ए-तकमील को पहुंचाये जायेंगे। खुत्बाते नबवी सल्ल. की तरतीब के वक्त कुरआन मजीद व बुखारी शरीफ के अलावा दीगर मुस्तन्द खुत्बात भी सामने रखे गये हैं जिनके मुवल्लिफीन के लिए हदिया-ए-तशक्कुर और दुआयें मगफिरत पेश करता हूँ।

आखिर में अपने अजीज उलमा-ए-किराम व शायकीने इजाम का मुकर्रर शुक्रिया अदा करता हुआ मोअद्बाना अर्ज गुजार हूँ कि किसी भी लगजिश व कोताही के लिए नजरे करम फरमाते हुए मुत्तला फरमा कर मश्कूर फरमायें।

إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ.

والسلام

(खात्मा) मुहम्मद दाऊद राज उफिय अन्हु देहली
यकुम रजबुल मुरज्जब 1393 हिजरी